अंतिम समय

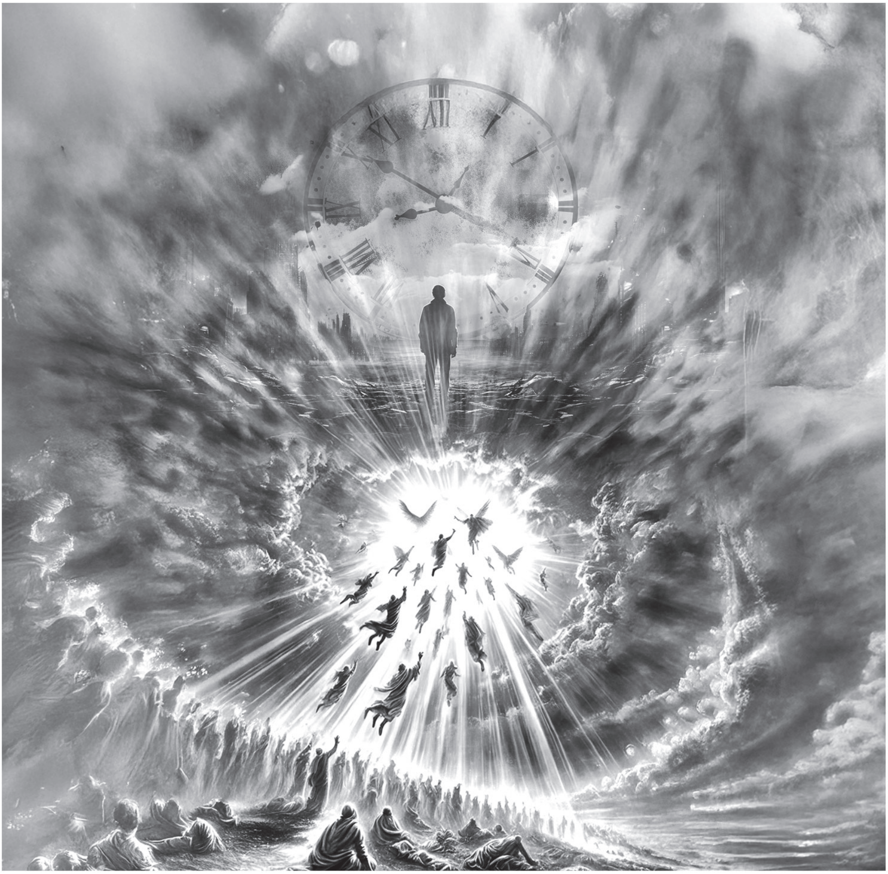

आशीष रायचूर

केवल निःशुल्क वितरण के लिए
ऑल पीपल्स चर्च एण्ड वर्ल्ड आउटरीच, बैंगलोर, भारत द्वारा निर्मित और वितरित।
वर्तमान संस्करण: 2026

संपर्क जानकारी

All Peoples Church & World Outreach,
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617
Email**: bookrequest@apcwo.org**
Website: **apcwo.org**

जब तक, अन्य रूप से संकेत न दिया गया हो, धर्मशास्त्र के सभी संदर्भ पवित्र बाइबल द बाइबल सोसायटी ऑफ इंडिया(BSI) द्वारा प्रकाशित, पुराने संस्करण से अनुमति सहित लिए गए हैं। सर्वाधिकार आरक्षित हैं।

आर्थिक साझेदारी

इस पुस्तक का निःशुल्क वितरण ऑल पीपल्स चर्च के सदस्यों, सहभागियों और मित्रों की आर्थिक सहायता के कारण संभव हुआ है। यदि आपने इस निःशुल्क प्रकाशन के माध्यम से आशीष पाई है, तो हम आपको ऑल पीपल्स चर्च के निःशुल्क प्रकाशनों के मुद्रण और वितरण में सहायता हेतु आर्थिक रूप से योगदान देने हेतु आमंत्रित करते हैं। कृपया **apcwo.org/give** पर जाइए या अपना योगदान कैसे करें, यह देखने हेतु इस पुस्तक के पीछे “ऑल पीपल्स चर्च के साथ प्रतिभागिता” पृष्ठ को देखीए। धन्यवाद!

निःशुल्क संसाधन और संबंधित वेबसाइटें

उपदेश: apcwo.org/sermons। **पुस्तकें:** apcwo.org/books। **चर्च ऐप:** apcwo.org/app
बाइबल कॉलेज: apcbiblecollege.org। **ई-लर्निंग:** apcbiblecollege.org/elearn
परामर्श सेवा: chrysalislife.org । **संगीत:** apcmusic.org
मिनिस्टर्स फेलोशिप: pamfi.org। **एपीसी वर्ल्ड मिशन्स:** apcworldmissions.org
बाइबल-विश्वासियों की व्याख्या: believersbiblecommentary.com

(Hindi–The End Times)

अंतिम समय

निःशुल्क उपदेश (ऑडियो, वीडियो) संसाधन

apcwo.org/sermons

अंतिम समय और अन्य विषयों पर निःशुल्क उपदेशों के लिए

विषयसूची

परिचय

1. एस्कैटोलॉजी: अंतिम समय का अध्ययन 1

अंतिम समय के विषय में अध्ययन क्यों करें? 1

अंतिम समय का अध्ययन करने में हमारा दृष्टिकोण 5

1) हम बातों को पहले उनके शाब्दिक (लिटरल) अर्थ में लेते हैं, फिर उनके रूपकात्मक (फिगरेटिव) अर्थ में। 5

2) हम अटकलों (स्पेक्युलेशन) या सनसनीखेज़ व्याख्याओं (सेंसेश्नलिज़म) में शामिल नहीं होते.. 6

3) खुलापन, परन्तु बिना समझौता किए 7

4) पवित्रशास्त्र का सम्पूर्ण दृष्टिकोण रखना 9

5) पुराना नियम, नए नियम में समझाया गया है 9

6) बाइबल आधारित प्रतिरूप-शास्त्र (बिबलिकल टाइपोलॉजी) का उपयोग .. 10

7) विभिन्न समय-काल (टाइमफ्रेम्स) को पहचानना 10

8) दोहरी (निकट की और दूर की) पूर्ति को पहचानें................................. 11

9) पूर्ति के संभावित अप्रत्याशित तरीकों के लिए तैयार रहें 11

10) कुछ अंतिम समय की भविष्यद्वाणियों का समय निश्चित नहीं है 12

हम किन शिक्षाओं को स्वीकार नहीं करते 12

पूर्ववाद (प्रेटरिज़म) 12

अधिकारवादी धर्मशास्त्र (डोमिनियन थियोलॉजी) 14

2. बाइबल: एक भविष्यसूचक पुस्तक 16

महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाएँ जिनकी पूर्व घोषणा की गई थी 17

1) मिस्र की दासता 17

2) बाबुल की बन्धुवाई (80 वर्ष पहले भविष्यद्वाणी की गई) 18

3) फारस के कुस्रू (साइरस) द्वारा इस्राएल की वापसी की आज्ञा 18

4) मसीह के आगमन के लिए 483 वर्ष 19

5) मसीह के विषय में भविष्यवाणियाँ 20

6) मन्दिर का विनाश (40 वर्ष पहले भविष्यवाणी की गई) 22

7) इस्राएल का तितर-बितर होना और फिर एकत्र होना (3,500 वर्ष पूर्व भविष्यवाणी की गई) 22

क्या हम अंतिम समय में रह रहे हैं? 23
क्या हम अंतिम समय की पीढ़ी हैं? 28
अंतिम समय से संबंधित पवित्र शास्त्र की शब्दावली 29

3. इस्राएल: बाइबल की भविष्यवाणी में भूमि और उसके लोग 32

अब्राहम और उसके वंशजों को प्रतिज्ञा की गई भूमि 32
मध्य पूर्व का इतिहास–एक रूपरेखा 34
मध्य पूर्व 37
मध्य पूर्व में संघर्ष 39
भूमि 40
संघर्ष की प्रमुख घटनाएँ 43
संघर्ष के प्रमुख मुद्दे 45
यरूशलेम नगर 48
मंदिर 49
राज्य, इस्राएल और कलीसिया 52
कलीसिया की प्रतिक्रिया 54

4. कलीसिया का उठाया जाना (रैप्चर) 55

यीशु फिर आने वाला है! 55
"मैं शीघ्र आने वाला हूँ" 57
घटनाओं का क्रम–एक चित्रात्मक प्रस्तुति 58
हम सब एक साथ उठाए जाएंगे (सिमल रैपीमर) 62
रात के चोर के समान 64
परमेश्वर की तुरही 65
स्वर्ग में सात वर्ष 66
इनाम स्वरूप मुकुट 67
जय पाने वाले के लिए प्रतिज्ञा किए गए प्रतिफल 68
हम कलीसिया के महाक्लेश से पूर्व उठाए जाने (प्री-ट्रिब्युलेशन रैप्चर) में क्यों विश्वास करते हैं? 72
1) यीशु ने कहा कि वह आएगा और हमें अपने पिता के घर ले जाएगा 73
2) मत्ती 24 और लूका 17 में नूह और लूत की प्रतिरूपात्मक शिक्षा (टाइपोलॉजी) 74
3) यीशु ने सिखाया कि जो होने वाला है उससे बचने के लिए प्रार्थना करो 77

4) महान बचाव—जैसा पौलुस ने थिस्सलुनीकियों की कलीसिया को सिखाया 81
5) मसीह-विरोधी के प्रकट होने से पहले "उस" का जाना आवश्यक है 86
6) प्रकाशितवाक्य 3:10,11 में कलीसिया को दी गई प्रतिज्ञा 94
7) दानिय्येल का सत्तरवाँ सप्ताह—इस्राएल के लिए, कलीसिया के लिए नहीं 95
8) प्रकाशितवाक्य की पुस्तक का कालक्रम (क्रोनोलॉजी) 97
9) प्रकाशितवाक्य 12–शैतान का आक्रमण कलीसिया पर नहीं, इस्राएल पर केन्द्रित 99
10) 1,44,000 यहूदी—पहले फल (फ़र्स्टफ्रूट्स) हैं 100
11) स्वर्गदूतों द्वारा अनन्त सुसमाचार का प्रचार 102
12) सात-वर्षीय उत्सव, जो मेम्ने के विवाह भोज में समाप्त होता है 103
13) क्लेश काल के अंत में पुनरुत्थान है, न कि उठाया जाना 105
पहला पुनरुत्थान 106
कुछ संबंधित प्रश्न 107
उठाए जाने के समय मरे हुओं में से कौन जी उठेंगे? 107
उठा लिए जाने में कौन शामिल होंगे? 111
क्या हम स्वर्ग में एक-दूसरे को पहचानेंगे? 112
5. दानिय्येल का 70वाँ सप्ताह: अंतिम सात वर्ष 113
70 सप्ताह ठहराए गए हैं 113
एक सप्ताह, सात वर्ष 115
69 सप्ताह, और एक सप्ताह 118
मसीह तक 69 सप्ताह 119
एक सप्ताह के लिए वाचा–दानिय्येल का 70वाँ सप्ताह 120
6. परिचय (प्रकाशितवाक्य 1) 124
7. सात कलीसियाएँ (प्रकाशितवाक्य 2 और 3) 129
इफिसुस 130
स्मुरना 131
परगमुन 131
थूआतीरा 131

सरदीस 132
फिलदिलफिया 132
लौदीकिया 132
एक स्थानीय कलीसिया के रूप में प्रभु यीशु हमसे क्या कहेंगे? 133

8 छुड़ाए हुए संत, सिंहासन कक्ष की आराधना (प्रकाशितवाक्य 4 और 5) 135

सिंहासन-कक्ष की आराधना 135
मुहरबंद पुस्तक को खोलने के लिए केवल एक ही योग्य है 136

9. पहले साढ़े तीन वर्ष (प्रकाशितवाक्य 6–10) 138

प्रकाशितवाक्य 6: पहली छह मुहरें 138
मसीह-विरोधी 140
सात वर्षों की झूठी शांति की संधि 145
तीसरा मन्दिर पुनर्निर्मित; याजकत्व और बलिदानों की पुनः स्थापना ... 146
प्रकाशितवाक्य 7: 1,44,000 यहूदी सुसमाचार प्रचारक 148
क्लेश काल के अनेक शहीद 149
प्रकाशितवाक्य 8: स्वर्ग में मौन, पृथ्वी पर बढ़ती प्रार्थना 150
पहली चार तुरहियाँ 150
प्रकाशितवाक्य 9: पाँचवीं और छठी तुरहियाँ 151
प्रकाशितवाक्य 10: सामर्थी स्वर्गदूत और छोटी पुस्तक 153

10. दूसरे साढ़े तीन वर्ष (प्रकाशितवाक्य 11–19) 155

प्रकाशितवाक्य 11: मध्य क्लेश काल, टूटी हुई शान्ति-संधि, दो गवाह 155
दो गवाह 156
प्रकाशितवाक्य 12: स्त्री, नर बालक और अजगर 159
याकूब के संकट का समय–अन्यजातियों का समय 161
प्रकाशितवाक्य 13: मसीह-विरोधी का शासन–पशु, झूठा भविष्यद्वक्ता, अजगर 162
सात सिर और सात राजा–सात क्रमिक विश्व साम्राज्य 163
10 सींग –10 राष्ट्रों के गठबंधन से 10 नेता 166
मसीह-विरोधी का वैश्विक प्रभाव बढ़ना 167
दूसरा पशु–झूठा भविष्यद्वक्ता 168

एक वैश्विक धार्मिक व्यवस्था 170
एक वैश्विक आर्थिक व्यवस्था और पशु की छाप 170
मसीह-विरोधी कहाँ से आएगा? 172
चार में से एक से, एक छोटा सींग निकला 174
प्रकाशितवाक्य 14: स्वर्गदूतों की घोषणाएँ 176
तीन स्वर्गदूतों की संसार के लिए घोषणाएँ 177
हंसिया और कटनी 178
हंसिया और दाखरस का कुंड (वाइनप्रेस) 178
प्रकाशितवाक्य 15: कटोरों के न्याय से पहले की भूमिका (प्रील्यूड) 179
प्रकाशितवाक्य 16: क्रोध के सात कटोरे लिए सात स्वर्गदूत 179
हर-मगिदोन: पूर्व के राजाओं और पृथ्वी के राजाओं का एकत्र होना ... 181
गोग और मागोग का युद्ध–रूस और उसके सहयोगियों का इस्राएल पर आक्रमण 182
रूस को उजाड़ देश में खदेड़ा जाना 185
प्रकाशितवाक्य 17: बड़ी वेश्या "रहस्यमय बाबुल" 186
"रहस्यमय बाबुल" को वैश्विक धार्मिक व्यवस्था मानने के कारण 187
7 राज्य, 10 शासक 189
प्रकाशितवाक्य 18: महान बाबुल का पतन 190
"रहस्यमय बाबुल" और "महान बाबुल" की समान विशेषताएँ 192
प्रकाशितवाक्य 19: मेम्ने का विवाह और अन्तिम संघर्ष—हर-मगिदोन ... 192
बड़ी वेश्या के विनाश पर स्वर्ग का आनन्द 192
मेम्ने का विवाह-भोज 193
राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु 194
हर-मगिदोन का युद्ध–राष्ट्र इस्राएल के विरुद्ध 194
यहोशापात की तराई 195
हर-मगिदोन 195
प्रभु यरूशलेम की रक्षा करेगा 196
मसीह और उसकी सेना के विरुद्ध युद्ध 196
उसके पाँव जैतून पर्वत पर खड़े होंगे 197
घोड़े की लगाम तक ऊँचा रक्त 198

महान परमेश्वर का भोज 198
11. मसीह का सहस्राब्दी (हजार वर्षीय) राज्य और अंतिम न्याय (प्रकाशितवाक्य 20) 200
शैतान का 1000 वर्षों के लिए बाँधा जाना 200
क्लेश काल के संतों का पुनरुत्थान 200
राष्ट्रों का न्याय–भेड़ें और बकरियाँ 201
देश के लिए शुद्धिकरण का सोता 202
राजा मसीह का हजार वर्षीय राज्य 202
यीशु के अधीन राजा दाऊद इस्राएल पर शासन करेगा 203
यरूशलेम संसार की राजधानी होगा 203
इस्राएल को प्रतिज्ञात पूरी भूमि दी जाएगी 204
यरूशलेम—आराधना का केंद्र 204
यरूशलेम में आनन्द और उल्लास 205
हजार वर्षीय राज्य का मंन्दिर 205
हजार वर्षीय राज्य के मंदिर की आवश्यकता क्यों है? 205
हजार वर्षीय राज्य में जीवन 206
पृथ्वी प्रभु के ज्ञान से भर जाएगी 206
सम्पूर्ण उद्धार सबके लिए होगा 207
सृष्टि का स्वभाव बदल जाएगा 207
पृथ्वी पर शांति और स्थिरता–सृष्टि में सामंजस्य 208
निर्माण, रोपण और समृद्धि 209
अविनाशी देह वाले लोग और नाशवान देह वाले लोग 209
हजार वर्षीय राज्य में स्वाभाविक मनुष्य 210
पृथ्वी का पुनर्निर्माण और पुनर्वास 210
पापियों को प्रभु की आराधना करना सिखाया जाएगा 211
दीर्घायु और लंबा जीवन 211
क्या लोग पूरे 1000 वर्ष तक जीवित रहेंगे? 211
इस्राएल, मिस्र और अश्शूर–भविष्य की भविष्यवाणी 212
हजार वर्षीय राज्य के अंत में 213
शैतान की अस्थायी रिहाई और अंतिम विनाश 213

अविश्वासियों का पुनरुत्थान 213
महान श्वेत सिंहासन का न्याय 214
आग के द्वारा नवीनीकरण–नया आकाश और नई पृथ्वी 215

12. नया आकाश और नई पृथ्वी (प्रकाशितवाक्य 21 और 22) 216

प्रकाशितवाक्य 21: नया यरूशलेम 216
प्रकाशितवाक्य 22: जीवन की नदी और यीशु का शीघ्र आगमन 217

13. बाइबल की भविष्यद्वाणियाँ और अंत समय के चिन्ह 219

1) इस्राएल का एक राष्ट्र के रूप में स्थापित होना 219
2) यरूशलेम का इस्राएल द्वारा लिया जाना और युद्ध का केन्द्र बनना 220
3) तीसरा मंदिर–पुनर्निर्माण के लिए तैयार 221
4) 10 शासकों के गठबंधन की संभावना 222
5) वैश्विक आर्थिक प्रणाली की संभावना 223
6) रूस, ईरान, तुर्की, लीबिया, इथियोपिया, सूडान 223
7) शांति वार्ताएँ और भूमि के विभाजन की योजना 224
8) कलीसिया का परिपक्वता की ओर आना 224
9) सुसमाचार का राष्ट्रों तक पहुँचना 224
10) कलीसिया पर उत्पीड़न में वृद्धि 225
11) धोखा, वैश्विक आत्मिकता और झूठी आत्मिकता 225
12) ज्ञान और यात्रा में विस्फोटक वृद्धि 225
13) वैश्विक राजनीतिक परिस्थितियाँ 226
14) लोगों के हृदय में–भय, घृणा, आतंक, निराशा 226
15) मौसम और भू-भौतिक परिस्थितियाँ 227
16) महामारियाँ, रोग और विपत्तियाँ 227
17) लोगों की नैतिक स्थिति 227
एक पीढ़ी इन सब बातों को देखेगी 227
तैयार रहो, क्योंकि हम नहीं जानते कि कब! 228

परिचय

मैंने 13 वर्ष की आयु में अंतिम समय के इस विषय को पढ़ना और अध्ययन करना प्रारंभ किया और मैं यह जानकर चकित था, कि बाइबल आने वाली बातों के विषय में कितना कुछ कहती है। यह अत्यंत आकर्षक था। मुझे याद है कि 1982 की गर्मियों में, मैंने कई हफ़्तों तक प्रतिदिन कई घंटे परमेश्वर के वचन का अध्ययन किया—इस विषय पर और कई अन्य विषयों पर भी। पिछले लगभग साढ़े चार दशकों में, मैंने अंतिम समय की बाइबल भविष्यवाणी और अंतिम समयों के विषय में अध्ययन करने, सिखाने, चर्चा करने और प्रश्नों के उत्तर देने में अनगिनत घंटे बिताए हैं। समय के साथ बातें और अधिक स्पष्ट होती गईं, मेरी समझ गहरी होती गई, मेरा विश्वास दृढ़ होता गया, और जब भी मैं वचनों को पढ़ता हूँ, प्रभु में मेरा आनन्द और भी बढ़ता जाता है। इस सीख को एक पुस्तक के रूप में संकलित करना और इसे दूसरों के साथ साझा करना मेरे लिए अत्यंत आनन्द की बात है। जैसे-जैसे आप इस पुस्तक को पढ़ेंगे और पवित्र शास्त्र को पढ़ेंगे, मेरी प्रार्थना है कि आपका आत्मिक जीवन समृद्ध हो, प्रभु के साथ आपका व्यक्तिगत जीवन मजबूत हो, और बाइबल में दी गई अंतिम समय की भविष्यवाणीयों के प्रति आपकी समझ बढ़े।

इस पुस्तक का उद्देश्य, अंतिम समय से संबंधित भविष्यद्वाणीपूर्ण वचनों को समझने और उनकी व्याख्या करने के लिए एक ढाँचा प्रदान करना है। हम आवश्यक बाइबल ऐतिहासिक पृष्ठभूमि भी प्रस्तुत करते हैं। यह बाइबल की भविष्यवाणियों का पद-दर-पद अध्ययन नहीं है। हमारा उद्देश्य उन मुख्य घटनाओं को सरल रूप में बताना है जो अभी पूरी नहीं हुई हैं, और यह दिखाना है कि बाइबल के अनुसार वे किस क्रम और समय-संदर्भ में घटेंगी। हमने समय के चिन्हों की ओर भी

ध्यान दिलाया है, ताकि यह समझा जा सके कि प्रभु की वापसी अब निकट है। अधिकांश अध्यायों में हमने इन विषयों से जुड़े आम प्रश्नों के उत्तर बाइबल के वचनों के आधार पर दिए हैं।

हमारी प्रार्थना है कि अंतिम समय की बाइबल भविष्यवाणी की समझ हमें परमेश्वर के सामने सही स्थिति में रखे—हमारे दैनिक जीवन में, हमारे जीवन जीने के ढंग में, और उन सेवकाइयों में जिन्हें पूरा करने के लिए परमेश्वर ने हमें बुलाया जैसे-जैसे समय के चिन्ह हमारे सामने स्पष्ट होते जाएँ, हम उसके लिये पूरी उत्साह से भरे रहें, अपने कार्यों में तत्पर बने रहें, और अपेक्षा में बने रहें।

हमारा उद्देश्य दानिय्येल और प्रकाशितवाक्य पर अलग-अलग पुस्तकों द्वारा, गहन अध्ययन प्रस्तुत करना भी है, ताकि ये तीनों पुस्तकें मिलकर अंतिम समय की बाइबल भविष्यवाणी के अध्ययन के लिए एक प्रामाणिक मार्गदर्शिका बन सकें।

आत्मा और दुल्हिन दोनों कहती हैं, "आ!" और सुननेवाला भी कहे, "आ!" हे प्रभु, आजा! (प्रकाशितवाक्य 22:17)

परमेश्वर आपको आशीष दे!
आशीष रायचूर

1
एस्कैटोलॉजी: अंतिम समय का अध्ययन

एस्कैटोलॉजी का अर्थ, अंतिम समय से संबंधित घटनाओं का अध्ययन है। "एस्कैटोलॉजी" शब्द यूनानी भाषा के शब्द *"एस्कातोस"* से निकला है, जिसका अर्थ है, "अंतिम बातें"। यह पुस्तक इस विषय का अध्ययन प्रस्तुत करती है कि बाइबल अंतिम समय की घटनाओं, भविष्य में होने वाली विश्व घटनाओं और उसके बाद की बातों के बारे में क्या कहती है।

आज हम संसार की ओर दृष्टि डालते हैं, तो देखते हैं कि बहुत कुछ घटित हो रहा है।

राजनीतिक अस्थिरता और उथल-पुथल।

आतंकवाद, जातीय और साम्प्रदायिक असहिष्णुता के कारण भय और अशांति।

वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति, जिनके साथ अनेक अवसर तो हैं, पर साथ ही गंभीर चुनौतियाँ भी हैं।

पर्यावरण और जलवायु परिवर्तन तथा उनसे उत्पन्न समस्याएँ। सामाजिक संकट।

धार्मिक व आत्मिक चुनौतियाँ।

अंतिम समय के विषय में अध्ययन क्यों करें?

हम विश्वासियों के रूप में यह क्यों जानें, कि बाइबल अंतिम समयों के विषय में क्या कहती है?

यह विषय हमारे लिए इतना महत्वपूर्ण क्यों है?

हम विश्वास करते हैं कि अंतिम समयों का अध्ययन करना अत्यंत आवश्यक है...

1) क्योंकि परमेश्वर ने हमें अपने वचन में सृष्टि की रचना, छुटकारा, जीवन, मृत्यु, अनंतता और आने वाली घटनाओं के बारे में सत्य प्रकट किया है। ये हमें खोजने और समझने के लिए दिए गए हैं। परमेश्वर हमें ऐसा करने के लिए आमंत्रित करते हैं।

प्रकाशितवाक्य 1:1–3

1 यीशु मसीह का प्रकाशितवाक्य, जो उसे परमेश्वर ने इसलिये दिया कि अपने दासों को वे बातें, जिनका शीघ्र होना अवश्य है, दिखाए; और उसने अपने स्वर्गदूत को भेजकर उसके द्वारा अपने दास यूहन्ना को बताया,
2 जिसने परमेश्वर के वचन और यीशु मसीह की गवाही, अर्थात् जो कुछ उसने देखा था उसकी गवाही दी।
3 धन्य है वह जो इस भविष्यद्वाणी के वचन को पढ़ता है, और वे जो सुनते हैं और इसमें लिखी हुई बातों को मानते हैं; क्योंकि समय निकट है।

प्रकाशितवाक्य 22:7

"देख, मैं शीघ्र आनेवाला हूँ! धन्य है वह, जो इस पुस्तक की भविष्यद्वाणी की बातें मानता है।"

हालांकि, कुछ लोग प्रकाशितवाक्य और अन्य अंत समय की भविष्यवाणी संबंधी शास्त्रों को पढ़ने और अध्ययन करने से दूर रहते हैं, यह कहते हुए कि इसे समझना कठिन है, या फिर यह किसी की व्याख्या पर निर्भर है; फिर भी आरंभिक और अंतिम अध्यायों में प्रभु उन लोगों पर आशीष की घोषणा करते हैं, जो भविष्यवाणी के शब्दों को सुनते और उसके अनुसार जीवन जीते हैं। बाइबिल की भविष्यवाणी हमें सुनने, पालन करने और आशीष पाने के लिए दी गई है, जब हम प्रभु के साथ हमारे जीवन जीते हैं।

2) क्योंकि परमेश्वर ने हमें समय के संकेत प्रकट किए हैं, जिन पर हमें चौकस रहना चाहिए, ताकि हम अपने जीवन को सही ढंग

से व्यवस्थित कर सकें और परमेश्वर तथा मनुष्यों के सामने सम्मानपूर्वक जीवन जी सकें।

रोमियों 13:11–14

11 समय को पहिचान कर ऐसा ही करो, इसलिये कि अब तुम्हारे लिये नींद से जाग उठने की घड़ी आ पहुँची है; क्योंकि जिस समय हम ने विश्‍वास किया था, उस समय के विचार से अब हमारा उद्धार निकट है।
12 रात बहुत बीत गई है, और दिन निकलने पर है; इसलिये हम अन्धकार के कामों को त्याग कर ज्योति के हथियार बाँध लें।
13 जैसा दिन को शोभा देता है, वैसा ही हम सीधी चाल चलें, न कि लीला–क्रीड़ा और पियक्कड़पन में, न व्यभिचार और लुचपन में, और न झगड़े और डाह में।
14 वरन् प्रभु यीशु मसीह को पहिन लो, और शरीर की अभिलाषाओं को पूरा करने का उपाय न करो।

बाइबिल हमें जीवन में “सोते” रहने के बजाय, अपने जीवन को ऐसे जीने कहती है, जिससे हम “उस समय को जानें” जिसमें हम जी रहे हैं। हम उस समय को पहचानते हैं, जिसमें हम रहते हैं और अपने जीवन को इस तरह व्यवस्थित करते हैं, कि यीशु मसीह की महिमा होती रहे।

3) क्योंकि परमेश्वर चाहता है, कि हम आशा के लोग बनकर रहें, जहाँ हम, इस जीवन की चीजों से परे (ऊपर देखते हुए), भविष्य में प्रकट होने वाली बातों की ओर देखें।

1 यूहन्ना 3:2,3

2 हे प्रियो, अब हम परमेश्‍वर की सन्तान हैं, और अभी तक यह प्रगट नहीं हुआ कि हम क्या कुछ होंगे! इतना जानते हैं कि जब वह प्रगट होगा तो हम उसके समान होंगे, क्योंकि उसको वैसा ही देखेंगे जैसा वह है।
3 और जो कोई उस पर यह आशा रखता है, वह अपने आप को वैसा ही पवित्र करता है जैसा वह पवित्र है।

हम इस बहुमूल्य आशा के साथ जीवन जीते हैं। *“क्योंकि हम जानते हैं कि जिसने प्रभु यीशु को जिलाया, वही हमें भी यीशु में भागी जानकर जिलाएगा, और तुम्हारे साथ अपने सामने उपस्थित*

करेगा। क्योंकि सब वस्तुएँ तुम्हारे लिये हैं, ताकि अनुग्रह बहुतों के द्वारा अधिक होकर परमेश्वर की महिमा के लिये धन्यवाद भी बढ़ाए। इसलिये हम हियाव नहीं छोड़ते; यद्यपि हमारा बाहरी मनुष्यत्व नष्ट होता जाता है, तौभी हमारा भीतरी मनुष्यत्व दिन प्रतिदिन नया होता जाता है। क्योंकि हमारा पल भर का हल्का सा क्लेश हमारे लिये बहुत ही महत्वपूर्ण और अनन्त महिमा उत्पन्न करता जाता है; और हम तो देखी हुई वस्तुओं को नहीं परन्तु अनदेखी वस्तुओं को देखते रहते हैं; क्योंकि देखी हुई वस्तुएँ थोड़े ही दिन की हैं, परन्तु अनदेखी वस्तुएँ सदा बनी रहती हैं" (2 कुरिन्थियों 4:14–18)।

4) क्योंकि हम यह विश्वास करते हैं, कि परमेश्वर अपनी महिमामय योजना को प्रकट कर रहा है और मनुष्य के गिरने तथा पाप के सभी कार्य, शैतान और मृत्यु को उलटते हुए, सब बातों को अपने पास वापस छुड़ा लेगा। मसीह सब पर जयवंत है और सब कुछ उसके पाँवों तले कर दिया जाएगा।

1 कुरिन्थियों 15:24–26

24 इसके बाद अन्त होगा। उस समय वह सारी प्रधानता, और सारा अधिकार, और सामर्थ्य का अन्त करके राज्य को परमेश्वर पिता के हाथ में सौंप देगा।
25 क्योंकि जब तक वह अपने बैरियों को अपने पाँवों तले न ले आए, तब तक उसका राज्य करना अवश्य है।
26 सबसे अन्तिम बैरी जो नष्ट किया जाएगा, वह मृत्यु है।

इस कारण हम विजय और जीत के साथ जीवन जीते हैं, क्योंकि हम जानते हैं, कि अन्त में क्या होने वाला है। परमेश्वर सब कुछ नया करेगा।

5) ऐसी आशा के कारण, हम पृथ्वी पर दिए गए अपने दायित्व को पूरा करने में सक्रिय रहते हैं—अपने जीवन के द्वारा उसके अनुग्रह की गवाही देते हुए और सक्रिय रूप से उसकी सेवा करते हुए, ताकि सुसमाचार पृथ्वी के छोर तक पहुँचाया जा सके।

2 कुरिन्थियों 5:10,11
10 क्योंकि अवश्य है कि हम सब का हाल मसीह के न्याय आसन के सामने खुल जाए, कि हर एक व्यक्ति अपने अपने भले बुरे कामों का बदला जो उसने देह के द्वारा किए हों पाए।
11 इसलिये प्रभु का भय मानकर हम लोगों को समझाते हैं; परन्तु परमेश्वर पर हमारा हाल प्रगट है, और मेरी आशा यह है कि तुम्हारे विवेक पर भी प्रगट हुआ होगा।

हम पवित्र भय के साथ जीवन जीते हैं, यह जानते हुए कि हमें, स्वयं प्रभु के सामने अपना लेखा देना होगा।

6) क्योंकि भविष्यवाणी का प्रचार आवश्यक है, ताकि लोग मसीह पर विश्वास करें

रोमियों 16:25–27
25 अब जो तुम को मेरे सुसमाचार अर्थात् यीशु मसीह के संदेश के प्रचार के अनुसार स्थिर कर सकता है, उस भेद के प्रकाश के अनुसार जो सनातन से छिपा रहा,
26 परन्तु अब प्रगट होकर सनातन परमेश्वर की आज्ञा से भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों के द्वारा सब जातियों को बताया गया है कि वे विश्वास से आज्ञा माननेवाले हो जाएँ,
27 उसी एकमात्र बुद्धिमान परमेश्वर की यीशु मसीह के द्वारा युगानुयुग महिमा होती रहे। आमीन।

बाइबल यह संकेत देती है कि जो रहस्य पहले गुप्त रखे गए थे, वे अब सुसमाचार के द्वारा प्रकट कर दिए गए हैं। हमें यीशु मसीह और भविष्यद्वाणी संबंधी पवित्रशास्त्रों को सब जातियों में प्रचार करना चाहिए, ताकि लोग विश्वास करने से मसीह में आ सकें।

अंतिम समय का अध्ययन करने में हमारा दृष्टिकोण

1) हम बातों को पहले उनके शाब्दिक (लिटरल) अर्थ में लेते हैं, फिर उनके रूपकात्मक (फिगरेटिव) अर्थ में।

हम यह समझते हैं, कि अंत समय से संबंधित, बाइबल के कई पदों

में बहुत से रूपकात्मक तत्व और चित्रण पाए जाते हैं। वचनों के प्रति हमारा दृष्टिकोण यह है, कि हम किसी भी पद को पहले उसके शाब्दिक अर्थ में ही लेते हैं, जब तक कि ऐसा न करने का कोई ठोस कारण हो। उदाहरण के लिए, यदि शाब्दिक अर्थ असंभव या निरर्थक स्थिति उत्पन्न करता हो, तो यह समझा जाता है, कि वहाँ रूपकात्मक अर्थ अभिप्रेत है। इसके बाद, रूपकात्मक अर्थ की व्याख्या करने के लिए हम सबसे पहले उसके तात्कालिक संदर्भ में दिए गए संकेतों और स्पष्टीकरणों को देखते हैं। तत्पश्चात, यदि आवश्यकता हो, तो हम वचन के अन्य भागों में समान प्रतीकों को दिए गए अर्थों का उपयोग करते हैं। साथ ही, हम पुराने नियम की भविष्यद्वाणियों की व्याख्या, नए नियम के प्रकाश में करते हैं, और पुराने नियम को नए नियम से प्राप्त प्रकाश के द्वारा समझते हैं। *संपूर्ण पवित्रशास्त्र की व्याख्या, पवित्रशास्त्र के ही संदर्भ में की जाती है—तात्कालिक (अध्याय), विस्तृत (पुस्तक) और सम्पूर्ण (बाइबल) संदर्भ के अनुसार।*

2) हम अटकलों (स्पेक्युलेशन) या सनसनीखेज़ व्याख्याओं (सेंसेश्नलिज़म) में शामिल नहीं होते

हलाँकि परमेश्वर ने पवित्रशास्त्र में अंत समय के विषय में कुछ बातें प्रकट की हैं, फिर भी हम यह भी जानते हैं, कि बहुत-सी बातें प्रकट नहीं की गई हैं।

मत्ती 24:36

उस दिन और उस घड़ी के विषय में कोई नहीं जानता, न स्वर्ग के दूत और न पुत्र, परन्तु केवल पिता।

व्यवस्थाविवरण 29:29

गुप्त बातें हमारे परमेश्‍वर यहोवा के वश में हैं; परन्तु *जो* प्रगट की गई हैं वे सदा के लिये हमारे और हमारे वंश के वश में रहेंगी, इसलिये कि इस व्यवस्था की सब बातें पूरी की जाएँ।

हम विश्वास करते हैं, कि परमेश्वर ने अंत समय के कुछ विवरणों को अज्ञात इसलिए रखा है, ताकि हम अपने वर्तमान कार्य में लगे रहें और साथ ही, निरंतर तैयार और चौकस रहकर जीवन जीएँ। इस कारण, हम अंत समय के विषय में बोलते समय अटकलों, भविष्यवाणियों के अनुमान, दिखावे या सनसनीखेज बातों में नहीं पड़ते।

3) खुलापन, परन्तु बिना समझौता किए

हम बाइबल की भविष्यद्वाणियों की व्याख्या में विभिन्न दृष्टिकोणों के प्रति जागरूक हैं—डिस्पेंसेशनल प्रीमिलेनियलिज़्म, ऐतिहासिक प्रीमिलेनियलिज़्म, पोस्टमिलेनियलिज़्म एमिलेनियलिज़्म। प्रीमिलेनियलिस्टों भी *प्री-ट्रिब, मिड-ट्रिब* और *पोस्ट-ट्रिब* घटनाओं में विभाजित है। यद्यपि हम एसकाटोलॉजी (अंतकाल विज्ञान) के विभिन्न दृष्टिकोणों के लिए स्थान देते हैं, फिर भी हम यह समझते हैं, कि कुछ मुख्य तत्व ऐसे हैं, जिनसे कोई समझौता नहीं किया जा सकता। इनमें, परमेश्वर के राज्य की वास्तविकता, इस्राएल राष्ट्र के साथ उसका व्यवहार, कलीसिया, उसकी अनुग्रह की वाचा, एक ही आशा, एक ही विश्वास, एक ही प्रभु, एक ही आत्मा, मसीह का पुनः आगमन, मरे हुओं का पुनरुत्थान, सभी लोगों का न्याय, नया स्वर्ग और नई पृथ्वी शामिल हैं। हमारा ध्यान सदैव प्रभु यीशु, क्रूस पर उसके पूर्ण किए गए कार्य, अपने उद्धारकर्ता के रूप में विश्वास करने की आवश्यकता, और उसके महान आदेश पर रहेगा, जिस पर हमें सक्रिय रूप से लगे रहना है। हम बाइबल की भविष्यद्वाणियों की व्याख्या, अपनी सर्वोत्तम समझ के अनुसार करते हैं, संभावित भिन्नताओं के लिए खुले रहते हैं, और इस तथ्य को दृढ़ता से थामे रहते हैं, कि मसीह ही उद्धारकर्ता और प्रभु है। हमें प्रयास करना चाहिए कि हम अंत समय की घटनाओं के घटित होने के साथ-साथ, उनका अनुसरण करें और जहाँ उपयुक्त हो, उन्हें अंत समय की बाइबिल भविष्यवाणियों से जोड़कर समझें।

हमारा दृष्टिकोण मुख्य रूप से डिस्पेंसेशनल प्रीमिलेनियलिज़्म पर आधारित है। इसमें हम इस्राएल और कलीसिया दोनों के लिए परमेश्वर की उद्धारकारी योजना को मानते हैं । यह दृष्टिकोण प्रकाशितवाक्य की पुस्तक की शाब्दिक समझ पर टिका है। इसमें कलीसिया का महाक्लेश से पहले उठा लिया जाना, सात वर्ष का महान क्लेश, यरूशलेम में पुनर्निर्मित मंदिर (क्लेशकाल का मंदिर), पुनः स्थापित बलिदान प्रणाली, मसीह-विरोधी, हरमगिदोन का युद्ध, यीशु मसीह का दूसरा आगमन, और पृथ्वी पर यीशु का हजार वर्ष का राज्य शामिल है, जिसमें हजार वर्षीय मंदिर भी होगा।

डिस्पेंसेशनलिज़्म इतिहास को विभिन्न व्यवस्थाओं या युगों में विभाजित करने की शिक्षा है, जहाँ प्रत्येक व्यवस्था में परमेश्वर का मनुष्य के साथ व्यवहार करने का तरीका किसी न किसी रूप में भिन्न होता है। हम उन सात पारंपरिक व्यवस्थाओं से सहमत हैं, जो मानवता के साथ परमेश्वर के कार्य के विभिन्न कालों को पहचानती हैं।

1) निष्कलंकता (सृष्टि से पतन तक)
2) विवेक (पतन से जलप्रलय तक)
3) मानव शासन (जलप्रलय से बाबेल / अब्राहम तक)
4) प्रतिज्ञा (अब्राहम से मूसा तक)
5) व्यवस्था (मूसा से मसीह तक)
6) अनुग्रह (कलीसिया युग) (पिन्तेकुस्त से उठा लिए जाने तक)
7) राज्य (दूसरा आगमन से अनन्त अवस्था तक)

परमेश्वर, इस्राएल (यहूदी) और कलीसिया दोनों के साथ कार्य कर रहा है। इस्राएल के लोगों को उसने कई वाचाएँ दीं—अब्राहम की वाचा, व्यवस्था या मूसा की वाचा, राजा दाऊद की वाचा, और मसीह की नई वाचा। यीशु के द्वारा, यीशु पर विश्वास करने वाले सभी लोगों के

लिए उद्धार प्रस्तुत किया गया है, जिसमें यहूदी और अन्यजाति शामिल हैं, जो मिलकर एक नया मनुष्य बनते हैं और यह एक नई वाचा का भाग है।

जबकि हमारी स्थिति को **शास्त्रीय डिस्पेंसेशनल प्रीमिलेनियलिज़्म** के रूप में वर्णित किया जाएगा, फिर भी **ऐतिहासिक प्रीमिलेनियलिज़्म** के कुछ तत्व हैं, जिन्हें हम स्वीकार करते हैं, जिनमें शामिल हैं...

a) कलीसिया में कुछ भविष्यद्वाणियों की आत्मिक पूर्ति और बाद में, इस्राएल में उनकी शाब्दिक पूर्ति, और

b) कलीसिया के द्वारा वर्तमान समय में आत्मिक रूप से परमेश्वर का राज्य, और बाद में पृथ्वी पर मसीह के हजार वर्ष के राज्य के समय उसका शाब्दिक रूप से स्थापित होना।

4) पवित्रशास्त्र का सम्पूर्ण दृष्टिकोण रखना

हम अंत समय की भविष्यद्वाणियों को समझने और उनकी व्याख्या करने के लिए परमेश्वर के वचन को उसके सम्पूर्ण रूप में देखते हैं, न कि पवित्रशास्त्र के कुछ भागों को अलग-अलग लेकर। हम पवित्रशास्त्र की व्याख्या पवित्रशास्त्र के ही शेष भागों के संदर्भ में करते हैं।

5) पुराना नियम, नए नियम में समझाया गया है

हम यह मानते हैं कि जैसे-जैसे हम नए नियम में आगे बढ़ते हैं, पुराने नियम की भविष्यद्वाणियाँ और अधिक स्पष्ट होती जाती हैं । उसी तरह, नए नियम की भविष्यद्वाणियाँ तब अधिक समझ में आती हैं जब उन्हें पुराने नियम की संबंधित भविष्यद्वाणियों के प्रकाश में पढ़ा जाता है। दोनों एक-दूसरे से जुड़ी हुई हैं। नए नियम की भविष्यद्वाणियों को सही तरह से समझने के लिए हमें पुराने नियम की भविष्यद्वाणियों को जानना ज़रूरी है, और इसका उल्टा भी उतना ही सही है।

6) बाइबल आधारित प्रतिरूप-शास्त्र (बिबलिकल टाइपोलॉजी) का उपयोग

हम बाइबल की प्रकारिकी और भविष्यद्वाणी के प्रतीकों की व्याख्या करने में पवित्रशास्त्र की सीमाओं के भीतर ही रहते हैं।

उदाहरण के लिए, हम प्रकाशितवाक्य 12:1 में प्रयुक्त संबंध और प्रकारिकी को पहचानते हैं, जहाँ लिखा है, *"एक स्त्री जो सूर्य ओढ़े हुए थी, और चाँद उसके पाँवों तले था, और उसके सिर पर बारह तारों का मुकुट था"* और यूसुफ़ के स्वप्न में, *"फिर उसने एक और स्वप्न देखा, और अपने भाइयों से उसका भी यों वर्णन किया, "सुनो, मैं ने एक और स्वप्न देखा है, कि सूर्य और चन्द्रमा और ग्यारह तारे मुझे दण्डवत् कर रहे हैं"* (उत्पत्ति 37:9)। प्रकाशितवाक्य 12 में दी गई अतिरिक्त जानकारी के साथ, हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं, कि वह स्त्री इस्राएल राष्ट्र का प्रतीक है।

इसी प्रकार, दानिय्येल 7:2 में "पवनों" जैसे प्रतीक दिखाए गए हैं; चार पवन विभिन्न शक्तियों का प्रतिनिधित्व करते हैं (जैसे दैवी न्याय), जो "समुद्र" पर प्रभाव डालती हैं। "समुद्र", या "जल", लोगों, भीड़, जातियों और भाषाओं को दर्शाता है, जैसा कि प्रकाशितवाक्य 7:1 और प्रकाशितवाक्य 17:15 में समझाया गया है।

7) विभिन्न समय-काल (टाइमफ्रेम्स) को पहचानना

हम यह भी स्वीकार करते हैं, कि एक ही पद के भीतर या एक पद से अगले पद में समय-सीमा और दृष्टिकोण में बड़ा बदलाव हो सकता है।

उदाहरण के लिए, यशायाह 9:6,7 में लिखा है, *"क्योंकि हमारे लिये एक बालक उत्पन्न हुआ, हमें एक पुत्र दिया गया है; और प्रभुता उसके काँधे पर होगी, और उसका नाम अद्भुत युक्ति करनेवाला पराक्रमी परमेश्वर, अनन्तकाल का पिता, और शान्ति का राजकुमार*

रखा जाएगा। उसकी प्रभुता सर्वदा बढ़ती रहेगी, और उसकी शान्ति का अन्त न होगा, इसलिये वह उसको दाऊद की राजगद्दी पर इस समय से लेकर सर्वदा के लिये न्याय और धर्म के द्वारा स्थिर किए और सम्भाले रहेगा। सेनाओं के यहोवा की धुन के द्वारा यह हो जाएगा।" हम यह पहचानते हैं कि इस पद का एक भाग पूरा हो चुका है, जबकि उसके अगले भाग की पूर्ति के लिए लगभग 2000 वर्षों का अंतर है, भले ही दोनों को एक ही या दो वाक्यों में प्रस्तुत किया गया हो।

एक और उदाहरण यशायाह 65:17-25 है। यशायाह 65:17 में, हम एक दैवीय हस्तक्षेप देखते हैं जो एक नई व्यवस्था लाता है—नया स्वर्ग और नई पृथ्वी। इसके बाद के कुछ पद, यशायाह 65:18-25, उस स्थिति का वर्णन करते हैं, जो स्पष्ट रूप से हजार वर्षीय काल से संबंधित है। यह काल वास्तव में नए स्वर्ग और नई पृथ्वी से पहले घटित होता है, भले ही इन वचनों में इसका उल्लेख नए आकाश और नई पृथ्वी के बाद किया गया हो।

8) दोहरी (निकट की और दूर की) पूर्ति को पहचानें

कुछ भविष्यद्वाणियाँ निकट और दूर—दोनों अर्थों में भविष्यद्वाणी स्वरूप होती हैं। उदाहरण के लिए, यहेजकेल अध्याय 34, 36 और 37 में इस्राएल की पुनर्स्थापना और पुनः एकत्र किए जाने की भविष्यद्वाणी की गई है। इसका एक तात्कालिक (निकट) पूरा होना तब हुआ, जब बाबुल की बन्धुआई के बाद इस्राएल अपने देश में वापस लाया गया। इसकी एक दूर (अंत समय) की पूर्ति भी है, जब अनेक वर्षों तक बिखरे रहने के बाद, इस्राएल फिर से अपने ही देश में एक राष्ट्र के रूप में एकत्र किया जाएगा।

9) पूर्ति के संभावित अप्रत्याशित तरीकों के लिए तैयार रहें

अंत समय की बाइबल भविष्यद्वाणी रोमांचक है, और हम इसे अपनी सर्वोत्तम समझ के अनुसार समझने और उसकी व्याख्या करने का

पूरा प्रयास करेंगे। फिर भी, हमें इस संभावना के लिए खुले रहना चाहिए कि परमेश्वर हमें चकित कर सकता है और अपनी योजना की पूर्ति, पूरी तरह अप्रत्याशित तरीके से कर सकता है।

10) कुछ अंतिम समय की भविष्यद्वाणियों का समय निश्चित नहीं है

कुछ मामलों में, कुछ अंत समय की भविष्यद्वाणियों के समय के विषय में हमारी समझ निश्चित नहीं है। इसलिए, हम समय के साथ-साथ उनके पूरे होने की प्रतीक्षा करते हैं, न कि उनकी पूर्ति के लिए समय निर्धारित करके और उस अनुमानित समय के आधार पर अन्य निर्णय लेते लगते हैं। इस कारण, जहाँ समय-निर्धारण स्पष्ट नहीं है, वहाँ किसी निश्चित समय को तय करने या घटनाओं के क्रम को अंतिम मानने से बचना बेहतर है। हम एक संभावित समय या क्रम का सुझाव दे सकते हैं, लेकिन उसे केवल—एक संभावित समय—के रूप में ही रखें और उसके विषय में कठोर या मतवादी न बनें। इसके बजाय, हमें जो पहले से बताया गया है उसके प्रति जागरूक रहते हुए इस बात के लिए खुले रहना चाहिए कि वह निश्चित रूप से कब पूरा होगा।

हम किन शिक्षाओं को स्वीकार नहीं करते

यहाँ कुछ शिक्षाएँ और व्याख्याएँ दी गई हैं जिन्हें हम स्वीकार नहीं करते:

पूर्ववाद (प्रेटरिज़्म)

प्रेटरिज़्म यह मानता है कि नए नियम की बहुत-सी या सभी भविष्यद्वाणियाँ, विशेष रूप से प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में दी गई भविष्यद्वाणियाँ, तथा पुराने नियम के भविष्यद्वाणी संबंधी अंश, अतीत में ही पूरी हो चुकी हैं। प्रेटरिस्ट यह विश्वास करते हैं कि बाइबल की कई भविष्यद्वाणियाँ—जिनमें महान क्लेश, मसीह-विरोधी, और न्याय के लिए मसीह का आगमन शामिल है—ईस्वी सन् 70 में यरूशलेम और यहूदी मंदिर के विनाश के साथ पूरी हो चुकी हैं।

वे अपनी स्थिति का समर्थन मुख्यतः यह कहकर करते हैं कि...

(A) प्रकाशितवाक्य की पुस्तक प्रेरित यूहन्ना द्वारा ईस्वी सन् 68 तक लिखी जा चुकी थी।

(B) वे यह भी तर्क देते हैं, कि बाइबल की कई भविष्यद्वाणियाँ, विशेष रूप से प्रकाशितवाक्य में दी गई, पहले ही पूरी हो चुकी हैं, और अन्य भविष्य की घटनाओं की शाब्दिक भविष्यवाणियाँ नहीं हैं, बल्कि प्रतीकात्मक हैं। प्रेटरिस्ट यह दावा करते हैं कि प्रकाशितवाक्य में वर्णित घटनाएँ आत्मिक युद्धों और प्राचीन संसार पर परमेश्वर के न्याय की प्रतीकात्मक अभिव्यक्तियाँ हैं।

डिस्पेंसेशनल मिलेनियलिज़्म यह सिखाता है, कि एक उठा लिया जाना (रैप्चर) होगा, जिसमें विश्वासियों को क्लेश से पहले स्वर्ग ले जाया जाएगा—एक भविष्य का, शाब्दिक, सात वर्ष का क्लेश—और पृथ्वी पर मसीह का असल हजार वर्ष का राज्य होगा।

हम जानते हैं कि मंदिर ईस्वी सन् 70 में नष्ट हुआ था, जबकि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक प्रेरित यूहन्ना को लगभग ईस्वी सन् 96 के आसपास दी गई थी। ईस्वी सन् 96 की तिथि को इस तथ्य से दृढ़ समर्थन मिलता है कि...

(A) प्रेरित यूहन्ना को इफिसुस से पतमुस द्वीप पर निर्वासित किया गया था (प्रकाशितवाक्य 1:9), यह निर्वासन रोमी सम्राट दोमितियन के शासनकाल के दौरान हुए उत्पीड़न के समय, लगभग ईस्वी सन् 94–96 में हुआ। सम्राट दोमितियन ने ईस्वी सन् 81 से 96 तक शासन किया।

(B) प्रारंभिक कलीसियाई पिता इरेनियुस (ईस्वी सन् 130–202) और कलीसिया के इतिहासकार जैसे यूसेबियुस (ईस्वी सन् 265–339) इस बात की पुष्टि करते हैं, कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक दोमितियन के शासन के अंतिम समय में लिखी गई थी।

इसके अतिरिक्त, आइए हम एक सरल और मूल व्याख्यात्मक (हर्मेनेयूटिकल) दृष्टिकोण से कुछ बातों पर विचार करें:

(A) जब यीशु, प्रेरित यूहन्ना से बात कर रहे थे, तो उसके शब्द थे, *"वे बातें, जिनका शीघ्र होना अवश्य है"* (प्रकाशितवाक्य 1:1), *"जो बातें इसके बाद होनेवाली हैं"* (प्रकाशितवाक्य 1:19), और *"और मैं वे बातें तुझे दिखाऊँगा, जिनका इन बातों के बाद पूरा होना अवश्य है"* (प्रकाशितवाक्य 4:1)। ये शब्द स्पष्ट और साफ़ हैं कि जो कुछ यूहन्ना को प्रकट किया गया, वे भविष्य में घटित होने वाली घटनाएँ थीं। यह कहना कि यीशु का अभिप्राय वही नहीं था जो उसने कहा (क्या उसने असत्य कहा?!), और वह केवल इतिहास का वर्णन कर रहा था, पूर्णतः निरर्थक है।

(B) प्रकाशितवाक्य में वर्णित कई भविष्यद्वाणी घटनाएँ प्रथम शताब्दी में घटित ही नहीं हो सकती थीं (प्रकाशितवाक्य 13,17,18)।

(C) अंत समय की कई घटनाएँ अब तक घटित नहीं हुई हैं, और उन्हें केवल प्रतीकात्मक कहकर खारिज कर देना व्याख्यात्मक रूप से उचित नहीं है और अस्वीकार्य है। यह व्याख्यात्मक सिद्धांतों के अनुरूप नहीं है, और यदि हमें इसे स्वीकार करना पड़े, तो फिर पवित्रशास्त्र की किसी भी और हर एक बात को भी प्रतीकात्मक और रूपकात्मक माना जा सकता है।

अधिकारवादी धर्मशास्त्र (डोमिनियन थियोलॉजी)

सरल शब्दों में कहें तो, यह वह विश्वास है कि कलीसिया को पृथ्वी पर अधिकार स्थापित करना चाहिए और यीशु के आने से पहले राज्य को स्थापित करना चाहिए। वे यह मानते हैं कि "जातियों को चेला बनाना" का अर्थ है उन्हें ऊपर से नीचे तक मसीही बनाना, जब तक कि सभी जातियाँ उद्धार न पा लें और कलीसिया तथा "नए प्रेरितों" के द्वारा शासित न हों। हम यह अवश्य मानते हैं कि विश्वासियों के रूप

में आत्मिकता में हम अभी राज्य में हैं, और राज्य अभी हमारे भीतर है। हम यह भी जानते हैं कि कलीसिया को पृथ्वी पर आत्मिक रूप से राज्य को आगे बढ़ाने की आज्ञा दी गई है—लोगों को मसीह में विश्वास तक लाने, और संसार में नमक और ज्योति बनने के द्वारा। परन्तु, जैसा कि हम इस पुस्तक में स्पष्ट करते हैं, हम पूरी तरह जानते हैं कि वास्तविक राज्य—जहाँ यीशु राष्ट्रों पर शासन करेगा—वह स्वयं ही अपने लौटने पर स्थापित करेगा। तब वह अपने संतों को अपने साथ राज्य और शासन करने के लिए ठहराएगा, ताकि वे राष्ट्रों पर उसके शासन को संचालित करें।

2
बाइबल: एक भविष्यसूचक पुस्तक

बाइबल स्वयं के विषय में यह दावा करती है कि वह एक प्रेरित पुस्तक है, *"सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है..."* (2 तीमुथियुस 3:16)। बाइबल के लेखकों ने उन बातों को लिखा, जिन्हें वे स्वयं पूरी तरह नहीं समझते थे और उन घटनाओं के विषय में भी लिखा जो उनके समय से बहुत आगे की थीं, क्योंकि वे परमेश्वर की आत्मा से प्रेरित थे।

1 पतरस 1:10-12
10 इसी उद्धार के विषय में उन भविष्यद्वक्ताओं ने बहुत खोजबीन और जाँच–पड़ताल की, जिन्होंने उस अनुग्रह के विषय में जो तुम पर होने को था, भविष्यद्वाणी की थी।
11 उन्होंने इस बात की खोज की कि मसीह का आत्मा जो उनमें था, और पहले ही से मसीह के दु:खों की और उसके बाद होनेवाली महिमा की गवाही देता था, वह कौन से और कैसे समय की ओर संकेत करता था।
12 उन पर यह प्रगट किया गया कि वे अपनी नहीं वरन् तुम्हारी सेवा के लिये ये बातें कहा करते थे, जिनका समाचार अब तुम्हें उनके द्वारा मिला जिन्होंने पवित्र आत्मा के द्वारा, जो स्वर्ग से भेजा गया, तुम्हें सुसमाचार सुनाया; और इन बातों को स्वर्गदूत भी ध्यान से देखने की लालसा रखते हैं।

2 पतरस 1:20,21
20 पर पहले यह जान लो कि पवित्रशास्त्र की कोई भी भविष्यद्वाणी किसी के अपने ही विचारधारा के आधार पर पूर्ण नहीं होती,
21 क्योंकि कोई भी भविष्यद्वाणी मनुष्य की इच्छा से कभी नहीं हुई, पर भक्त जन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे।

पवित्रशास्त्र की दिव्य प्रेरणा का एक मुख्य संकेत भविष्यवाणी का विवरण, उसकी शुद्धता और उसकी पूर्ति है—वे घटनाएँ जो पहले

से कही गई थीं, कभी-कभी सैकड़ों या हज़ारों वर्ष पहले। बाइबल की भविष्यवाणी इतिहास है जो पहले से लिख दी गई है! पूरी हुई बाइबल की भविष्यवाणियाँ उसकी प्रामाणिकता का अकाट्य प्रमाण हैं।

बाइबल के पन्नों में लगभग 2,500 भविष्यवाणियाँ पाई जाती हैं; जिनमें से लगभग 2,000 अक्षरशः पूरी हो चुकी हैं—बिना किसी त्रुटि के। बाइबल में प्रभु के पुनः आगमन की भविष्यवाणी करने वाले 10,385 वचन हैं।

हम कुछ बाइबल की भविष्यवाणियों पर विचार करेंगे ताकि उसका खरापन और सामर्थ्य को दिखाया जा सके।

महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाएँ जिनकी पूर्व घोषणा की गई थी

हम कुछ प्रमुख ऐतिहासिक घटनाओं की एक संक्षिप्त सूची प्रस्तुत करते हैं, जिनकी भविष्यवाणी की गई थी और जो पवित्रशास्त्र में जैसे कहा गया था वैसे ही अक्षरशः पूरी हुईं। डॉ. ह्ग रॉस, जो भौतिकी में डिग्री और खगोल विज्ञान में पीएचडी रखने वाले एक खगोलशास्त्री हैं, ने इन भविष्यवाणियों के पूरा होने की संभावना की गणना की है। नीचे दी गई भविष्यवाणियों के लिये सभी संभाव्यता आकलन डॉ. ह्ग रॉस द्वारा निर्धारित किए गए हैं **[स्रोत: reasons.org]**।

1) मिस्र की दासता

उत्पत्ति 15:13,14

13 तब यहोवा ने अब्राम से कहा, "यह निश्चय जान कि तेरे वंश पराए देश में परदेशी होकर रहेंगे, और उस देश के लोगों के दास हो जाएँगे; और वे उनको चार सौ वर्ष तक दु:ख देंगे।
14 फिर जिस देश के वे दास होंगे उसको मैं दण्ड दूँगा: और उसके पश्चात् वे बड़ा धन वहाँ से लेकर निकल

परमेश्वर ने अब्राहम से कहा कि उसके लोग 400 वर्ष तक दासत्व में रहेंगे और फिर बहुत धन-संपत्ति लेकर बाहर निकलेगी। यह ठीक वैसे ही पूरा हुआ जैसा भविष्यवाणी में कहा गया था।

2) बाबुल की बन्धुवाई (80 वर्ष पहले भविष्यद्वाणी की गई)

यिर्मयाह 25:11
सारी जातियों का यह देश उजाड़ ही उजाड़ होगा, और ये सब जातियाँ सत्तर वर्ष तक बेबीलोन के राजा के आधीन रहेंगी।

यिर्मयाह 29:10
यहोवा यों कहता है: बेबीलोन के सत्तर वर्ष पूरे होने पर मैं तुम्हारी सुधि लूँगा, और अपना यह मनभावना वचन कि मैं तुम्हें इस स्थान में लौटा ले आऊँगा, पूरा करूँगा।

यहूदियों के बंधुआई में ले जाए जाने से लगभग 80 वर्ष पहले, यिर्मयाह ने इस्राएल के नाश और लोगों के बाबुल में 70 वर्ष तक बंदी बनाए जाने की भविष्यवाणी की थी। यह ठीक उसी प्रकार पूरा हुआ जैसा भविष्यवाणी में कहा गया था।

3) फारस के कुस्रू (साइरस) द्वारा इस्राएल की वापसी की आज्ञा

यशायाह 44:28
जो कुस्रू के विषय में कहता है, 'वह मेरा ठहराया हुआ चरवाहा है,
और मेरी इच्छा पूरी करेगा;'
यरूशलेम के विषय कहता है, 'वह बसाई जाएगी,'
और मन्दिर के विषय, 'तेरी नींव डाली जाएगी।' "

यशायाह 45:1
यहोवा अपने अभिषिक्त कुस्रू के विषय यों कहता है,
मैं ने उस के दाहिने हाथ को इसलिये थाम लिया है
कि उसके सामने जातियों को दबा दूँ
और राजाओं की कमर ढीली करूँ,

उसके सामने फाटकों को ऐसा खोल दूँ
कि वे फाटक बन्द न किए जाएँ।

फारस के राजा कुस्रू के जन्म से लगभग 150 वर्ष पहले, यशायाह ने उसका नाम लेकर कहा और घोषित किया कि यह मनुष्य क्या करेगा। लगभग 180 वर्ष बाद, कुस्रू ने वही सब किया जैसा यशायाह ने पहले से कहा था। एज्रा इस भविष्यवाणी के पूरा होने का लेखा लिखता है।

एज्रा 1:1,2
[1] फारस के राजा कुस्रू के पहले वर्ष में यहोवा ने फारस के राजा कुस्रू का मन उभारा कि यहोवा का जो वचन यिर्मयाह के मुँह से निकला था वह पूरा हो जाए, इसलिये उसने अपने समस्त राज्य में यह प्रचार करवाया और लिखवा भी दिया:
[2] "फारस का राजा कुस्रू यों कहता है: स्वर्ग के परमेश्वर यहोवा ने पृथ्वी भर का राज्य मुझे दिया है, और उसने मुझे आज्ञा दी कि यहूदा के यरूशलेम में मेरा एक भवन बनवा। (एज्रा 5:13,14 भी देखें)

इस भविष्यवाणी के संयोगवश पूरी हो जाने की संभावना= 10^15 में 1 थी।

4) मसीह के आगमन के लिए 483 वर्ष

दानिय्येल ने भविष्यवाणी की, कि यरूशलेम को फिर से बनाने की आज्ञा निकाले जाने के 483 वर्षों (69 सप्ताह, प्रत्येक सप्ताह=7 वर्ष) बाद मसीह आएँगे, ठुकराए जाएँगे और मारे जाएँगे (दानिय्येल 9:25,26)। यह ठीक वैसा ही हुआ जैसा कहा गया था। यीशु आए, उन्हें ठुकराया गया और उन्हें क्रूस पर चढ़ाया गया।

पहले सात सप्ताह (49 वर्ष) मन्दिर और नगर के पुनर्निर्माण के लिए, और उसके बाद 62 सप्ताह (434 वर्ष) मसीह के क्रूस पर चढ़ाए जाने तक।

दानिय्येल 9:25,26
25 इसलिये यह जान और समझ ले,
कि यरूशलेम को फिर बसाने की आज्ञा के निकलने से लेकर
अभिषिक्त प्रधान के समय तक
सात सप्ताह बीतेंगे। फिर बासठ सप्ताहों के *(कुल 69 सप्ताह)*
बीतने पर चौक और खाई समेत
वह नगर कष्ट के समय में फिर बसाया जाएगा।
26 उन बासठ सप्ताहों के बीतने पर
अभिषिक्त पुरुष काटा जाएगा: और उसके हाथ कुछ न लगेगा; ...

यरूशलेम की पुनर्स्थापना के विषय में आज्ञा फारस के राजा अर्तक्षत्र प्रथम ने इब्रानी याजक एज्रा को 458 ईसा-पूर्व में दी थी। 483 वर्ष बाद, यीशु मसीह की सेवकाई गलील में आरम्भ हुई। (स्मरण रहे कि कैलेंडर में हुए परिवर्तनों के कारण, अधिकांश इतिहासकार मसीह की सेवकाई के आरम्भ की तिथि लगभग ई. सन् 26 मानते हैं। यह भी ध्यान दें कि 1 ईसा-पूर्व से ई. सन् 1 के बीच केवल एक ही वर्ष होता है।) यीशु का क्रूस पर चढ़ाया जाना कुछ ही वर्षों बाद हुआ, और लगभग चार दशक बाद, ई. सन् 70 में, तीतुस द्वारा यरूशलेम का विनाश हुआ।

इसका विस्तृत वर्णन इस पुस्तक के अध्याय 5, *"दानिय्येल का 70वाँ सप्ताह–अंतिम सात वर्ष"* में किया गया है।

इस भविष्यवाणी के संयोगवश पूरी हो जाने की संभावना=10^5 में 1 थी।

5) मसीह के विषय में भविष्यवाणियाँ

मसीह के विषय में कुछ भविष्यवाणियाँ जो ठीक उसी तरह पूरी हुईं जैसे लिखी गई थीं...

- वह स्त्री का वंश होगा (उत्पत्ति 3:15)।

- वह अब्राहम, इसहाक और याकूब की वंशावली से आएगा (उत्पत्ति 12:3,17-19)।
- वह यहूदा का वंशज होगा (उत्पत्ति 49:10)।
- उसका जन्म बैतलहम में होगा (मीका 5:2)। लगभग 700 ईसा-पूर्व, भविष्यद्वक्ता मीका ने बैतलहम का नाम लिया जहाँ इस्राएल के मसीह का जन्म होगा (मीका 5:2)। मसीह के जन्म में इस भविष्यवाणी की पूर्ति, इतिहास के सबसे प्रसिद्ध और सबसे अधिक मनाए जाने वाले तथ्यों में से एक है।

इस भविष्यवाणी के संयोगवश पूरी हो जाने की संभावना= 10^5 में 1 थी।

- उसका जन्म एक कुंवारी से होगा (यशायाह 7:14)।
- वह कुछ समय के लिए मिस्र में रहेगा (होशे 11:1)।
- वह नासरत में बड़ा होगा और नासरी कहलाएगा (मत्ती 2:23)।
- उसके घनिष्ठ मित्र द्वारा उसके साथ विश्वासघात किया जाएगा (भजन संहिता 41:9)।
- उसके साथ तीस चाँदी के सिक्कों के लिए विश्वासघात किया जाएगा, और यह धन दफनाए जाने का स्थान खरीदने के लिए उपयोग में लाया जाएगा (जकर्याह 11:12,13; मत्ती 27:3-10)। यह भविष्यवाणी लगभग 500 वर्ष पहले की गई थी।

  इस भविष्यवाणी के संयोगवश पूरी हो जाने की संभावना= 10^11 में 1 थी।
- उसे क्रूस पर चढ़ाया जाएगा (भजन संहिता 22:14-16; यशायाह 53)।
- उसके क्रूस पर चढ़ाए जाने के समय उसकी कोई हड्डी नहीं तोड़ी

जाएगी (भजन संहिता 34:20)।

इस भविष्यवाणी के संयोगवश पूरी हो जाने की संभावना = 10^13 में 1 थी।

- वह देखेगा कि लोग उसके वस्त्रों के लिए चिट्ठियाँ डाल रहे हैं। (भजन संहिता 22:18)।
- वह फिर से जी उठेगा (भजन संहिता 16:10)

6) मन्दिर का विनाश (40 वर्ष पहले भविष्यवाणी की गई)

मत्ती 24:2
उसने उनसे कहा, "तुम यह सब देख रहे हो न! मैं तुम से सच कहता हूँ, यहाँ पत्थर पर पत्थर भी न छूटेगा जो ढाया न जाएगा।"

लगभग 40 वर्ष बाद, ई. सन् 70 में, यरूशलेम और मन्दिर का विनाश रोमी सेनापति तीतुस के द्वारा किया गया।

7) इस्राएल का तितर-बितर होना और फिर एकत्र होना (3,500 वर्ष पूर्व भविष्यवाणी की गई)

भविष्यद्वक्ताओं ने पहले ही कह दिया था, कि प्राचीन यहूदी राष्ट्र पराजित होगा और संसार के सब भागों में तितर-बितर कर दिया जाएगा। यह भविष्यवाणियाँ शब्दशः पूरी हुईं—पहले 607 ईसा-पूर्व में (बाबुलियों के द्वारा) और फिर ई. सन् 70 में (रोमियों के द्वारा)। भविष्यवाणियों में कहा गया था, कि यहूदी लोग अनेक पीढ़ियों तक संसार भर में बिखरे रहेंगे, परन्तु उनमें विलय नहीं होंगे, और यह कि एक दिन यहूदी लोग फिर से उस देश में लौटेंगे और वहाँ पुनः स्थापित किए जाएँगे (व्यवस्थाविवरण 29; यशायाह 11:11-13; यिर्मयाह 25:11; होशे 3:4,5 और लूका 21:23,24)। यह भविष्यवाणी कथन 3,500 वर्षों के इतिहास को समेटे हुए है, और इसका प्रत्येक पक्ष अक्षरशः पूरा हुआ, जब 1948 में इस्राएल की स्थापना हुई।

इस भविष्यवाणी के संयोगवश पूरी हो जाने की संभावना = 10^20 में 1 थी।

इनके समान, बाइबल में सैकड़ों अन्य भविष्यवाणियाँ भी हैं। बाइबल की भविष्यवाणी सटीक और विश्वसनीय है।

क्या हम अंतिम समय में रह रहे हैं?

बाइबल हमें अंतिम समय के चिन्ह प्रस्तुत करती है। लगभग 500 ऐसी भविष्यवाणियाँ हैं, जो अंतिम समय के विषय में पूरी हो चुकी हैं, और यह स्पष्ट करती हैं कि प्रभु का लौटना निकट है।

यीशु ने हमें आज्ञा दी कि हम उसके लौटने की प्रतीक्षा करें और उसकी लालसा रखें। यह वही पीढ़ी है, जो प्रभु के लौटने को देख सकती है, और यह अत्यन्त आवश्यक है कि हम तैयार रहें।

मत्ती 24:1-51 और लूका 21:5-36 समानान्तर खण्ड हैं, जहाँ प्रभु यीशु अंतिम समय के चिन्हों का वर्णन करते हैं। इसे अक्सर "जैतून पर्वत की भविष्यवाणी" कहा जाता है, जो जैतून पर्वत से कही गई थी। हम इस अध्याय को यहाँ कुछ संक्षिप्त टिप्पणियों के साथ प्रस्तुत करते हैं। बाद के अध्यायों में हम इन पदों का विस्तार से अध्ययन करेंगे।

मत्ती 24:1,2

1 जब यीशु मन्दिर से निकलकर जा रहा था, तो उसके चेले उसको मन्दिर की रचना दिखाने के लिये उसके पास आए।
2 उसने उनसे कहा, "तुम यह सब देख रहे हो न! मैं तुम से सच कहता हूँ, यहाँ पत्थर पर पत्थर भी न छूटेगा जो ढाया न जाएगा।"

यीशु ने यरूशलेम के मन्दिर के विनाश के विषय में भविष्यवाणी की थी, जो ई. सन् 70 में पूरी हुई।

मत्ती 24:3-5

3 जब वह जैतून पहाड़ पर बैठा था, तो चेलों ने एकान्त में उसके पास आकर

कहा, "हमें बता कि ये बातें कब होंगी? तेरे आने का और जगत के अन्त का क्या चिह्न होगा?"
4 यीशु ने उनको उत्तर दिया, "सावधान रहो! कोई तुम्हें न भरमाने पाए,
5 क्योंकि बहुत से ऐसे होंगे जो मेरे नाम से आकर कहेंगे, 'मैं मसीह हूँ', और बहुतों को भरमाएँगे।

यीशु ने जो पहले चिन्ह बताए थे, उनमें से एक धोखा था—जहाँ लोग सत्य से भटककर झूठी बातों, व्यक्तियों और प्रणालियों की ओर खिंच जाएँगे, जो उन्हें सत्य से दूर ले जाती हैं।

मत्ती 24:6-8
6 तुम लड़ाइयों और लड़ाइयों की चर्चा सुनोगे, तो घबरा न जाना क्योंकि इन का होना अवश्य है, परन्तु उस समय अन्त न होगा।
7 क्योंकि जाति पर जाति, और राज्य पर राज्य चढ़ाई करेगा, और जगह जगह अकाल पड़ेंगे, और भूकम्प होंगे।
8 ये सब बातें पीड़ाओं का आरम्भ होंगी।

यीशु द्वारा बताए गए कुछ चिन्ह ऐसे थे जो किसी विशेष समय पर घटित होने वाली, अद्वितीय घटनाओं से सम्बन्धित थे, जैसे मन्दिर का विनाश।

यीशु द्वारा बताए गए कई चिन्ह ऐसे थे, जो समय-समय पर दोहराए जाने वाले रुझानों और विनाशकारी घटनाओं के रूप में प्रकट होते। ये समय के साथ बार-बार घटित होते रहेंगे, परन्तु जैसे-जैसे हम उसके दूसरे आगमन के निकट पहुँचेंगे, ये तीव्र (परिमाण और आवृत्ति दोनों में वृद्धि) होते जाएँगे। इनके उदाहरण हैं, युद्ध, युद्धों की चर्चाएँ, अकाल, महामारियाँ, भूकम्प आदि। एक और उदाहरण है "बहुत से मसीह-विरोधी", जो आ चुके हैं; ये केवल उस "मसीह-विरोधी" के अग्रदूत हैं जो आने वाला है—*"हे लड़को, यह अन्तिम समय है; और जैसा तुम ने सुना है कि मसीह का विरोधी आनेवाला है, उसके अनुसार अब भी बहुत से मसीह–विरोधी उठ खड़े हुए हैं; इससे हम जानते हैं*

कि यह अन्तिम समय है।" (1 यूहन्ना 2:18)

मत्ती 24:9
"तब वे क्लेश देने के लिये तुम्हें पकड़वाएँगे, और तुम्हें मार डालेंगे, और मेरे नाम के कारण सब जातियों के लोग तुम से बैर रखेंगे।

प्रभु यीशु ने विश्वासियों पर अत्याचार के बढ़ने की चेतावनी दी थी।

मत्ती 24:10
तब बहुत से ठोकर खाएँगे, और एक दूसरे को पकड़वाएँगे, और एक दूसरे से बैर रखेंगे।

लोगों के बीच घृणा, विश्वासघात और अपराध बढ़ेगा। आपसी सम्बन्धों में टूट-फूट में वृद्धि होगी।

मत्ती 24:11
बहुत से झूठे भविष्यद्वक्ता उठ खड़े होंगे, और बहुतों को भरमाएँगे।

एक बार फिर, उसने बढ़ते हुए धोखे के विषय में भविष्यवाणी की, जो लोगों को विश्वास से दूर ले जाएगा।

मत्ती 24:12,13
12 अधर्म के बढ़ने से बहुतों का प्रेम ठण्डा पड़ जाएगा,
13 परन्तु जो अन्त तक धीरज धरे रहेगा, उसी का उद्धार होगा।

पाप, नैतिकता का पतन, और अधर्म इस हद तक बढ़ जाएगा, कि विश्वास करने वालों में से भी बहुतों का प्रेम ठंडा हो जाएगा। परन्तु जो अन्त तक धीरज धरे रहेंगे, वे उद्धार पाएँगे।

मत्ती 24:14
और राज्य का यह सुसमाचार सारे जगत में प्रचार किया जाएगा, कि सब जातियों पर गवाही हो, तब अन्त आ जाएगा।

अब सुसमाचार का प्रचार पूरे संसार में इस प्रकार किया जा रहा है, जैसा पहले कभी नहीं हुआ।

मत्ती 24:15

“इसलिये जब तुम उस ‘उजाड़नेवाली घृणित’ वस्तु को जिसकी चर्चा दानिय्येल भविष्यद्वक्ता के द्वारा हुई थी, पवित्रस्थान में खड़ी हुई देखो (जो पढ़े, वह समझे),

प्रभु यीशु यहाँ दानिय्येल की भविष्यवाणी का उल्लेख करते हुए, यह प्रमाणित करते हैं, कि दानिय्येल की भविष्यवाणी की थी (दानिय्येल 9:27), जो सत्य है, और यह तथ्य भी कि “पवित्र स्थान” होना आवश्यक है जहाँ “बलि और भेंट” चढ़ाई जाएगी, जिसे मसीह-विरोधी के द्वारा रोक दिया जाएगा। इसलिए, यह आवश्यक हो जाता है कि मंदिर, मंदिर पर्वत पर स्थित हो। (इस पर आगे और विवरण दिया जाएगा।)

मत्ती 24:16-22

16 तब जो यहूदिया में हों वे पहाड़ों पर भाग जाएँ।
17 जो छत पर हो, वह अपने घर में से सामान लेने को न उतरे;
18 और जो खेत में हो, वह अपना कपड़ा लेने को पीछे न लौटे।
19 “उन दिनों में जो गर्भवती और दूध पिलाती होंगी, उन के लिये हाय, हाय।
20 प्रार्थना किया करो कि तुम्हें जाड़े में या सब्त के दिन भागना न पड़े।
21 क्योंकि उस समय ऐसा भारी क्लेश होगा, जैसा जगत के आरम्भ से न अब तक हुआ और न कभी होगा।
22 यदि वे दिन घटाए न जाते तो कोई प्राणी न बचता, परन्तु चुने हुओं के कारण वे दिन घटाए जाएँगे।

यीशु मसीह स्वयं एक ऐसे भविष्यकाल की बात करते हैं, जो बेहद डरावना होगा, जहाँ परमेश्वर के मानवीय मामलों में प्रत्यक्ष हस्तक्षेप से पहले, लगातार विनाशकारी घटनाएँ घटेंगी।

मत्ती 24:23-34

23उस समय यदि कोई तुम से कहे, ‘देखो, मसीह यहाँ है!’ या ‘वहाँ है!’ तो

विश्वास न करना।
24 "क्योंकि झूठे मसीह और झूठे भविष्यद्वक्ता उठ खड़े होंगे, और बड़े चिह्न,
और अद्‌भुत काम दिखाएँगे कि यदि हो सके तो चुने हुओं को भी भरमा दें।
25 देखो, मैं ने पहले से तुम से यह सब कुछ कह दिया है।
26 इसलिये यदि वे तुम से कहें, 'देखो, वह जंगल में है', तो बाहर न निकल
जाना; या 'देखो, वह कोठरियों में है', तो विश्वास न करना।*
27 "क्योंकि जैसे बिजली पूर्व से निकलकर पश्चिम तक चमकती है, वैसे ही
मनुष्य के पुत्र का भी आना होगा।
28 जहाँ लोथ हो, वहीं गिद्ध इकट्ठे होंगे।
29 "उन दिनों के क्लेश के तुरन्त बाद सूर्य अन्धियारा हो जाएगा, और चन्द्रमा
का प्रकाश जाता रहेगा, और तारे आकाश से गिर पड़ेंगे और आकाश की
शक्तियाँ हिलाई जाएँगी।
30 तब मनुष्य के पुत्र का चिह्न आकाश में दिखाई देगा, और तब पृथ्वी के सब
कुलों के लोग छाती पीटेंगे; और मनुष्य के पुत्र को बड़ी सामर्थ्य और ऐश्वर्य के
साथ आकाश के बादलों पर आते देखेंगे।
31 वह तुरही के बड़े शब्द के साथ अपने दूतों को भेजेगा, और वे आकाश के
इस छोर से उस छोर तक, चारों दिशाओं से उसके चुने हुओं को इकट्ठा करेंगे।
32 "अंजीर के पेड़ से यह दृष्टान्त सीखो: जब उसकी डाली कोमल हो जाती
और पत्ते निकलने लगते हैं, तो तुम जान लेते हो कि ग्रीष्म काल निकट है।
33 इसी रीति से जब तुम इन सब बातों को देखो, तो जान लो कि वह निकट है,
वरन् द्वार ही पर है।
34 मैं तुम से सच कहता हूँ कि जब तक ये सब बातें पूरी न हो लें, तब तक इस
पीढ़ी का अन्त नहीं होगा।

प्रभु यीशु यहाँ यह संकेत करते हैं, कि एक ही पीढ़ी उन सभी अन्त समय की घटनाओं को देखेगी, जिनके विषय में उसने कहा है।

मत्ती 24:35,36
35 आकाश और पृथ्वी टल जाएँगे, परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगी।
36 "उस दिन और उस घड़ी के विषय में कोई नहीं जानता, न स्वर्ग के दूत और
न पुत्र, परन्तु केवल पिता।

यीशु ने यह स्पष्ट कर दिया, कि उसके लौटने का ठीक समय कोई नहीं जान सकता (मत्ती 24:36), परन्तु जैसे-जैसे हम अन्त के

निकट आते हैं, हम चिन्हों पर दृष्टि रख सकते हैं।

मत्ती 24:37-51
37 जैसे नूह के दिन थे, वैसा ही मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा।
38 क्योंकि जैसे जल–प्रलय से पहले के दिनों में, जिस दिन तक कि नूह जहाज पर न चढ़ा, उस दिन तक लोग खाते–पीते थे, और उनमें विवाह होते थे।
39 और जब तक जल–प्रलय आकर उन सब को बहा न ले गया, तब तक उनको कुछ भी मालूम न पड़ा; वैसे ही मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा।
40 उस समय दो जन खेत में होंगे, एक ले लिया जाएगा और दूसरा छोड़ दिया जाएगा।
41 दो स्त्रियाँ चक्की पीसती रहेंगी, एक ले ली जाएगी और दूसरी छोड़ दी जाएगी।
42 इसलिये जागते रहो, क्योंकि तुम नहीं जानते कि तुम्हारा प्रभु किस दिन आएगा।
43 परन्तु यह जान लो कि यदि घर का स्वामी जानता होता कि चोर किस पहर आएगा तो जागता रहता, और अपने घर में सेंध लगने न देता।
44 इसलिये तुम भी तैयार रहो, क्योंकि जिस घड़ी के विषय में तुम सोचते भी नहीं हो, उसी घड़ी मनुष्य का पुत्र आ जाएगा।
45 "अत: वह विश्वासयोग्य और बुद्धिमान दास कौन है, जिसे स्वामी ने अपने नौकर–चाकरों पर सरदार ठहराया कि समय पर उन्हें भोजन दे?
46 धन्य है वह दास, जिसे उसका स्वामी आकर ऐसा ही करते पाए।
47 मैं तुम से सच कहता हूँ, वह उसे अपनी सारी संपत्ति पर अधिकारी ठहराएगा।
48 परन्तु यदि वह दुष्ट दास सोचने लगे कि मेरे स्वामी के आने में देर है,
49 और अपने साथी दासों को पीटने लगे, और पियक्कड़ों के साथ खाए–पीए।
50 तो उस दास का स्वामी ऐसे दिन आएगा, जब वह उसकी बाट न जोहता हो, और ऐसी घड़ी जिसे वह न जानता हो,
51 तब वह उसे भारी ताड़ना देगा और उसका भाग कपटियों के साथ ठहराएगा: वहाँ रोना और दाँत पीसना होगा।

क्या हम अंतिम समय की पीढ़ी हैं?

लूका 21:32
मैं तुम से सच कहता हूँ कि जब तक ये सब बातें न हो लें, तब तक इस पीढ़ी का कदापि अन्त न होगा।

हमें अन्त समय के चिन्हों के विषय में सतर्क रहना चाहिए, यह देखने के लिये कि हम अन्त समय की पीढ़ी हो सकते हैं। जब हम अपने पृथ्वी के दायित्वों को निभाते हैं, तब भी हमें सदा परमेश्वर के सामने पवित्रता और तत्परता की अवस्था में जीवन जीना चाहिए। हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम समय के चिन्हों को सावधानी से देखें और उसके लौटने के लिये सदा तैयार रहें।

अंतिम समय से संबंधित पवित्र शास्त्र की शब्दावली

बाइबल की भविष्यवाणी **उत्तरकाल**, **अन्तिम वर्षों**, **अन्तिम दिन** और **उत्तरकालीन दिनों**, **समय का अन्त** और **अन्त के समय** के विषय में बात करती है।

पवित्र शास्त्र में प्रयुक्त विभिन्न शब्दों (वाक्यांशों) को समझना उपयोगी है, जो अन्त समय के सन्दर्भ में उपयोग किए गए हैं।

"अन्तिम दिन" (उत्पत्ति 49:1; प्रेरितों के काम 2:17; 2 तीमुथियुस 3:1; इब्रानियों 1:2; याकूब 5:3; 2 पतरस 3:3)

"अन्त का समय" (दानिय्येल 8:17; दानिय्येल 11:35,40; दानिय्येल 12:4,9)

"उत्तरकालीन दिन" (गिनती 24:14; व्यवस्थाविवरण 4:30; व्यवस्थाविवरण 31:29; अय्यूब 42:12; नीतिवचन 19:20; यशायाह 2:2; यिर्मयाह 23:20; यिर्मयाह 30:24; यिर्मयाह 48:47; यिर्मयाह 49:39; यहेजकेल 38:16; दानिय्येल 2:28; दानिय्येल 10:14; होशे 3:5; मीका 4:1)

"यहोवा का दिन" (यशायाह 2:12; यशायाह 13:6,9; यशायाह 34:8; यशायाह 58:13; यिर्मयाह 46:10; विलापगीत 2:22; यहेजकेल 13:5; यहेजकेल 30:3; योएल 1:15; योएल 2:1,11,31; योएल 3:14; आमोस 5:18,20; ओबद्याह 1:15; सपन्याह 1:7,8,14,18; सपन्याह 2:2,3;

जकर्याह 14:1; मलाकी 4:5; प्रेरितों के काम 2:20; 1 कुरिन्थियों 5:5; 2 कुरिन्थियों 1:14; 1 थिस्सलुनीकियों 5:2; 2 थिस्सलुनीकियों 2:2; 2 पतरस 3:10)

"क्रोध का दिन" (अय्यूब 21:30; नीतिवचन 11:4; सपन्याह 1:15; रोमियों 2:5)

"अन्तिम दिन" (नहेम्याह 8:18; यूहन्ना 6:39,40,44,54; यूहन्ना 7:37; यूहन्ना 11:24; यूहन्ना 12:48)

"युग का अन्त" (मत्ती 13:39,49; मत्ती 24:3; मत्ती 28:20)

"युगों के अन्त" (1 कुरिन्थियों 10:11)

"युग के अन्त" (इब्रानियों 9:26)

"अन्तिम घड़ी" (1 यूहन्ना 2:18)

"प्रभु का आगमन" (1 थिस्सलुनीकियों 4:15; 1 थिस्सलुनीकियों 5:23; याकूब 5:7,8)

"प्रकट होना" (1 तीमुथियुस 6:14; 2 तीमुथियुस 1:10; 2 तीमुथियुस 4:1,8; तीतुस 2:13)

"यीशु मसीह का प्रकाशन" (गलातियों 1:12; 1 पतरस 1:7,13; प्रकाशितवाक्य 1:1)

"जब वह प्रकट होगा" (मलाकी 3:2; 1 यूहन्ना 2:28)

"उसका आगमन" (1 शमूएल 16:4; मलाकी 3:2; मत्ती 24:48; लूका 12:45; प्रेरितों के काम 13:24; 1 कुरिन्थियों 15:23; 2 कुरिन्थियों 7:7; 1 थिस्सलुनीकियों 2:19; 2 थिस्सलुनीकियों 2:8; 2 पतरस 3:4; 1 यूहन्ना 2:28)

हम यह सीखते हैं कि ये वाक्यांश भविष्य में किसी भी समयावधि के संदर्भ में उपयोग किए जाते हैं। कुछ मामलों में, इनका प्रयोग भविष्य में किसी विशेष दिन / घटना के लिये किया जाता है, जबकि अन्य मामलों में, ये पूरे एक कालखंड के लिये प्रयुक्त हो सकते हैं, उदाहरण के लिये वह समय जो मसीह के प्रथम आगमन से आरम्भ होता है। इसलिए, इन वाक्यांशों को उस सन्दर्भ के भीतर ही समझा जाना चाहिए, जिसमें उनका उपयोग किया गया है। उदाहरण के तौर पर, *"अन्तिम दिन"* या *"युगों के अन्त"* नए नियम में आरम्भ हुए और अब लगभग 2000 वर्षों की अवधि से निरन्तर चलते आ रहे हैं।

3
इस्राएल: बाइबल की भविष्यवाणी में भूमि और उसके लोग

अब्राहम और उसके वंशजों को प्रतिज्ञा की गई भूमि

ऊर और हारान दोनों ही मेसोपोटामिया के नगर थे, जो फरात यूफ्रेट्स और दजला टिग्रिस नदियों के बीच के क्षेत्र को दर्शाता है।

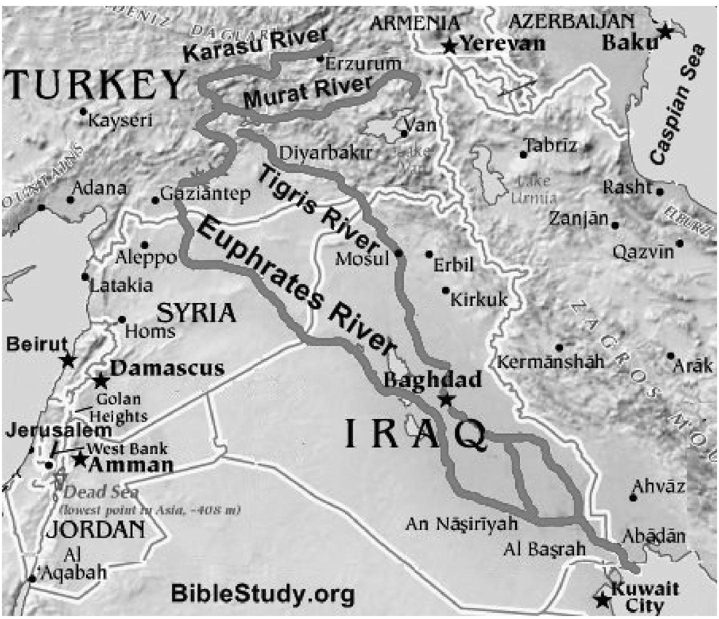

अब्राहम को हारान से बुलाया गया था, और परमेश्वर ने उसे एक देश, वंश और जातियों के लिए आशीष का वादा दिया था।

उत्पत्ति 12:1-4

1 यहोवा ने अब्राम से कहा, "अपने देश, और अपने कुटुम्बियों, और अपने

पिता के घर को छोड़कर उस देश में चला जा जो मैं तुझे दिखाऊँगा।
2 और मैं तुझ से एक बड़ी जाति बनाऊँगा, और तुझे आशीष दूँगा, और तेरा नाम महान् करूँगा, और तू आशीष का मूल होगा।
3 जो तुझे आशीर्वाद दें, उन्हें मैं आशीष दूँगा; और जो तुझे कोसे, उसे मैं शाप दूँगा; और भूमण्डल के सारे कुल तेरे द्वारा आशीष पाएँगे।"
4 यहोवा के इस वचन के अनुसार अब्राम चला, और लूत भी उसके संग चला; और जब अब्राम हारान देश से निकला उस समय वह पचहत्तर वर्ष का था।

यह वादा सबसे पहले अब्राहम को दिया गया (उत्पत्ति 15:18-21), फिर उसके पुत्र इसहाक से इसकी पुष्टि की गई (उत्पत्ति 26:3), और फिर इसहाक के पुत्र याकूब से, जो अब्राहम का पोता था (उत्पत्ति 28:13)। प्रतिज्ञात देश को मिस्र की नदी (नाइल नदी) से फ़ुरात नदी तक के क्षेत्र के रूप में वर्णित किया गया था (निर्गमन 23:31)।

उत्पत्ति 15:18
इसी दिन यहोवा ने अब्राम के साथ यह वाचा बाँधी, "मिस्र के महानद से लेकर परात नामक बड़े नद तक जितना देश है-

व्यवस्थाविवरण 11:24
जिस जिस स्थान पर तुम्हारे पाँव के तलवे पड़ें वे सब तुम्हारे ही हो जाएँगे, अर्थात् जंगल से लबानोन तक, और परात नामक महानद से लेकर पश्चिम के समुद्र तक तुम्हारी सीमा होगी।

यहोशू 1:4
जंगल और उस लबानोन से लेकर परात महानद तक, और सूर्यास्त की ओर महासमुद्र तक हित्तियों का सारा देश तुम्हारा भाग ठहरेगा।

अब्राहम और उसके वंशजों को वादा की गई भूमि नील नदी से फ़ुरात नदी तक, पश्चिम में भूमध्य सागर और *"हित्तियों की सारी भूमि"* तक फैली हुई है। यह हिस्सा अस्पष्ट है, और अधिकांशतः लेबनान और सीरिया के कुछ हिस्सों को फ़ुरात नदी तक शामिल माना जाता है। हित्तियों का उल्लेख बाइबल में 50 से अधिक बार किया गया है।

वे हेत के वंशज थे, जो कनान के पुत्र (और नूह के परपोते, उत्पत्ति 10:15) थे। उन्होंने सीरिया और पूर्वी तुर्की के क्षेत्रों पर शासन किया और क्षेत्र के लिए मिस्र और बाबुल के साथ युद्ध किया।

समय के साथ, परमेश्वर ने अपनी प्रजा इस्राएल को, वाचाओं की एक श्रृंखला दी—अब्राहमी वाचा, व्यवस्था या मूसा की वाचा, राजकीय दाऊदी वाचा, और एक नई मसीहाई वाचा। मूसा, यहोशू, न्यायियों और राजाओं के बाद, यहूदी लोग पूरी तरह से अपनी भूमि से तितर-बितर हो गए। उस समय से, लगभग 14 अलग-अलग जातियों ने इस्राएल की भूमि पर कब्ज़ा किया। यह विचार कि इस्राएल कभी फिर से एक राष्ट्र बनेगा, पूर्णतः असंभव प्रतीत होता था।

मध्य पूर्व का इतिहास–एक रूपरेखा

मध्य पूर्व का इतिहास, विशेष रूप से इस्राएल के आसपास के क्षेत्र का, विभिन्न साम्राज्यों और सभ्यताओं के लगातार शासन के द्वारा चिह्नित है, जिन्होंने हजारों वर्षों तक इस क्षेत्र पर शासन किया।

नीचे प्रमुख ऐतिहासिक कालों की एक सूची दी गई है, साथ ही प्रत्येक के अनुमानित प्रारंभ और समाप्ति तिथियाँ भी दी गई हैं।

1) प्रारंभिक कांस्य युग (ईसा पूर्व 3300-2000 वर्ष)

शहरी संस्कृति का उदय, नगर-राज्यों का विकास, प्रारंभिक लिपि प्रणाली और व्यापार नेटवर्क का विकास।

2) मध्य कांस्य युग (ईसा पूर्व 2000-1550 वर्ष)

कनानी नगर-राज्यों का उदय, किलों और सुरक्षा संरचनाओं का विकास, और आसपास के साम्राज्यों (उदाहरण के लिए, मिस्री और मेसोपोटामियाई) का प्रभाव।

3) उत्तर कांस्य युग (ईसा पूर्व 1550-1200 वर्ष)
कनान पर मिस्र के नव साम्राज्य का प्रभुत्व, व्यापार में वृद्धि, और पूर्वी भूमध्यसागर में सांस्कृतिक आदान-प्रदान।

4) मिस्रीय काल (लगभग ईसा पूर्व 1550-1200 वर्ष)
नव साम्राज्य का प्रभाव
कनान पर मिस्र का नियंत्रण, मंदिरों का निर्माण, और विस्तृत व्यापार।

5) लोहे का युग I (ईसा पूर्व 1200-1000 वर्ष)
इस्राएलियों के बसने और न्यायाधीशों के काल का समय, मिस्र के प्रभाव में कमी, और कनान में छोटे-छोटे राज्य का उदय।

6) लोहे का युग II (ईसा पूर्व 1000-586 वर्ष)
संयुक्त राजतंत्र (साउल, दाऊद, सुलैमान), इस्राएल और यहूदा के राज्यों में विभाजन, अस्सीरी और बाबुली आक्रमण।

7) अस्सीरी काल (लगभग ईसा पूर्व 900-609 वर्ष)
इस्राएल और यहूदा पर अस्सीरी साम्राज्य का प्रभुत्व, उत्तर इस्राएल राज्य का विनाश (ईसा पूर्व 722)।

8) बाबुलीयन काल (ईसा पूर्व 609-539 वर्ष)
यहूदा पर बाबुल का आक्रमण, यरूशलेम और प्रथम मंदिर का विनाश (ईसा पूर्व 586), बाबुलीय निर्वासन।

9) फ़ारसी काल (अहैमनीड साम्राज्य) (ईसा पूर्व 539-332 वर्ष)
सायरस महान का बाबुल पर विजय, यहूदियों का निर्वासन से वापसी, दूसरे मंदिर का पुनर्निर्माण, फ़ारसी शासन के अधीन अपेक्षाकृत स्वायत्तता।

10) हेलेनिक काल (ग्रीक) (ईसा पूर्व 332-63 वर्ष)
अलेक्ज़ेंडर महान का क्षेत्र पर विजय, हेलेनिक संस्कृति का प्रसार, सेल्यूकिड और टोलोमी साम्राज्यों का उदय, मकाबीय विद्रोह, हसमोनी राजवंश।

11) रोमन काल (ईसा पूर्व 63-ईसा पश्चात 324 वर्ष)
पोम्पी , हेरोडियाई वंश, यीशु का जन्म और सेवा, दूसरे मंदिर का विनाश (ईसा पश्चात 70), यहूदी-रोमन युद्ध, प्रारंभिक ईसाई काल के तहत रोमन विजय।

12) बिज़ेंटाइन काल (ईसा पश्चात 324-638 वर्ष)
पूर्वी रोमन साम्राज्य का नियंत्रण, क्षेत्र का ईसाईकरण, महत्वपूर्ण कलीसियाओं का निर्माण, मठवाद का उत्कर्ष।

13) प्रारंभिक इस्लामी काल (638-1099 वर्ष)
खलीफा उमर , उमय्यद और अब्बासी खलीफाओं की स्थापना, डोम ऑफ़ द रॉक और अल-अक्सा मस्जिद के निर्माण के तहत मुस्लिम विजय।

14) क्रूसेडर काल (1099-1291 वर्ष)
क्रूसेडर राज्यों (यरूशलेम राज्य) की स्थापना, ईसाई-मुस्लिम संघर्ष, और अंततः मामलूक द्वारा मुस्लिम पुनःविजय।

15) मामलूक काल (1291-1517 वर्ष)
मामलूक सल्तनत का नियंत्रण, मंगोल और क्रूसेडर के खिलाफ रक्षा, व्यापार मार्गों का विकास।

16) उस्मानी काल (1517-1917 वर्ष)
उस्मानी साम्राज्य का नियंत्रण, प्रशासनिक विभाजन, वैश्विक व्यापार में एकीकरण, सापेक्ष शांति, और कुछ कालों में समृद्धि।

17) ब्रिटिश प्रशासन काल (1917-1948 वर्ष)
पहले विश्व युद्ध के बाद ब्रिटिश नियंत्रण, बालफोर घोषणा, यहूदी प्रवास में वृद्धि, यहूदियों और अरबों के बीच बढ़ते तनाव, स्वतंत्रता के लिए संघर्ष।

18) आधुनिक काल (1948-वर्तमान)
इस्राएल राज्य की स्थापना (1948), अरब-इस्राएल संघर्ष, छह दिवसीय युद्ध (1967), वर्तमान क्षेत्रीय तनाव, मिस्र और यर्दन के साथ शांति संधियाँ, निरंतर संघर्ष और शांति प्रयास।

यह समयरेखा मध्य पूर्व, विशेष रूप से इस्राएल के आसपास के क्षेत्र के जटिल और परतदार इतिहास को उजागर करती है, जिसमें प्रत्येक काल क्षेत्र की सांस्कृतिक और धार्मिक विरासत में योगदान देता है।

मध्य पूर्व
जैसा कि हम जानते हैं, पवित्र शास्त्र का अधिकांश भाग और परमेश्वर के लोगों के साथ व्यवहार का रिकॉर्ड, मध्य पूर्व के आसपास स्थित है। अदन की वाटिका दजला और फरात नदियों के बीच कहीं स्थित थी (उत्पत्ति 2:8-14)।

बाइबल में भविष्यवाणी की गई आने वाली विश्व घटनाओं का अधिकांश हिस्सा इस्राएल और इस क्षेत्र में घटित होने वाली घटनाओं के इर्द-गिर्द केंद्रित है। इसलिए, संक्षिप्त बाइबिल और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि उपयोगी है।

दानिएल ने भविष्यवाणी की (दानिएल 2), कि बाबुल के साम्राज्य के बाद तीन साम्राज्यों का उदय होगा–पहला मादी-फारसी साम्राज्य, जिसकी शुरुआत राजा कुरूश के साथ हुई; उसके बाद यूनानी-मकिदुनी साम्राज्य, जिसकी स्थापना सिकन्दर महान ने की; और फिर

रोमी साम्राज्य। दानिय्येल 7 में, दानिय्येल एक बार फिर इन चारों साम्राज्यों का वर्णन करता है, जिन्हें चार पशुओं के द्वारा दर्शाया गया है–एक सिंह (बाबुली साम्राज्य), एक भालू (मादी-फारसी साम्राज्य), एक चीताह (यूनानी-मकिदुनी साम्राज्य), और एक चौथा पशु जिसे "भयानक" बताया गया है और जो अन्य तीनों से भिन्न था, जो कि शक्तिशाली रोमी साम्राज्य था। वे सभी मध्य पूर्व और उसके आसपास के क्षेत्र में कार्यरत थे।

	बाबुली	**मादी-फारसी**	**यूनानी**	**रोमी**		
दानिएल 2	सोने का सिर	चाँदी	पीतल	लोहा	लोहा + मिट्टी	10 पाँवों की उँगलियाँ
दानिएल 7	सिंह	भालू	चीताह	जानवर		10 सींग
दानिएल 8		मेम्ना	बकरा			

रोमी साम्राज्य के बाद, इस्लामी साम्राज्य सत्ता में आया और कई सदियों तक मध्य पूर्व पर राज्य बनाए रखा। इस्लाम, मध्य पूर्व, उत्तरी अफ्रीका और दक्षिणी एशिया में विस्तार से दो बड़ी लहरों के माध्यम से फैला—पहली सातवीं शताब्दी में और दूसरी बार 12वीं शताब्दी तथा उसके बाद की शताब्दियों में।

आज, 57 देश इस्लामिक सम्मेलन संगठन (OIC) के सदस्य हैं **[स्रोत: oic-oci.org]**। इनमें से 22 देश अरब राष्ट्र हैं, जो मध्य पूर्व और उत्तरी अफ्रीका में फैले हुए हैं। इसकी तुलना में, इस्राएल इन अरब राष्ट्रों के बीच सिमटा हुआ, भूमि का एक छोटा सा टुकड़ा है, और फिर भी यह टकराव का केंद्र तथा संसार के ध्यान का प्रमुख केंद्र बना हुआ है।

अरब देशों के पास, संसार के ज्ञात तेल भंडारों का अधिकांश भाग है—जो वैश्विक अर्थव्यवस्था की जीवनरेखा है। इसलिए, मध्य पूर्व, वैश्विक मामलों में अग्रणी स्थान पर बना हुआ है।

मध्य पूर्व के कई राष्ट्र—इस्राएल (1948), मिस्र (1922), इराक (1932) और सीरिया (1945)—लगभग एक शताब्दी पहले अस्तित्व में ही नहीं थे।

इस्राएल, जिसकी राजधानी यरूशलेम है, लेबनान, सीरिया, यरदन, पश्चिमी तट, मिस्र आदि देशों से घिरा हुआ है। **14 मई 1948** को, विश्व सियोनवादी संगठन के प्रयासों से इस्राएल राज्य की स्थापना हुई। 1948 में इस्राएल की स्वतंत्रता के साथ ही यूरोप और मुस्लिम देशों से यहूदियों का इस्राएल में बड़े पैमाने पर प्रवास हुआ, और इस्राएल से अरबों का पलायन हुआ, जिसके बाद व्यापक अरब-इस्राएली संघर्ष आरंभ हुआ। आज संसार के लगभग 42% यहूदी इस्राएल में रहते हैं—जो संसार का सबसे बड़ा यहूदी समुदाय है। स्थापना के बाद से ही, इस्राएल अपने पड़ोसी अरब राष्ट्रों के साथ कटु संघर्ष में रहा है। पश्चिमी तट और ग़ज़ा पट्टी के फ़िलिस्तीनी कई दशकों से हिंसक संघर्षों में संलग्न रहे हैं।

इन राष्ट्रों का गठन अंत समय की बाइबिल भविष्यवाणियों की पूर्ति के लिए महत्वपूर्ण है, जैसा कि हम आगे के अध्यायों में देखेंगे।

मध्य पूर्व में संघर्ष

मध्य पूर्व में संघर्ष कई दशकों से चलता आ रहा है। अंत समय की बाइबिल भविष्यवाणियों को समझने के लिए, हमें इस संघर्ष के कुछ पहलुओं से अवगत होना आवश्यक है। हम मध्य पूर्व के संघर्ष को **भूमि**, **नगर** और **मंदिर** के संदर्भ में समझेंगे। भूमि का तात्पर्य इस्राएल राष्ट्र से है। नगर का तात्पर्य यरूशलेम नगर से है। मंदिर का तात्पर्य

वर्तमान मंदिर पर्वत और भविष्य में बनने वाले तीसरे मंदिर से है, जैसा कि बाइबिल में उल्लेख किया गया है।

भूमि

यहाँ अब्राहम से आरंभ होकर यहूदी लोगों के इतिहास का एक संक्षिप्त अवलोकन प्रस्तुत है—उनके बिखराव, पुनः एकत्र होने, और अंततः 1948 में आधुनिक इस्राएल राष्ट्र की स्थापना तक।

अब्राहम और वाचा (~2000 ईसा पूर्व): अब्राहम, जो मूल रूप से ऊर नगर (आधुनिक इराक) का निवासी था, परमेश्वर द्वारा बुलाया गया, कि वह अपना देश छोड़कर कनान देश की ओर जाए, जहाँ परमेश्वर ने उससे प्रतिज्ञा की, कि वह उसके वंश को एक महान जाति बनाएगा। इस वाचा ने यहूदी लोगों का कनान देश से संबंध स्थापित किया, जिसे बाद में इस्राएल कहा गया।

मिस्र में निवास और निर्गमन (~1700–1200 ईसा पूर्व): याकूब, जो अब्राहम का पोता था, अपने परिवार सहित अकाल के समय मिस्र गया। समय के साथ इस्राएली लोगों को गुलाम बना लिया गया थे। मूसा ने मिस्र से निर्गमन का नेतृत्व किया, जो यहूदी इतिहास की एक आधारभूत घटना है। यहोशू के नेतृत्व में, कनान देश में प्रवेश करने से पहले, इस्राएली लोग 40 वर्षों तक जंगल में भटके।

राजा शाऊल, दाऊद और सुलैमान और पहला मंदिर (~1000–586 ईसा पूर्व): राजा शाऊल, दाऊद और सुलैमान के अधीन इस्राएल का एकीकृत राज्य, क्षेत्रीय विस्तार का समय था, और इसी काल में यरूशलेम में पहला मंदिर बनाया गया। सुलैमान के शासन के बाद, राज्य दो भागों में विभाजित हो गया—इस्राएल (उत्तरी राज्य) और यहूदा (दक्षिणी राज्य)। 722 ईसा पूर्व में, उत्तरी राज्य अश्शूरियों के हाथों गिर गया, और 10 गोत्र तितर-बितर हो गए।

बाबुली बंधुआई और वापसी (586–516 ईसा पूर्व): 586 ईसा पूर्व में, बाबुलियों ने यहूदा को जीत लिया, पहले मंदिर को नष्ट कर दिया, और अनेक यहूदियों को बाबुल में बंधुआ बनाकर ले गए। यह एक महत्वपूर्ण बिखराव था। परंतु 538 ईसा पूर्व में, फारस के राजा कुरूश ने, यहूदियों को अपने देश लौटने और मंदिर का पुनर्निर्माण करने की अनुमति दी, जिससे दूसरे मंदिर काल की शुरुआत हुई।

रोमी विजय और महान प्रवास (63 ईसा पूर्व–135 ईस्वी): 63 ईसा पूर्व में, रोम ने यहूदिया पर कब्ज़ा कर लिया। 70 ईस्वी में, यहूदी विद्रोह के बाद, रोमियों ने दूसरे मंदिर को नष्ट कर दिया, जिसके परिणामस्वरूप यहूदियों का रोमी साम्राज्य में व्यापक बिखराव हुआ। 135 ईस्वी में एक और विद्रोह के बाद यहूदी शासन का पूर्ण अंत हो गया, और यहूदियों को यरूशलेम से निकाल दिया गया, जिससे दीर्घकालीन प्रवास काल आरंभ हुआ।

मध्य युग और प्रारंभिक आधुनिक काल (500–1800 ईस्वी): मध्य युग के दौरान, यहूदी समुदाय यूरोप, उत्तरी अफ्रीका और मध्य पूर्व में फैल गए। इस काल में, उन्हें कभी सापेक्ष शांति और समृद्धि मिली, तो कभी घोर उत्पीड़न का सामना करना पड़ा, जैसे स्पेनी धर्माधिकरण (1478–1834 ईस्वी) और विभिन्न देशों से निष्कासन। बिखराव के बावजूद, यहूदी सांस्कृतिक और धार्मिक जीवन अनेक क्षेत्रों में फला-फूला, विशेषकर स्पेन, पोलैंड और उस्मानी साम्राज्य में।

सियोनवादी आंदोलन और आधुनिक वापसी (1800–1948 ईस्वी): 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में, सियोनवादी आंदोलन उभरा, जिसने यहूदी लोगों की उनके पैतृक देश में वापसी की वकालत की। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान, नाज़ी जर्मनी द्वारा किए गए होलोकॉस्ट (1941–1945) की भयावह घटनाओं के बाद, इस आंदोलन को और बल मिला, जिसमें पूरे यूरोप में यहूदियों को निशाना बनाया गया।

आडोल्फ हिटलर के नेतृत्व में, नाज़ियों ने यहूदी जाति के संहार का प्रयास किया, जिसके परिणामस्वरूप पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों सहित लगभग साठ लाख यहूदियों की हत्या हुई। होलोकॉस्ट के बाद, बड़ी संख्या में यहूदी फ़िलिस्तीन की ओर पलायन करने लगे। उस समय, इस क्षेत्र पर नियंत्रण रखने वाली ब्रिटिश सरकार ने, 1917 में बाल्फ़ोर घोषणा जारी की, जिसमें फ़िलिस्तीन में "यहूदी लोगों के लिए एक राष्ट्रीय घर" की स्थापना का समर्थन किया गया।

इस्राएल की स्थापना (1948 ईस्वी): 14 मई 1948 को, इस्राएल राज्य की घोषणा की गई, और आधुनिक यहूदी राष्ट्र की स्थापना हुई। यह सदियों पुराने उस स्वप्न की पराकाष्ठा थी, जिसमें यहूदी लोगों की अपने मूल देश में वापसी की आकांक्षा निहित थी, और यह यहूदी लोगों के पुनः एकत्रीकरण की सियोनवादी दृष्टि की पूर्ति थी। स्वतंत्रता की घोषणा के परिणामस्वरूप 1948 का अरब-इस्राएली युद्ध हुआ, परंतु संघर्ष के बावजूद, इस्राएल ने अपनी संप्रभुता बनाए रखी और संसार भर के यहूदियों के लिए एक घर बन गया।

इस्राएल मिस्र, यरदन, सीरिया, लेबनान और फ़िलिस्तीनी क्षेत्रों जैसे कई अरब राष्ट्रों से घिरा हुआ है। इस्राएल और विशेषकर उसके फ़िलिस्तीनी पड़ोसियों के बीच शांति स्थापित करने के लिए, अनेक प्रयास किए गए हैं। शांति समझौते को अंतिम रूप देने के प्रयासों के बावजूद, यह संघर्ष आज भी इस्राएली तथा अंतरराष्ट्रीय राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक जीवन में एक प्रमुख भूमिका निभाता है।

इस्राएल में जो दो प्रमुख राजनीतिक दल हैं, वे लेबर पार्टी और लिकुड पार्टी हैं। लेबर पार्टी समाजवादी नीतियों की ओर झुकाव रखती है और अक्सर शांति के बदले भूमि छोड़ने के पक्ष में रही है। 1948 से 1977 तक, सत्ता में उसी का शासन रहा। लिकुड पार्टी रूढ़िवादी, राष्ट्रवादी और मुक्त-बाज़ार समर्थक है, और हिंसा के समय क्षेत्रीय

समझौते करने या शांति वार्ता के लिए, कम इच्छुक रहती है।

इस्राएल-फ़िलिस्तीनी संघर्ष की जड़ें उन परस्पर विरोधी राष्ट्रवादी आंदोलनों और क्षेत्रीय दावों में हैं, जो उस क्षेत्र से संबंधित हैं, जिसे ऐतिहासिक रूप से फ़िलिस्तीन कहा जाता था, और जिसमें आज का इस्राएल तथा फ़िलिस्तीनी क्षेत्र (पश्चिमी तट, गाज़ा पट्टी) सम्मिलित हैं। इस संघर्ष की उत्पत्ति 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध और 20वीं शताब्दी के प्रारंभ में, यहूदी राष्ट्रवाद (सियोनवाद) और अरब राष्ट्रवाद—दोनों के उदय के साथ जुड़ी हुई है। यह संघर्ष विशेष रूप से 1917 की बाल्फ़ोर घोषणा के समय तीव्र हुआ, जिसमें ब्रिटिश सरकार ने, फ़िलिस्तीन में "यहूदी लोगों के लिए एक राष्ट्रीय घर" के समर्थन की घोषणा की। उस समय फ़िलिस्तीन उस्मानी साम्राज्य का भाग था।

सियोनवाद: यहूदी प्रवासी फ़िलिस्तीन में एक यहूदी मातृभूमि स्थापित करने के उद्देश्य से वहाँ आने लगे। यह आंदोलन विशेष रूप से प्रथम विश्व युद्ध के बाद और दोनों विश्व युद्धों के बीच के काल में तेज़ी से बढ़ा, जिसे यूरोप में उत्पीड़न और होलोकॉस्ट ने और अधिक बल दिया।

अरब राष्ट्रवाद: फ़िलिस्तीन के अरब निवासियों ने यहूदियों के बड़े पैमाने पर आप्रवासन और एक यहूदी राज्य की अवधारणा का विरोध किया, क्योंकि उन्हें भय था, कि इससे उनका विस्थापन होगा और उनकी अपनी राष्ट्रीय आकांक्षाएँ समाप्त हो जाएँगी।

संघर्ष की प्रमुख घटनाएँ

1920–1940: तनाव और ब्रिटिश शासनादेश

1920 और 1930 के दशकों में, ब्रिटिश शासन के अधीन यहूदी और अरब समुदायों के बीच हिंसा बढ़ती गई। ब्रिटिश सरकार यहूदियों और अरबों की परस्पर विरोधी आकांक्षाओं को नियंत्रित करने के लिए संघर्ष करती रही।

1947: संयुक्त राष्ट्र ने, फ़िलिस्तीन को अलग-अलग यहूदी और अरब राज्यों में विभाजित करने कि योजना प्रस्तुत की, जिसमें यरूशलेम को अंतरराष्ट्रीय नियंत्रण में रखने का प्रस्ताव था। यहूदी नेताओं ने इस योजना को स्वीकार किया, लेकिन अरब नेताओं ने इसे अस्वीकार कर दिया।

1948: इस्राएल की स्थापना और पहला अरब-इस्राएली युद्ध। 14 मई 1948 को, इस्राएल ने स्वतंत्रता की घोषणा की। अगले ही दिन, अरब देशों (मिस्र, यरदन, सीरिया, इराक और लेबनान) ने इस्राएल पर आक्रमण कर दिया, जिससे पहला अरब-इस्राएली युद्ध आरंभ हुआ। इस्राएल ने युद्ध में जीवित रहते हुए, संयुक्त राष्ट्र की विभाजन योजना की सीमाओं से आगे, अपने क्षेत्र का विस्तार किया। लगभग 7,00,000 फ़िलिस्तीनी अरब, या तो भाग गए या निकाल दिए गए, जिससे एक दीर्घकालीन शरणार्थी संकट उत्पन्न हुआ।

1948–1967: युद्धविराम और निरंतर तनाव। इस्राएल और उसके आसपास के अरब राष्ट्र शत्रुता की स्थिति में बने रहे, जिनमें कई सीमा संघर्ष और लगातार शरणार्थी संबंधी समस्याएँ शामिल थीं।

1967: छः दिवसीय युद्ध के परिणामस्वरूप, इस्राएल ने पश्चिमी तट, ग़ज़ा पट्टी, पूर्वी यरूशलेम और गोलान पहाड़ियों पर अधिकार कर लिया—ये ऐसे क्षेत्र थे, जहाँ बड़ी संख्या में फ़िलिस्तीनी आबादी रहती थी।

1987–1993: पहला इंतिफ़ादा। 1987 में, इस्राएली कब्ज़े के विरुद्ध एक फ़िलिस्तीनी विद्रोह (इंतिफ़ादा) आरंभ हुआ, जो व्यापक प्रदर्शनों, नागरिक अवज्ञा और हिंसा से चिह्नित था।

1993: इस्राएल और फ़िलिस्तीन लिबरेशन ऑर्गनाइज़ेशन (PLO) के बीच ओस्लो समझौते पर हस्ताक्षर किए गए, जिससे भविष्य की

शांति के लिए, एक ढाँचा तैयार हुआ और फ़िलिस्तीनी प्राधिकरण की स्थापना हुई, जिसे पश्चिमी तट और ग़ज़ा के कुछ हिस्सों का शासन सौंपा जाना था।

2000–2005: दूसरा इंतिफ़ादा। 2000 में, शांति वार्ताओं के विफल होने के बाद, दूसरा इंतिफ़ादा भड़क उठा, जिसके परिणामस्वरूप आत्मघाती हमलों और सैन्य अभियानों सहित अधिक तीव्र हिंसा हुई। इस अवधि के संघर्ष ने आपसी अविश्वास को और गहरा कर दिया और दोनों पक्षों को भारी जनहानि उठानी पड़ी।

2005–वर्तमान: जारी संघर्ष और राजनीतिक गतिरोध। इस्राएल ने एकतरफ़ा रूप से ग़ज़ा पट्टी से अपनी सेनाएँ हटा लीं, लेकिन इसके बाद यह क्षेत्र हमास, एक फ़िलिस्तीनी इस्लामी संगठन, के नियंत्रण में आ गया। इस्राएल और हमास के बीच बार-बार होने वाले संघर्षों के कारण, कई युद्ध और नाकेबंदियाँ हुई हैं।

पश्चिमी तट अब भी इस्राएली सैन्य कब्ज़े में है, और वहाँ इस्राएली बस्तियों का विस्तार हो रहा है, जिन्हें अंतरराष्ट्रीय क़ानून के अंतर्गत अवैध माना जाता है, जिससे शांति प्रयास और अधिक जटिल हो गए हैं। अमेरिका और अन्य अंतरराष्ट्रीय मध्यस्थों द्वारा कराए गए शांति वार्ताओं के प्रयास बार-बार सीमाओं, सुरक्षा, शरणार्थियों और यरूशलेम की स्थिति जैसे मूल मुद्दों को सुलझाने में विफल रहे हैं।

संघर्ष के प्रमुख मुद्दे

1) **क्षेत्रीय विवाद:** संभावित फ़िलिस्तीनी राज्य, तथा पश्चिमी तट और ग़ज़ा पट्टी पर नियंत्रण और इस्राएल के बीच भविष्य झूल रह है।

2) **यरूशलेम:** इस्राएली और फ़िलिस्तीनी—दोनों यरूशलेम को अपनी राजधानी मानते हैं। यह नगर यहूदियों, मुसलमानों और मसीहियों—तीनों के लिए धार्मिक महत्व रखता है।

3) **शरणार्थी:** 1948 के युद्ध के दौरान विस्थापित हुए लिस्तीनी शरणार्थियों और उनके वंशजों के लिए वापसी का अधिकार।

4) **सुरक्षा संबंधी चिंताएँ:** हमास जैसे संगठनों से आतंकवाद को लेकर इस्राएल की सुरक्षा चिंताएँ, और इस्राएली सैन्य कब्ज़े के अंतर्गत फ़िलिस्तीनियों की सुरक्षा संबंधी चिंताएँ हैं।

यह संघर्ष अब भी अनसुलझा है, जिसमें समय-समय पर हिंसा होती रहती है और स्थायी शांति का कोई स्पष्ट मार्ग दिखाई नहीं देता। यह स्थिति राजनीतिक गतिरोध, मानवीय चुनौतियों और संबंधित पक्षों के बीच गहरे अविश्वास से चिह्नित है। अंतरराष्ट्रीय समुदाय लगातार दो-राज्य समाधान की वकालत करता रहा है, यद्यपि प्रगति सीमित रही है।

इस्राएल-फ़िलिस्तीनी संघर्ष गहरे ऐतिहासिक मूलों और महत्वपूर्ण भू-राजनीतिक प्रभावों के साथ, संसार के सबसे जटिल और दीर्घकालीन संघर्षों में से एक बना हुआ है।

अतीत में भी और वर्तमान में भी, इस्राएल और उसके पड़ोसी देशों के बीच निरंतर संघर्ष रहा है, विशेष रूप से ईरान-समर्थित उग्रवादी समूहों के साथ।

इस्राएल और हमास: फ़िलिस्तीनी समूह हमास, ग़ज़ा पर नियंत्रण रखता है। 7 अक्टूबर 2023 को हमास ने इस्राएल पर घातक हमला किया, जिसके परिणामस्वरूप इस्राएल रक्षा बल (IDF) ने, ग़ज़ा पट्टी में हवाई अभियानों और ज़मीनी सैन्य कार्रवाइयों को अंजाम दिया।

इस्राएल और फ़तह: फ़िलिस्तीनी गुट फ़तह पश्चिमी तट को नियंत्रित करता है। हमास और फ़तह दो परस्पर प्रतिद्वंद्वी फ़िलिस्तीनी गुट हैं।

इस्राएल और हिज़्बुल्लाह: ईरान-समर्थित लेबनानी उग्रवादी संगठन

हिज़्बुल्लाह, जो लेबनान से संचालित होता है।

इस्राएल और हूथी विद्रोही: यमन से संचालित हूथी विद्रोही, जो हमास का समर्थन करते हैं।

इस्राएल और ईरान: 13 अप्रैल 2024 को ईरान ने पहली बार सीधे इस्राएली क्षेत्र पर हमला किया।

हमास, फ़तह, हिज़्बुल्लाह और हूथी—ये सभी किसी न किसी रूप में, ईरान द्वारा समर्थित हैं।

ये सभी संघर्ष संभावित रूप से मध्य पूर्व में एक बड़े पैमाने के युद्ध में बदल सकते हैं।

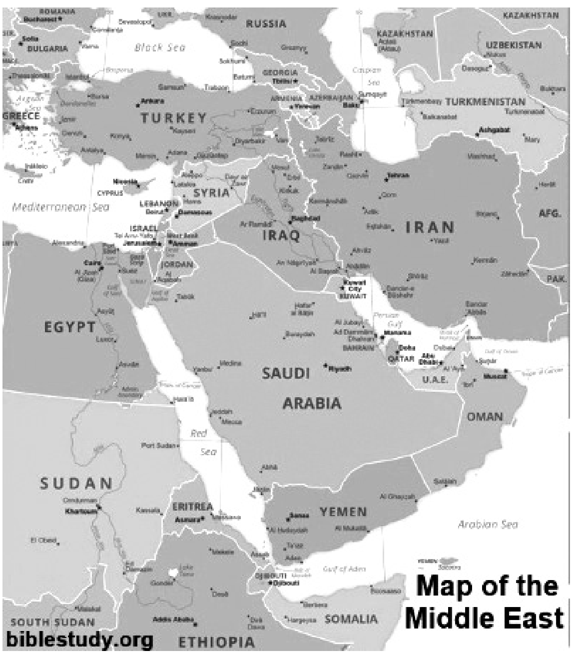

स्रोत: https://www.cfr.org/global-conflict-tracker/conflict/israeli-palestinian-conflict

यरूशलेम नगर

यरूशलेम पृथ्वी का सबसे अधिक विवादित नगर बना हुआ है, जो अपने लिखित इतिहास में 20 से अधिक बार आक्रमणकारी शक्तियों के अधीन आ चुका है। वह देश जहाँ परमेश्वर ने लगभग 4,000 वर्ष पहले अब्राहम को भेजा था, तीन महाद्वीपों के चौराहे पर स्थित है। यह तीन धर्मों—मुसलमानों, यहूदियों और मसीहियों—के लिए पवित्र भी है।

बाइबिल में यरूशलेम नगर का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है।

यरूशलेम को निम्नलिखित नामों से पुकारा गया है—दाऊद का नगर, परमेश्वर का नगर, यहूदा का नगर, आनंद का नगर, शांति का नगर, स्तुति का नगर, धार्मिकता का नगर, पवित्र सभाओं का नगर, महान राजा का नगर, यहोवा का नगर, सत्य का नगर, विश्वासयोग्य नगर, मेरी प्रजा का फाटक, पवित्र नगर, हेप्सीबा, पवित्र पर्वत, पवित्र मंदिर, सेनाओं के यहोवा का पर्वत, सौंदर्य की पूर्णता, प्रांतों के बीच

राजकुमारी, यहोवा का सिंहासन, सिय्योन, इस्राएल के पवित्र व्यक्ति का सिय्योन, अनन्त नगर, स्वर्गीय नगर।

बाइबिल में यरूशलेम ने निम्नलिखित भूमिकाएँ निभाई हैं...

वह स्थान जो दैवी नियुक्ति के द्वारा दाऊद की राजधानी बना; वह स्थान जो लेवियों का घर बन गया;

वह स्थान जो महायाजकों का निवास बना;

वह स्थान जहाँ पर्व मनाए जाते थे;

वह स्थान जिसकी ओर परमेश्वर की प्रजा ने प्रार्थना की;

वह स्थान जिसे परमेश्वर की प्रजा ने सदा प्रेम किया;

वह स्थान जहाँ प्राचीन राजा और याजक मेल्कीसेदेक रहता था;

वह स्थान जो वाचा के सन्दक का निवास बना;

वह स्थान जिसे दाऊद ने खरीदा और जहाँ उसने परमेश्वर के लिए वेदी बनाई;

वह स्थान जहाँ मंदिर बनाया गया;

वह स्थान जहाँ से वचन निकलेगा;

वह स्थान जहाँ पवित्र आत्मा उंडेला गया;

यरूशलेम मसीह के अनन्त राज्य की भविष्य की राजधानी होगा।

मंदिर

मंदिर पर्वत (“परमेश्वर के भवन का पर्वत”), जिसे मुसलमान हरम अल-शरीफ़ (“उच्च पवित्र स्थान”) कहते हैं, यरूशलेम के पुराने नगर में स्थित एक पहाड़ी (मोरिय्याह पर्वत) है, और यह संसार के सबसे महत्वपूर्ण धार्मिक स्थलों में से एक है।

मोरिय्याह पर्वत वही स्थान है, जहाँ अब्राहम इसहाक को बलिदान करने के लिए लाया था। बाद में इस्राएल के राजा दाऊद ने मोरिय्याह

पर्वत पर स्थित इस स्थान को, जो एक खलिहान था, खरीदा और वहाँ वेदी बनाई, और बलिदान चढ़ाया, यह निश्चय करते हुए कि यही मंदिर का स्थान होगा (1 इतिहास 21–22)। राजा सुलैमान ने यहीं पहला मंदिर बनाया (2 इतिहास 3:1)। मंदिर पर्वत को यह नाम इसलिए दिया गया, क्योंकि यह दाऊद के पुत्र सुलैमान द्वारा बनाए गए मंदिर का स्थान है।

मंदिर को 586 ईसा पूर्व में बाबुलियों ने नष्ट कर दिया था। ज़रुब्बाबेल ने मंदिर का पुनर्निर्माण किया (जिसे दूसरा मंदिर कहा गया)। हेरोदेस महान ने मंदिर का जीर्णोद्धार किया और उसका विस्तार किया (जिसे हेरोदेस का मंदिर कहा गया)। इस मंदिर को 70 ईस्वी में रोमी सेनापति तीतुस ने नष्ट कर दिया।

अल-अक्सा मस्जिद और डोम ऑफ़ द रॉक का निर्माण 685 से 691 ईस्वी के बीच उस मंदिर मंच के ऊपर किया गया था, जिसे सदियों पहले बाइबिल के राजा हेरोदेस महान ने बनवाया था। यह स्थान आज भी इस्राएलियों और अरबों के बीच एक प्रमुख संघर्ष का केंद्र बना हुआ है।

मंदिर पर्वत (या जैसा कि मुसलमान इसे कहते हैं, हरम अल-शरीफ़) मुसलमानों और यहूदियों—दोनों के लिए पवित्र है। मुसलमानों का विश्वास है, कि मुहम्मद इसी स्थान से अपने घोड़े से उतरे और स्वर्ग में गए। 637 ईस्वी में यरूशलेम पर मुस्लिम विजय के बाद, उमय्यद ख़लीफ़ाओं ने 691 ईस्वी में इसी स्थान पर अल-अक्सा मस्जिद और डोम ऑफ़ द रॉक के निर्माण का आदेश दिया। डोम का निर्माण 692 ईस्वी में पूरा हुआ, जिससे यह *काबा* के बाद, संसार की सबसे प्राचीन विद्यमान इस्लामी संरचनाओं में से एक बन गया। वर्तमान में डोम ऑफ़ द रॉक उसी स्थान के मध्य में, या उसके अत्यंत समीप स्थित है, जहाँ पहले पवित्र मंदिर खड़ा था। अल-अक्सा

मस्जिद, पर्वत के अत्यंत दक्षिणी छोर पर स्थित है और मक्का की ओर उन्मुख है।

07 जून 1967 को (छः दिवसीय युद्ध), मंदिर पर्वत पर इस्राएल का नियंत्रण स्थापित हुआ। शनिवार, 17 जून 1967 को, छः दिवसीय युद्ध की समाप्ति के कुछ समय बाद, रक्षा मंत्री मोशे दयान ने एक ऐतिहासिक बैठक के लिए अल-अक्सा मस्जिद में प्रवेश किया। सद्भावना के संकेत के रूप में, दयान ने उस समय के जॉर्डन-नियंत्रित यरूशलेम की सर्वोच्च मुस्लिम परिषद (वक़्फ़) के पाँच नेताओं के साथ प्रार्थना कालीन पर बैठकर चर्चा की। उस चर्चा में मंदिर पर्वत के संबंध में इस्राएल की नीति निर्धारित की गई, जो आज तक अपरिवर्तित बनी हुई है।

दयान ने पुराने नगर की मुक्ति के दिन दोपहर में डोम ऑफ़ द रॉक के ऊपर से इस्राएली ध्वज हटाने का आदेश दिया था। मुसलमानों के साथ उनकी चर्चा के परिणामस्वरूप और भी रियायतें दी गईं। मंदिर पर्वत का प्रशासनिक नियंत्रण पूरी तरह से सर्वोच्च मुस्लिम परिषद—(जॉर्डनियन) वक़्फ़ की जिम्मेदारी ठहराया गया। यद्यपि यहूदियों को पर्वत पर स्वतंत्र रूप से प्रवेश की अनुमति दी गई, परंतु यहूदियों द्वारा प्रार्थना करने पर प्रतिबंध लगा दिया गया। दयान ने, यहूदियों को उनके धर्म के सबसे पवित्र स्थल से, किसी भी प्रकार की धार्मिक पहचान जोड़ने की अनुमति देने से इनकार कर दिया। उनके लिए मंदिर पर्वत का महत्व केवल ऐतिहासिक था।

इसके बाद इस्राएल की सरकार ने मंदिर पर्वत क्षेत्र की ज़िम्मेदारी विभिन्न समूहों को सौंप दी। इस्राएल के पुरातत्त्व विभाग को मंदिर पर्वत के दक्षिण, दक्षिण-पूर्व और दक्षिण-पश्चिमी क्षेत्रों में पुरातात्त्विक अन्वेषण करने का कार्य सौंपा गया। परंतु मंदिर पर्वत का ऊपरी भाग, जो पहले और दूसरे मंदिर का स्थल था, प्रशासन के लिए मुसलमानों

को सौंप दिया गया।

यद्यपि मंदिर पर्वत को पुनः प्राप्त कर लिया गया है और यह आधिकारिक रूप से इस्राएल राज्य का हिस्सा है, फिर भी इस्राएल के परमेश्वर की दृष्टि में वह अब भी अपवित्र किया जा रहा है। छः दिवसीय युद्ध के बाद जब यह पर्वत यहूदियों के हाथ में आया, तब इस्राएल ने पश्चिमी दीवार क्षेत्र को अपने नियंत्रण में ले लिया, लेकिन पर्वत का प्रशासन मुस्लिम काउंसिल ऑफ एल्डर्स को सौंपा रहने दिया। इस्राएल ने यहूदी आराधना पर भी प्रतिबंध लगा दिया। धर्मनिरपेक्ष यहूदियों को इससे कोई विशेष आपत्ति नहीं थी, और अनेक रूढ़िवादी यहूदी यह मानते हैं कि तीसरे मंदिर का निर्माण मसीह के आगमन तक प्रतीक्षा करेगा। ये सभी विषय आज तक गतिरोध की स्थिति में बने हुए हैं।

यहूदियों के विशाल बहुमत का विश्वास है कि परम पवित्र स्थान वहीं स्थित था, जहाँ वर्तमान में डोम ऑफ़ द रॉक स्थित है।

राज्य, इस्राएल और कलीसिया

परमेश्वर का राज्य परमेश्वर का शासन और प्रभुत्व है। परमेश्वर राजा है और वह अपनी प्रजा के बीच राज्य करता है। वर्तमान समय में (इस कलीसिया युग में), उसका राज्य आत्मिक स्वरूप का है, जो उसकी प्रजा के हृदयों और जीवनों में फैला हुआ है, और उनके द्वारा संसार में वास्तविक (प्राकृतिक) रूप से प्रकट होता है, जैसा कि हम बदले हुए जीवनों, राज्य के मूल्यों, राज्य की सामर्थ्य आदि में देखते हैं। कलीसिया को इस संसार में नमक और ज्योति बनने के लिए बुलाया गया है, ताकि वह राज्य का प्रभाव फैलाए।

असल राज्य धरती पर परमेश्वर का शारीरिक शासन और राज है, जो हम जानते हैं कि हज़ार साल के राज में शुरू होगा।

इस्राएल परमेश्वर के आत्मिक राज्य का भाग था, जिसे याजकों के राज्य के रूप में खड़ा किया गया। *"और तुम मेरी दृष्टि में याजकों का राज्य और पवित्र जाति ठहरोगे।' जो बातें तुझे इस्राएलियों से कहनी हैं वे ये ही हैं।"* (निर्गमन 19:6)। मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान के बाद, परमेश्वर ने अन्यजातियों के लिए विश्वास का द्वार खोल दिया (रोमियों 9–11)।

परमेश्वर इस्राएल (यहूदियों) और कलीसिया—दोनों के साथ कार्य कर रहा है। यीशु के द्वारा उद्धार हर उस व्यक्ति के लिए प्रस्तुत किया गया है, जो यीशु पर विश्वास करता है—चाहे वह यहूदी हो या अन्यजाति—जो मिलकर एक नया मनुष्य बनते हैं और एक ही नए वाचा के भागीदार हैं।

इफिसियों 2:11–16
11 इस कारण स्मरण करो कि तुम जो शारीरिक रीति से अन्यजाति हो (और जो लोग शरीर में हाथ के किए हुए खतने से खतनावाले कहलाते हैं, वे तुम को खतनारहित कहते हैं),
12 तुम लोग उस समय मसीह से अलग, और इस्राएल की प्रजा के पद से अलग किए हुए, और प्रतिज्ञा की वाचाओं के भागी न थे, और आशाहीन और जगत में ईश्वररहित थे।
13 पर अब मसीह यीशु में तुम जो पहले दूर थे, मसीह के लहू के द्वारा निकट हो गए हो।
14 क्योंकि वही हमारा मेल है जिसने दोनों को एक कर लिया और अलग करनेवाली दीवार को जो बीच में थी ढा दिया,
15 और अपने शरीर में बैर अर्थात् वह व्यवस्था जिसकी आज्ञाएँ विधियों की रीति पर थीं, मिटा दिया कि दोनों से अपने में एक नया मनुष्य उत्पन्न कर के मेल करा दे,
16 और क्रूस पर बैर को नाश करके इसके द्वारा दोनों को एक देह बनाकर परमेश्वर से मिलाए।

कलीसिया वर्तमान में परमेश्वर के राज्य के आत्मिक विस्तार का भाग है, और हम अन्धकार की शक्तियों के विरुद्ध आगे बढ़ रहे हैं

(मत्ती 16:16–18)। पुराने और नए नियम के पवित्र जन परमेश्वर के असल राज्य का भाग होंगे, और पृथ्वी पर उसके शासन और राजत्व का प्रशासन करेंगे।

कलीसिया की प्रतिक्रिया

हमें यह समझना आवश्यक है, कि परमेश्वर का इस्राएल के साथ एक ऐसी वाचा है, जो कभी नहीं टूटेगी (यिर्मयाह 31:35-37; रोमियों 9-11)। उसने इस्राएल राष्ट्र के लिए एक भौतिक और आत्मिक भविष्य प्रकट किया है, जो शीघ्र ही पूर्ण होगा। हम स्वीकार करते हैं, कि परमेश्वर के हृदय यहूदी लोगों में, उनकी भूमि में, उनके राष्ट्र में और परमेश्वर में उनके भविष्य में है। हम यरूशलेम की शांति के लिए प्रार्थना करते हैं (भजन संहिता 122:6)। हम यहूदी लोगों और इस्राएल राष्ट्र को आशीष देते हैं। हम यहूदी लोगों के लिए प्रार्थना करते हैं और यहूदियों को मसीह के बारे में बताते हैं, ताकि वे भी विश्वास करें और उद्धार पाएँ (रोमियों 1:15,16; रोमियों 10:1; रोमियों 11:14,26)।

हम मुसलमान लोगों और अरब राष्ट्रों से प्रेम करते हैं और उनके लिए प्रार्थना करते हैं, कि उनकी दैवीय मुलाक़ातें हों और वे यीशु को प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में जानें। परमेश्वर उनसे प्रेम करता है और उनकी भलाई की चिन्ता करता है। हमें उनके पास सुसमाचार पहुँचाना है और उनके भौतिक कल्याण की भी देखभाल करनी है (मत्ती 5:43-48)।

4
कलीसिया का उठाया जाना (रैप्चर)

इस अध्याय में, हम कलीसिया के उठा लिये जाने (रैप्चर) से लेकर नए आकाश और नई पृथ्वी की सृष्टि तक होने वाली प्रमुख घटनाओं के क्रम का एक संक्षिप्त अवलोकन प्रस्तुत करेंगे। इस अवलोकन के बाद, हम यह भी देखेंगे कि हम कलीसिया के क्लेश-पूर्व (प्री-ट्रिब्युलेशन) रैप्चर में क्यों विश्वास करते हैं।

यीशु फिर आने वाला है!

प्रेरितों के काम 1:6-12

6 अत: उन्होंने इकट्ठे होकर उससे पूछा, "हे प्रभु, क्या तू इसी समय इस्राएल को राज्य फेर देगा?"

7 उसने उनसे कहा, "उन समयों या कालों को जानना, जिनको पिता ने अपने ही अधिकार में रखा है, तुम्हारा काम नहीं।

8 परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ्य पाओगे; और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होगे।"

9 यह कहकर वह उन के देखते–देखते ऊपर उठा लिया गया, और बादल ने उसे उनकी आँखों से छिपा लिया।

10 उसके जाते समय जब वे आकाश की ओर ताक रहे थे, तो देखो, दो पुरुष श्वेत वस्त्र पहिने हुए उन के पास आ खड़े हुए,

11 और उनसे कहा, "हे गलीली पुरुषो, तुम क्यों खड़े आकाश की ओर देख रहे हो? यही यीशु, जो तुम्हारे पास से स्वर्ग पर उठा लिया गया है, जिस रीति से तुम ने उसे स्वर्ग को जाते देखा है उसी रीति से वह फिर आएगा।"

12 तब वे जैतून नामक पहाड़ से जो यरूशलेम के निकट एक सब्त के दिन की दूरी पर है, यरूशलेम को लौटे।

प्रभु यीशु ने अपने पुनरुत्थान के बाद 40 दिनों तक अपने आप को अनेक अचूक प्रमाणों के द्वारा जीवित प्रस्तुत किया। इसके बाद

उसके चेलों ने उसे जैतून पर्वत से स्वर्ग पर चढ़ते हुए देखा। जब वह ऊपर जा रहा था, तब दो "पुरुषों" ने, जो संभवतः स्वर्गदूत थे, उसके पुनः आगमन की घोषणा की— *"यही यीशु, जो तुम्हारे पास से स्वर्ग पर उठा लिया गया है, जिस रीति से तुम ने उसे स्वर्ग को जाते देखा है उसी रीति से वह फिर आएगा।"* (प्रेरितों के काम 1:11)। वे उसके दूसरे आगमन की घोषणा कर रहे थे, जब यीशु लौटेगा—*"बड़ी सामर्थ्य और ऐश्वर्य के साथ आकाश के बादलों पर आते देखेंगे"* (मत्ती 24:30; मत्ती 26:64)।

रोचक बात यह है, कि भविष्यद्वक्ता जकर्याह ने लगभग 520–518 ईसा पूर्व के समय *"यहोवा के दिन"* के विषय में भविष्यवाणी की और यह कहा कि उसके पाँव जैतून पर्वत पर खड़े होंगे। यही यीशु, जो जैतून पर्वत से स्वर्ग पर चढ़ा, उसी प्रकार से फिर उतरकर जैतून पर्वत पर आएगा।

जकर्याह 14:1-4

1 सुनो, यहोवा का एक ऐसा दिन आनेवाला है जिसमें तेरा धन लूटकर तेरे बीच में बाँट लिया जाएगा।

2 क्योंकि मैं सब जातियों को यरूशलेम से लड़ने के लिये इकट्ठा करूँगा, और वह नगर ले लिया जाएगा, और घर लूटे जाएँगे और स्त्रियाँ भ्रष्ट की जाएँगी; नगर के आधे लोग बँधुआई में जाएँगे, परन्तु प्रजा के शेष लोग नगर ही में रहने पाएँगे।

3 तब यहोवा निकलकर उन जातियों से ऐसा लड़ेगा जैसा वह संग्राम के दिन में लड़ा था।

4 उस दिन वह जैतून के पर्वत पर पाँव रखेगा, जो पूर्व की ओर यरूशलेम के सामने है; तब जैतून का पर्वत पूर्व से लेकर पश्चिम तक बीचोबीच से फटकर बहुत बड़ा खड्ड हो जाएगा; तब आधा पर्वत उत्तर की ओर और आधा दक्षिण की ओर हट जाएगा।

जकर्याह 14:1-4 में दिए गए विवरणों के अनुसार, यह प्रकाशितवाक्य 19:11-21 में वर्णित हर-मगिदोन के युद्ध के साथ

समानता रखता है। इसलिए, प्रभु यीशु का उसी प्रकार जैतून पर्वत पर लौटकर आना, उसके महाक्लेश के अंत में, हर-मगिदोन के युद्ध के समय आने की ओर संकेत करता है।

"मैं शीघ्र आने वाला हूँ"

प्रकाशितवाक्य 22:6,7,12,13,20,21

6 फिर उसने मुझ से कहा, "ये बातें विश्वास के योग्य और सत्य हैं। प्रभु ने, जो भविष्यद्वक्ताओं की आत्माओं का परमेश्वर है, अपने स्वर्गदूत को इसलिये भेजा कि अपने दासों को वे बातें, जिनका शीघ्र पूरा होना अवश्य है, दिखाए।"
7 "देख, मैं शीघ्र आनेवाला हूँ! धन्य है वह, जो इस पुस्तक की भविष्यद्वाणी की बातें मानता है।"
12 "देख, मैं शीघ्र आनेवाला हूँ; और हर एक के काम के अनुसार बदला देने के लिये प्रतिफल मेरे पास है।
13 मैं अल्फा और ओमेगा, पहला और अन्तिम, आदि और अन्त हूँ।
20 जो इन बातों की गवाही देता है वह यह कहता है, "हाँ, मैं शीघ्र आनेवाला हूँ।" आमीन। हे प्रभु यीशु आ!
21 प्रभु यीशु का अनुग्रह पवित्र लोगों के साथ रहे। आमीन।

प्रकाशितवाक्य के अंतिम अध्याय में, प्रभु यीशु ने कम से कम तीन बार कहा, *"मैं शीघ्र आने वाला हूँ"* । ये शब्द प्रथम शताब्दी के अंत के समय प्रेरित यूहन्ना को दिए गए थे। उस समय से अब तक 2000 वर्ष से अधिक हो चुके हैं। स्वाभाविक है, कि हमारे दृष्टिकोण से यह प्रश्न उठ सकता है, कि प्रभु यीशु अब तक क्यों नहीं आए।

प्रेरित पतरस ने, आत्मा के द्वारा यह पहले से देख लिया था कि एक समय आएगा जब लोग पूछेंगे, *"उसके आने की प्रतिज्ञा कहाँ है?"* इसलिए उसने हमारे लिए निम्नलिखित बातें लिखीं—हम उस अंश का केवल एक भाग उद्त करते हैं...

2 पतरस 3:3,4,8,9

3 पहले यह जान लो कि अन्तिम दिनों में हँसी ठट्ठा करनेवाले आएँगे जो अपनी ही अभिलाषाओं के अनुसार चलेंगे

[4] और कहेंगे, "उसके आने की प्रतिज्ञा कहाँ गई? क्योंकि जब से बापदादे सो गए हैं, सब कुछ वैसा ही है जैसा सृष्टि के आरम्भ से था?"
[8] हे प्रियो, यह बात तुम से छिपी न रहे कि प्रभु के यहाँ एक दिन हज़ार वर्ष के बराबर है, और हज़ार वर्ष एक दिन के बराबर है।
[9] प्रभु अपनी प्रतिज्ञा के विषय में देर नहीं करता, जैसी देर कुछ लोग समझते हैं; पर तुम्हारे विषय में धीरज धरता है, और नहीं चाहता कि कोई नष्ट हो, वरन् यह कि सब को मन फिराव का अवसर मिले।

पतरस हमें स्मरण दिलाता है, कि प्रभु के लिए एक दिन 1000 वर्षों के समान है। सरल शब्दों में कहें तो, परमेश्वर समय से परे वास करता है, और यद्यपि हमारे लिए ये 2000 वर्ष बहुत लंबा समय प्रतीत होता है, परन्तु परमेश्वर के लिए यह केवल दो दिनों के समान है; वास्तव में इससे उसे कोई अंतर नहीं पड़ता। इसलिए, हम यीशु के इस कथन *"मैं शीघ्र आने वाला हूँ"* को इसी दृष्टिकोण से समझते हैं और यह देखते हुए, कि चिन्ह अपने समय में पूरे हो रहे हैं, उसके आगमन के लिए तैयार रहते हैं।

घटनाओं का क्रम–एक चित्रात्मक प्रस्तुति

अब हम उन मुख्य घटनाओं के क्रम का एक चित्रात्मक अवलोकन प्रस्तुत करते हैं, जो शीघ्र ही घटित होने वाली हैं। ये प्रकाशितवाक्य की पुस्तक और अन्य वचनों पर आधारित हैं। हम इन्हें पहले एक समग्र अवलोकन के रूप में प्रस्तुत करते हैं, और फिर आगे आने वाले अध्यायों में, हम इस अवलोकन को संबंधित वचन के पदों के द्वारा प्रमाणित करेंगे।

"कलीसिया युग", या अनुग्रह की व्यवस्था, पिन्तेकुस्त के दिन आरम्भ हुई और आज तक जारी है। हम वर्तमान में "कलीसिया युग" में जी रहे हैं, यह शब्द सरल रूप से यह दर्शाता है, कि इस समय परमेश्वर मुख्यतः कलीसिया के भीतर और उसके द्वारा जातियों तक मसीह का संदेश पहुँचाने के लिए कार्य कर रहे हैं।

परमेश्वर द्वारा मानवजाति के साथ किए गए कार्यों के भिन्न कालों को पहचानने वाली 7 शास्त्रीय व्यवस्थाएँ इस प्रकार हैं...

1) निर्दोषता (सृष्टि से पाप में गिरने तक)
2) अंतरात्मा (पतन से जलप्रलय तक)
3) मानव शासन (जलप्रलय से बाबेल / अब्राहम तक)
4) प्रतिज्ञा (अब्राहम से मूसा तक)
5) व्यवस्था (मूसा से मसीह तक)
6) अनुग्रह (कलीसिया युग) (पिन्तेकुस्त से उठाए जाने तक)
7) राज्य (दूसरा आगमन से अनन्त अवस्था तक)

परमेश्वर का अगला महान कार्य, जिसकी हम प्रतीक्षा कर रहे हैं, कलीसिया का उठाया जाना (रैप्चर) है, जो इस अनुग्रह की व्यवस्था या कलीसिया युग का अंत करेगा। कलीसिया का उठाया जाना प्रायः प्रभु का गुप्त आगमन कहा जाता है—जब वह कलीसिया को संसार से बाहर ले जाने के लिए आएगा, और हम हवा में उससे मिलेंगे। एक क्षण में, पलक झपकने जितने समय में, हमसे पहले मर चुके संत (मसीह में विश्वास करने वाले तथा पुराने नियम के संत) महिमामय देहों के साथ जी उठेंगे। और हम जो उस समय जीवित होंगे, हमारी देहें भी एक ही क्षण में बदल दी जाएँगी, और हम सब महिमामय देहों के साथ प्रभु यीशु से हवा में मिलने के लिए उठा लिए जाएँगे और उसके साथ स्वर्ग में ले जाए जाएँगे। इस अवधि में, हमें हमारे निवास स्थानों में पहुँचाया जाएगा, हमें हमारे प्रतिफल दिए जाएँगे, और हम महिमामय आराधना में सम्मिलित होंगे। यह सब सात वर्षों (पृथ्वी के वर्षों) तक चलेगा और इन सात वर्षों के अंत में मेम्ने के विवाह भोज के साथ पूर्ण होगा।

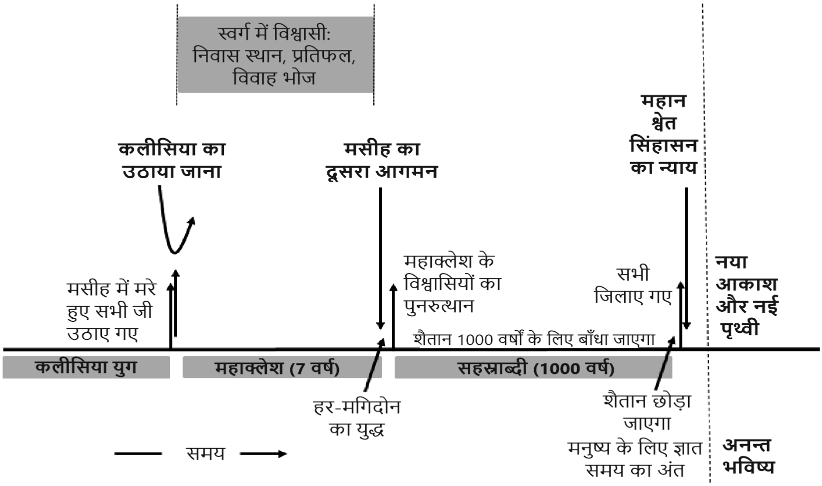

कलीसिया का उठाए जाने (रैप्चर) से, पृथ्वी पर सात वर्षों के महाक्लेश की शुरुआत होगी, जिसे दानिय्येल का सत्तरवाँ सप्ताह भी कहा जाता है। इन सात वर्षों के दौरान, मसीह-विरोधी पहले शांति के व्यक्ति के रूप में आएगा। परन्तु सात वर्षों के मध्य में, यही व्यक्ति, अर्थात् मसीह-विरोधी, अपनी प्रतिज्ञाओं को तोड़ देगा, और उसकी आराधना की जाने की माँग करेगा, और एक वैश्विक आर्थिक व्यवस्था तथा वैश्विक धार्मिक व्यवस्था के माध्यम से नियंत्रण स्थापित करेगा, जिसमें उसकी सहायता एक अन्य व्यक्ति करेगा, जिसे झूठा भविष्यद्वक्ता कहा गया है। इन सात वर्षों के दौरान, परमेश्वर पृथ्वी पर अपना न्याय उँडेल देगा। बहुत से लोग विश्वास करेंगे और प्रभु यीशु मसीह की ओर मन फिराएँगे, और बहुत से लोग अपने विश्वास के कारण शहीद किए जाएँगे।

इन सात वर्षों के अंत में हर-मगिदोन का युद्ध होगा, जहाँ अनेक राष्ट्रों की सेनाएँ इस्राएल के विरुद्ध इकट्ठी होंगी और यरूशलेम पर आक्रमण करेंगी। उसी समय, प्रभु यीशु महिमा के बादलों को चीरते हुए, अपने हज़ारों-हज़ार संतों के साथ लौटेगा। यह प्रभु का दूसरा

आगमन होगा। वह सेनाओं का नाश करेगा और इस्राएल को बचाएगा, मसीह-विरोधी और झूठे भविष्यद्वक्ता को आग की झील में डाल देगा, और पृथ्वी पर अपना राज्य स्थापित करेगा। महाक्लेश के इन सात वर्षों के दौरान मसीह के लिए शहीद किए गए सभी लोग पुनर्जीवित किए जाएँगे। जातियों का न्याय (जिसे भेड़ों और बकरियों का न्याय भी कहा जाता है) होगा, जिसमें वे सभी जिन्होंने यीशु को अस्वीकार किया है, नरक, अर्थात् अनन्त दण्ड में भेजे जाएँगे। शैतान और उसके दूत बाँध दिए जाएँगे और अथाह कुंड में डाल दिए जाएँगे। इसके साथ ही यीशु मसीह का 1000 वर्षों का राज्य (सहस्राब्दी राज्य) आरम्भ होगा, जिसमें वह यरूशलेम से राष्ट्रों पर शासन करेगा। उसके सभी संत उसके साथ 1000 वर्षों तक राष्ट्रों पर शासन करेंगे।

सहस्राब्दी के अंत में, शैतान को थोड़े समय के लिए छोड़ा जाएगा, ताकि वह लोगों को बहकाने और यीशु मसीह के विरुद्ध करने का अंतिम प्रयास कर सके। इसके बाद शैतान को हटा दिया जाएगा और सदा के लिए आग की झील में डाल दिया जाएगा। इसके पश्चात्, जितने लोग कभी जीवित रहे हैं, वे सभी जिलाए जाएँगे, और प्रत्येक व्यक्ति महान श्वेत सिंहासन के न्याय के सामने खड़ा होगा। संतों को उन लोगों से सदा के लिए अलग कर दिया जाएगा जो उद्धार नहीं पाए हैं, और स्वर्ग में उठा लिए गए हैं।

इसके बाद, वर्तमान आकाश और पृथ्वी (यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड) आग से नष्ट कर दिए जाएँगे, और परमेश्वर एक नया आकाश और नई पृथ्वी सृजित करेगा, जहाँ धार्मिकता वास करेगी। पवित्र नगर, अर्थात् स्वर्गीय यरूशलेम, को नई पृथ्वी पर स्थापित किया जाएगा। परमेश्वर सदा-सर्वदा मनुष्य के साथ वास करेगा।

अब, आइए हम अपना ध्यान कलीसिया के उठाए जाने (रैप्चर) पर केन्द्रित करें, रैप्चर से सम्बन्धित और उसके बाद होने वाली

घटनाओं का अध्ययन करें, और यह भी प्रस्तुत करें, कि हम महाक्लेश से पूर्व, कलीसिया के उठाए जाने में क्यों विश्वास करते हैं।

'हम सब एक साथ उठाए जाएंगे' (सिमल रैपीमर)

प्रेरित पौलुस ने रैप्चर (गुप्त आगमन) का वर्णन किया है, जब मसीह विश्वासियों को हवा में अपने पास लेने और उन्हें अपने साथ रखने के लिए लौटेंगे।

1 थिस्सलुनीकियों 4:13-18

13 हे भाइयो, हम नहीं चाहते कि तुम उनके विषय में जो सोते हैं, अज्ञानी रहो; ऐसा न हो कि तुम दूसरों के समान शोक करो जिन्हें आशा नहीं।
14 क्योंकि यदि हम विश्वास करते हैं कि यीशु मरा और जी भी उठा, तो वैसे ही परमेश्वर उन्हें भी जो यीशु में सो गए हैं, उसी के साथ ले आएगा।
15 क्योंकि हम प्रभु के वचन के अनुसार तुम से यह कहते हैं कि हम जो जीवित हैं और प्रभु के आने तक बचे रहेंगे, सोए हुओं से कभी आगे न बढ़ेंगे।
16 क्योंकि प्रभु आप ही स्वर्ग से उतरेगा; उस समय ललकार, और प्रधान दूत का शब्द सुनाई देगा, और परमेश्वर की तुरही फूँकी जाएगी; और जो मसीह में मरे हैं, वे पहले जी उठेंगे।
17 तब हम जो जीवित और बचे रहेंगे उनके साथ बादलों पर उठा लिये जाएँगे कि हवा में प्रभु से मिलें; और इस रीति से हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे।
18 इस प्रकार इन बातों से एक दूसरे को शान्ति दिया करो।

1 कुरिन्थियों 15:51-58

51 देखो, मैं तुम से भेद की बात कहता हूँ: हम सब नहीं सोएँगे, परन्तु सब बदल जाएँगे,
52 और यह क्षण भर में, पलक मारते ही अन्तिम तुरही फूँकते ही होगा। क्योंकि तुरही फूँकी जाएगी और मुर्दे अविनाशी दशा में उठाए जाएँगे, और हम बदल जाएँगे।
53 क्योंकि अवश्य है कि यह नाशवान् देह अविनाश को पहिन ले, और यह मरनहार देह अमरता को पहिन ले।
54 और जब यह नाशवान् अविनाश को पहिन लेगा, और यह मरनहार अमरता को पहिन लेगा, तब वह वचन जो लिखा है पूरा हो जाएगा: "जय ने मृत्यु को निगल लिया।

[55] हे मृत्यु, तेरी जय कहाँ रही? हे मृत्यु, तेरा डंक कहाँ रहा?"
[56] मृत्यु का डंक पाप है, और पाप का बल व्यवस्था है।
[57] परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमें जयवन्त करता है।
[58] इसलिये हे मेरे प्रिय भाइयो, दृढ़ और अटल रहो, और प्रभु के काम में सर्वदा बढ़ते जाओ, क्योंकि यह जानते हो कि तुम्हारा परिश्रम प्रभु में व्यर्थ नहीं है।

"रैप्चर" शब्द अंग्रेज़ी बाइबल में नहीं पाया जाता। "रैप्चर" शब्द प्राचीन यूनानी पाठ में भी नहीं है, परन्तु यह लैटिन वल्गेट से आया है, जहाँ 1 थिस्सलुनीकियों 4:17 में प्रयुक्त वाक्यांश 'उठा लिए जाएँगे' के लिए *'रैपीमर'* शब्द का प्रयोग किया गया है, जिससे हमें अंग्रेज़ी शब्द "रैप्चर" प्राप्त होता है।

1 थिस्सलुनीकियों 4:17 (लैटिन वुल्गाते)
देइन्दे नोस् क्वी विवीमुस क्वी रेलिन्क्विमुर सिमुल रापिएमुर कुम इल्लिस इन नुबिबुस ओब्वियाम डोमिनो इन एरा एत सिक सेम्पर कुम डोमिनो एरिमुस

'सिमल रैपीमर' = हम एक साथ उठा लिए जाएँगे (रैप्चर किए जाएँगे)

यह रैप्चर कलीसिया युग के अंत का संकेत देता है, क्योंकि कलीसिया को पृथ्वी से उठा लिया जाएगा। रैप्चर, सात वर्षों तक चलने वाले क्लेश काल से पहले घटित होगा।

रैप्चर के समय, वे सभी लोग जो मर चुके हैं और स्वर्ग में चले गए हैं, उनकी आत्माएँ प्रभु यीशु के साथ आएँगी और महिमामय देहें प्राप्त करेंगी। उस समय जीवित विश्वासियों की देहें तुरंत बदल दी जाएँगी और महिमामय (अमर) हो जाएँगी, और हम सब प्रभु से आकाश में मिलने के लिए उठा लिए जाएँगे।

फिलिप्पियों 3:20,21
[20] पर हमारा स्वदेश स्वर्ग पर है; और हम एक उद्धारकर्ता प्रभु यीशु मसीह के वहाँ से आने की बाट जोह रहे हैं।

21 वह अपनी शक्ति के उस प्रभाव के अनुसार जिसके द्वारा वह सब वस्तुओं को अपने वश में कर सकता है, हमारी दीन–हीन देह का रूप बदलकर, अपनी महिमा की देह के अनुकूल बना देगा।

हमारी महिमामय देह वैसी ही होगी जैसी प्रभु यीशु की देह उसके पुनरुत्थान के बाद थी। हमारी महिमामय देह आत्मिक, स्वर्गीय, अमर और अविनाशी पदार्थ की होगी। वह दीवारों के आर-पार जा सकती थी (यूहन्ना 20:26), उसे छुआ और महसूस किया जा सकता था (यूहन्ना 20:27), वह भोजन कर सकती थी (लूका 24:41-43), वह स्वर्ग पर आरोहित हो सकती थी (यूहन्ना 20:17; प्रेरितों के काम 1:9), आदि।

रात के चोर के समान

1 थिस्सलुनीकियों 5:1-11

1 पर हे भाइयो, इसका प्रयोजन नहीं कि समयों और कालों के विषय में तुम्हारे पास कुछ लिखा जाए।
2 क्योंकि तुम आप ठीक जानते हो कि जैसा रात को चोर आता है, वैसा ही प्रभु का दिन आनेवाला है।
3 जब लोग कहते होंगे, "कुशल है, और कुछ भय नहीं," तो उन पर एकाएक विनाश आ पड़ेगा, जिस प्रकार गर्भवती पर पीड़ा; और वे किसी रीति से न बचेंगे।
4 पर हे भाइयो, तुम तो अन्धकार में नहीं हो कि वह दिन तुम पर चोर के समान आ पड़े।
5 क्योंकि तुम सब ज्योति की सन्तान और दिन की सन्तान हो; हम न रात के हैं, न अन्धकार के हैं।
6 इसलिये हम दूसरों के समान सोते न रहें, पर जागते और सावधान रहें।
7 क्योंकि जो सोते हैं वे रात ही को सोते हैं, और जो मतवाले होते हैं वे रात ही को मतवाले होते हैं।
8 पर हम जो दिन के हैं, विश्वास और प्रेम की झिलम पहिनकर और उद्धार की आशा का टोप पहिनकर सावधान रहें।
9 क्योंकि परमेश्वर ने हमें क्रोध के लिये नहीं, परन्तु इसलिये ठहराया है कि हम अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा उद्धार प्राप्त करें।
10 वह हमारे लिये इस कारण मरा कि हम चाहे जागते हों चाहे सोते हों, सब मिलकर उसी के साथ जीएँ।

[11] इस कारण एक दूसरे को शान्ति दो और एक दूसरे की उन्नति का कारण बनो, जैसा कि तुम करते भी हो।

प्रभु का दिन *"रात के चोर के समान"* आता है (पद 2), ऐसे समय में जब उसकी सबसे कम अपेक्षा की जाती है। प्रेरित पौलुस ने अभी-अभी कलीसिया के रैप्चर का वर्णन पूरा किया है और उसके बाद *"प्रभु के दिन"* का उल्लेख करता है, जिसे वह *"एकाएक विनाश"* (पद 3), *"गर्भवती की पीड़ा"* (पद 3), और *"क्रोध"* (पद 9) जैसे शब्दों से संबोधित करता है। रैप्चर अचानक होगा, और फिर तुरंत तथा अप्रत्याशित रूप से *"प्रभु का दिन"* आएगा। इसलिए, इस संदर्भ को देखते हुए, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं, कि यहाँ जिस *"प्रभु के दिन"* की बात की गई है, वह रैप्चर के तुरंत बाद आरम्भ होगा, जिसे हम सात वर्षों के क्लेश काल के रूप में जानते हैं।

परमेश्वर की तुरही

पवित्र शास्त्र में तुरहियाँ लोगों को इकट्ठा करने और उनकी गतिविधियों को निर्देशित करने के लिए उपयोग की जाती थीं (गिनती 10:2)। हम यह भी देखते हैं, कि परमेश्वर की मौजूद उपस्थिति, तुरही के शब्द के साथ प्रकट हुई (निर्गमन 19:16)। ललकार और प्रधान स्वर्गदूत के शब्द के साथ-साथ, कलीसिया के रैप्चर के समय तुरही बजेगी (1 थिस्सलुनीकियों 4:16)। कुछ लोग इसे एक गुप्त निर्गमन कहते हैं, क्योंकि केवल विश्वासी ही इस "बुलाहट" को सुनेंगे और तुरंत उठा लिए जाएँगे।

1 थिस्सलुनीकियों 4:16 और 1 कुरिन्थियों 15:52 दोनों यह दर्शाते हैं, कि रैप्चर के समय तुरही बजेगी। यह तुरही प्रकाशितवाक्य 11:15 से प्रकाशितवाक्य 13:18 में वर्णित सातवीं तुरही के समान नहीं है। रैप्चर की तुरही *"परमेश्वर की तुरही"* है (1 थिस्सलुनीकियों 4:16), जो संतों के पुनरुत्थान की घोषणा करती है और उन्हें स्वर्ग में उठा

लिए जाने के लिए एकत्र करती है। दूसरी तुरही सातवें दूत की तुरही है (प्रकाशितवाक्य 11:15), जो सात मुहरों के बाद और सात कटोरों से पहले पृथ्वी पर रहने वालों के लिए विपत्तियों की घोषणा करने वाली सात तुरहियों का भाग है। मसीह के दूसरे आगमन के समय भी *"तुरही का बड़ा शब्द"* होगा (मत्ती 24:31), जब वह स्वर्ग से निकलकर हर-मगिदोन के युद्ध में सम्मिलित होगा और उसके बाद क्लेश के संतों (यहूदी और अन्यजाति) को अपने पास इकट्ठा करेगा (मत्ती 24:30,31; प्रकाशितवाक्य 19:17-21)।

ऐसा प्रतीत होता है, कि 1 थिस्सलुनीकियों 4:16 और 1 कुरिन्थियों 15:52 के अनुसार, रैप्चर के समय दो तुरही के शब्द होंगे। पहली तुरही प्रभु के उतरने की घोषणा करेगी—*"क्योंकि प्रभु आप ही स्वर्ग से उतरेगा... परमेश्वर की तुरही फूँकी जाएगी..."* (1 थिस्सलुनीकियों 4:16), जो निर्गमन 19:16 के समान है। दूसरी या *"अंतिम तुरही"* संतों के तत्काल पुनरुत्थान, महिमा प्राप्त करने और उठा लिए जाने की घोषणा करेगी—*"और यह क्षण भर में, पलक मारते ही अन्तिम तुरही फूँकते ही होगा। क्योंकि तुरही फूँकी जाएगी और मुर्दे अविनाशी दशा में उठाए जाएँगे, और हम बदल जाएँगे"* (1 कुरिन्थियों 15:52)।

स्वर्ग में सात वर्ष

आइए, उन वचनों को एक साथ रखें जो पवित्र शास्त्र में यह प्रकट करते हैं, कि रैप्चर के तुरंत बाद स्वर्ग में सात वर्षों के दौरान क्या होगा।

1) हम उसके साथ महिमा में होंगे (कुलुस्सियों 3:4)।
2) हम उसे वैसा ही देखेंगे जैसा वह है (1 यूहन्ना 3:2)।
3) हम उसके समान होंगे, महिमामय देहों में जीवन बिताते हुए (1 यूहन्ना 3:2)।
4) हम परमेश्वर को वैसे जानेंगे जैसे हम जाने जाते हैं, या जैसा मैसेज बाइबल कहती है—*"उसे सीधे जानेंगे जैसे वह हमें जानता है"*

(1 कुरिन्थियों 13:12)।

5) हमें स्वर्ग में हमारे निवास स्थानों में स्वागत किया जाएगा (यूहन्ना 14:1-3)।

6) हम में से प्रत्येक विश्वासी मसीह की न्याय गद्दी के सामने खड़ा होगा, ताकि अपने किए हुए कामों के अनुसार प्रतिफल पाए। इनमें मुकुट (नीचे देखें) और वे प्रतिफल सम्मिलित हैं, जिनकी प्रतिज्ञा यीशु ने जय पाने वालों से की है (प्रकाशितवाक्य 2 और 3, नीचे देखें)। देह में किए गए सभी काम नष्ट हो जाएँगे (2 कुरिन्थियों 5:10; रोमियों 14:10,12; 1 कुरिन्थियों 3:13-15)। इसे अक्सर "विश्वासियों का न्याय" या "बेमा गद्दी" का न्याय कहा जाता है, क्योंकि 2 कुरिन्थियों 5:10 में "न्याय गद्दी" के लिए प्रयुक्त यूनानी शब्द *'बेमा'* है।

7) हम छुड़ाए गए राजाओं और याजकों के रूप में आराधना में सम्मिलित होंगे (प्रकाशितवाक्य 5:8-10)।

8) क्लेश के शहीदों की आत्माएँ—वे जो क्लेश के समय अपने विश्वास के कारण शहीद किए गए—हमारे साथ आराधना में सम्मिलित होंगी (प्रकाशितवाक्य 6:9-11; प्रकाशितवाक्य 7:9-17)।

9) हम मेम्ने के विवाह में भाग लेंगे, जो सात वर्षों के अंत में होगा (प्रकाशितवाक्य 19:7,8)।

इनाम स्वरूप मुकुट

नया नियम कई प्रकार के मुकुटों का उल्लेख करता है, जो विश्वासियों को उनके जीवन, गवाही और सेवा के लिए दिए जाएँगे।

धार्मिकता का मुकुट: *"भविष्य में मेरे लिये धर्म का वह मुकुट रखा हुआ है, जिसे प्रभु, जो धर्मी और न्यायी है, मुझे उस दिन देगा, और मुझे ही नहीं वरन् उन सब को भी जो उसके प्रगट होने को प्रिय जानते हैं।"* (2 तीमुथियुस 4:8)

अविनाशी मुकुट: *"हर एक पहलवान सब प्रकार का संयम करता है; वे तो एक मुरझानेवाले मुकुट को पाने के लिये यह सब करते हैं, परन्तु हम तो उस मुकुट के लिये करते हैं जो मुरझाने का नहीं।"* (1 कुरिन्थियों 9:25)

आनन्द का मुकुट: (1 थिस्सलुनीकियों 2:19; फिलिप्पियों 4:1)—उन लोगों को स्वर्ग में देखकर जिनकी आपने सेवा की।

जीवन का मुकुट: *"धन्य है वह मनुष्य जो परीक्षा में स्थिर रहता है, क्योंकि वह खरा निकलकर जीवन का वह मुकुट पाएगा जिसकी प्रतिज्ञा प्रभु ने अपने प्रेम करनेवालों से की है।"* (याकूब 1:12) *"जो दु:ख तुझ को झेलने होंगे, उन से मत डर। क्योंकि देखो, शैतान तुम में से कुछ को जेलखाने में डालने पर है ताकि तुम परखे जाओ; और तुम्हें दस दिन तक क्लेश उठाना होगा। प्राण देने तक विश्‍वासी रह, तो मैं तुझे जीवन का मुकुट दूँगा।"* (प्रकाशितवाक्य 2:10)

महिमा का मुकुट: *"जब प्रधान रखवाला प्रगट होगा, तो तुम्हें महिमा का मुकुट दिया जाएगा जो मुरझाने का नहीं।"* (1 पतरस 5:4)

प्रकाशितवाक्य 3:11
मैं शीघ्र ही आनेवाला हूँ; जो कुछ तेरे पास है उसे थामे रह कि कोई तेरा मुकुट छीन न ले।

जय पाने वाले के लिए प्रतिज्ञा किए गए प्रतिफल

यहाँ प्रकाशितवाक्य अध्याय 2 और 3 से वचनों की एक सूची दी गई है, जहाँ प्रभु यीशु ने जय पाने वाले से प्रतिफल की प्रतिज्ञा की है। यद्यपि सातों कलीसियाओं से बात करते समय उसने जय पाने वाले के लिए भिन्न-भिन्न प्रतिफलों का उल्लेख किया, हम समझते हैं कि ये प्रतिफल कलीसिया युग के उन सभी विश्वासियों के लिए हैं, जो अंत तक अपने विश्वास में स्थिर रहते हुए जय पाते हैं।

प्रकाशितवाक्य 2:7
जो जय पाए, मैं उसे उस जीवन के पेड़ में से जो परमेश्‍वर के स्वर्गलोक में है, फल खाने को दूँगा।

जीवन का वृक्ष अनन्त जीवन और परमेश्वर के साथ संगति की पूर्ण पुनर्स्थापना का प्रतीक है, इस प्रकार अदन की वाटिका में जीवन की जो हानि हुई थी उसका उलटा होगा। जय पाने वालों को स्वर्गलोक में परमेश्वर की जीवन-दायक उपस्थिति तक बिना रोक-टोक पहुँच प्रदान की जाती है।

[**पार्श्व टिप्पणी:** यह दर्शाता है, कि पतन के बाद जीवन का वृक्ष स्वर्ग में ले जाया गया और मसीह के पुनरुत्थान पर स्वर्गलोक भी स्वर्ग में स्थानांतरित किया गया।]

प्रकाशितवाक्य 2:11
जो जय पाए, उस को दूसरी मृत्यु से हानि न पहुँचेगी।

दूसरी मृत्यु अंतिम न्याय और आग की झील में परमेश्वर से अनन्त अलगाव को दर्शाती है (प्रकाशितवाक्य 20:6,14; प्रकाशितवाक्य 21:8)। जय पाने वाले इस न्याय से सुरक्षित हैं और मसीह के साथ अनन्त जीवन में सहभागी हैं।

प्रकाशितवाक्य 2:17
जो जय पाए, उस को मैं गुप्त मन्ना में से दूँगा, और उसे एक श्वेत पत्थर भी दूँगा; और उस पत्थर पर एक नाम लिखा हुआ होगा, जिसे उसके पानेवाले के सिवाय और कोई न जानेगा।

गुप्त मन्ना के रूप में मसीह, विश्वासियों के अनन्त आत्मिक भोजन (यूहन्ना 6:48,49,58) और परमेश्वर की घनिष्ठ व्यवस्था का प्रतीक है। श्वेत पत्थर पर लिखा नया नाम व्यक्तिगत स्वीकार्यता, निर्दोष ठहराए जाने और एक विशिष्ट पहचान को दर्शाता है, जिसे पूर्ण रूप से केवल

मसीह और वह विश्वासी ही जानेगा।

पहली शताब्दी के यूनानी-रोमी संसार में, "श्वेत पत्थर" के कई सुविख्यात सांस्कृतिक अर्थ थे।

1) न्यायिक पत्थर, निर्दोष ठहराए जाने और प्रतिपादन का चिन्ह। रोमी न्यायालयों में, न्यायी निर्णय दर्ज करने के लिए पत्थर डालते थे, जिसमें श्वेत पत्थर का अर्थ "निर्दोष" (छुटकारा), और काला पत्थर का अर्थ "दोषी" (दण्ड) होता था। इस संदर्भ में, श्वेत पत्थर की प्रतिज्ञा दिव्य प्रतिपादन को दर्शाती है; संसार के दण्ड के विपरीत, परमेश्वर के निर्णय से विश्वासी को सार्वजनिक रूप से धर्मी ठहराया गया है।

2) प्रवेश-चिह्न, स्वीकार्यता और पहुँच का संकेत। भोजों, उत्सवों, रंगमंचीय कार्यक्रमों और विशेष दावतों में प्रवेश के लिए श्वेत पत्थरों का उपयोग किया जाता था। नाम खुदा हुआ श्वेत पत्थर प्रवेश की अनुमति देता था। इस संदर्भ में, श्वेत पत्थर परमेश्वर के अनन्त भोज में स्वीकार्यता और निमंत्रण का प्रतीक है, जो मेम्ने के विवाह भोज और स्वर्गीय संगति में अधिकृत प्रवेश को दर्शाता है।

3) क्रीड़ा-विजय के पुरस्कार। कभी-कभी विजयी खिलाड़ियों को उनके नाम खुदे स्मारक पत्थर दिए जाते थे, जो विजय का प्रमाण और विशेषाधिकार / इनाम प्राप्त करने का साधन होते थे। यह प्रतिज्ञा इस बात को दृढ़ करती है कि विश्वासी एक आत्मिक विजेता है, जिसे मसीह द्वारा पहचाना जाता है और उसकी विश्वासयोग्यता के लिए उसे अनन्त प्रतिफल दिया जाता है।

4) व्यक्तिगत पहचान, घनिष्ठ पहचान का प्रतीक। नाम अंकित पत्थर व्यक्तिगत पहचान के चिन्ह होते थे, जो उन्हें धारण करने वाले को विशेष स्थान या अधिकार प्रदान करते थे। केवल पाने वाले को ज्ञात नए नाम की प्रतिज्ञा उस घनिष्ठ संबंध को दर्शाती है, जिसमें

मसीह प्रभु छुड़ाए गए विश्वासी की अनोखी पहचान को प्रभु के छुड़ाए हुए जन के रूप में स्वीकार और पुष्टि करते हैं।

प्रकाशितवाक्य 2:26-28

26 जो जय पाए और मेरे कामों के अनुसार अन्त तक करता रहे, मैं उसे जाति जाति के लोगों पर अधिकार दूँगा,
27 और वह लोहे का राजदण्ड लिये हुए उन पर राज्य करेगा, जिस प्रकार कुम्हार के मिट्टी के बर्तन चकनाचूर हो जाते हैं:
मैं ने भी ऐसा ही अधिकार अपने पिता से पाया है;
28 और मैं उसे भोर का तारा दूँगा।

जय पाने वाले मसीह के हजारवर्षीय राज्य के दौरान राष्ट्रों पर उनके उसके धर्मी शासन में सहभागी होंगे और राजाओं के राजा के अधीन सौंपे गए अधिकार का प्रयोग करेंगे। "भोर का तारा" मसीह की महिमा में सहभागिता और स्वयं मसीह का वरदान दर्शाता है, जो अनन्त राज्य के प्रभात के रूप में प्रकट होते हैं (2 पतरस 1:19)। *"मुझ यीशु ने अपने स्वर्गदूत को इसलिये भेजा कि तुम्हारे आगे कलीसियाओं के विषय में इन बातों की गवाही दे। मैं दाऊद का मूल और वंश, और भोर का चमकता हुआ तारा हूँ।"* (प्रकाशितवाक्य 22:16)

प्रकाशितवाक्य 3:5

जो जय पाए उसे इसी प्रकार श्वेत वस्त्र पहिनाया जाएगा, और मैं उसका नाम जीवन की पुस्तक में से किसी रीति से न काटूँगा; पर उसका नाम अपने पिता और उसके स्वर्गदूतों के सामने मान लूँगा।

श्वेत वस्त्र परमेश्वर के सामने पवित्रता, धार्मिकता और आदर का प्रतीक हैं, जो विश्वासी के उद्धार और जय की पुष्टि करते हैं। जय पाने वालों के नामों को स्वर्ग में स्वीकार करना, परमेश्वर और स्वर्गदूतों के सामने उनके अनन्त अधिकार और सार्वजनिक पुष्टि को प्रमाणित करती है।

प्रकाशितवाक्य 3:12
जो जय पाए उसे मैं अपने परमेश्वर के मन्दिर में एक खंभा बनाऊँगा, और वह फिर कभी बाहर न निकलेगा; और मैं अपने परमेश्वर का नाम और अपने परमेश्वर के नगर अर्थात् नये यरूशलेम का नाम, जो मेरे परमेश्वर के पास से स्वर्ग पर से उतरनेवाला है, और अपना नया नाम उस पर लिखूँगा।

खम्भा बनाए जाने का अर्थ है, परमेश्वर के अनन्त निवास में स्थायी स्थान, स्थिरता और आदर। उस पर लिखे गए नाम नए यरूशलेम में सुरक्षित नागरिकता और परमेश्वर तथा मसीह के साथ सदा के लिए व्यक्तिगत, घनिष्ठ पहचान को दर्शाते हैं।

प्रकाशितवाक्य 3:21
जो जय पाए मैं उसे अपने साथ अपने सिंहासन पर बैठाऊँगा, जैसे मैं भी जय पाकर अपने पिता के साथ उसके सिंहासन पर बैठ गया।

जय पाने वालों से प्रतिज्ञा की गई है, कि वे मसीह के साथ उसके महिमामय राज्य में अधिकार साझा करेंगे, जैसे वह स्वयं पिता के साथ राज्य करता है (रोमियों 8:17; 1 कुरिन्थियों 6:2)। यह विश्वासियों के परम उत्कर्ष को व्यक्त करता है, कि वे उसके अनन्त राज्य में मसीह के साथ विश्वासयोग्य सहभागी के रूप में सह-शासन करेंगे।

हम कलीसिया के महाक्लेश से पूर्व उठाए जाने (प्री-ट्रिब्युलेशन रैप्चर) में क्यों विश्वास करते हैं?

हम विश्वास करते हैं, कि कलीसिया का रैप्चर सात वर्षों के क्लेश काल से पहले होगा, और इसलिए कलीसिया क्लेश काल से होकर नहीं गुज़रेगी। इसे क्लेश-पूर्व रैप्चर कहा जाता है। अब हम कई कारण प्रस्तुत करते हैं जिनके आधार पर हम कलीसिया के क्लेश-पूर्व रैप्चर में विश्वास करते हैं।

[**पार्श्व टिप्पणी:** हम जानते हैं कि कुछ लोग मध्य-क्लेश काल या क्लेश काल के पश्चात् रैप्चर का मत रखते हैं। हम यहाँ उन मतों पर प्रत्यक्ष

चर्चा नहीं कर रहे हैं, परन्तु क्लेश-पूर्व रैप्चर के कारण प्रस्तुत करते समय, अप्रत्यक्ष रूप से उन मतों को संबोधित करेंगे। हम पाठक पर छोड़ते हैं कि यदि वे चाहें, तो इन विभिन्न मतों का अध्ययन करें और अपने निष्कर्ष पर पहुँचें।]

1) यीशु ने कहा कि वह आएगा और हमें अपने पिता के घर ले जाएगा

यूहन्ना 14:1-4

1 "तुम्हारा मन व्याकुल न हो; परमेश्वर पर विश्वास रखो और मुझ पर भी विश्वास रखो।
2 मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं, यदि न होते तो मैं तुम से कह देता; क्योंकि मैं तुम्हारे लिये जगह तैयार करने जाता हूँ।
3 और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिये जगह तैयार करूँ, तो फिर आकर तुम्हें अपने यहाँ ले जाऊँगा कि जहाँ मैं रहूँ वहाँ तुम भी रहो।
4 जहाँ मैं जाता हूँ तुम वहाँ का मार्ग जानते हो।"

प्रभु यीशु ने स्पष्ट रूप से कहा, *"फिर आकर तुम्हें अपने यहाँ ले जाऊँगा कि जहाँ मैं रहूँ वहाँ तुम भी रहो"* (यूहन्ना 14:3)। हम उसके साथ उसके पिता के घर में होंगे और उन निवास स्थानों में प्रवेश करेंगे जिन्हें उसने हमारे लिए तैयार किया है। "फिर आना" और "तुम्हें अपने पास ले जाना" का स्पष्ट वर्णन 1 थिस्सलुनीकियों 4:13-18 और 1 कुरिन्थियों 15:51-58 में किया गया है, जिसे हमने कलीसिया का रैप्चर कहा है। हम यह निर्धारित करने के लिए उन्मूलन की प्रक्रिया अपनाते हैं कि यूहन्ना 14:1-3 कब और कैसे पूरा हो सकता है।

क्लेश काल के सात वर्षों के अंत में मसीह, मसीह-विरोधी और झूठे भविष्यद्वक्ता को पराजित करने के लिए आता है, और उसके तुरंत बाद हम मसीह के हजारवर्षीय राज्य में प्रवेश करते हैं, जैसा कि प्रकाशितवाक्य 19:11-21 और प्रकाशितवाक्य 20:1-6 में स्पष्ट रूप से वर्णित है। इसलिए, यूहन्ना 14:1-3 क्लेश के सात वर्षों के अंत में

पूरा नहीं हो सकता, क्योंकि हजारवर्षीय राज्य पृथ्वी पर घटित होता है, और हमें पिता के घर में होने का अवसर नहीं मिलता।

क्या यूहन्ना 14:1-3 क्लेश काल के मध्य में पूरा हो सकता है? प्रकाशितवाक्य में दिए गए घटनाक्रम को पढ़ने पर, इसका कोई संकेत नहीं मिलता। प्रकाशितवाक्य अध्याय 6 से 19 तक कहीं भी यह वर्णन नहीं है कि मसीह आकर विश्वासियों को अपने पास ले जाए और उन्हें पिता के घर में ले जाए। हम केवल यह देखते हैं कि क्लेश काल के दौरान मसीह के लिए शहीद किए गए लोग स्वर्ग में प्रकट होते हैं (प्रकाशितवाक्य 6:9-11; प्रकाशितवाक्य 7:9-14)। हम 1,44,000 यहूदियों को भी स्वर्ग में देखते हैं (प्रकाशितवाक्य 14:1-5)।

अतः यह निष्कर्ष निकालना उचित है कि यूहन्ना 14:1-3 क्लेश के आरम्भ से ठीक पहले पूरा होगा और 1 थिस्सलुनीकियों 4:13-18 में वर्णित अनुसार घटित होगा।

2) मत्ती 24 और लूका 17 में नूह और लूत की प्रतिरूपात्मक शिक्षा (टाइपोलॉजी)

हम मत्ती 24 (और लूका 17 तथा 21) में मसीह के जैतून पर्वत के उपदेश को देखते हैं, जहाँ अलग-अलग समय-काल स्पष्ट रूप से विभाजित किए गए हैं।

- मत्ती 24:4-14 अन्त समय के चिन्हों को प्रकट करता है, जो क्लेश काल से पहले के समय तक ले जाते हैं (देखें लूका 21:7-19)।
- मत्ती 24:15-19 क्लेश काल का वर्णन करता है (देखें लूका 21:20-26)।
- मत्ती 24:30,31 हर-मगिदोन के युद्ध के अंत में प्रभु के दूसरे आगमन को दर्शाता है, जब क्लेश के संतों (यहूदी और अन्यजाति जिन्होंने यीशु पर विश्वास किया) को इकट्ठा किया जाएगा

(प्रकाशितवाक्य 19:17-21)। (लूका 21:27 भी देखें)।

- मत्ती 24:32-51 सभी विश्वासियों (कलीसिया) के लिए यीशु की यह चेतावनी है, कि वे सदा रैप्चर के लिए तैयार रहें (देखें लूका 21:28-36)।

मत्ती 24 और लूका 17 में यीशु द्वारा उपयोग की गई प्रतिरूपात्मक शिक्षा के आधार पर, जैसा कि नीचे समझाया गया है, रैप्चर मत्ती 24:14 के बाद घटित होगा, जहाँ प्रभु यीशु ने कहा, *"तब अंत आएगा,"* और मत्ती 24:15 से पहले, जहाँ प्रभु यीशु ने मसीह-विरोधी के विषय में बोलना आरम्भ किया। मत्ती 24:15 अंत की शुरुआत है—क्लेश काल के अंतिम सात वर्षों का आरम्भ।

नूह जहाज़ में गया, लूत सदोम से निकल गया

मत्ती 24:36-42

36 "उस दिन और उस घड़ी के विषय में कोई नहीं जानता, न स्वर्ग के दूत और न पुत्र, परन्तु केवल पिता।
37 जैसे नूह के दिन थे, वैसा ही मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा।
38 क्योंकि जैसे जल–प्रलय से पहले के दिनों में, जिस दिन तक कि नूह जहाज पर न चढ़ा, उस दिन तक लोग खाते–पीते थे, और उनमें विवाह होते थे।
39 और जब तक जल–प्रलय आकर उन सब को बहा न ले गया, तब तक उनको कुछ भी मालूम न पड़ा; वैसे ही मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा।
40 उस समय दो जन खेत में होंगे, एक ले लिया जाएगा और दूसरा छोड़ दिया जाएगा।
41 दो स्त्रियाँ चक्की पीसती रहेंगी, एक ले ली जाएगी और दूसरी छोड़ दी जाएगी।
42 इसलिये जागते रहो, क्योंकि तुम नहीं जानते कि तुम्हारा प्रभु किस दिन आएगा।

जब प्रभु यीशु अपने विश्वासियों को सदा तैयार रहने की शिक्षा देते हैं, तब वह पुराने नियम से उदाहरण लेकर नूह, नूह के दिनों और जहाज़ का उपयोग लोगों के उठा लिए जाने को समझाने के लिए करते

हैं। जहाज़ एक सुरक्षित स्थान था, जिसने उन लोगों को उस जलप्रलय (न्याय) से बचाए रखा, जो उन सब पर आया जिन्होंने जहाज़ में प्रवेश नहीं किया था। जब न्याय समाप्त हुआ, तब जो लोग सुरक्षित रखे गए थे, वे फिर पृथ्वी पर लौट आए। इस प्रकार, जहाज़ एक प्रतिरूप है, जो हमारे लिए उन लोगों के उठा लिए जाने (या रैप्चर) को दर्शाता है, जो उद्धार पाए हुए हैं।

ध्यान दें कि यीशु ने लोगों को उठा लेने के संबंध में अपनी आगमन की घटनाओं का क्रम कैसे रखा। *“नूह जहाज पर चढ़ा”* (मत्ती 24:38) और फिर *“जल–प्रलय आकर उन सब को बहा ले गया”* (मत्ती 24:39)। नूह और उसका परिवार पहले सुरक्षित स्थान में ले जाए गए, और उसके बाद पृथ्वी पर न्याय उँडेला गया। मनुष्य के पुत्र का आना नूह के जहाज़ में लिए जाने के समान होगा, और इसमें यह बात सम्मिलित होगी कि *“एक ले लिया जाएगा, और दूसरा छोड़ दिया जाएगा”* (मत्ती 24:40), जो रैप्चर के समय होने वाली घटना का अत्यन्त स्पष्ट वर्णन है। इसलिए, यह प्रतिरूप न केवल यह दर्शाता है कि कलीसिया को क्लेश से पहले सुरक्षा में उठा लिया जाएगा, बल्कि यह भी बताता है, कि कैसे—अर्थात् विश्वासियों के रैप्चर में उठा लिए जाने के द्वारा।

लूका 17:26-30
26 जैसा नूह के दिनों में हुआ था, वैसा ही मनुष्य के पुत्र के दिनों में भी होगा।
27 जिस दिन तक नूह जहाज पर न चढ़ा, उस दिन तक लोग खाते–पीते थे, और उनमें विवाह होते थे। तब जल–प्रलय ने आकर उन सब को नष्ट किया।
28 और जैसा लूत के दिनों में हुआ था कि लोग खाते–पीते, लेन–देन करते, पेड़ लगाते और घर बनाते थे;*
29 परन्तु जिस दिन लूत सदोम से निकला, उस दिन आग और गन्धक आकाश से बरसी और सब को नष्ट कर दिया।
30 मनुष्य के पुत्र के प्रगट होने के दिन भी ऐसा ही होगा।

लूका 17 में, प्रभु यीशु लूत के सदोम और अमोरा से निकलने

का उदाहरण देते हैं। उसने कहा, *"जिस दिन लूत सदोम से निकला, उस दिन आग और गन्धक आकाश से बरसी..."* (लूका 17:29)। लूत को पहले सुरक्षा में निकाल लिया गया, और उसके बाद सदोम और अमोरा में पीछे रह जाने वालों पर न्याय आया।

नूह और लूत की यह प्रतिरूपात्मक शिक्षा यह दर्शाती है कि जो लोग परमेश्वर के हैं, उन्हें उस परमेश्वर के न्याय से बचाकर रखा जाएगा, जो उँडेला जाने वाला है। इसके अतिरिक्त, हम उत्पत्ति 18 में अब्राहम की प्रार्थना में भी देखते हैं—सदोम और अमोरा के संदर्भ में, कि परमेश्वर धर्मियों को अधर्मियों के साथ नाश नहीं करेगा।

3) यीशु ने सिखाया कि जो होने वाला है उससे बचने के लिए प्रार्थना करो

लूका 21:5–36

5 जब कुछ लोग मन्दिर के विषय में कह रहे थे कि वह कैसे सुन्दर पत्थरों और भेंट की वस्तुओं से सँवारा गया है, तो उसने कहा,
6 "वे दिन आएँगे, जिनमें यह सब जो तुम देखते हो, उनमें से यहाँ किसी पत्थर पर पत्थर भी न छूटेगा जो ढाया न जाएगा।"
7 उन्होंने उससे पूछा, "हे गुरु, यह सब कब होगा? और ये बातें जब पूरी होने पर होंगी, तो उस समय का क्या चिह्न होगा?"
8 उसने कहा, "चौकस रहो कि भरमाए न जाओ, क्योंकि बहुत से मेरे नाम से आकर कहेंगे, 'मैं वही हूँ,' और यह भी कि, 'समय निकट आ पहुँचा है।' तुम उनके पीछे न चले जाना।
9 जब तुम लड़ाइयों और बलवों की चर्चा सुनो तो घबरा न जाना, क्योंकि इनका पहले होना अवश्य है; परन्तु उस समय तुरन्त अन्त न होगा।"
10 तब उसने उनसे कहा, "जाति पर जाति और राज्य पर राज्य चढ़ाई करेगा,
11 और बड़े–बड़े भूकम्प होंगे, और जगह–जगह अकाल और महामारियाँ पड़ेंगी, और आकाश से भयंकर बातें और बड़े–बड़े चिह्न प्रगट होंगे।
12 परन्तु इन सब बातों से पहले वे मेरे नाम के कारण तुम्हें पकड़ेंगे, और सताएँगे, और पंचायतों में सौंपेंगे, और बन्दीगृह में डलवाएँगे, और राजाओं और हाकिमों के सामने ले जाएँगे।
13 पर यह तुम्हारे लिये गवाही देने का अवसर हो जाएगा।

14 इसलिये अपने अपने मन में ठान रखो कि हम पहले से उत्तर देने की चिन्ता
न करेंगे।*
15 क्योंकि मैं तुम्हें ऐसा बोल और बुद्धि दूँगा कि तुम्हारे सब विरोधी सामना या
खण्डन न कर सकेंगे।
16 तुम्हारे माता–पिता, और भाई, और कुटुम्ब, और मित्र भी तुम्हें पकड़वाएँगे;
यहाँ तक कि तुम में से कुछ को मरवा डालेंगे।
17 मेरे नाम के कारण सब लोग तुम से बैर करेंगे।
18 परन्तु तुम्हारे सिर का एक बाल भी बाँका न होगा।
19 अपने धीरज से तुम अपने प्राणों को बचाए रखोगे।
20 "जब तुम यरूशलेम को सेनाओं से घिरा हुआ देखो, तो जान लेना कि
उसका उजड़ जाना निकट है।
21 तब जो यहूदिया में हों वे पहाड़ों पर भाग जाएँ; और जो यरूशलेम के भीतर
हों वे बाहर निकल जाएँ; और जो गाँवों में हों वे उस में न जाएँ।
22 क्योंकि यह बदला लेने के ऐसे दिन होंगे, जिन में लिखी हुई सब बातें पूरी
हो जाएँगी।
23 उन दिनों में जो गर्भवती और दूध पिलाती होंगी, उनके लिये हाय, हाय!
क्योंकि देश में बड़ा क्लेश और इन लोगों पर बड़ा प्रकोप होगा।
24 वे तलवार के कौर हो जाएँगे, और सब देशों के लोगों में बन्दी होकर पहुँचाए
जाएँगे; और जब तक अन्य जातियों का समय पूरा न हो, तब तक यरूशलेम
अन्य जातियों से रौंदा जाएगा।
25 "सूरज, और चाँद, और तारों में चिह्न दिखाई देंगे; और पृथ्वी पर देश–देश
के लोगों को संकट होगा, क्योंकि वे समुद्र के गरजने और लहरों के कोलाहल
से घबरा जाएँगे।
26 भय के कारण और संसार पर आनेवाली घटनाओं की बाट देखते–देखते
लोगों के जी में जी न रहेगा, क्योंकि आकाश की शक्तियाँ हिलाई जाएँगी।
27 तब वे मनुष्य के पुत्र को सामर्थ्य और बड़ी महिमा के साथ बादल पर आते
देखेंगे।
28 जब ये बातें होने लगें, तो सीधे होकर अपने सिर ऊपर उठाना; क्योंकि
तुम्हारा छुटकारा निकट होगा।"
29 उसने उनसे एक दृष्टान्त भी कहा: "अंजीर के पेड़ और सब पेड़ों को देखो।
30 ज्योंही उनमें कोंपलें निकलती हैं, तो तुम देखकर आप ही जान लेते हो कि
ग्रीष्मकाल निकट है।
31 इसी रीति से जब तुम ये बातें होते देखो, तब जान लो कि परमेश्वर का राज्य
निकट है।

32 मैं तुम से सच कहता हूँ कि जब तक ये सब बातें न हो लें, तब तक इस पीढ़ी का कदापि अन्त न होगा।
33 आकाश और पृथ्वी टल जाएँगे, परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगी।
34 "इसलिये सावधान रहो, ऐसा न हो कि तुम्हारे मन खुमार, और मतवालेपन, और इस जीवन की चिन्ताओं से सुस्त हो जाएँ, और वह दिन तुम पर फन्दे के समान अचानक आ पड़े।
35 क्योंकि वह सारी पृथ्वी के सब रहनेवालों पर इसी प्रकार आ पड़ेगा।
36 इसलिये जागते रहो और हर समय प्रार्थना करते रहो कि तुम इन सब आनेवाली घटनाओं से बचने और मनुष्य के पुत्र के सामने खड़े होने के योग्य बनो।"

लूका 21:5–36 वचनों क अंश, मत्ती 24:1–52, मरकुस 13:1–37 और लूका 17:20–37 के समानांतर अंश है। इन तीनों अंशों में, यीशु पहले उन घटनाओं की भविष्यवाणी करते हैं, जो निकट भविष्य में होने वाली थीं, और फिर कलीसिया युग के अंत में होने वाली बातों के विषय में बोलते हैं।

निकट भविष्य की बातें:

मत्ती 24:1,2–मन्दिर नाश किया जाएगा और एक पत्थर पर दूसरा पत्थर न रहेगा।

लूका 17:25–मनुष्य के पुत्र को इस पीढ़ी के हाथों ठुकराया जाना और दुःख उठाना होगा।

लूका 21:5–7–मन्दिर नाश किया जाएगा और एक पत्थर पर दूसरा पत्थर न रहेगा।

ये बातें पूरी हो चुकी हैं। मसीह को ठुकराया गया और क्रूस पर चढ़ाया गया था। मन्दिर को सन् 70 ईस्वी में रोमियों द्वारा नष्ट कर दिया गया था।

तीनों ही अंशों में, शेष भाग कलीसिया युग के बिल्कुल अंत में घटित होने वाली घटनाओं के विषय में बोला गया है।

"...और जब तक अन्य जातियों का समय पूरा न हो, तब तक यरूशलेम अन्य जातियों से रौंदा जाएगा" (लूका 21:24)—यह स्पष्ट रूप से उस बात की ओर संकेत करता है जो क्लेश काल (ट्रिब्युलेशन) के मध्य में घटेगी, जैसा कि प्रकाशितवाक्य 11:1,2 में लिखा है—*"फिर मुझे नापने के लिये एक सरकंडा दिया गया, और किसी ने कहा, "उठ, परमेश्‍वर के मन्दिर और वेदी, और उसमें उपासना करनेवालों को नाप ले। पर मन्दिर के बाहर का आँगन छोड़ दे; उसे मत नाप क्योंकि वह अन्यजातियों को दिया गया है, और वे पवित्र नगर को बयालीस महीने तक रौंदेंगी।"* ये 42 महीने 3½ वर्ष होते हैं, जो सात वर्ष के क्लेश काल के दूसरे आधे भाग के बराबर हैं। इसलिए यह बिल्कुल स्पष्ट है कि यीशु यहाँ क्लेश काल की ओर संकेत कर रहे हैं।

इसके बाद, प्रभु यीशु हमें यह शिक्षा देते हैं...

लूका 21:36
इसलिये जागते रहो और हर समय प्रार्थना करते रहो कि तुम इन सब आनेवाली घटनाओं से बचने और मनुष्य के पुत्र के सामने खड़े होने के योग्य बनो।

जिन बातों से बचने के लिए हमें प्रार्थना करनी है, वे लूका 21:7–28 में वर्णित सभी भयानक घटनाएँ हैं, जो क्लेश काल के आरम्भ में और उसके दौरान घटेंगी। यदि शुरू से ही उनसे बचना सम्भव न होता, तो यीशु हमें उनसे बचने के लिए प्रार्थना करने को क्यों कहते? यदि परमेश्वर चाहते, कि विश्वासी (कलीसिया) सात वर्षों के क्लेशकाल से होकर गुज़रें, तो यीशु यह शिक्षा नहीं देते, कि हम प्रार्थना करें कि हम इन सब बातों से बच जाएँ। इसलिए, उनकी इस शिक्षा के आधार पर हम केवल यही निष्कर्ष निकाल सकते हैं, कि वास्तव में हम इन सब आने वाली बातों (क्लेश काल) से बचाए जाएँगे, और पृथ्वी पर इन बातों से होकर गुजरने के बजाय मनुष्य के पुत्र के सामने होंगे।

4) महान बचाव—जैसा पौलुस ने थिस्सलुनीकियों की कलीसिया को सिखाया

प्रेरित पौलुस की थिस्सलुनीकियों को लिखी दोनों पत्रियों में एक महत्वपूर्ण विषय प्रभु यीशु मसीह का आगमन है। हमें ध्यानपूर्वक देखना चाहिए कि पौलुस प्रभु यीशु के आगमन से जुड़ी घटनाओं को कैसे क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत करता है।

यह ध्यान में रखें कि प्रत्येक पत्र एक ही पत्र के रूप में लिखा गया था—अध्याय और पदों में विभाजित नहीं, बल्कि विचारों के एक तार्किक क्रम के रूप में (सच्चाई, पवित्र आत्मा से दी गई अंतर्दृष्टि), जिसे श्रोताओं तक, और बाद में कलीसिया के रूप में हम तक, पहुँचाया जाना आवश्यक था।

यहाँ हम 1 थिस्सलुनीकियों से पवित्रशास्त्र के संदर्भ प्रस्तुत करते हैं, और अगले बिंदु में हम 2 थिस्सलुनीकियों पर विचार करेंगे।

1 थिस्सलुनीकियों 1:9,10
9 क्यों कि वे आप ही हमारे विषय में बताते हैं कि तुम्हारे पास हमारा आना कैसा हुआ; और तुम कैसे मूरतों से परमेश्वर की ओर फिरे ताकि जीवते और सच्चे परमेश्वर की सेवा करो,
10 और उसके पुत्र के स्वर्ग पर से आने की बाट जोहते रहो जिसे उसने मरे हुओं में से जिलाया, अर्थात् यीशु की, जो हमें आनेवाले प्रकोप से बचाता है।

पौलुस स्पष्ट रूप से कहता है, कि हम यीशु की प्रतीक्षा करते हैं, क्योंकि हम आशा रखते हैं कि वह हमें आने वाले क्रोध से बचाएगा। *"आने वाला क्रोध"*, शब्द स्पष्ट रूप से परमेश्वर के न्याय की ओर संकेत करता है, परन्तु यह स्पष्ट नहीं है कि पौलुस विशेष रूप से किस न्याय की ओर संकेत कर रहा है; उदाहरण के लिए, क्या यह वह न्याय है, जो महाक्लेश के समय उँडेला जाएगा, या हर-मगिदोन के युद्ध के समय का न्याय है, या महान श्वेत सिंहासन का न्याय है, अथवा क्या

यह सामान्य रूप से नरक में अनन्त दण्ड की ओर संकेत करता है? इसलिए हम इसे फिल्हाल अस्पष्ट रहने देते हैं और देखते हैं कि आगे पत्रों में और क्या विवरण दिया गया है।

इसके बाद अध्याय 2 में पौलुस कहता है...

1 थिस्सलुनीकियों 2:19,20
19 भला हमारी आशा या आनन्द या बड़ाई का मुकुट क्या है? क्या हमारे प्रभु
यीशु के सम्मुख उसके आने के समय तुम ही न होगे?
20 हमारी बड़ाई और आनन्द तुम ही हो।

अगली बार जब पौलुस प्रभु के आगमन का उल्लेख करता है, तो वह संतों के साथ उसकी उपस्थिति में होने की बात करता है, और यह घोषित करता है, कि वे उसकी बड़ाई, खुशी, और आनन्द के मुकुट होंगे। यह प्रभु के आगमन के तुरंत बाद विश्वासयोग्य सेवा के लिए प्रतिफलों और उत्सव के समय की ओर संकेत करता है। जैसा कि हमने पहले कारण 1) में चर्चा की थी, यदि कलीसिया को क्लेश काल से होकर गुजरना होता और प्रभु यीशु केवल क्लेश काल के अंत में आते, *"तो प्रभु यीशु के आगमन पर उसकी उपस्थिति"* में इस प्रकार की *"महिमा और आनन्द"* का अनुभव करने का कोई अवसर न होता, क्योंकि तब हम सीधे सहस्राब्दी (हज़ार वर्ष के) राज्य में प्रवेश कर जाते।

इसे अध्याय 3 में आगे बढ़ाते हुए...

1 थिस्सलुनीकियों 3:12,13
12 और प्रभु ऐसा करे कि जैसा हम तुम से प्रेम रखते हैं, वैसा ही तुम्हारा प्रेम भी
आपस में और सब मनुष्यों के साथ बढ़े, और उन्नति करता जाए,
13 ताकि वह तुम्हारे मनों को ऐसा स्थिर करे कि जब हमारा प्रभु यीशु अपने
सब पवित्र लोगों के साथ आए, तो वे हमारे परमेश्वर और पिता के सामने
पवित्रता में निर्दोष ठहरें।

जैसे-जैसे हम पौलुस के लेखन में प्रभु के आगमन के विषय में आगे बढ़ते हैं, अब हम देखते हैं, कि यह आगमन *"उसके सब पवित्र लोगों के साथ"* होता है (1 थिस्सलुनीकियों 3:13)। इसलिए, इन तीनों सन्दर्भों को एक-साथ जोड़ने पर हम देखते हैं कि प्रभु यीशु अपने आगमन पर हमें आने वाले क्रोध से छुड़ाएँगे। उसके आगमन के बाद, हम पवित्र लोगों के साथ आनन्दित होंगे और उन जीवनों के लिए प्रतिफल पाएँगे जिन्हें हमने अनन्तता की ओर ले जाने में सहायता की है। और जब यीशु आएँगे, तो वे अपने सब पवित्र लोगों के साथ आएँगे।

अब इसी विचार को अध्याय 4 में आगे बढ़ाते हैं...

1 थिस्सलुनीकियों 4:15–18
15 क्योंकि हम प्रभु के वचन के अनुसार तुम से यह कहते हैं कि हम जो जीवित हैं और प्रभु के आने तक बचे रहेंगे, सोए हुओं से कभी आगे न बढ़ेंगे।
16 क्योंकि प्रभु आप ही स्वर्ग से उतरेगा; उस समय ललकार, और प्रधान दूत का शब्द सुनाई देगा, और परमेश्वर की तुरही फूँकी जाएगी; और जो मसीह में मरे हैं, वे पहले जी उठेंगे।
17 तब हम जो जीवित और बचे रहेंगे उनके साथ बादलों पर उठा लिये जाएँगे कि हवा में प्रभु से मिलें; और इस रीति से हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे।
18 इस प्रकार इन बातों से एक दूसरे को शान्ति दिया करो।

पौलुस आगे बढ़कर "प्रभु के आगमन" के विषय में और अधिक विस्तार तथा अतिरिक्त समझ प्रदान करता है। वह उस बात का वर्णन करता है, जिसे हम कलीसिया का उठा लिया जाना, या रैप्चर कहते हैं—अर्थात् सब पवित्र लोगों का अपने महिमामय शरीरों के साथ प्रभु के पास उठा लिया जाना।

अब, आइए 1 थिस्सलुनीकियों अध्याय 1 से 4 में पौलुस द्वारा कही गई सब बातों को एक-साथ जोड़ें। हम देखते हैं, कि प्रभु यीशु अपने आगमन पर हमें आने वाले क्रोध से छुड़ाएँगे (1 थिस्सलुनीकियों 1:10)। उसके आगमन के बाद, हम पवित्र लोगों के साथ आनन्दित

होंगे और उन जीवनों के लिए प्रतिफल पाएँगे जिन्हें हमने अनन्तता की ओर ले जाने में सहायता की है (1 थिस्सलुनीकियों 2:19)। और जब यीशु आएँगे, तो वे अपने सब पवित्र लोगों के साथ आएँगे (1 थिस्सलुनीकियों 3:13)। ये पवित्र लोग जो प्रभु के साथ आएँगे, वे उन लोगों की आत्माएँ होंगी, जो *"मसीह में मरे हैं"* (1 थिस्सलुनीकियों 4:16)। उनकी आत्माओं को उनके महिमामय शरीर मिलेंगे। फिर जो लोग उसके आगमन के समय पृथ्वी पर जीवित होंगे, उनके शरीर पल-भर में बदलकर महिमामय शरीर बन जाएँगे, और हम सब एक-साथ उठा लिए जाएँगे, कि प्रभु से आकाश में मिलें और उसके साथ स्वर्ग में रहने के लिए ले जाए जाएँ (1 थिस्सलुनीकियों 4:17)।

और फिर अध्याय 5 में, पौलुस प्रभु के आगमन के विषय में आगे कहता है...

1 थिस्सलुनीकियों 5:1–11,23

1 पर हे भाइयो, इसका प्रयोजन नहीं कि समयों और कालों के विषय में तुम्हारे पास कुछ लिखा जाए।

2 क्योंकि तुम आप ठीक जानते हो कि जैसा रात को चोर आता है, वैसा ही प्रभु का दिन आनेवाला है।

3 जब लोग कहते होंगे, "कुशल है, और कुछ भय नहीं," तो उन पर एकाएक विनाश आ पड़ेगा, जिस प्रकार गर्भवती पर पीड़ा; और वे किसी रीति से न बचेंगे।

4 पर हे भाइयो, तुम तो अन्धकार में नहीं हो कि वह दिन तुम पर चोर के समान आ पड़े।

5 क्योंकि तुम सब ज्योति की सन्तान और दिन की सन्तान हो; हम न रात के हैं, न अन्धकार के हैं।

6 इसलिये हम दूसरों के समान सोते न रहें, पर जागते और सावधान रहें।

7 क्योंकि जो सोते हैं वे रात ही को सोते हैं, और जो मतवाले होते हैं वे रात ही को मतवाले होते हैं।

8 पर हम जो दिन के हैं, विश्वास और प्रेम की झिलम पहिनकर और उद्धार की आशा का टोप पहिनकर सावधान रहें।

9 क्योंकि परमेश्वर ने हमें क्रोध के लिये नहीं, परन्तु इसलिये ठहराया है कि हम

अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा उद्धार प्राप्त करें।
10 वह हमारे लिये इस कारण मरा कि हम चाहे जागते हों चाहे सोते हों, सब मिलकर उसी के साथ जीएँ।
11 इस कारण एक दूसरे को शान्ति दो और एक दूसरे की उन्नति का कारण बनो, जैसा कि तुम करते भी हो।
23 शान्ति का परमेश्‍वर आप ही तुम्हें पूरी रीति से पवित्र करे; और तुम्हारी आत्मा और प्राण और देह हमारे प्रभु यीशु मसीह के आने तक पूरे पूरे और निर्दोष सुरक्षित रहें।

अपने पत्र की शुरुआत में पौलुस ने कहा था, कि प्रभु यीशु हमें आने वाले क्रोध से छुड़ाते हैं। फिर, विश्वासियों के आकाश में प्रभु से मिलने के लिए उठा लिए जाने का वर्णन करने के बाद, और उन्हें इस आशा से एक-दूसरे को शान्ति देने की शिक्षा देने के बाद (1 थिस्सलुनीकियों 4:13–18), पौलुस विश्वासियों को यह दृढ़ता से बताता है, कि परमेश्वर ने हमें *"क्रोध के लिए नहीं ठहराया है"* (1 थिस्सलुनीकियों 5:9), बल्कि यीशु के द्वारा उद्धार पाने और उसके साथ रहने के लिए बुलाया है। यहाँ "क्रोध" शब्द का सन्दर्भ प्रभु के दिन से जुड़ा हुआ है; इसलिए हम यह निष्कर्ष निकालते हैं, कि 1 थिस्सलुनीकियों 1:10 में कहा गया *"आने वाला क्रोध"* उसी क्रोध से सम्बन्धित है, जो क्लेश काल के समय प्रकट होगा, वह "अचानक विनाश" और "प्रसव पीड़ाएँ" जिनसे अधर्मी लोग बच नहीं पाएँगे (1 थिस्सलुनीकियों 5:3)।

1 थिस्सलुनीकियों 5:3 को ध्यान से देखें—इस पद में प्रयुक्त 'वे' और 'उन' शब्दों का संकेत अविश्वासियों की ओर है, अर्थात्, वे जो विश्वास नहीं करते (जैसा कि पौलुस आगे के वचनों में उन्हें अन्धकार में रहने वाले, रात के लोग कहता है)। वचन 3 में पौलुस कहता है, *"तब उन पर अचानक विनाश आ पड़ेगा,"* जो स्पष्ट रूप से क्लेश काल, अर्थात् क्रोध या न्याय के समय की ओर संकेत करता है (1 थिस्सलुनीकियों 1:10; 1 थिस्सलुनीकियों 5:9)। पौलुस यह भी कहता है, *"और वे किसी रीति से न बचेंगे"* (1 थिस्सलुनीकियों 5:3),

जिसका अर्थ यह है कि जो बात विश्वासियों के साथ घट चुकी है, अर्थात् उनका एक साथ उठा लिया जाना (1 थिस्सलुनीकियों 4:17), वही उस अचानक विनाश से महान छुटकारा है, जो अविश्वासियों पर आएगा। इस प्रकार, प्रभु के आगमन के सन्दर्भ में हम देखते हैं, कि विश्वासियों के लिए यह आनन्द की बात है, कि वे परमेश्वर के उद्धार और छुटकारे के कार्य का अनुभव करें और उस क्रोध के अधीन न हों जो पृथ्वी पर उण्डेला जाएगा। एक बार फिर, यह बात हमें शान्ति और आशा देती है (1 थिस्सलुनीकियों 5:11)।

इसलिए, 1 थिस्सलुनीकियों में पौलुस की शिक्षा यह स्पष्ट रूप से बताती है, कि कलीसिया का उठा लिया जाना (रैप्चर) क्लेश काल से पहले होगा, जिसके कारण विश्वासी उस विनाश और न्याय से बच जाएँगे, जो पृथ्वी पर आने वाला है। इसी दृष्टि से पौलुस प्रार्थना करता है, कि विश्वासी हमारे प्रभु यीशु मसीह के आगमन तक आत्मा, प्राण और देह में पूरी रीति से पवित्र और सुरक्षित रखे जाएँ ('निर्दोष ठहराए जाएँ') (1 थिस्सलुनीकियों 5:23)।

5) मसीह-विरोधी के प्रकट होने से पहले "उस" का जाना आवश्यक है

2 थिस्सलुनीकियों 2:1–10

[1] हे भाइयो, अब हम अपने प्रभु यीशु मसीह के आने, और उसके पास अपने इकट्ठे होने के विषय में तुम से विनती करते हैं

[2] कि किसी आत्मा, या वचन, या पत्री के द्वारा, जो कि मानो हमारी ओर से हो, यह समझकर कि प्रभु का दिन आ पहुँचा है, तुम्हारा मन अचानक अस्थिर न हो जाए और न तुम घबराओ।

[3] किसी रीति से किसी के धोखे में न आना, क्योंकि वह दिन न आएगा जब तक धर्म का त्याग न हो ले, और वह पाप का पुरुष अर्थात् विनाश का पुत्र प्रगट न हो।

[4] जो विरोध करता है, और हर एक से जो ईश्वर या पूज्य कहलाता है, अपने आप को बड़ा ठहराता है, यहाँ तक कि वह परमेश्वर के मन्दिर में बैठकर

अपने आप को ईश्वर ठहराता है।
5 क्या तुम्हें स्मरण नहीं कि जब मैं तुम्हारे यहाँ था, तो तुम से ये बातें कहा करता था?
6 तुम उस वस्तु को जानते हो, जो उसे अभी रोक रहा है कि वह अपने ही समय में प्रगट हो।
7 क्योंकि अधर्म का भेद अब भी कार्य करता जाता है, पर अभी एक रोकनेवाला है, और जब तक वह दूर न हो जाए वह रोके रहेगा।
8 तब वह अधर्मी प्रगट होगा, जिसे प्रभु यीशु अपने मुँह की फूँक से मार डालेगा, और अपने आगमन के तेज से भस्म करेगा।
9 उस अधर्मी का आना शैतान के कार्य के अनुसार सब प्रकार की झूठी सामर्थ्य, और चिह्न, और अद्भुत काम के साथ,
10 और नाश होनेवालों के लिये अधर्म के सब प्रकार के धोखे के साथ होगा; क्योंकि उन्होंने सत्य से प्रेम नहीं किया जिस से उनका उद्धार होता।

यह अंश "उसके आने" और "उस दिन" के कई संदर्भों के कारण भ्रमित करने वाला हो सकता है। इसलिए, इसे समझने में सहायता के लिए हम मूल पवित्रशास्त्र के पाठ के साथ-साथ व्याख्यात्मक टिप्पणियाँ भी सम्मिलित करेंगे।

2 थिस्सलुनीकियों 2:1-10 (पाठ के साथ व्याख्यात्मक टिप्पणियाँ जोड़ी गई हैं)
1 हे भाइयो, अब हम अपने प्रभु यीशु मसीह के आने, और उसके पास अपने इकट्ठे होने के विषय में, *(यह वही रैप्चर / उठा लिया जाना है, जैसा कि 1 थिस्सलुनीकियों 4:13-18 में बताया गया है)* **तुम से विनती करते हैं**
2 कि किसी आत्मा, या वचन, या पत्री के द्वारा, जो कि मानो हमारी ओर से हो, यह समझकर कि प्रभु का दिन *(मसीह का दिन वह दिन है, जब मसीह आकर मसीह-विरोधी का नाश करेंगे और पृथ्वी पर अपना राज्य और शासन स्थापित करेंगे, जिसका उल्लेख नीचे पद 8 में है; यह दिन अभी तक नहीं आया है)* **आ पहुँचा है, तुम्हारा मन अचानक अस्थिर न हो जाए और न तुम घबराओ।**
3 किसी रीति से किसी के धोखे में न आना, क्योंकि वह दिन *(वह दिन जब मसीह आकर मसीह-विरोधी का नाश करेगा और पृथ्वी पर अपना राज्य और शासन स्थापित करेगा, जिसका उल्लेख नीचे पद 8 में है)* **न आएगा जब तक धर्म का त्याग न हो ले** *(अर्थात क्लेश काल से ठीक पहले, बड़े स्तर पर होने वाले धोखे के कारण, विश्वास से बहुत बड़ा भटकाव होगा – मत्ती 24:4,5; 1 तीमुथियुस 4:1; 2 तीमुथियुस 3:1-4),* **और वह पाप का पुरुष अर्थात् विनाश का पुत्र प्रगट न हो।**

[4] **जो विरोध करता है, और हर एक से जो ईश्वर या पूज्य कहलाता है, अपने आप को बड़ा ठहराता है, यहाँ तक कि वह परमेश्वर के मन्दिर में बैठकर अपने आप को ईश्वर ठहराता है।**
[5] **क्या तुम्हें स्मरण नहीं कि जब मैं तुम्हारे यहाँ था, तो तुम से ये बातें कहा करता था?**
[6] **तुम उस वस्तु को जानते हो, जो उसे अभी रोक रहा है कि वह अपने ही समय में प्रगट हो** *(पाप के मनुष्य को प्रकट होने से कौन रोक रहा है?)*।
[7] **क्योंकि अधर्म का भेद अब भी कार्य करता जाता है, पर अभी एक रोकनेवाला है, और जब तक वह दूर न हो जाए वह** *रोके रहेगा (अधर्म पहले से ही कार्य कर रहा है, परन्तु जो मसीह-विरोधी को प्रकट होने से रोक रहा है, वह तब तक उसे रोकता रहेगा और प्रकट न होने देगा, जब तक उसके हटाए जाने का समय न आ जाए। जैसा कि नीचे समझाया गया है, जो अभी रोक रहा है, वह कलीसिया है)*।
[8] **तब वह अधर्मी प्रगट होगा** *(जो रोकने वाला है, उसके हटाए जाने के बाद, वह अधर्मी, अर्थात पाप का मनुष्य, मसीह-विरोधी, सात वर्षों तक अपना काम करने के लिए प्रकट होगा)*, **जिसे प्रभु यीशु अपने मुँह की फूँक से मार डालेगा, और अपने आगमन के तेज से भस्म करेगा** *(यही "मसीह का दिन" है, जिसका उल्लेख वचन 2 में है, और वही "वह दिन" है, जिसका उल्लेख वचन 3 में है। यह वही दिन है, जब वह अपने मुँह की फूँक से मसीह-विरोधी को नाश करेगा और अपने आगमन की ज्योति से उसे भस्म करेगा, जो प्रकाशितवाक्य 19:11-21 के अनुसार है)*।
[9] **उस अधर्मी का आना शैतान के कार्य के अनुसार सब प्रकार की झूठी सामर्थ्य, और चिह्न, और अद्‌भुत काम के साथ** *(मसीह-विरोधी झूठे चिन्हों और आश्चर्यकर्मों का प्रदर्शन करेगा; यह प्रकाशितवाक्य 13 के साथ मेल खाता है),*
[10] **और नाश होनेवालों के लिये अधर्म के सब प्रकार के धोखे के साथ होगा; क्योंकि उन्होंने सत्य से प्रेम नहीं किया जिस से उनका उद्धार होता।**

"जो अब रोके हुए है" (2 थिस्सलुनीकियों 2:7) का संकेत या तो कलीसिया की ओर हो सकता है या पवित्र आत्मा की ओर। हम यह कहते हैं कि *"जो अब रोके हुए है"* वह कलीसिया है। पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से युक्त कलीसिया, आज पृथ्वी पर वह रोकने वाली शक्ति है। जब कलीसिया बीच में से हटा ली जाएगी, तब अधर्मी प्रकट होगा (वचन 7,8)।

हम यह क्यों कहते हैं, कि *"जो अब रोके हुए है"* का संकेत

कलीसिया की ओर है, न कि पवित्र आत्मा की ओर?

इसके निम्नलिखित कारण हैं...

a) यीशु ने स्पष्ट रूप से कहा कि पवित्र आत्मा सदा हमारे साथ रहेगा (यूहन्ना 14:16)। इसलिए यह कहना कि पवित्र आत्मा को पृथ्वी से हटा लिया जाएगा, और यह कि क्लेश काल के दौरान जो लोग यीशु मसीह में विश्वास करने वाले बनेंगे, वे पवित्र आत्मा के बिना ही क्लेश काल से होकर गुजरेंगे—यह यीशु के कथन के साथ विरोधाभास होगा।

b) थिस्सलुनीकियों को लिखे अपने पत्रों में प्रेरित पौलुस ने पहले ही उन्हें कलीसिया—अर्थात विश्वासियों की सम्पूर्ण देह—के स्वर्ग में उठा लिए जाने के विषय में बता दिया था (1 थिस्सलुनीकियों 4:13-18)। अब वह विशेष रूप से *"हमारे प्रभु यीशु मसीह के आने और उसके पास हमारे इकट्ठे होने"* के विषय में लिख रहा है (2 थिस्सलुनीकियों 2:1)। उसने 1 थिस्सलुनीकियों 4 में यह स्पष्ट किया था कि कलीसिया पृथ्वी से उठा ली जाएगी। इसलिए 2 थिस्सलुनीकियों 2:1-10 की व्याख्या उसी के अनुरूप करना ही उचित है, जो वह पहले लिख चुका है।

c) कलीसिया को "नमक और ज्योति" कहा गया है (मत्ती 5:13,14; इफिसियों 5:8), जिसे अन्धकार के कामों के विरुद्ध परमेश्वर के राज्य को आगे बढ़ाने की सामर्थ दी गई है। इसलिए इस समय पृथ्वी पर बुराई को रोकने का कार्य कलीसिया ही कर रही है।

d) यद्यपि हम यह समझते हैं, कि कलीसिया को मसीह की "दुल्हन" (स्त्रीलिंग) कहा गया है, परन्तु क्योंकि कलीसिया मसीह की "देह" (पुल्लिंग) भी है, इसलिए "जो अब रोक रहा है" (पुल्लिंग) का संदर्भ कलीसिया, अर्थात "उसकी देह", मसीह की देह से होना पूर्णतः उचित है।

बाइबल में वे उदाहरण जहाँ कलीसिया को "दुल्हन" के रूपक से दर्शाया गया है...

- सुसमाचारों में (मत्ती 9:15; मरकुस 2:19,20; लूका 5:34,35) जहाँ यीशु अपने आप को दूल्हा कहते हैं, और इससे कलीसिया को मंगेतर दुल्हन के रूप में संकेत किया गया है।
- पत्रियों में (2 कुरिन्थियों 11:2; इफिसियों 5:25-27,31,32) जहाँ कलीसिया को मसीह के लिये पवित्रता में रखी हुई मंगनी हुई दुल्हन के रूप में दिखाया गया है। मानवीय विवाह, मसीह और कलीसिया के दाम्पत्य संबंध के नमूने पर आधारित है।
- प्रकाशितवाक्य में (प्रकाशितवाक्य 19:7-9; प्रकाशितवाक्य 21:2,9; प्रकाशितवाक्य 22:17) जहाँ कलीसिया को विवाह के भोज में, सार्वजनिक रूप से मसीह की दुल्हन के रूप में प्रस्तुत किया गया है। दुल्हन को उद्धार पाए हुए समुदाय के रूप में अनन्त महिमा में प्रकट किया गया है। दुल्हन (कलीसिया) आत्मा के साथ सहभागिता में कार्य करती है।

बाइबल में वे उदाहरण जहाँ कलीसिया को "देह" के रूपक से दर्शाया गया है...

- पत्रियाँ (रोमियों 12:4,5; 1 कुरिन्थियों 10:16,17; 1 कुरिन्थियों 12:12-27; इफिसियों 1:22,23; इफिसियों 2:16; इफिसियों 4:4,12,15,16; इफिसियों 5:23,29,30; कुलुस्सियों 1:18,24; कुलुस्सियों 2:19)

e) यहाँ वचनों के आधार पर कुछ कारण दिए गए हैं, जिनके अनुसार हम यह कहते हैं, कि क्लेश काल के दौरान भी पवित्र आत्मा पृथ्वी पर लोगों में और लोगों के द्वारा कार्य करता रहेगा।

(i) हम जानते हैं, कि पवित्र आत्मा परमेश्वर है और सर्वव्यापी है (हर

समय, हर स्थान पर उपस्थित; भजन संहिता 139:7-11), इसलिए वह किसी न किसी प्रकार से पृथ्वी पर कार्य करता रहेगा।

(ii) हम जानते हैं, कि आत्मा का उण्डेला जाना, जो पिन्तेकुस्त के दिन आरम्भ हुआ, अन्त के दिनों की पूरी अवधि के दौरान प्रभु के महान और भयानक दिन तक जारी रहेगा, जैसा कि योएल 2:28,29 और प्रेरितों के काम 2:17 में कहा गया है। यह आत्मिक रूप से कलीसिया में पूरा हुआ है और क्लेश काल के दौरान इस्राएल के लिये भी पूरा होगा।

(iii) क्लेश काल के दौरान 1,44,000 यहूदी (प्रकाशितवाक्य 7:1-17) परमेश्वर की ओर से मुहर लगाए जाते हैं (चिह्नित किए जाते हैं)। नए नियम के अनुसार यह मुहर पवित्र आत्मा की उपस्थिति और कार्य है (यूहन्ना 6:27; 2 कुरिन्थियों 1:22; इफिसियों 1:13; इफिसियों 4:30)। इस प्रकार ये यहूदी पूरे संसार में यीशु मसीह का संदेश प्रचार करने के लिए सामर्थी किए जाते हैं (प्रकाशितवाक्य 14:1-5)।

(iv) क्लेश काल के दौरान लोग चिन्हों को देखकर उद्धार पाएँगे और प्रभु की ओर फिरेंगे (प्रेरितों के काम 2:16-21; प्रकाशितवाक्य 6:9-11; प्रकाशितवाक्य 7:13-17; प्रकाशितवाक्य 15:2-4; प्रकाशितवाक्य 20:4-6)। पवित्र आत्मा के कार्य के बिना कोई भी उद्धार नहीं पा सकता (रोमियों 8:9; तीतुस 3:5)। उनमें से बहुतों को क्लेश काल के दौरान शहीद किया जाएगा। इन क्लेश काल के विश्वासियों को पहले से कहीं अधिक पवित्र आत्मा के कार्य और सामर्थ की आवश्यकता होगी (यूहन्ना 14:16,17)।

(v) हम यह भी जानते हैं, कि क्लेश काल के दौरान ऐसे लोग होंगे जो यीशु की गवाही को धारण करेंगे, जैसा कि प्रकाशितवाक्य 12:17 में कहा गया है—*"तब अजगर स्त्री पर क्रोधित हुआ, और उसकी*

शेष सन्तान से, जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते और यीशु की गवाही देने पर स्थिर हैं, लड़ने को गया।" हम यह भी जानते हैं, कि पवित्र आत्मा ही यीशु की गवाही है, जैसा कि प्रकाशितवाक्य 19:10 में कहा गया है—*"तब मैं उसको दण्डवत् करने के लिये उसके पाँवों पर गिर पड़ा। उसने मुझ से कहा, "देख, ऐसा मत कर, मैं तेरा और तेरे भाइयों का संगी दास हूँ जो यीशु की गवाही देने पर स्थिर हैं। परमेश्वर ही को दण्डवत् कर।" क्योंकि यीशु की गवाही भविष्यद्वाणी की आत्मा है।"*

(vi) दो साक्षी, जिनमें से एक एलिय्याह है, जैसा कि हम जानते हैं (मलाकी 4:5,6), पवित्र आत्मा की सामर्थ में आएँगे (मत्ती 17:11; लूका 1:17), ठीक वैसे ही जैसे एलिय्याह पुराने नियम के समय में आया था, और आत्मा की सामर्थ से चिन्ह और अद्त काम करेंगे (प्रकाशितवाक्य 11:3-6)।

(vii) यहेजकेल अध्याय 38 और 39 इस्राएल पर (इस्राएल के पहाड़ों में) उत्तर दिशा से आने वाले राष्ट्रों के एक सैन्य आक्रमण का वर्णन करते हैं, जो क्लेशकाल के दौरान हर-मगिदोन की लड़ाई से कुछ समय पहले होगा। परमेश्वर इस्राएल को शुद्ध करते हैं और उसे पुनः स्थापित करते हैं। (यह आक्रमण प्रकाशितवाक्य 12:13-17 का भाग हो सकता है, जब शैतान स्त्री—अर्थात इस्राएल राष्ट्र—के विरुद्ध पूरी तरह से टूट पड़ता है)।

परमेश्वर ने पहले से भविष्यवाणी की...

यहेजकेल 39:29
और उन से अपना मुँह फिर कभी न मोड़ लूँगा, क्योंकि मैं ने इस्राएल के घराने पर अपना आत्मा उण्डेला है, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है।

यहाँ फिर से हम क्लेश काल के दौरान इस्राएल पर पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने का स्पष्ट संकेत देखते हैं।

(viii) जकर्याह ने भविष्यवाणी की कि यरूशलेम राष्ट्रों द्वारा घेर लिया जाएगा (प्रकाशितवाक्य 12:2-9)। यरूशलेम किसी सैन्य शक्ति से नहीं, बल्कि सीधे दैवीय सुरक्षा के द्वारा बचाया जाएगा। इस समय, इस्राएल यीशु को क्रूस पर चढ़ाए गए मसीहा के रूप में पहचानेंगे, और परमेश्वर उन पर अनुग्रह और बिनती की आत्मा उण्डेलेंगे, जिसके परिणामस्वरूप आत्माओं की एक बड़ी कटनी होगी। यह उण्डेला जाना क्लेश काल के अन्त में होगा।

जकर्याह 12:8–10
8 उस समय यहोवा यरूशलेम के निवासियों को मानो ढाल से बचा लेगा, और उस समय उनमें से जो ठोकर खानेवाला हो वह दाऊद के समान होगा; और दाऊद का घराना परमेश्वर के समान होगा, अर्थात् यहोवा के उस दूत के समान जो उनके आगे आगे चलता था।
9 उस समय मैं उन सब जातियों का नाश करने का यत्न करूँगा जो यरूशलेम पर चढ़ाई करेंगी।
10 "मैं दाऊद के घराने और यरूशलेम के निवासियों पर अपना अनुग्रह करनेवाली और प्रार्थना सिखानेवाली आत्मा उण्डेलूँगा, तब वे मुझे ताकेंगे अर्थात् जिसे उन्होंने बेधा है, और उसके लिये ऐसे रोएँगे जैसे एकलौते पुत्र के लिये रोते–पीटते हैं, और ऐसा भारी शोक करेंगे, जैसा पहिलौठे के लिये करते हैं।

इसके परिणामस्वरूप क्रूस के लाभ पश्चाताप करने वाले इस्राएल पर लागू होंगे—*"उस समय...पाप और मलिनता धोने के निमित्त एक बहता हुआ सोता फूटेगा"* (जकर्याह 13:1), और इस्राएल उद्धार पाएगा (रोमियों 11:26)। राष्ट्र वाचा की पुनःस्थापना में प्रवेश करेगा।

पवित्र शास्त्र में दिए गए ये आठों संदर्भ (i)-(viii) स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं, कि परमेश्वर का आत्मा क्लेश काल के दौरान भी पृथ्वी पर कार्य करता रहेगा।

मसीह-विरोधी तब तक प्रकट नहीं हो सकता जब तक कलीसिया

इस संसार से न उठा ली जाए। इसका यह अर्थ नहीं है कि पवित्र आत्मा को पृथ्वी से हटा लिया जाएगा। वचनों में, कहीं भी यह निश्चित रूप से नहीं बताया गया है, कि पवित्र आत्मा को किसी समय पृथ्वी से हटा लिया जाएगा।

[**पार्श्व टिप्पणी:** उत्पत्ति 6:3 यह स्पष्ट कथन नहीं है, कि पवित्र आत्मा संसार से हटा लिया जाएगा। बल्कि इसका सन्दर्भ धर्मी जीवन से है, जैसा कि याकूब 4:5 में है।]

हम यह स्वीकार करते हैं, कि क्लेश काल के दौरान पवित्र आत्मा के कार्य का केन्द्र, पुराने नियम और कलीसिया युग में उसके कार्य करने के तरीकों से भिन्न होगा। संक्षेप में कहा जाए तो, पुराने नियम के समय में पवित्र आत्मा का कार्य मुख्य रूप से भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा मसीहा की ओर संकेत करना था; कलीसिया के युग में उसका कार्य मुख्य रूप से कलीसिया को महान आज्ञा को पूरा करने के लिए सुसज्जित करना और कलीसिया को एक महिमामय कलीसिया बनाना रहा है। क्लेश काल के दौरान उसका कार्य मसीह के पास आने वालों को विश्वास में स्थिर रहने के लिए सामर्थ देना होगा, ताकि वे यीशु की गवाही धारण कर सकें।

आइए अब एक और कारण पर विचार करें, जिसके आधार पर हम कलीसिया के क्लेश काल से पहले उठाए जाने (प्री-ट्रिब्युलेशन रैप्चर) में विश्वास करते हैं।

6) प्रकाशितवाक्य 3:10,11 में कलीसिया को दी गई प्रतिज्ञा

प्रकाशितवाक्य 3:10,11

10 तू ने मेरे धीरज के वचन को थामा है, इसलिये मैं भी तुझे *(एक्)* **परीक्षा के उस समय बचा रखूँगा जो पृथ्वी पर रहनेवालों के परखने के लिये सारे संसार पर आनेवाला है।**

11 मैं शीघ्र ही आनेवाला हूँ; जो कुछ तेरे पास है उसे थामे रह कि कोई तेरा

मुकुट छीन न ले।

फिलाडेल्फ़िया की कलीसिया से बात करते हुए, प्रभु यीशु ने उन लोगों से प्रतिज्ञा की, कि जो उसके वचन को मानते हैं और धीरज धरते हैं, कि वह उन्हें "परीक्षा की उस घड़ी" से बचाए रखेगा, जो सारे संसार पर आने वाली है। जो परीक्षा सारे संसार पर आती है, वह केवल क्लेश काल की ओर ही संकेत कर सकती है, जिसका वर्णन हमारे लिए आगे आने वाले प्रकाशितवाक्य 6-19 के अध्यायों में किया गया है। यह इस बात का स्पष्ट संकेत है, कि कलीसिया को उस क्लेश काल के समय से दूर रखा जाएगा, जो सारी पृथ्वी पर आने वाला है। प्रकाशितवाक्य 3:10 यह संकेत देता है, कि कलीसिया को *(एक्)* परीक्षा की घड़ी से "बाहर" रखा जाएगा *'एक्'* का अर्थ है *"बाहर"* या *"निकाल लिया जाना"*। यदि यूहन्ना का उद्देश्य हमें यह बताना होता, कि कलीसिया परीक्षा की घड़ी *"से होकर"* गुज़रेगी, तो वह *'दिया'* शब्द का प्रयोग करता।

7) दानिय्येल का सत्तरवाँ सप्ताह—इस्राएल के लिए, कलीसिया के लिए नहीं

दानिय्येल 9:24–27
24 "तेरे लोगों और तेरे पवित्र नगर के लिये
सत्तर सप्ताह ठहराए गए हैं
कि उनके अन्त तक अपराध का होना बन्द हो,
और पापों का अन्त
और अधर्म का प्रायश्चित किया जाए,
और युगयुग की धार्मिकता प्रगट हो;
और दर्शन की बात पर और भविष्यद्वाणी पर छाप दी जाए,
और परमपवित्र का अभिषेक किया जाए।
25 इसलिये यह जान और समझ ले,
कि यरूशलेम को फिर बसाने की आज्ञा
के निकलने से लेकर
अभिषिक्त प्रधान के समय तक

सात सप्ताह बीतेंगे। फिर बासठ सप्ताहों के
बीतने पर चौक और खाई समेत वह नगर
कष्ट के समय में फिर बसाया जाएगा।
26 उन बासठ सप्ताहों के बीतने पर
अभिषिक्त पुरुष काटा जाएगा: और उसके हाथ कुछ न लगेगा;
और आनेवाले प्रधान की प्रजा
नगर और पवित्रस्थान को नष्ट तो करेगी।
परन्तु उस प्रधान का अन्त ऐसा होगा जैसा बाढ़ से होता है;
तौभी उसके अन्त तक लड़ाई होती रहेगी; क्योंकि उसका उजड़ जाना निश्चय ठान लिया गया है।
27 वह प्रधान एक सप्ताह के लिये बहुतों के संग दृढ़ वाचा बाँधेगा,
परन्तु आधे ही सप्ताह के बीतने पर
वह मेलबलि और अन्नबलि को बन्द करेगा;
और कंगूरे पर उजाड़नेवाली घृणित वस्तुएँ दिखाई देंगी
और निश्चय ही ठनी हुई बात के समाप्त होने तक
परमेश्वर का क्रोध उजाड़नेवाले पर पड़ा रहेगा।"

यह अंश अगले अध्याय में विस्तार से समझाया गया है।

दानिय्येल के 70 सप्ताह 490 वर्षों की एक अवधि हैं, जो विशेष रूप से इस्राएल की प्रजा और पवित्र नगर यरूशलेम के विषय में है (दानिय्येल 9:24)। उन में से 69 सप्ताह (62+7), अर्थात 483 वर्ष, पहले ही पूरे हो चुके हैं, उस समय जब राजा कुस्रू ने यहूदियों को यरूशलेम लौटने और मन्दिर के पुनर्निर्माण की आज्ञा दी, से लेकर मसीहा के क्रूस पर चढ़ाए जाने तक। एक अंतिम सप्ताह, जिसे 70वाँ सप्ताह कहा जाता है—अर्थात 7 वर्षों की अवधि—अब भी पूरा होना शेष है। इसलिए यह 70वाँ सप्ताह (क्लेश काल के 7 वर्ष) दानिय्येल 9:24 में पहले से बताए अनुसार इस्राएल की प्रजा और यरूशलेम नगर से संबंधित है, न कि कलीसिया से। कलीसिया 69वें और 70वें सप्ताह के बीच पृथ्वी पर है—अर्थात मसीहा के क्रूस पर चढ़ाए जाने के बाद—और 70वें सप्ताह के आरम्भ से पहले "उठा ली जाएगी" (मार्ग

से हटा ली जाएगी)। इसलिए हम निश्चयपूर्वक कहते हैं, कि कलीसिया क्लेश काल से होकर नहीं गुज़रेगी (जो कि दानिय्येल का 70वाँ सप्ताह, 7 वर्षों की अवधि है)।

8) प्रकाशितवाक्य की पुस्तक का कालक्रम (क्रोनोलॉजी)

अधिकांशतः प्रकाशितवाक्य की पुस्तक उन घटनाओं का कालानुक्रमिक विवरण है, जो क्रमशः घटित होने वाली थीं। प्रकाशितवाक्य 1:19 कहता है, *"इसलिये जो बातें तू ने देखीं हैं और जो बातें हो रही हैं और जो बातें इसके बाद होनेवाली हैं, उन सब को लिख ले"* (अतीत, वर्तमान और भविष्य)। प्रकाशितवाक्य 1 अतीत के विषय में बोलता है, प्रकाशितवाक्य 2 और 3 वर्तमान के विषय में, और प्रकाशितवाक्य 4 से 22 भविष्य के विषय में बताते हैं।

प्रकाशितवाक्य 4 और 5 में, हम पढ़ते हैं, कि *"चौबीस प्राचीन श्वेत वस्त्र पहिने हुए बैठे हैं, और उनके सिरों पर सोने के मुकुट हैं।"* (प्रकाशितवाक्य 4:4)। ये प्राचीन भी अन्य विश्वासियों के समान हैं, जिन्हें मेम्ने के लहू के द्वारा छुड़ाया गए हैं और हमारे परमेश्वर के लिये राजा और याजक बनाए गए हैं (प्रकाशितवाक्य 5:9,10; प्रकाशितवाक्य 19:9,10)। इसलिए, इन प्राचीनों के द्वारा अपने मुकुट प्राप्त कर लेने का अर्थ यह है, कि सभी विश्वासियों को पहले ही स्वर्ग में ले जाया जा चुका होगा, और मसीह का न्यायासन पहले ही सम्पन्न हो चुका होगा। इसका अर्थ यह हुआ कि रैप्चर घटित हो चुका है।

इसके बाद, प्रकाशितवाक्य 5 में, हम मसीह को पुस्तक लेते हुए देखते हैं, और प्रकाशितवाक्य 6 मसीह द्वारा उसकी पहली मुहर खोलने से आरम्भ होता है। जब पहली मुहर खोली जाती है, तो घटनाओं का विवरण स्वर्ग से पृथ्वी की ओर स्थानांतरित हो जाता है, जो श्वेत घोड़े के सवार, मसीह-विरोधी, के आगमन के साथ क्लेश काल के आरम्भ को दर्शाता है।

प्रकाशितवाक्य 5:1,2,5,7
1 जो सिंहासन पर बैठा था, मैं ने उसके दाहिने हाथ में एक पुस्तक देखी जो भीतर और बाहर लिखी हुई थी, और वह सात मुहर लगाकर बन्द की गई थी।
2 फिर मैं ने एक बलवन्त स्वर्गदूत को देखा जो ऊँचे शब्द से यह प्रचार करता था, "इस पुस्तक के खोलने और उसकी मुहरें तोड़ने के योग्य कौन है?"
5 इस पर उन प्राचीनों में से एक ने मुझ से कहा, "मत रो; देख, यहूदा के गोत्र का वह सिंह जो दाऊद का मूल है, उस पुस्तक को खोलने और उसकी सातों मुहरें तोड़ने के लिये जयवन्त हुआ है।"
7 उसने आकर उसके दाहिने हाथ से जो सिंहासन पर बैठा था, वह पुस्तक ले ली।

प्रकाशितवाक्य 6:1,2
1 फिर मैं ने देखा कि मेम्ने ने उन सात मुहरों में से एक को खोला; और उन चारों प्राणियों में से एक का गर्जन का सा शब्द सुना, "आ!"
2 मैं ने दृष्टि की, और देखो, एक श्वेत घोड़ा है, और उसका सवार धनुष लिये हुए है; और उसे एक मुकुट दिया गया, और वह जय करता हुआ निकला कि और भी जय प्राप्त करे।

प्रकाशितवाक्य 4 और 5 के बाद, जहाँ हम प्राचीनों को संतों के साथ आराधना करते हुए देखते हैं, प्रकाशितवाक्य 6:1,2 में क्लेश काल का आरम्भ होता है। यह चित्र स्पष्ट रूप से दर्शाता है, कि संत पहले ही उठा लिए गए हैं (रैप्चर हो चुका है) और स्वर्ग में हैं, जबकि पृथ्वी पर क्लेश काल शुरू हो जाता है। इसलिए यह एक और सशक्त कारण है, कि हम यह निष्कर्ष निकालें कि रैप्चर क्लेश काल से पहले होगा।

पुस्तक परमेश्वर की मानव इतिहास के लिए पूरी योजना का प्रतिनिधित्व करती है, जिसमें उद्धार की उसकी योजना, बुराई पर उसके न्याय, और मसीह के राज्य का शासन सम्मिलित है। पुस्तक दोनों ओर लिखी हुई है, जो परिपूर्णता और समापन को दर्शाती है। पुस्तक परमेश्वर के दाहिने हाथ में है, जो दैवीय अधिकार, दैवीय उद्देश्य और दैवीय नियंत्रण को दर्शाती है। पुस्तक सात मुहरों से बन्द है, जो यह दर्शाता है कि वह पूरी तरह सुरक्षित, गुप्त रखी हुई है, और उसके क्रियान्वयन के लिए परमेश्वर की स्वीकृति की प्रतीक्षा कर रही है। यह

चित्रण दानिय्येल 12:4 की प्रतिध्वनि करता है, जहाँ स्वर्गदूत गब्रिएल ने दानिय्येल से कहा, *"परन्तु हे दानिय्येल, तू इस पुस्तक पर मुहर करके इन वचनों को अन्त समय तक के लिये बन्द रख।"*

केवल मसीह ही उस पुस्तक को लेने और खोलने के योग्य है। मुहरों का खुलना यह घोषित करता है, कि भविष्यवाणियों के पूरा होने का समय आ गया है। यह उन दैवीय न्यायों के आरम्भ और क्रियान्वयन की घोषणा है, जिन्हें परमेश्वर ने पहले से ठहराया था।

जिस क्षण पिता उस पुस्तक को मसीह के हाथ में देंगे कि वह उसे खोले, वह केवल परमेश्वरत्व (गॉडहेड) को ही ज्ञात है। जब यीशु देहधारी होकर पृथ्वी पर थे, तब उन्होंने कहा, *"उस दिन या उस घड़ी के विषय में कोई नहीं जानता, न स्वर्ग के दूत और न पुत्र; परन्तु केवल पिता"* (मरकुस 13:32)। इसलिए हमें दिन या वर्ष के विषय में अटकलें लगाने से बचना चाहिए—*"उन समयों या कालों को जानना, जिनको पिता ने अपने ही अधिकार में रखा है, तुम्हारा काम नहीं"* (प्रेरितों के काम 1:7)। परन्तु हमें समयों के चिन्हों को पहचानना चाहिए (मत्ती 16:3) और जो कुछ उसने हमें प्रकट किया है उसे समझना चाहिए, ताकि हम सदा तैयार रहने की स्थिति में जीएँ।

9) प्रकाशितवाक्य 12–शैतान का आक्रमण कलीसिया पर नहीं, इस्राएल पर केन्द्रित

हम जानते हैं, कि प्रकाशितवाक्य 12 क्लेश काल के मध्य में घटित होता है।

वचन	उल्लेख	कुल अवधि
प्रकाशितवाक्य 11:2	42 महीने	3½ वर्ष
प्रकाशितवाक्य 11:3	1,260 दिन	3½ वर्ष
प्रकाशितवाक्य 12:14 (दानिय्येल 7:25 और दानिय्येल 12:7 की प्रतिध्वनि)	एक समय (1 वर्ष), समयों (2 वर्ष) और आधा समय (½ वर्ष)	3½ वर्ष

इन 3½ वर्षों के दौरान, शैतान को पृथ्वी पर गिरा दिया जाता है और वह जान लेता है, कि उसके पास थोड़े दिन ही बचे हैं (प्रकाशितवाक्य 12:6,12,14)।

प्रकाशितवाक्य 11 और 12 स्पष्ट रूप से सात वर्षों के क्लेश काल के मध्य बिन्द पर स्थित हैं। इस समय पवित्र शास्त्र यह संकेत देता है, कि शैतान स्त्री (इस्राएल राष्ट्र) और उसके वंश (इस्राएल के लोग) पर, तथा वे लोगों पर जो यीशु में विश्वास करते हैं, उन पर आक्रमण करता है। हम यह जानते हैं कि क्लेश काल के दौरान यहूदियों और अन्यजातियों दोनों में से यीशु में विश्वास करने वाले होंगे। *"तब अजगर स्त्री पर क्रोधित हुआ, और उसकी शेष सन्तान से, जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते और यीशु की गवाही देने पर स्थिर हैं, लड़ने को गया। और वह समुद्र के बालू पर जा खड़ा हुआ"* (प्रकाशितवाक्य 12:17)। यहाँ जोर कलीसिया पर नहीं, बल्कि इस्राएल पर है। यह इस बात की ओर संकेत करता है कि कलीसिया अपने पूर्ण अर्थ में पहले ही उठा ली गई है (रैप्चर हो चुका है) और पृथ्वी पर उपस्थित नहीं है।

10) 1,44,000 यहूदी—पहले फल (फ़र्स्टफ्रूट्स) हैं

प्रकाशितवाक्य 14:1–5

1 फिर मैं ने दृष्टि की, और देखो, वह मेम्ना सिय्योन पहाड़ पर खड़ा है, और उसके साथ एक लाख चौवालीस हज़ार जन हैं, जिनके माथे पर उसका और उसके पिता का नाम लिखा हुआ है।

2 और स्वर्ग से मुझे एक ऐसा शब्द सुनाई दिया जो जल की बहुत धाराओं और बड़े गर्जन का सा शब्द था, और जो शब्द मैं ने सुना वह ऐसा था मानो वीणा बजानेवाले वीणा बजा रहे हों।

3 वे सिंहासन के सामने और चारों प्राणियों और प्राचीनों के सामने एक नया गीत गा रहे थे। उन एक लाख चौवालीस हज़ार जनों को छोड़, जो पृथ्वी पर से मोल लिये गए थे, कोई वह गीत न सीख सकता था।

4 ये वे हैं जो स्त्रियों के साथ अशुद्ध नहीं हुए, पर कुँवारे हैं; ये वे ही हैं कि जहाँ कहीं मेम्ना जाता है, वे उसके पीछे हो लेते हैं; ये तो परमेश्वर के निमित्त पहले फल होने के लिये मनुष्यों में से मोल लिए गए हैं।

[5] उनके मुँह से कभी झूठ न निकला था, वे निर्दोष हैं।

नए नियम में, प्रयुक्त शब्द *"पहले फल"* पुराने नियम के अर्थ से भरपूर है, और मूलतः प्राथमिकता, पवित्रता, परमेश्वर के प्रति समर्पण, और उसके बाद आने वाली बड़ी फसल की गारंटी को व्यक्त करता है। पुराने नियम में, फसल का पहला भाग, जो सबसे उत्तम और प्रारंभिक उपज होता था, परमेश्वर को चढ़ाया जाता था (निर्गमन 23:19; लैव्यव्यवस्था 23:9-14; व्यवस्थाविवरण 26:1-11)।

यह शब्द उन लोगों के लिए भी प्रयुक्त होता है, जो मसीह पर विश्वास करने और उद्धार पाने वालों में से पहले थे (याकूब 1:18), तथा किसी क्षेत्र के प्रारंभिक विश्वासियों के लिए (रोमियों 16:5; 1 कुरिन्थियों 16:15)। यह शब्द मसीह के लिए भी प्रयोग किया गया है, जो पुनरुत्थान के पहिलौठे हैं (1 कुरिन्थियों 15:20,23)। अतः नए नियम में इस शब्द का प्रयोग उद्धार और पुनरुत्थान दोनों को सम्मिलित करता है।

1,44,000 यहूदी पृथ्वी से, अर्थात् मनुष्यों में से, क्लेश काल के दौरान परमेश्वर के लिए छुड़ाए गए हैं (प्रकाशितवाक्य 14:3,4)। उन्हें "पहले फल" कहा गया है, क्योंकि वे क्लेश काल में इस्राएल राष्ट्र में से छुड़ाए जाने वाले पहले लोग हैं। हम जानते हैं कि पिन्तेकुस्त के दिन से लेकर अब तक बहुत से यहूदी उद्धार पाए हैं और छुड़ाए गए हैं। इसलिए ये "पहले फल" वे यहूदी हैं, जो विशेष रूप से क्लेश काल से सबसे पहले छुड़ाए गए हैं। यद्यपि प्रकाशितवाक्य 14:1-4 में यह स्पष्ट रूप से नहीं कहा गया है, फिर भी यह देखते हुए कि "पहले फल" शब्द का प्रयोग पुनरुत्थान के संदर्भ में भी किया जाता है, हम निश्चिंत होकर यह मान सकते हैं, कि ये 144,000 यहूदी अपने पुनरुत्थित और महिमामय शरीरों के साथ स्वर्ग में उठा लिए गए हैं। यह संभव है, कि उन्हें सीधे ही महिमामय शरीरों में उठा लिया गया हो, क्योंकि वे परमेश्वर द्वारा विशेष रूप से चिन्हित किए गए थे, ताकि उनकी

रक्षा की जाए। इसलिए, यद्यपि पवित्र शास्त्र यह स्पष्ट रूप से नहीं कहता, फिर भी यह मानना सुरक्षित है, कि वे शहीद नहीं किए गए, बल्कि सीधे ही महिमामय शरीरों के साथ उठा लिए गए। उन्हें “पहले फल” इसलिए कहा जाता है, क्योंकि वे उन बड़ी संख्या में यहूदी लोगों से पहले हैं, जो क्लेश काल के अंत में जकर्याह 12:10 में की गई भविष्यवाणी के अनुसार उद्धार पाएँगे। ये 144,000 यहूदी पहले फल हैं; क्लेश काल में से पुनरुत्थित होने वालों में पहले।

कलीसिया का उठाया जाना (रैप्चर), न तो क्लेश काल के मध्य में, न क्लेश काल के अंत में, और न ही प्रकाशितवाक्य 6 से 19 के बीच कहीं उल्लेखित है। इसलिए हम यह निष्कर्ष निकालते हैं, कि सात वर्षों के क्लेशकाल से पहले ही, कलीसिया को मार्ग से हटा लिया गया है।

11) स्वर्गदूतों द्वारा अनन्त सुसमाचार का प्रचार

प्रकाशितवाक्य 14:6-9

6 फिर मैं ने एक और स्वर्गदूत को आकाश के बीच में उड़ते हुए देखा, जिसके पास पृथ्वी पर के रहनेवालों की हर एक जाति, और कुल, और भाषा, और लोगों को सुनाने के लिये सनातन सुसमाचार था।
7 उसने बड़े शब्द से कहा, “परमेश्वर से डरो, और उसकी महिमा करो, क्योंकि उसके न्याय करने का समय आ पहुँचा है; और उसका भजन करो, जिसने स्वर्ग और पृथ्वी और समुद्र और जल के सोते बनाए।”
8 फिर इसके बाद एक और, दूसरा, स्वर्गदूत यह कहता हुआ आया, “गिर पड़ा, वह बड़ा बेबीलोन गिर पड़ा, जिसने अपने व्यभिचार की कोपमय मदिरा सारी जातियों को पिलाई है।”
9 फिर इनके बाद एक और, तीसरा, स्वर्गदूत बड़े शब्द से यह कहता हुआ आया, “जो कोई उस पशु और उसकी मूर्ति की पूजा करे, और अपने माथे या अपने हाथ पर उसकी छाप ले

कलीसिया युग के दौरान, स्वर्गदूत केवल विश्वासियों के लिए संदेशवाहक के रूप में सेवा करते थे और विश्वासियों की सेवा में लगे

रहते थे। सुसमाचार का प्रचार करने की ज़िम्मेदारी कलीसिया पर है। क्लेश काल के समय, जब कलीसिया मार्ग से हटा ली गई है, तब परमेश्वर तीन स्वर्गदूतों को नियुक्त करते हैं, कि वे *"हर एक जाति, कुल, भाषा और लोगों"* को (प्रकाशितवाक्य 14:6) सुसमाचार सुनाएँ, ताकि लोगों को चेतावनी दें, और आने वाली बातों की घोषणा करें। यह बात एक बार फिर इस तथ्य की ओर संकेत करती है, कि सात वर्षों के क्लेश काल के दौरान कलीसिया पृथ्वी पर उपस्थित नहीं है।

12) सात-वर्षीय उत्सव, जो मेम्ने के विवाह भोज में समाप्त होता है

प्रकाशितवाक्य 19:6-9

6 फिर मैं ने बड़ी भीड़ का सा और बहुत जल का सा शब्द, और गर्जन का सा बड़ा शब्द सुना: "हल्लिलूय्याह! क्योंकि प्रभु हमारा परमेश्वर सर्वशक्तिमान राज्य करता है।
7 आओ, हम आनन्दित और मगन हों, और उसकी स्तुति करें, क्योंकि मेम्ने का विवाह आ पहुँचा है, और उसकी दुल्हिन ने अपने आप को तैयार कर लिया है।
8 उसको शुद्ध और चमकदार महीन मलमल पहिनने का अधिकार दिया गया"– क्योंकि उस महीन मलमल का अर्थ पवित्र लोगों के धर्म के काम है।
9 तब स्वर्गदूत ने मुझ से कहा, "यह लिख, कि धन्य वे हैं, जो मेम्ने के विवाह के भोज में बुलाए गए हैं।" फिर उसने मुझ से कहा, "ये वचन परमेश्वर के सत्य वचन हैं।"

मेम्ने का विवाह भोज, सात वर्षों के क्लेश काल के अंत में होता है। यह स्वर्ग में होता है। इस विवाह भोज के होने के लिए दुल्हन (कलीसिया) का स्वर्ग में होना आवश्यक है। जैसा कि हमने देखा है, प्रकाशितवाक्य 6-19 में कहीं भी कलीसिया के उठाए जाने का उल्लेख नहीं है, जो 1 थिस्सलुनीकियों 4:13-18 और 1 कुरिन्थियों 15:51-58 को पूरा करता हो। फिर भी प्रकाशितवाक्य 19:6-9 स्पष्ट रूप से दिखाता है, कि दुल्हन पहले से ही स्वर्ग में है, तैयार और सिद्ध है। इसलिए यह निष्कर्ष निकालना सुरक्षित है, कि दुल्हन को

प्रकाशितवाक्य 4 और 5 में, जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, पहले ही स्वर्ग में प्रवेश करा दिया गया है।

इसके अतिरिक्त, इस संदर्भ में यह ध्यान देना महत्वपूर्ण है, कि यहूदी विवाह उत्सव में "सात" का विशेष महत्व है। यहूदी विवाह उत्सव में "सात" की प्रतीकात्मकता और कलीसिया का दुल्हन के रूप में सात वर्षों तक स्वर्ग में रहना, प्रथम-शताब्दी की यहूदी विवाह परंपराओं से सीधे जुड़ा हुआ है और इस अंश को गहरा सांस्कृतिक अर्थ प्रदान करता है। यहूदी संस्कृति और बाइबिलीय संदर्भ में, सात-पूर्णता, वाचा की पूर्ति, और सृष्टि सप्ताह (उत्पत्ति 1 और 2) में निहित, तथा इस्राएल की उपासना व्यवस्था में बार-बार प्रकट होने वाले ईश्वरीय आशीष का प्रतीक है।

विवाह के संदर्भ में, एक सामान्य यहूदी विवाह में शामिल होता था...

- सगाई (बेट्रोथल)–एक विधिक रूप से बाध्यकारी वाचा।
- तैयारी की अवधि–दूल्हा दुल्हन के लिए स्थान तैयार करता था और दुल्हन स्वयं को तैयार करती थी।
- विवाह जुलूस और भोज–जब दूल्हा, दुल्हन को लेने आता और उसे उत्सव में ले जाता, जो सामान्यतः सात दिन तक चलता था।

विवाह के दौरान, विवाह उत्सव सात दिनों तक चलता था, जिसे *'शेवा ब्राखोत'* (सात आशीषें) कहा जाता था। प्रत्येक दिन दूल्हा और दुल्हन पर आशीषें उच्चारित की जाती थीं, जो वाचा के आनन्द, फलवन्तता, विश्वासयोग्यता और परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं की पूर्ति पर बल देती थीं। सात दिन विवाह की मानक अवधि थी। सात, पूर्णता और सिद्ध आनन्द को दर्शाता था। सात, विवाह उत्सव को एक पूर्ण वाचा-घटना के रूप में मुहरबंद करता था।

इस प्रकार, कलीसिया का पूरे सात वर्षों तक स्वर्ग में मसीह के

साथ अपने एकत्व का उत्सव मनाना और अंत में मेम्ने के विवाह भोज में प्रवेश करना, बाइबिलीय और यहूदी समझ के पूर्णतः अनुरूप है। यह पूरी तरह से उस बात के अनुरूप है जो यीशु ने यूहन्ना 14:1-3 में कहा।

13) क्लेश काल के अंत में पुनरुत्थान है, न कि उठाया जाना

प्रकाशितवाक्य 20:1-6

1 फिर मैं ने एक स्वर्गदूत को स्वर्ग से उतरते देखा, जिसके हाथ में अथाह–कुंड की कुंजी और एक बड़ी जंजीर थी।
2 उस ने उस अजगर, अर्थात् पुराने साँप को, जो इब्लीस और शैतान है, पकड़ के हज़ार वर्ष के लिये बाँध दिया,
3 और उसे अथाह–कुंड में डालकर बन्द कर दिया और उस पर मुहर लगा दी कि वह हज़ार वर्ष के पूरे होने तक जाति जाति के लोगों को फिर न भरमाए। इसके बाद अवश्य है कि वह थोड़ी देर के लिये फिर खोला जाए।
4 फिर मैं ने सिंहासन देखे, और उन पर लोग बैठ गए, और उनको न्याय करने का अधिकार दिया गया। मैं ने उनकी आत्माओं को भी देखा, जिनके सिर यीशु की गवाही देने और परमेश्वर के वचन के कारण काटे गए थे, और जिन्होंने न उस पशु की, और न उसकी मूर्ति की पूजा की थी, और न उसकी छाप अपने माथे और हाथों पर ली थी। वे जीवित होकर मसीह के साथ हज़ार वर्ष तक राज्य करते रहे।
5 जब तक ये हज़ार वर्ष पूरे न हुए तब तक शेष मरे हुए न जी उठे। यह तो पहला पुनरुत्थान है।
6 धन्य और पवित्र वह है, जो इस पहले पुनरुत्थान का भागी है। ऐसों पर दूसरी मृत्यु का कुछ भी अधिकार नहीं, पर वे परमेश्वर और मसीह के याजक होंगे और उसके साथ हज़ार वर्ष तक राज्य करेंगे।

क्लेश काल के दौरान मसीह में अपने विश्वास के कारण शहीद किए गए लोग, प्रकाशितवाक्य 20:4 में क्लेश काल के अंत में जिलाए जाते हैं। सबसे पहले, क्लेश काल से पहले मरे हुए सभी संतों के पुनरुत्थान का यहाँ कोई उल्लेख नहीं है। जबकि ये सभी संत सहस्राब्दी (हज़ार वर्ष के) राज्य के दौरान शासन और राज करने के लिए उपस्थित होने चाहिए। दूसरा, प्रकाशितवाक्य 20:1-6 में क्लेश

काल के अंत में, 1 थिस्सलुनीकियों 4:13-18 या 1 कुरिन्थियों 15:51-58 में वर्णित उठा लिए जाने (रैप्चर) या यूहन्ना 14:1-3 की पूर्ति का कोई उल्लेख नहीं है।

तो पुराने नियम के संतों और वे संत जो क्लेश काल से पहले जीवित थे और मर गए, उनका क्या होगा? उन्हें यीशु के साथ शासन और राज करने के लिए कब जिलाया जाएगा? क्योंकि प्रकाशितवाक्य 20:4 में, क्लेश काल के अंत में, केवल वे संत जिलाए जाते हैं, जो क्लेश काल के दौरान मरे थे, इसलिए यह सुरक्षित निष्कर्ष है, कि बाकी सभी संत जो पहले मर चुके थे, किसी पहले समय में जिलाए जा चुके हैं। तार्किक निष्कर्ष यह है कि वे सभी कलीसिया के साथ, क्लेश काल से पहले, 1 थिस्सलुनीकियों 4:13-18 या 1 कुरिन्थियों 15:51-58 में वर्णित अनुसार जिलाए गए। हम यह इसलिए कहते हैं क्योंकि इब्रानियों 11 कहता है, कि हम (पुराने और नए नियम के संत) एक साथ सिद्ध किए जाएँगे। *"विश्वास ही के द्वारा इन सब के विषय में अच्छी गवाही दी गई, तौभी उन्हें प्रतिज्ञा की हुई वस्तु न मिली। क्योंकि परमेश्वर ने हमारे लिये पहले से एक उत्तम बात ठहराई, कि वे हमारे बिना सिद्धता को न पहुँचें"* (इब्रानियों 11:39,40)।

सभी संत, पुराने नियम के संत, नए नियम के संत, और क्लेश काल के संत, यीशु के सहस्राब्दी (हज़ार वर्ष के) राज्य के दौरान उसके साथ शासन और राज करने के लिए उपस्थित होंगे, जिससे दानिय्येल 7:18,22,27; लूका 19:17,19; और 1 कुरिन्थियों 6:1-6 की पूर्ति होगी।

पहला पुनरुत्थान

प्रकाशितवाक्य 20:4,5 में इसे "पहला पुनरुत्थान" क्यों कहा गया है? क्लेश काल के संतों का यह पुनरुत्थान "पहला पुनरुत्थान" कहलाता है, दूसरे पुनरुत्थान के विपरीत, जो सहस्राब्दी के अंत में होता है। यह

पहला पुनरुत्थान प्रत्येक संत (हर वह व्यक्ति जिसने आदम के समय से लेकर उस क्षण तक उद्धार पाया है), को सहस्राब्दी में प्रवेश कराता है। वे नश्वर विश्वासी जो क्लेश काल से बच जाते हैं, प्राकृतिक शरीरों में सहस्राब्दी में प्रवेश करते हैं। हर अन्य मनुष्य जो जीवित रहा और मर गया, दूसरे पुनरुत्थान में जिलाया जाएगा, और यह महान श्वेत सिंहासन के न्याय के लिए होगा। इसलिए पहले पुनरुत्थान पर विशेष बल दिया गया है। परन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि कलीसिया के उठा लिए जाने के समय कोई पुनरुत्थान नहीं होता। वास्तव में, क्लेश काल के अंत में, उठा लिए जाने का कोई उल्लेख नहीं है, और हम केवल पहले पुनरुत्थान को देखते हैं, जो एक बार फिर इस बात पर बल देता है, कि उठा लिया जाना पहले ही प्रकाशितवाक्य अध्याय 4 और 5 में हो चुका है।

कुछ संबंधित प्रश्न

अब हम संक्षेप में कलीसिया के उठा लिए जाने और स्वर्ग के जीवन से संबंधित कुछ प्रश्नों पर विचार करेंगे। यह निश्चित ही प्रश्नों की पूर्ण सूची नहीं है।

उठाए जाने के समय मरे हुओं में से कौन जी उठेंगे?

"...परमेश्वर उन्हें भी जो यीशु में सो गए हैं, उसी के साथ ले आएगा... जो मसीह में मरे हैं, वे पहले जी उठेंगे... तब हम जो जीवित और बचे रहेंगे उनके साथ बादलों पर उठा लिये जाएँगे..." (1 थिस्सलुनीकियों 4:14-17) *"...मुर्दे अविनाशी दशा में उठाए जाएँगे, और हम बदल जाएँगे"* (1 कुरिन्थियों 15:52)

इन दोनों अंशों से यह स्पष्ट है कि यीशु में विश्वास करने वाले सभी—जो मर चुके हैं और जो जीवित हैं—उठा लिए जाने के समय एक साथ उठा लिए जाएँगे।

परन्तु पुराने नियम के संतों और उन लोगों का क्या, जिन्होंने यीशु

मसीह के पुनरुत्थान से पहले विश्वास किया और मर गए?

हम जानते हैं, कि पुराने नियम के संत पुनरुत्थान में विश्वास करते थे और यह कि वे “अंतिम दिन” या “दिनों के अंत में” जिलाए जाएँगे (अय्यूब 19:25-27; यूहन्ना 11:24; दानिय्येल 12:2,3,13; यशायाह 26:19; होशे 13:14)। वे व्यक्तिगत न्याय और प्रतिफल में विश्वास करते थे (यशायाह 40:10; यहेजकेल 11:21; यहेजकेल 20:33-44; यहेजकेल 22:17-22; जकर्याह 3:7; जकर्याह 13:9; मलाकी 3:16-18; मलाकी 4:1), और नए आकाश और नई पृथ्वी में भी विश्वास करते थे (यशायाह 65:17,18; यशायाह 66:22; इब्रानियों 11:10,16,39,40)। जिन्होंने परमेश्वर के संदेश को माना, वे मरकर एक स्थान में गए जिसे **स्वर्गलोक (पैराडाइज़)** कहा जाता है।

हादेस वह स्थान था जहाँ सभी मनुष्यों की आत्माएँ और प्राण मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान तक जाते थे। **शिओल** (पुराना नियम) और **हादेस** (नया नियम) एक ही हैं। शिओल या हादेस में दो भाग थे, एक दुष्टों के लिए और दूसरा धर्मियों के लिए (लूका 16:22,23)। क्रूस पर टंगा हुआ चोर स्वर्गलोक में गया (जिसे इब्राहीम की गोद भी कहा जाता है) (लूका 23:43)। मसीह अपनी मृत्यु के बाद वहीं गया (प्रेरितों के काम 2:27,31)। वहाँ उसने अपने लोगों की सेवा की और बन्दियों को मुक्त किया (इफिसियों 4:8-10), और उन्हें 2 कुरिन्थियों 12:2 में वर्णित तीसरे स्वर्ग में ले गया। इसी कारण स्वर्गलोक को “ऊपर” कहा गया है (प्रकाशितवाक्य 2:7; 2 कुरिन्थियों 12:4)। इसलिए वर्तमान में, हादेस का स्वर्गलोक वाला भाग उस के द्वारा खाली कर दिया गया है, जिसके पास मृत्यु और हादेस की कुंजियाँ हैं (प्रकाशितवाक्य 20:13)। पुराने नियम के संतों की आत्माएँ अब मसीह के साथ तीसरे स्वर्ग में हैं। उन्हें “मसीह में” उनके पदवी की वजह से “संत” कहा जाता है। वे आने वाले मसीहा की ओर विश्वास से देखकर उद्धार पाए, जैसे आज लोग पीछे की ओर देखकर उद्धारकर्ता पर विश्वास करते हैं।

कुछ लोग पुराने नियम के संतों के पुनरुत्थान को क्लेश काल के ठीक अंत में, सहस्राब्दी के आरंभ से पहले रखते हैं। हम इस दृष्टिकोण से सहमत नहीं हैं, और यह विश्वास करते हैं, कि पुराने नियम के संत भी उन्हीं में शामिल होंगे, जिन्हें *"...परमेश्वर उन्हें भी जो यीशु में सो गए हैं, उसी के साथ ले आएगा..."* (1 थिस्सलुनीकियों 4:14) और जो उठा लिए जाने (रैप्चर) के समय जिलाए जाएँगे।

हम क्यों विश्वास करते हैं कि पुराने नियम के संतों का पुनरुत्थान, उठा लिए जाने के समय होगा

हम निम्नलिखित कारणों से ऐसा विश्वास करते हैं।

1) प्रकाशितवाक्य 20:4 में यह स्पष्ट रूप से कहा गया है, कि पहला पुनरुत्थान *"उन लोगों की आत्माओं"* के लिए है, *"जिनके सिर यीशु की गवाही देने और परमेश्वर के वचन के कारण काटे गए थे, और जिन्होंने न उस पशु की, और न उसकी मूर्ति की पूजा की थी, और न उसकी छाप अपने माथे और हाथों पर ली थी "*। इसमें न तो पुराने नियम के संत सम्मिलित हैं और न ही वे नए नियम के संत जो क्लेश काल से पहले मर चुके थे। इसलिए, पुराने नियम के संत और वे नए नियम के संत जो क्लेश काल से पहले मर गए, उनका पुनरुत्थान उठा लिए जाने के समय होना चाहिए।

एक विशिष्ट उदाहरण पर विचार करें...

सहस्राब्दी के दौरान, राजा दाऊद इस्राएल पर शासन करेगा (यहेजकेल 37:24,25; यिर्मयाह 30:9)। राजा दाऊद को अपना पुनरुत्थित शरीर प्राप्त करने के लिए केवल दो ही संभावनाएँ हैं...

a) उठा लिए जाने के समय पुनरुत्थान (1 थिस्सलुनीकियों 4:13-18; 1 कुरिन्थियों 15:50-58) या

b) सात वर्षों के क्लेश काल के अंत में, सहस्राब्दी के आरंभ से ठीक पहले होने वाला पहला पुनरुत्थान (प्रकाशितवाक्य 20:4-6)।

यह स्पष्ट रूप से कहा गया है, कि वे लोग जो क्लेश काल के दौरान यीशु में अपने विश्वास के कारण और पशु का छाप लेने से इनकार करने के कारण मारे गए, वही सात वर्षों के क्लेश काल के अंत में होने वाले पहले पुनरुत्थान में जिलाए जाते हैं। इससे हमारे पास केवल विकल्प a) ही बचता है, जिसके अनुसार दाऊद और सभी पुराने नियम के संत अपने महिमामय शरीर प्राप्त करते हुए जिलाए जाते हैं।

2) यद्यपि परमेश्वर ने कलीसिया के लिए प्रावधान किया है, फिर भी हम (पुराने नियम के संत और हम, नए नियम के विश्वासी) इब्रानियों 11 के अनुसार एक साथ सिद्ध किए जाएँगे। *"पर वे एक उत्तम अर्थात् स्वर्गीय देश के अभिलाषी हैं; इसी लिये परमेश्वर उनका परमेश्वर कहलाने में उनसे नहीं लजाता, क्योंकि उसने उनके लिये एक नगर तैयार किया है... विश्वास ही के द्वारा इन सब के विषय में अच्छी गवाही दी गई, तौभी उन्हें प्रतिज्ञा की हुई वस्तु न मिली। क्योंकि परमेश्वर ने हमारे लिये पहले से एक उत्तम बात ठहराई, कि वे हमारे बिना सिद्धता को न पहुँचें।"* (इब्रानियों 11:16,39,40)

3) इब्रानियों 12:1,22-24 में वर्णित गवाहों का बड़ा बादल, स्वर्गीय यरूशलेम, पहिलौठों की कलीसिया, और *"सिद्ध किए हुए धर्मियों की आत्माओं"* में पुराने नियम के वे संत भी सम्मिलित हैं, जिन्हें यीशु मसीह स्वर्ग में ले गया। इसलिए ये *"धर्मी लोगों की आत्माएँ"* 1 थिस्सलुनीकियों 4:14 में यीशु के साथ वापस लाई जाएँगी।

4) इफिसियों 3:15 में पौलुस द्वारा उल्लेखित स्वर्ग और पृथ्वी का पूरा परिवार, उन पुराने नियम के संतों को भी सम्मिलित करता है, जो

अब परमेश्वर के परिवार का भाग हैं।

हम सब, वे विश्वासी जो मर चुके हैं, वे विश्वासी जो जीवित हैं, और पुराने नियम के संत, उठा लिए जाने के समय महिमामय शरीर प्राप्त करेंगे और सात वर्षों की अवधि के दौरान महिमामय शरीरों सहित स्वर्ग में होंगे। ये, क्लेश काल के पुनरुत्थित संतों के साथ-साथ उन संतों सहित जो क्लेश काल से जीवित बचकर निकले, वे संत होंगे जो यहाँ पृथ्वी पर सहस्राब्दी के दौरान मसीह के राज्य का प्रशासन करेंगे।

उठा लिए जाने में कौन शामिल होंगे?

क्या "उठा लिए जाने के लिए तैयार" रहने के लिए नया जन्म / उद्धार पाने और विश्वासी जीवन जीने से अतिरिक्त कुछ और करने की आवश्यकता है?

वे सभी जो "यीशु में" हैं, अर्थात जो उद्धार पाए हुए हैं (या परमेश्वर के परिवार में नया जन्म पाए हैं), उठा लिए जाने में शामिल होंगे। यही एकमात्र योग्यता है। प्रभु यीशु ने अपने आगमन के संदर्भ में जो दृष्टान्त दिए, जैसे 10 कुँवारियों का दृष्टान्त (मत्ती 25:1-13), 10 तोड़ों का दृष्टान्त (मत्ती 25:14-30) और अन्य, वे हमें तैयारी की अवस्था में जीवन जीना सिखाने के लिए हैं, न कि "उठा लिए जाने का टिकट कमाने" के साधन के रूप में। उद्धार सदा अनुग्रह से, विश्वास के द्वारा है (इफिसियों 2:8,9)।

अक्सर पूछा जाने वाला एक काल्पनिक प्रश्न यह है—*"यदि कोई विश्वासी पाप कर रहा हो और उसी क्षण, पल भर में, उठा लिया जाना हो जाए, और उस विश्वासी को पश्चाताप करने और यीशु के लहू से शुद्ध होने का समय न मिले, तो क्या होगा? क्या वह विश्वासी उठा लिया जाएगा या पीछे छोड़ दिया जाएगा?"* हम केवल इस तथ्य की ओर संकेत कर सकते हैं कि हम सब अनुग्रह से, विश्वास के द्वारा उद्धार पाए हैं, और इसी आधार पर हम यह दृढ़ता से कह सकते हैं, कि ऐसी

स्थिति में भी, वह विश्वासी उठा लिया जाएगा और प्रभु के साथ होगा।

क्या हम स्वर्ग में एक-दूसरे को पहचानेंगे?

स्वर्ग में अपने समय के दौरान, हमारे पास मसीह के समान महिमामय शरीर होंगे और हम एक-दूसरे को जानेंगे। रूपान्तरण पर्वत पर जो हुआ, उस पर विचार करें (मत्ती 17:1-4), जहाँ मूसा और एलिय्याह प्रकट हुए। यद्यपि चेलों ने उन्हें पहले कभी शरीर में नहीं देखा था, फिर भी वे तुरंत "जान" गए कि ये कौन हैं। इसी प्रकार, वहाँ एक "जानना" होगा जहाँ हम "जैसे हम जाने गए हैं, वैसे ही जानेंगे" (1 कुरिन्थियों 13:12), और इसमें स्वर्ग में दूसरों की पहचान भी सम्मिलित होगी। स्वर्ग में विवाह नहीं होंगे (मत्ती 22:23-30)।

5
दानिय्येल का 70वाँ सप्ताह: अंतिम सात वर्ष

70 सप्ताह ठहराए गए हैं

इस अध्याय में, हम दानिय्येल की पुस्तक के एक महत्वपूर्ण अंश पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

स्वर्गदूत गब्रिएल ने दानिय्येल से निम्नलिखित कहा।

दानिय्येल 9:24-27
24 "तेरे लोगों और तेरे पवित्र नगर के लिये
सत्तर सप्ताह ठहराए गए हैं
कि उनके अन्त तक अपराध का होना बन्द हो,
और पापों का अन्त और अधर्म का प्रायश्चित किया जाए,
और युगयुग की धार्मिकता प्रगट हो;
और दर्शन की बात पर और भविष्यद्वाणी
पर छाप दी जाए,
और परमपवित्र का अभिषेक किया जाए।
25 इसलिये यह जान और समझ ले,
कि यरूशलेम को फिर बसाने की आज्ञा के
निकलने से लेकर अभिषिक्त प्रधान के समय तक
सात सप्ताह बीतेंगे। फिर बासठ सप्ताहों के बीतने पर
चौक और खाई समेत वह नगर कष्ट के समय में
फिर बसाया जाएगा।
26 उन बासठ सप्ताहों के बीतने पर
अभिषिक्त पुरुष काटा जाएगा:
और उसके हाथ कुछ न लगेगा;
और आनेवाले प्रधान की प्रजा नगर और पवित्रस्थान को नष्ट तो करेगी।

परन्तु उस प्रधान का अन्त ऐसा होगा जैसा बाढ़ से होता है;
तौभी उसके अन्त तक लड़ाई होती रहेगी;
क्योंकि उसका उजड़ जाना निश्चय ठान लिया गया है।
27 **वह प्रधान एक सप्ताह के लिये बहुतों के संग दृढ़ वाचा बाँधेगा,**
परन्तु आधे ही सप्ताह के बीतने पर
वह मेलबलि और अन्नबलि को बन्द करेगा;
और कंगूरे पर उजाड़नेवाली घृणित वस्तुएँ दिखाई देंगी
और निश्चय ही ठनी हुई बात के समाप्त होने तक
परमेश्वर का क्रोध उजाड़नेवाले पर पड़ा रहेगा।"

स्वर्गदूत गब्रिएल ने *"सत्तर सप्ताह"* (दानिय्येल 9:24) के विषय में कहा, जो विशेष रूप से *"तेरे लोगों"* –अर्थात यहूदी लोग और इस्राएल राष्ट्र, तथा *"तेरे पवित्र नगर"* – यरूशलेम नगर के लिये निर्धारित हैं।

यह समयावधि अंततः निम्नलिखित परिणामों को उत्पन्न करेगी:

- **अपराध को समाप्त करना**–पाप का अंत करना
- **पापों का अंत करना**–पाप और विद्रोह को समाप्त करना
- **अधर्म के लिये प्रायश्चित्त करना**–सभी पापों के लिये मेल कराना
- **सदा की धार्मिकता लाना**–इस्राएल और यरूशलेम में धार्मिकता की स्थापना करना
- **दर्शन और भविष्यवाणी पर मुहर लगाना**–भविष्यवाणी की पुष्टि और पूर्ति करना
- **परम पवित्र का अभिषेक करना**–अर्थात पवित्रतम स्थान का अभिषेक करना, मन्दिर को हर प्रकार की अशुद्धता और अपवित्रता से शुद्ध करना; मन्दिर (सहस्राब्दी मन्दिर) की स्थापना करना

उपरोक्त सभी बातें "सत्तर सप्ताहों" में पूरी होंगी।

एक सप्ताह, सात वर्ष

दानिय्येल 9:24
"तेरे लोगों और तेरे पवित्र नगर के लिये
सत्तर सप्ताह ठहराए गए हैं
कि उनके अन्त तक अपराध का होना बन्द हो,
और पापों का अन्त और अधर्म का
प्रायश्चित किया जाए,
और युगयुग की धार्मिकता प्रगट हो;
और दर्शन की बात पर और भविष्यद्वाणी पर छाप दी जाए,
और परमपवित्र का अभिषेक किया जाए।

"सत्तर सप्ताह" का वास्तविक अर्थ है *"सत्तर सात"*। (**इब्रानी** भाषा में "सप्ताह" के लिये शब्द है *'शाबूआ'* = सात)

यहाँ "सप्ताह" केवल सात की एक इकाई को दर्शाता है और यह किसी भी वस्तु के सात के समूह को संदर्भित कर सकता है। यहाँ प्रयुक्त इब्रानी शब्द, सात दिनों की इकाई या सात वर्षों की इकाई,— दोनों के लिये प्रयोग किया जा सकता है।

समीप संदर्भ

दानिय्येल 9:1-3 में, दानिय्येल वास्तव में उन **70 वर्षों** के विषय में प्रार्थना कर रहा है जिनकी भविष्यवाणी भविष्यद्वक्ता यिर्मयाह ने की थी।

दानिय्येल 9:1-3
1 मादी क्षयर्ष का पुत्र दारा, जो कसदियों के देश पर राजा ठहराया गया था,
2 उसके राज्य के पहले वर्ष में, मुझ दानिय्येल ने शास्त्र के द्वारा समझ लिया कि यरूशलेम की उजड़ी हुई दशा यहोवा के उस वचन के अनुसार जो यिर्मयाह नबी के पास पहुँचा था, कुछ वर्षों के बीतने पर अर्थात् सत्तर वर्ष के बाद पूरी हो जाएगी।
3 तब मैं अपना मुख प्रभु परमेश्वर की ओर करके गिड़गिड़ाहट के साथ प्रार्थना करने लगा, और उपवास कर, टाट पहिन, राख में बैठकर वरदान माँगने लगा।

यिर्मयाह 25:11-13

11 सारी जातियों का यह देश उजाड़ ही उजाड़ होगा, और ये सब जातियाँ सत्तर वर्ष तक बेबीलोन के राजा के आधीन रहेंगी।
12 जब सत्तर वर्ष बीत चुकें, तब मैं बेबीलोन के राजा और उस जाति के लोगों और कसदियों के देश के सब निवासियों को अधर्म का दण्ड दूँगा; यहोवा की यह वाणी है; और उस देश को सदा के लिये उजाड़ दूँगा।
13 मैं उस देश में अपने वे सब वचन पूरे करूँगा जो मैं ने उसके विषय में कहे हैं, और जितने वचन यिर्मयाह ने सारी जातियों के विरुद्ध भविष्यद्वाणी करके पुस्तक में लिखे हैं।

यिर्मयाह 29:10

"यहोवा यों कहता है : बेबीलोन के सत्तर वर्ष पूरे होने पर मैं तुम्हारी सुधि लूँगा, और अपना यह मनभावना वचन कि मैं तुम्हें इस स्थान में लौटा ले आऊँगा, पूरा करूँगा।

इसलिये जब स्वर्गदूत गब्रिएल यह घोषणा करता है, कि "सत्तर सप्ताह" या "सत्तर सात" तेरे लोगों के लिये ठहराए गए हैं (दानिय्येल 9:24), तो यह सुरक्षित निष्कर्ष है, कि गब्रिएल दानिय्येल से उसी "वर्षों" के संदर्भ में बात कर रहा है।

विस्तृत बाइबिलीय संदर्भ

पवित्रशास्त्र में इस्राएल पहले से ही "वर्षों के सप्ताह" का प्रयोग करता आया था।

लैव्यव्यवस्था 25:8

"सात विश्रामवर्ष, अर्थात् सातगुना सात वर्ष गिन लेना, सातों विश्रामवर्षों का यह समय उनचास वर्ष होगा।

यह वाक्यांश "वर्षों के सात विश्राम" जो 49 वर्षों के बराबर है, यह दर्शाता है कि प्रत्येक "वर्षों का सप्ताह" सात-वर्षों की अवधि है। दानिय्येल इस अवधारणा से परिचित था।

उत्पत्ति 29:27,28 में उसी प्राचीन इब्रानी शब्द *('शाबूआ')* का प्रयोग उसी संदर्भ में "सात दिन" और "सात वर्ष", दोनों के लिये किया गया है।

उत्पत्ति 29:27,28
27 इसका सप्ताह तो पूरा कर; फिर दूसरी भी तुझे उस सेवा के लिये मिलेगी जो तू मेरे साथ रहकर और सात वर्ष तक करेगा।"
28 याक़ूब ने ऐसा ही किया, और लिआ: के सप्ताह को पूरा किया; तब लाबान ने उसे अपनी बेटी राहेल भी दी कि वह उसकी पत्नी हो।

प्रकाशितवाक्य में पुष्टि

प्रकाशितवाक्य 11:2 में 42 महीनों का उल्लेख है, जो 3½ वर्ष होते हैं। प्रकाशितवाक्य 11:3 में 1,260 दिनों का उल्लेख है, जो फिर 3½ वर्ष होते हैं। प्रकाशितवाक्य 12:6 में भी 1,260 दिनों का उल्लेख है, जो पुनः 3½ वर्ष होते हैं। प्रकाशितवाक्य 12:14 में, दानिय्येल 7:25 और दानिय्येल 12:7 की प्रतिध्वनि करते हुए, *एक समय (1 वर्ष), समयों (2 वर्ष) और आधे समय (½ वर्ष)* का उल्लेख है, जो कुल मिलाकर 3½ वर्ष होते हैं, जब शैतान को पृथ्वी पर नीचे गिरा दिया जाता है और वह जान लेता है, कि उसके पास थोड़ा ही समय है (प्रकाशितवाक्य 12:6,12,14)। यह 3½ वर्ष की अवधि ठीक उसी सप्ताह के बीच के अनुरूप है, जिसका उल्लेख में किया दानिय्येल 9:27 गया है, *"वह प्रधान एक सप्ताह के लिये बहुतों के संग दृढ़ वाचा बाँधेगा, परन्तु आधे ही सप्ताह के बीतने पर वह मेलबलि और अन्नबलि को बन्द करेगा।"* अतः यदि सप्ताह का मध्य 3½ वर्ष है, तो एक पूरा सप्ताह सात वर्षों का होता है।

अतः, इन सभी निष्कर्षों के आधार पर, हम यह निष्कर्ष निकालते हैं, कि दानिय्येल 9 में प्रत्येक "सप्ताह" 7 वर्षों की अवधि को दर्शाता है। "सप्ताह" सात वर्षों का प्रतिनिधित्व करता है। तब हमारे पास 70 सप्ताह होते हैं, अर्थात 70×7 वर्ष = 490 वर्ष।

69 सप्ताह, और एक सप्ताह

परन्तु ये "सत्तर सप्ताह" दो भागों में विभाजित हैं–पहले 69 सप्ताह, और फिर एक सप्ताह, अर्थात 70वाँ सप्ताह।

दानिय्येल 9:25
इसलिये यह जान और समझ ले,
कि यरूशलेम को फिर बसाने की
आज्ञा के निकलने से लेकर
अभिषिक्त प्रधान के समय तक
सात सप्ताह बीतेंगे। फिर बासठ सप्ताहों के बीतने पर
चौक और खाई समेत वह नगर कष्ट के समय में
फिर बसाया जाएगा।

दानिय्येल 9:25 को विस्तार से पूरा करने वाली आज्ञा फारस के राजा अर्तक्षत्र प्रथम द्वारा 445 ईसा पूर्व में जारी की गई थी (नहेम्याह 2:1-8), जिसके द्वारा नहेम्याह को यरूशलेम की शहरपनाह और नगर की संरचना को पुनः स्थापित और पुनर्निर्मित करने की अनुमति दी गई। नहेम्याह से पहले, 538 ईसा पूर्व में राजा कुरूश महान ने केवल मन्दिर के पुनर्निर्माण की अनुमति दी थी, नगर की नहीं (एज्रा 1:1-4; यशायाह 44:28)। राजा दारा प्रथम (520-519 ईसा पूर्व) ने राजा कुस्रू की मन्दिर-संबंधी आज्ञा की पुष्टि की (एज्रा 6:1-12)। फारस के राजा अर्तक्षत्र प्रथम ने, पहले 457 ईसा पूर्व में, एज्रा के समय, धार्मिक सुधारों और मन्दिर के प्रशासन की अनुमति दी, परन्तु नगर के पुनर्निर्माण की नहीं (एज्रा 7:11-26)। बाद में **445 ईसा पूर्व** में (नहेम्याह 2:1-8), राजा अर्तक्षत्र प्रथम ने, नहेम्याह को यरूशलेम की शहरपनाह और नगर के पुनर्निर्माण की अनुमति दी, जो दानिय्येल 9:25 को सबसे सटीक रूप से पूरा करता है। नगर की दीवारें और सड़कें संकट के समयों में बनाई जाएँगी। हम इसे नहेम्याह की पुस्तक में देखते हैं।

यरूशलेम के पुनर्निर्माण की आज्ञा निकलने से लेकर मसीह तक, 7 सप्ताह और 62 सप्ताह होंगे। यह कुल मिलाकर 69 सप्ताह होते हैं।

मसीह तक 69 सप्ताह

दानिय्येल 9:26

उन बासठ सप्ताहों के बीतने पर अभिषिक्त पुरुष काटा जाएगा: और उसके हाथ कुछ न लगेगा; और आनेवाले प्रधान की प्रजा नगर और पवित्रस्थान को नष्ट तो करेगी। परन्तु उस प्रधान का अन्त ऐसा होगा जैसा बाढ़ से होता है; तौभी उसके अन्त तक लड़ाई होती रहेगी; क्योंकि उसका उजड़ जाना निश्चय ठान लिया गया है।

यह पद 69 सप्ताह (पद 25 के 7 सप्ताह + 62 सप्ताह) पूरे होने के बाद, घटित होने वाली तीन प्रमुख घटनाओं का वर्णन करता है।

***"उन बासठ सप्ताहों के बीतने पर अभिषिक्त पुरुष काटा जाएगा..."*।** यहाँ "अभिषिक्त पुरुष" से अभिप्राय अभिषिक्त जन (यीशु) से है, जिसे "काट डाला जाएगा", अर्थात हिंसक रूप से मारा जाएगा, मृत्यु-दण्ड दिया जाएगा, हटा दिया जाएगा और न्याय किया जाएगा। यह 7 सप्ताह और 62 सप्ताह, अर्थात 69वें सप्ताह (69 × 7 = 483 वर्ष) के बाद घटित होता है, और मसीह के सार्वजनिक प्रकट होने और उसकी मृत्यु तक की समयरेखा से पूरी तरह मेल खाता है। यह भविष्यवाणी ठीक उसी प्रकार पूरी हुई जैसे कहा गया था।

***"और उसके हाथ कुछ न लगेगा"*।** यह पुराने नियम में प्रतिस्थापनात्मक प्रायश्चित्त के सबसे स्पष्ट कथनों में से एक है। यीशु ने अपने लिए नहीं, बल्कि दूसरों के लिए मृत्यु सही।

***"और आनेवाले प्रधान की प्रजा नगर और पवित्रस्थान को नष्ट तो करेगी "*।** यरूशलेम और मन्दिर को सन् 70 ईस्वी में तीतुस के अधीन रोमियों द्वारा नाश किया गया।

"आने वाला प्रधान" कौन है? यह प्रधान तीतुस नहीं है। तीतुस ने "लोगों" वाले भाग को पूरा किया, परन्तु वचन उसे "प्रधान" नहीं कहता। वह केवल आने वाले अंतिम व्यक्ति की छाया था। *"आने वाला प्रधान"* वही है जिसका उल्लेख अगले वचन में किया गया है, *"वह प्रधान एक सप्ताह के लिये बहुतों के संग दृढ़ वाचा बाँधेगा"* (दानिय्येल 9:27)। अतः *"आने वाला प्रधान"* वही है, जो एक सप्ताह के लिये वाचा को दृढ़ करता है। वह अन्त-काल का शासक (मसीह-विरोधी) है, जो रोमी वंश / क्षेत्र से संबंधित है, और जिसका उल्लेख दानिय्येल 9:27 में सात वर्षों की वाचा की पुष्टि करते समय किया गया है। यह व्याख्या दानिय्येल 7, दानिय्येल 9, मत्ती 24, और प्रकाशितवाक्य 13 के साथ सामंजस्य रखती है।

"उसका अंत बाढ़ के समान होगा..." यह रूपकात्मक भाषा है, जहाँ "बाढ़" का अर्थ अत्यधिक विनाश और न्याय है।

"और युद्ध के अंत तक उजाड़ ठहराए गए हैं" का अर्थ है, कि यरूशलेम युद्ध, विनाश और विस्थापन का अनुभव करता रहेगा। यह स्थिति युग के अंत और सहस्राब्दी के आरंभ तक बनी रहेगी।

एक सप्ताह के लिए वाचा–दानिय्येल का 70वाँ सप्ताह

दानिय्येल 9:27

वह प्रधान एक सप्ताह के लिये बहुतों के संग दृढ़ वाचा बाँधेगा,
परन्तु आधे ही सप्ताह के बीतने पर
वह मेलबलि और अन्नबलि को बन्द करेगा;
और कंगूरे पर उजाड़नेवाली घृणित वस्तुएँ दिखाई देंगी
और निश्चय ही ठनी हुई बात के समाप्त होने तक
परमेश्वर का क्रोध उजाड़नेवाले पर पड़ा रहेगा।"

और फिर दानिय्येल 9:27 में, दानिय्येल अंतिम एक सप्ताह का उल्लेख करता है। यह एक-सप्ताह की अवधि "दानिय्येल का सत्तरवाँ सप्ताह" भी कहलाती है, जो सात वर्षों की अवधि है।

गब्रिएल ने घोषणा की थी, कि ये 70 सप्ताह इस्राएल और यरूशलेम के विषय में हैं। पहले 69 सप्ताह (483 वर्ष) पहले ही पूरे हो चुके हैं। 69वें सप्ताह (483 वर्ष) और 70वें सप्ताह (अंतिम 7 वर्ष) के बीच, कलीसिया का युग आता है। कलीसिया का जन्म मसीह के क्रूस पर चढ़ाए जाने और पुनरुत्थान के बाद हुआ, और वह 70वें सप्ताह के आरंभ तक पृथ्वी पर बनी रहेगी। इसलिए दानिय्येल का 70वाँ सप्ताह –अंतिम सात वर्ष–अभी पूरा होना शेष है।

इस अंतिम सप्ताह में, *"लोगों का प्रधान"*, अर्थात मसीह-विरोधी, बहुतों के साथ एक "वाचा"–एक झूठी शान्ति-संधि–स्थापित करेगा, परन्तु सप्ताह के बीच में, वह बलिदान को बन्द कर देगा (जैसा कि दानिय्येल 8:13,14,26 में भी कहा गया है)।

"वह प्रधान एक सप्ताह के लिये बहुतों के संग दृढ़ वाचा बाँधेगा" यहाँ "वह" कौन है? व्याकरण की दृष्टि से, इसका निकटतम संदर्भ *"आने वाला प्रधान"* (दानिय्येल 9:26) है, और यह एक भविष्य के शासक की ओर संकेत करता है, जिसे मसीह-विरोधी के रूप में पहचाना जाता है।

"दृढ़ वाचा बाँधेगा" का अर्थ है "लागू करना", "मज़बूत करना", या "बाध्यकारी बनाना", अर्थात धार्मिकता की शुरुआत करने के बजाय किसी समझौते की पुष्टि या थोपना।

"बहुतों के संग" का अर्थ "सब के साथ" नहीं है, और संदर्भ से यह एक राजनीतिक संधि या सुरक्षा समझौते की ओर संकेत करता है, जिसमें इस्राएल सम्मिलित होगा।

"एक सप्ताह के लिये", अर्थात सात वर्षों की अवधि, जिसे दानिय्येल का 70वाँ सप्ताह कहा जाता है।

"परन्तु आधे ही सप्ताह", का अर्थ है वाचा आरंभ होने के 3½ वर्ष बाद। यह प्रकाशितवाक्य की समयरेखाओं से मेल खाता है–42 महीने (प्रकाशितवाक्य 11:2; प्रकाशितवाक्य 13:5); 1,260 दिन (प्रकाशितवाक्य 11:3; प्रकाशितवाक्य 12:6) और *"एक समय, समयों और आधा समय"* (प्रकाशितवाक्य 12:14)।

"वह मेलबलि और अन्नबलि को बन्द करेगा।" इसके दो अत्यन्त महत्वपूर्ण अर्थ हैं। 1) यहूदी मन्दिर का पुनः कार्यरत होना आवश्यक है, जहाँ पवित्रस्थान में बलिदान चढ़ाए जा रहे हों। 2) यह मसीह-विरोधी वाचा को तोड़ देता है, बलपूर्वक आराधना को रोक देता है, और इस्राएल के विरुद्ध हो जाता है।

"और कंगूरे पर उजाड़नेवाली घृणित वस्तुएँ दिखाई देंगी" यह क्षण उसी "उजाड़ने वाली घिनौनी वस्तु" के अनुरूप है, जिसका उल्लेख स्वयं प्रभु यीशु ने किया था (मत्ती 24:15; मरकुस 13:14)। प्रेरित पौलुस ने भी 2 थिस्सलुनीकियों 2:4 में इसका उल्लेख किया है। यह दर्शाता है, कि दानिय्येल 9:27 की भविष्यवाणी अभी पूरी तरह पूरी नहीं हुई है।

"कंगूरे पर..." यह इब्रानी मुहावरे में "ऊँचाइयों पर" या "फैलते हुए प्रभाव" के अर्थ में प्रयुक्त होता है। यह मूर्तिपूजा, उजाड़ और घिनौनेपन के तीव्र प्रसार को दर्शाता है। मसीह-विरोधी स्वयं को परमेश्वर के रूप में स्थापित करता है (2 थिस्सलुनीकियों 2:3,4) और अपनी आराधना को अनिवार्य करता है (प्रकाशितवाक्य 13)।

"निश्चय ही ठनी हुई बात के समाप्त होने तक..." इसका अर्थ है कि परमेश्वर ने इस प्रकार की दुष्टता के लिये एक निश्चित अन्त निर्धारित कर रखा है, अर्थात इन सात वर्षों का अन्त। *"यदि वे दिन घटाए न जाते तो कोई प्राणी न बचता..."* (मत्ती 24:22)।

"परमेश्वर का क्रोध उजाड़नेवाले पर पड़ा रहेगा ।" यह परमेश्वर के न्याय को दर्शाता है, अर्थात मसीह-विरोधी का पूर्ण और अंतिम विनाश।

दानिय्येल 9:24-27 का यह अंश अन्त-काल की एक अद्‌त भविष्यवाणी है, जिसे भली-भाँति समझना अत्यन्त आवश्यक है।

6
परिचय (प्रकाशितवाक्य 1)

प्रेरित यूहन्ना ने लगभग **95 ईस्वी** में प्रकाशितवाक्य की पुस्तक को प्राप्त किया और उसे लिखा। वह पहले इफिसुस में रह रहा था, जिसके बाद उसे रोमी सम्राट दोमितियान द्वारा, जिसने 81 ईस्वी में मसीहियों का उत्पीड़न आरंभ किया था, एजियन सागर के छोटे से द्वीप पतमुस में निर्वासित कर दिया गया। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में प्रभु यीशु स्वयं को यूहन्ना पर प्रकट करते हैं, उस समय विद्यमान सात कलीसियाओं को संबोधित करते हैं, और फिर उन बातों को प्रकट करते हैं, जो आगे होने वाली हैं।

प्रकाशितवाक्य 1:19
इसलिये जो बातें तू ने देखीं हैं और जो बातें हो रही हैं और जो बातें इसके बाद होनेवाली हैं, उन सब को लिख ले।

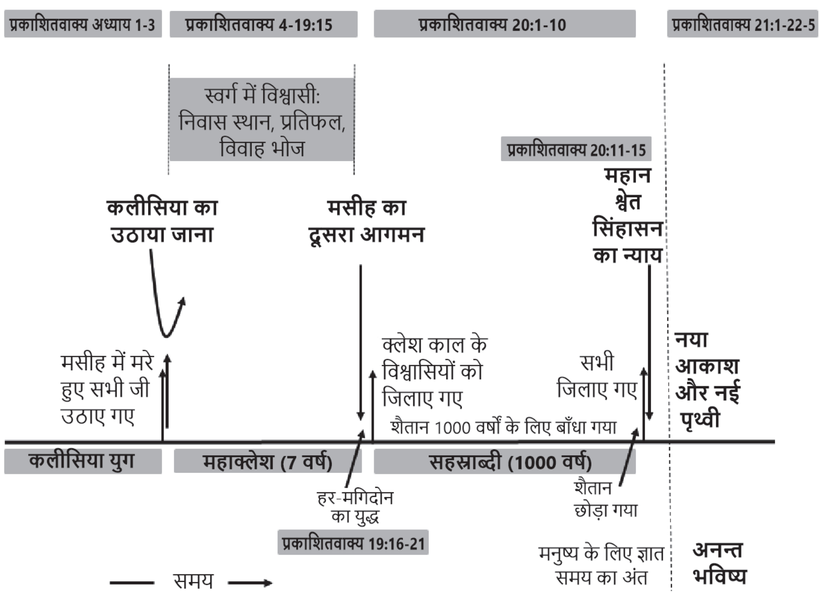

प्रकाशितवाक्य 1 एक परिचय है, और यूहन्ना उन बातों को लिखता है, जिन्हें उसने देखा (*"जो बातें तू ने देखीं"*), जिनके द्वारा पुनरुत्थित और विजयी मसीह हमारे सामने प्रकट होता है।

प्रकाशितवाक्य 2 से 3 में "जो बातें हो रही हैं" का वर्णन है, जहाँ प्रभु यीशु उस क्षेत्र की सात कलीसियाओं को संबोधित करते हैं। प्रभु का प्रत्येक कलीसिया के लिए दिया गया संदेश आज की कलीसिया के लिए भी शिक्षा और चेतावनी रखता है।

प्रकाशितवाक्य 4 से 22 में "जो बातें इसके बाद होनेवाली हैं" का वर्णन है, जो यह दर्शाता है, कि ये घटनाएँ भविष्य में घटित होंगी।

इन्हें आगे निम्नलिखित भागों में विभाजित किया जा सकता है।

प्रकाशितवाक्य 4 और 5 के इन अध्यायों में सिंहासन कक्ष में छुड़ाए गए प्राचीनों, संतों और स्वर्गदूतों को आराधना करते हुए दिखाया गया है। इसी समय, मसीह को पुस्तक ग्रहण करने और उसकी मुहरें खोलने का अधिकार दिया जाता है, जिससे भविष्यवाणी की गई घटनाओं की शुरुआत होती है। चूँकि पुस्तक का ग्रहण किया जाना और मुहरों का खोला जाना भविष्य की घटनाएँ हैं, इसलिए हम निष्कर्ष निकालते हैं, कि प्रकाशितवाक्य 4 और 5, स्वर्ग में सिंहासन कक्ष में आराधना करती हुई, उठा ली गई कलीसिया और महिमामय पुराने तथा नए नियम के संतों का चित्र प्रस्तुत करते हैं (जैसा कि पिछले अध्याय में विस्तार से बताया गया है)।

प्रकाशितवाक्य 6 से 19 के ये अध्याय मुख्य रूप से क्लेश काल के दौरान पृथ्वी पर घटने वाली घटनाओं के क्रम का विवरण देते हैं। कई बार हमें स्वर्ग में घट रही बातों की भी झलक मिलती है, जब न्याय की घटनाएँ—तीन समूहों में सात-सात—पृथ्वी पर उँडेली जाती हैं। कुछ भाग यूहन्ना के व्यक्तिगत अनुभवों को भी दर्ज करते हैं, जब वह

यह प्रकाशन प्राप्त कर रहा होता है। विशेष रूप से प्रकाशितवाक्य 11, 12 और 13 में ऐसे अंश हैं जो अलग-अलग अध्यायों में दिए गए हैं, परंतु वास्तव में 3½ वर्षों की अवधि में घटने वाली घटनाओं को दर्शाते हैं। प्रकाशितवाक्य 11 हमें दो गवाहों के विषय में बताता है, जो 3½ वर्षों तक सेवकाई करेंगे। प्रकाशितवाक्य 12 शैतान और उसके दूतों की उत्पत्ति की ओर लौटता है, स्वर्ग में घुसपैठ का उसका अंतिम प्रयास, उसका पृथ्वी पर गिराया जाना, और क्लेश काल के अंतिम 3½ वर्षों में उसकी हताश गतिविधियों का वर्णन करता है। प्रकाशितवाक्य 13 क्लेश काल के दूसरे आधे भाग में मसीह-विरोधी और झूठे भविष्यद्वक्ता के कार्यों का विवरण देता है। प्रकाशितवाक्य 19 क्लेश काल के अंत के दौरान, स्वर्ग में मेम्ने का विवाह भोज और पृथ्वी पर हर-मगिदोन का युद्ध को दर्शाता है।

प्रकाशितवाक्य 20 हमें सहस्राब्दी राज्य (मिलेनियम) के विषय में समझ देता है।

प्रकाशितवाक्य 21 और 22 हमें नए स्वर्ग और नई पृथ्वी में ले जाते हैं, जहाँ स्वर्गीय नगर यरूशलेम को नई पृथ्वी पर स्थापित किया जाता है।

अधिकांश घटनाएँ प्रकाशितवाक्य में क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत की गई हैं, जैसा कि ऊपर के चित्र में दर्शाया गया है। हम यह भी समझते हैं कि कुछ घटनाएँ पीछे की ओर देखने या कभी-कभी आगे की ओर झाँकने के रूप में प्रस्तुत की जाती हैं। यद्यपि इन घटनाओं का सटीक समय नहीं दिया गया है, फिर भी हमें सात-वर्षीय क्लेश काल के भीतर उनके संभावित समय-खंडों की सामान्य समझ प्राप्त होती है।

अब हम प्रकाशितवाक्य की पुस्तक का एक पक्षी-दृष्टि—अर्थात अध्याय-दर-अध्याय का उच्च-स्तरीय अवलोकन—आरंभ करते हैं। यह पद-दर-पद अध्ययन नहीं है। वह हम किसी अन्य पुस्तक के लिए

छोड़ते हैं। हमारा उद्देश्य प्रमुख घटनाओं और उनके घटित होने के क्रम को समझना है।

प्रकाशितवाक्य 1:7
देखो, वह बादलों के साथ आनेवाला है, और हर एक आँख उसे देखेगी, वरन् जिन्होंने उसे बेधा था वे भी उसे देखेंगे, और पृथ्वी के सारे कुल उसके कारण छाती पीटेंगे। हाँ। आमीन।

प्रकाशितवाक्य अध्याय 1 पूरी पुस्तक का परिचय देता है, जिसमें यह बताया गया है कि यह यीशु मसीह के द्वारा भविष्य की घटनाओं को प्रकट करने के लिए परमेश्वर का प्रकाशन है। इसमें पुनरुत्थित प्रभु को अत्यन्त महिमा में अपनी कलीसियाओं के बीच चलते हुए दिखाया गया है, जीवन और मृत्यु पर उसके सम्पूर्ण अधिकार की पुष्टि की गई है, और यूहन्ना को जो कुछ उसने देखा है, जो वर्तमान में है, और जो शीघ्र होने वाला है, उसे लिखने का आदेश दिया गया है।

जो लोग इस भविष्यद्वाणी को पढ़ते हैं, जो इसे सुनते हैं, और जो इसमें लिखी बातों का पालन करते हैं, उनके लिए एक विशेष आशीष है (प्रकाशितवाक्य 1:3)। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक हमें विजय और जयभाव के साथ यीशु मसीह के लिए निडर और विश्वासयोग्य जीवन जीने की प्रेरणा देती है, यह जानते हुए कि हमारा प्रभु विजयी राजा है।

प्रभु यीशु, यूहन्ना के माध्यम से, रोमी एशिया की सात वास्तविक कलीसियाओं को संबोधित करता है जो उस समय अस्तित्व में थीं।

महिमामय मसीह का दर्शन (प्रकाशितवाक्य 1:12–16), जिसमें वह सात सोने की दीवटों के बीच खड़ा दिखाई देता है, जो सात कलीसियाओं का प्रतीक है, अत्यन्त सामर्थ्यशाली है। इस महिमामय मसीह के दर्शन में गहन प्रतीकात्मकता भी पाई जाती है।

- **लंबा वस्त्र और सोने का कमरबंद**: हमारा महायाजक और न्यायी
- **श्वेत केश**: बुद्धि और पवित्रता
- **आग के समान आँखें**: सर्वज्ञ प्रभु
- **पीतल जैसे चरण**: पूर्ण अधिकार
- **अनेक जलधाराओं के समान वाणी**: सामर्थी आदेश
- **दाहिने हाथ में सात तारे**: अपने संदेशवाहकों का रक्षक
- **मुख से निकलने वाली तेज दोधारी तलवार**: विजयी और सामर्थी वचन
- **सूर्य के समान चमकता मुख**: पूर्ण महिमा

वह आदि और अंत है, अनंत प्रभु है, जीवित है, और मृत्यु तथा अधोलोक पर उसका पूर्ण अधिकार है।

वह कलीसियाओं के बीच चलता है (सात दीवटें सात विशेष कलीसियाओं का प्रतिनिधित्व करती हैं), जो कुछ भी हो रहा है, उस पर दृष्टि रखता है और जाँच करता है। वह प्रत्येक कलीसिया के अगुओं / संदेशवाहकों को अपने हाथ में थामे रहता है (दाहिने हाथ में सात तारे), उन्हें सुरक्षित भी रखता है और साथ ही उन्हें उस कलीसिया में हो रही बातों के लिए उत्तरदायी भी ठहराता है, जिसे उसने उनकी देखरेख में सौंपा है। प्रत्येक कलीसिया के लिए उसका एक विशिष्ट संदेश है, जो उसके नियुक्त अगुए / संदेशवाहक को संबोधित है।

7
सात कलीसियाएँ
(प्रकाशितवाक्य 2 और 3)

ये सात कलीसियाएँ उस क्षेत्र में थीं, जिसे आज आधुनिक तुर्की कहा जाता है। प्रभु यीशु के पास इन सातों कलीसियाओं के लिए एक-एक विशेष संदेश था। उसने उनकी जाँच की, उनकी सामर्थ्य की सराहना की, और उनकी कमजोरियों तथा दोषों को संबोधित किया। लगभग हर कलीसिया को उसने मन फिराने (पश्चाताप) के लिए बुलाया, और जो कुछ गलत था उसे सुधारने का निर्देश दिया। प्रत्येक कलीसिया से, उसने जय पाने वालों के लिए एक प्रतिफल का वादा भी किया।

अपनी तीसरी मिशनरी यात्रा के दौरान, प्रेरित पौलुस ने इफिसुस में लगभग तीन वर्ष बिताए। इफिसुस में उसकी सेवकाई के द्वारा पूरे पश्चिमी एशिया में सुसमाचार फैलाया गया। *"दो वर्ष तक यही होता रहा, यहाँ तक कि आसिया के रहनेवाले क्या यहूदी क्या यूनानी सब ने प्रभु का वचन सुन लिया"* (प्रेरितों के काम 19:10)। संभव है, कि इफिसुस से आरंभ करके ये सभी सात कलीसियाएँ प्रेरित पौलुस की सेवकाई के अंतर्गत स्थापित हुई हों, या तो उन लोगों के द्वारा जिन्हें उसने सीधे प्रशिक्षण दिया था, या जिनके जीवन पर उसकी सेवकाई का गहरा प्रभाव पड़ा था।

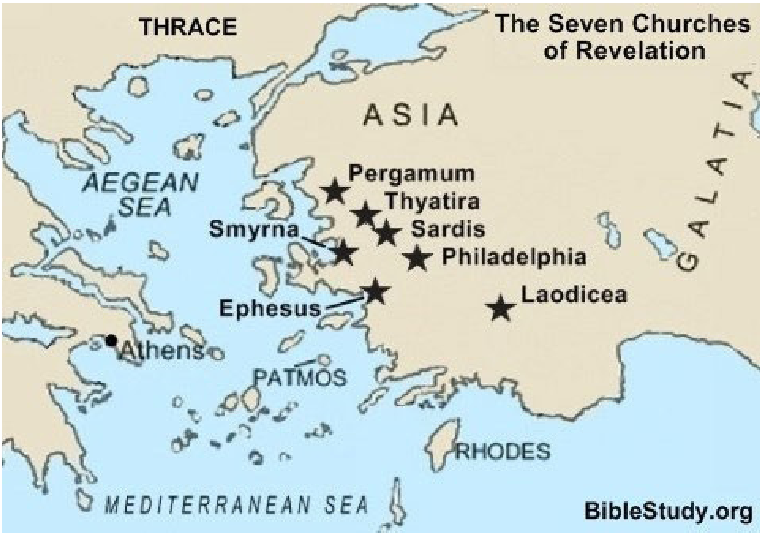

प्रभु के इन सातों कलीसियाओं को दिए गए संदेशों से हमें बहुत कुछ सीखने को मिलता है। हम सभी जो स्थानीय कलीसिया में अगुवाई की भूमिका में हैं, हमें यह समझना चाहिए कि जिन लोगों / समुदाय को प्रभु ने हमें सौंपा है, उनकी आत्मिक भलाई के लिए वह हमें उत्तरदायी ठहराता है।

ये सातों प्रथम शताब्दी ईस्वी में विद्यमान वास्तविक ऐतिहासिक कलीसियाएँ थीं। इसलिए, हमें इन सात कलीसियाओं को सात कलीसिया-युगों का रूपक मानकर व्याख्या नहीं करनी चाहिए। पवित्रशास्त्र में कहीं भी ऐसा संकेत नहीं दिया गया है।

इफिसुस

इफिसुस की स्थानीय कलीसिया का इतिहास प्रेरित पौलुस और तीमुथियुस की सेवकाई के कारण अत्यंत समृद्ध रहा है। प्रेरित यूहन्ना भी निर्वासन में भेजे जाने से पहले इफिसुस में एक प्राचीन (एल्डर) के रूप में सेवा कर चुका था। प्रभु यीशु ने इस कलीसिया की उनके

कामों, परिश्रम और धीरज के लिए सराहना की। परन्तु उन्होंने अपना पहला प्रेम छोड़ दिया था। प्रभु यीशु ने उन्हें मन फिराने और पहले काम करने के लिए बुलाया। पहले काम, पहले प्रेम की अभिव्यक्ति हैं, जो स्वयं प्रभु के प्रति हमारा प्रेम और समर्पण है। प्रभु ने निकोलैतियों के प्रति उनके रवैये की भी प्रशंसा की, जो ऐसे लोगों का समूह था जो आत्मिक आवरण के बहाने से लैंगिक अनैतिकता को बढ़ावा देते थे और संभवतः लोगों पर कठोर अधिकार और नियंत्रण भी रखते थे।

स्मुरना

शैतान की आराधनालय ऐसे लोगों का समूह थी जो स्वयं को यहूदी कहते थे, परन्तु मसीही कलीसिया के प्रबल सताने वाले और विरोधी थे। प्रभु ने पहचाना कि स्मुरना के विश्वासियों की भौतिक स्थिति तो दयनीय थी और वे कठिनाइयों से गुजर रहे थे, परन्तु आत्मिक रूप से वे धनी थे। वे शीघ्र ही कठोर सताव का सामना करने वाले थे, और प्रभु ने उन्हें किसी बात से न डरने, विश्वासयोग्य बने रहने के लिए बुलाया, और यह आश्वासन दिया कि वे अपना अनन्त प्रतिफल पाएँगे।

परगमुन

परगमुन एक ऐसा नगर था, जो मन्दिरों और सम्राट-पूजा से भरा हुआ था, और प्रभु यीशु ने इसे वह स्थान कहा जहाँ शैतान का सिंहासन है, जो इसकी आत्मिक अन्धकारता को दर्शाता है। यह कलीसिया कई बातों में दृढ़ थी, फिर भी वे उन लोगों को सहन कर रहे थे, जो गलत शिक्षा को पकड़े हुए थे—बिलाम की शिक्षा (नैतिक समझौता और मूर्तिपूजा) और निकोलैतियों की शिक्षा (आत्मिक बहाने के अंतर्गत लैंगिक अनैतिकता)। प्रभु ने उन्हें मन फिराने के लिए बुलाया।

थूआतीरा

प्रभु का संदेश यह था कि वह जानता है कि वे उनके काम, प्रेम, सेवा, विश्वास और धीरज के प्रति बढ़ते जा रहे हैं। परन्तु वे एक झूठी

भविष्यवक्ता को सहन कर रहे थे, जो लोगों को अनैतिकता और मूर्तिपूजा में फुसलाती थी। उस पर और उन पर जो उसकी शिक्षा को अपनाते थे, न्याय आने वाला था। प्रभु ने उन्हें प्रोत्साहित किया जो इस झूठी भविष्यवक्ता का अनुसरण नहीं कर रहे थे, कि वे जो उनके पास है उसे दृढ़ता से थामे रहें।

सरदीस

सबसे कठोर डाँटों में से एक सरदीस की कलीसिया को दी गई, जब प्रभु यीशु ने उनसे कहा, *"मैं तेरे कामों को जानता हूँ: तू जीवित तो कहलाता है, पर है मरा हुआ।"* (प्रकाशितवाक्य 3:1)। उनके काम—जो कुछ वे उस समय कर रहे थे—परमेश्वर के सामने सिद्ध नहीं थे। प्रभु ने उन्हें जो उन्होंने पाया और सुना था उसे दृढ़ता से थामे रहने, मन फिराने और सतर्क रहने के लिए बुलाया।

फिलदिलफिया

फिलदिलफिया की कलीसिया ऐसी कलीसिया थी, जिसे न तो डाँट मिली और न ही मन फिराने का बुलावा। प्रभु ने उनके कामों की सराहना की और यह कि अपनी थोड़ी सी सामर्थ्य के बावजूद, उन्होंने उसके वचन को थामे रखा, उसके नाम का इन्कार नहीं किया, और धीरज से स्थिर रहे। वे यह देखने वाले थे, कि उनके विरोधी आकर उनके चरणों में नम्र होंगे और यह जानेंगे कि परमेश्वर इन विश्वासियों से प्रेम करता है।

लौदीकिया

संभवतः सबसे कठोर डाँट प्रभु यीशु ने इसी कलीसिया को दी थी। लौदीकिया एक आत्म-धोखे में पड़ी हुई कलीसिया थी, जो समझती थी कि सब कुछ ठीक है, जबकि प्रभु यीशु ने उन्हें आत्मिक रूप से *"अभागा, तुच्छ, कंगाल, अंधा और नंगा"* कहा (प्रकाशितवाक्य 3:17)। यह एक अत्यन्त ख़तरनाक स्थिति है, और प्रभु ने उन्हें उससे शुद्ध

किया हुआ सोना (अर्थात् जो वास्तव में उसी की ओर से है)–धार्मिकता और अभिषेक, प्राप्त करने के लिए मूल्य चुकाने के लिए आमंत्रित किया। वे भीतर आकर अपने लोगों के साथ सच्ची संगति का आनंद लेना चाहते थे।

एक स्थानीय कलीसिया के रूप में प्रभु यीशु हमसे क्या कहेंगे?

इन सात कलीसियाओं से हम, अगुवों के रूप में और एक कलीसिया समुदाय के रूप में, अपने जीवन में बहुत कुछ सीख और लागू कर सकते हैं। हमें अपना पहला प्रेम और पहले काम बनाए रखने चाहिएँ। हमें हर प्रकार के विरोध और सताव में स्थिर रहना चाहिए। हम जिस शिक्षा को अपनाते हैं, उस पर हमें सावधानीपूर्वक निगरानी रखनी चाहिए। हमें ऐसे लोगों को, जो अधार्मिक शिक्षा को बढ़ावा देते हैं, उसके लोगों के बीच बने रहने की अनुमति नहीं देनी चाहिए। हम उस प्रतिष्ठा के आधार पर नहीं जी सकते जो हमारी है या जो लोग हमारे विषय में कहते हैं। इसके बजाय, हमें अपने आत्मिक जीवन और कार्यों के विषय में प्रभु के मूल्यांकन की चिंता करनी चाहिए। हमें उसके वचन और उसके नाम के प्रति विश्वासयोग्य बने रहना चाहिए और दृढ़ रहना चाहिए। और सबसे बढ़कर, हमें अपने आप को इस धोखे में नहीं डालना चाहिए कि सब कुछ ठीक है, बल्कि परमेश्वर के प्रति अपने जुनून को प्रज्वलित बनाए रखना चाहिए, लगातार उस मूल्य को चुकाते हुए जो वास्तव में उसी की ओर से आता है, धार्मिकता में चलते हुए और उसके अभिषेक के अधीन रहते हुए, जो हमें आवश्यक ज्योति और प्रकाशन प्रदान करता है।

इन बातों पर विचार करें...

जब कोई कलीसिया चेतावनी पाकर भी पश्चाताप नहीं करती, तो उसकी दीवट उसकी उपस्थिति से हटा दी जाती है (प्रकाशितवाक्य

2:5)। यदि किसी कलीसिया की दीवट प्रभु की उपस्थिति के सामने से उसके स्थान से हटा दी जाए, तो पृथ्वी पर लोग "कलीसिया चलाना" तो जारी रख सकते हैं, परन्तु कलीसिया के सिर, अर्थात् स्वयं प्रभु, के साथ उनका वास्तविक संबंध नहीं रहता।

जब स्मुरना की कलीसिया और फिलदिलफिया की कलीसिया— दोनों ही शैतान की आराधनालय का सामना कर रही थीं (प्रकाशितवाक्य 2:9; प्रकाशितवाक्य 3:9), तो ऐसा क्यों हुआ कि एक को—अर्थात् स्मुरना की कलीसिया को—प्रभु ने कहा कि उन्हें तीव्र सताव से होकर गुजरना होगा, और दूसरी को—अर्थात् फिलदिलफिया की कलीसिया को—प्रभु ने यह कहा, *"देख, मैं शैतान के उन सभावालों को तेरे वश में कर दूँगा जो यहूदी बन बैठे हैं, पर हैं नहीं वरन् झूठ बोलते हैं–देख, मैं ऐसा करूँगा कि वे आकर तेरे पैरों पर गिरेंगे, और यह जान लेंगे कि मैं ने तुझ से प्रेम रखा है"* (प्रकाशितवाक्य 3:9)? एक स्थानीय कलीसिया को सहन करना क्यों पड़ा और दूसरी को उन्हीं विरोधियों पर विजय प्राप्त करते हुए आगे बढ़ने क्यों मिला? क्या परमेश्वर अन्यायी, पक्षपाती या अनुचित था? क्या परमेश्वर का वचन और उसकी प्रतिज्ञाएँ दोनों स्थानीय कलीसियाओं के लोगों के लिए समान नहीं थीं? क्या परमेश्वर के स्वर्गदूत दोनों स्थानीय कलीसियाओं के विश्वासियों की सेवा करने और उनकी रक्षा करने के लिए उपलब्ध नहीं थे? या क्या इसका संबंध इस बात से अधिक है, कि लोग अपनी आत्मिक यात्रा में कहाँ पर थे और उन्हें किन संघर्षों से होकर गुजरना था?

प्रकाशितवाक्य 2 और 3 उन बातों से संबंधित हैं, उन बातों से, अर्थात, ये बातें प्रथम शताब्दी में उस समय घटित हो रही थीं। प्रकाशितवाक्य 4 से हम उन बातों को देखना आरम्भ करते हैं, जो भविष्य में घटित होने वाली हैं।

8

छुड़ाए हुए संत, सिंहासन कक्ष की आराधना (प्रकाशितवाक्य 4 और 5)

सिंहासन-कक्ष की आराधना

प्रकाशितवाक्य 4:1

इन बातों के बाद जो मैं ने दृष्टि की तो क्या देखता हूँ कि स्वर्ग में एक द्वार खुला हुआ है, और जिसको मैं ने पहले तुरही के से शब्द से अपने साथ बातें करते सुना था, वही कहता है, "यहाँ ऊपर आ जा; और मैं वे बातें तुझे दिखाऊँगा, जिनका इन बातों के बाद पूरा होना अवश्य है।"

प्रेरित यूहन्ना आत्मा में, सिंहासन कक्ष में उठा लिया जाता है और उसे वे बातें दिखाई जाती हैं, जो भविष्य में होने वाली हैं। जैसा कि इस पुस्तक के अध्याय 6 में पहले समझाया गया है, प्रकाशितवाक्य 4 और 5 विश्वासियों के उठा लिये जाने (रैप्चर) के बाद स्वर्ग का चित्रण करते हैं। हम यह इसलिए कहते हैं, कि रैप्चर घट चुका है, क्योंकि हम 24 प्राचीनों को सिंहासनों पर बैठे हुए देखते हैं, जो श्वेत वस्त्रों (धार्मिकता के वस्त्र) में हैं और उनके सिरों पर उनके मुकुट (प्रतिफल) हैं, ये सब बातें विश्वासियों से प्रतिज्ञा की गई हैं (प्रकाशितवाक्य 3:5,11,21)। और इन्हीं प्राचीनों में से एक, जो यूहन्ना से बात करता है, स्वयं को दास और भविष्यद्वक्ताओं में से एक बताता है (प्रकाशितवाक्य 1:1; प्रकाशितवाक्य 5:5-7; प्रकाशितवाक्य 7:13-15; प्रकाशितवाक्य 19:10; प्रकाशितवाक्य 22:8,9)। ये 24 प्राचीन परमेश्वर के छुड़ाए हुए संत हैं, जिन्होंने अपने मुकुट और प्रतिफल प्राप्त कर लिये हैं और अब उन्हें परमेश्वर के सिंहासन के चारों ओर विशेष स्थान दिया गया है।

पवित्र आत्मा को *"परमेश्वर के सात आत्मा"* कहा गया है (प्रकाशितवाक्य 1:4; प्रकाशितवाक्य 4:5)। उसका प्रतिनिधित्व सात दीपों (प्रकाशितवाक्य 4:5), सात सींगों और सात आँखों के द्वारा (प्रकाशितवाक्य 5:6) किया गया है। सात आत्मा, पूर्ण आत्मा को दर्शाते हैं। सात दीप उसकी सर्वव्यापकता को दर्शाते हैं (सब कुछ जानने वाला, "दीप" ज्योति का प्रतीक हैं, जो हर जगह सब कुछ प्रकाशित करती है), सात सींग उसकी सर्वशक्तिमानता को दर्शाते हैं ("सींग" सामर्थ, अधिकार और राज्य को दर्शाते हैं), और सात आँखें उसकी सर्वज्ञता को दर्शाती हैं (ऐसी आँखें जो हर स्थान पर सब कुछ देखती और जानती हैं)।

स्वर्ग के सिंहासन कक्ष से जुड़े चार जीवित प्राणी हैं, जिनकी आँखें आगे और पीछे हैं, ताकि वे सब बातों को स्पष्ट और सही रूप से देख सकें। ये यशायाह 6:1-3 में वर्णित जीवित प्राणियों, सेराफों, के समान प्रतीत होते हैं, जो परमेश्वर के स्वर्गदूत हैं और प्रभु की स्तुति और महिमा के लिए सृजे गए हैं।

चौबीस प्राचीन और चारों जीवित प्राणी निरन्तर प्रभु की आराधना करते हुए उसकी पवित्रता और उसे समस्त सृष्टि का प्रभु घोषित करते हैं।

मुहरबंद पुस्तक को खोलने के लिए केवल एक ही योग्य है

प्रकाशितवाक्य 5:1,5

1 जो सिंहासन पर बैठा था, मैं ने उसके दाहिने हाथ में एक पुस्तक देखी जो भीतर और बाहर लिखी हुई थी, और वह सात मुहर लगाकर बन्द की गई थी।
5 इस पर उन प्राचीनों में से एक ने मुझ से कहा, "मत रो; देख, यहूदा के गोत्र का वह सिंह जो दाऊद का मूल है, उस पुस्तक को खोलने और उसकी सातों मुहरें तोड़ने के लिये जयवन्त हुआ है।"

इस पुस्तक और इन मोहरों की विस्तृत व्याख्या इस पुस्तक के अध्याय 4 में की गई है (देखें 8: प्रकाशितवाक्य की पुस्तक का

कालक्रम)। प्रभु यीशु ही एकमात्र योग्य हैं, जो सातों मोहरों को खोल सकें और पुस्तक को खोल सकें, यह घोषित करते हुए कि अब उन भविष्यवाणियों के पूरा होने का समय आ गया है, जो पहले से कही गई थीं। इस प्रकार, स्वयं प्रभु यीशु ही उन घटनाओं को गति देते हैं, जिनकी भविष्यवाणी की गई थी। चारों जीवित प्राणी, चौबीस प्राचीन, स्वर्गदूतों की बड़ी भीड़ और छुड़ाए हुए संत, सभी सिंहासन के सामने आराधना करते हैं।

9
पहले साढ़े तीन वर्ष
(प्रकाशितवाक्य 6–10)

अब दृष्टि सिंहासन कक्ष से हटकर नीचे पृथ्वी पर आती है। हम यह देखेंगे कि सात वर्षों के क्लेश काल के दौरान, परमेश्वर पृथ्वी पर सात-सात न्यायों के तीन समूह उँडेलता है। यह, सात मोहरें, सात नरसिंगे, और सात कटोरे, जिनमें से प्रत्येक यह प्रकट करता है, कि क्लेश के समय संसार किन बातों का अनुभव करेगा। जब उजाड़ने वाली घिनौनी वस्तु (मसीह-विरोधी) पवित्र स्थान में खड़ी होगी, प्रभु यीशु ने, इस क्लेश काल के दूसरे भाग को "महान क्लेश" कहा। *"क्योंकि उस समय ऐसा भारी क्लेश होगा, जैसा जगत के आरम्भ से न अब तक हुआ और न कभी होगा।"* (मत्ती 24:21)। इसका अर्थ यह है, कि सात वर्षों का दूसरा भाग, पहले भाग की तुलना में, पृथ्वी पर रहने वालों के लिए और भी अधिक कठिन और तीव्र होगा।

प्रकाशितवाक्य 6: पहली छह मुहरें

प्रकाशितवाक्य 6, मेम्ने की पुस्तक की पहली छह मोहरों के खोले जाने का वर्णन करता है, जिसके साथ पृथ्वी पर बढ़ते हुए न्यायों की एक श्रृंखला आरम्भ होती है, जो क्लेश काल की शुरुआत को चिह्नित करती हैं।

छह मोहरों का खोला जाना (सातवीं मोहर प्रकाशितवाक्य 8:1 में खोली जाती है)

पहली चार मोहरें चार घुड़सवारों को छोड़ती हैं, जो विजय, युद्ध, अकाल और मृत्यु लाते हैं, जिसके परिणामस्वरूप वैश्विक स्तर पर

भारी विनाश होता है।

पहली मोहरः (श्वेत घोड़ा) प्रकाशितवाक्य 6:1,2 में पहली मोहर के खुलने के साथ क्लेश काल आरम्भ होता है, जो मसीह-विरोधी के उदय को प्रकट करता है। मसीह-विरोधी श्वेत घोड़े पर सवार होकर संसार के मंच पर आता है, मसीह के आगमन की नकल करता है, और एक झूठी सात-वर्षीय शांति सन्धि स्थापित करता है। (इस पर आगे और विस्तार से चर्चा की जाएगी...)

दूसरी मोहरः (लाल घोड़ा) युद्ध और विनाश

तीसरी मोहरः (काला घोड़ा) भयानक अकाल और भोजन की भारी कमी

चौथी मोहरः (पीला घोड़ा) युद्ध, अकाल, रोग और महामारियों के कारण व्यापक मृत्यु और विनाश।

प्रकाशितवाक्य 6 के चार घुड़सवार प्रतीकात्मक हैं, और घोड़े उस वस्तु के आगमन को दर्शाते हैं, जो सामर्थ और तीव्रता के साथ आती है। इसी प्रकार, प्रकाशितवाक्य में कई स्थानों पर घोड़ों का उपयोग देखा जाता है। उदाहरण के लिए, हरमगिदोन की सेनाएँ घोड़ों पर आती हैं, यहाँ तक कि लहू उनकी लगामों तक पहुँच जाता है (प्रकाशितवाक्य 14:20), और स्वयं मसीह भी श्वेत घोड़े पर सवार होकर लौटेगा, और उसकी सेनाएँ भी श्वेत घोड़ों पर सवार होंगी (प्रकाशितवाक्य 19:11-14)। यद्यपि ये घोड़े वास्तविक भी हो सकते हैं, फिर भी हम उनके भविष्यद्वाणीय प्रतीकात्मक अर्थ, तीव्रता और सामर्थ, को पहचानते हैं।

पाँचवीं मोहरः यीशु पर विश्वास के कारण, बहुतों के शहीद होने का समय। शहीद विश्वासियों की आत्माएँ, स्वर्ग में परमेश्वर के न्याय के लिए पुकारती हुई दिखाई देती हैं। उन्हें श्वेत वस्त्र दिए जाते हैं और यह कहा जाता है कि वे तब तक विश्राम करें जब तक शहीदों की गिनती

पूरी न हो जाए।

छठी मोहर: छठी मोहर के साथ विशाल ब्रह्माण्डीय हलचलें, पारिस्थितिक आपदाएँ, भूकम्प और अन्य घटनाएँ घटित होती हैं—एक बड़ा भूकम्प, आकाश का अन्धकारमय हो जाना, और तारों का गिरना—जिससे संसार भर में भय व्याप्त हो जाता है, क्योंकि लोग पहचान लेते हैं, कि परमेश्वर के क्रोध का दिन आरम्भ हो गया है और वे मेम्ने के न्याय से छिपने का प्रयास करते हैं।

यह स्पष्ट पहचान होगी कि परमेश्वर के क्रोध का महान दिन आ पहुँचा है। यही क्लेश काल का आरम्भ है। *"तब पृथ्वी के राजा, और प्रधान, और सरदार, और धनवान और सामर्थी लोग, और हर एक दास और हर एक स्वतंत्र पहाड़ों की खोहों में और चट्टानों में जा छिपे, और पहाड़ों और चट्टानों से कहने लगे, "हम पर गिर पड़ो; और हमें उसके मुँह से जो सिंहासन पर बैठा है, और मेम्ने के प्रकोप से छिपा लो। क्योंकि उन के प्रकोप का भयानक दिन आ पहुँचा है, अब कौन ठहर सकता है?"* (प्रकाशितवाक्य 6:15-17)

सात-वर्षीय क्लेश के आरम्भ में होने वाली मुख्य घटनाओं में शामिल हैं...

- मसीह-विरोधी का उदय
- सात-वर्षीय झूठी शांति सन्धि
- तीसरे मन्दिर का पुनर्निर्माण, और याजकत्व तथा बलिदानों की पुनः स्थापना

अब हम इनका वर्णन करते हैं।

मसीह-विरोधी

पहली मोहर का खुलना (प्रकाशितवाक्य 6:1,2) श्वेत घोड़े पर सवार

उस व्यक्ति को प्रकट करता है, जिसके पास सामर्थ और नेतृत्व का प्रभाव है, और जो अनेक राष्ट्रों पर प्रभाव बढ़ाता चला जाता है। वह एक धनुष लिए हुए विजेता के रूप में आता है, परन्तु बिना तीरों के, जो बिना युद्ध के विजय का प्रतीक है। संसार इस अगुवे के उदय को देखेगा (जिसे आगे चलकर पवित्रशास्त्र में "मसीह-विरोधी" या "पशु" कहा गया है), जो 10 पश्चिमी राष्ट्रों के संघ से उभरेगा। ये 10 राष्ट्र पहले रोमी साम्राज्य का भाग थे।

निम्नलिखित पवित्रशास्त्र के वचनों के आधार पर, हम मसीह-विरोधी के उदय, शासन, कार्य और अन्त का एक रूपरेखा-चित्र बनाते हैं—दानिय्येल 7:8,11,20,24,25; दानिय्येल 8:8-12,22-25; दानिय्येल 9:27; दानिय्येल 11:36-45; दानिय्येल 12:11-13; मत्ती 24:15; 2 थिस्सलुनीकियों 2:3-8; प्रकाशितवाक्य 13:1-18; प्रकाशितवाक्य 14:9-13; प्रकाशितवाक्य 17:8,11-18; प्रकाशितवाक्य 19:19-21।

मसीह-विरोधी दानिय्येल 7 में वर्णित अन्तिम अन्यजाति साम्राज्य के पुनर्स्थापित रूप से निकलता है (जिसे सामान्यतः पुनर्जीवित रोमी साम्राज्य कहा जाता है, एक पूर्व रोमी साम्राज्य के राष्ट्रों का एक ढीला संघ, जिसमें आधुनिक यूरोप और भूमध्यसागर क्षेत्र सम्मिलित हैं)। दानिय्येल उसे *"छोटा सींग"* कहता है, जो 10 राजाओं (शासकों) के बीच से उठता है और उनमें से तीन को उखाड़ फेंककर प्रभुत्व प्राप्त करता है (दानिय्येल 7:8,20,24)। वह आरम्भ में राजनीतिक रूप से महत्वहीन दिखाई देता है, परन्तु चालाकी, कूटनीति और छल के द्वारा शीघ्र ही वैश्विक नेतृत्व तक पहुँच जाता है (दानिय्येल 8:23-25)। स्वयं शैतान उसके उत्थान को सामर्थ देता है (प्रकाशितवाक्य 13:2)। उसका सार्वजनिक उदय आरम्भ में सैन्य बल के बजाय, शांतिपूर्ण कूटनीतिक विजय के रूप में होता है (प्रकाशितवाक्य 6:2), और वह स्वयं को एक राजनीतिक प्रतिभा और समस्याओं के समाधानकर्ता के रूप में प्रस्तुत करता है।

निर्णायक रूप से, संसार में उसकी प्रतिष्ठा तब स्थापित होती है जब वह क्लेश काल के आरम्भ में इस्राएल के साथ, और अनेक अन्य राष्ट्रों की सहभागिता से, एक सात-वर्षीय शांति की वाचा का मध्यस्थ बनता है—*"वह प्रधान एक सप्ताह के लिये बहुतों के संग दृढ़ वाचा बाँधेगा..."* (दानिय्येल 9:27)। यह वाचा सम्भवतः इस्राएल के लिए सुरक्षा की गारण्टी देती है, इस्राएली-अरब संघर्ष को शांत करती है, और यहूदियों को अपने मन्दिर के पुनर्निर्माण तथा बलिदानों को पुनः आरम्भ करने की अनुमति देती है—एक ऐसा कार्य, जो उसे वैश्विक मंच पर एक महान शान्तिदूत के रूप में स्थापित करता है।

पहले 3½ वर्ष: क्लेश काल के पहले आधे भाग में, मसीह-विरोधी स्वयं को एक राजनीतिक उद्धारकर्ता के रूप में स्थापित करता है। वह राष्ट्रों पर राजनीतिक नियंत्रण को सुदृढ़ करता है (दानिय्येल 7:24; प्रकाशितवाक्य 13:7)। वह व्यापक प्रशंसा प्राप्त करता है (प्रकाशितवाक्य 13:3,4)। वह कूटनीति और छलपूर्ण आकर्षण के द्वारा शासन करता है (दानिय्येल 8:25)। वह परमेश्वर की खुली निन्दा से बचता है और एक अत्याचारी के बजाय शान्ति के पुरुष के रूप में प्रकट होता है। वह पुनर्निर्मित मन्दिर में यहूदी उपासना को जारी रहने देता है (दानिय्येल 9:27)।

सात वर्षों का मध्य बिंदु (3½ वर्ष के बाद): सात वर्षों के मध्य में (3½ वर्ष बाद), वह अचानक अपनी शांति-सन्धि को तोड़ देता है और यहूदी मन्दिर में आराधना को रोक देता है। *"वह मेलबलि और अन्नबलि को बन्द करेगा..."* (दानिय्येल 9:27)। मसीह-विरोधी यहूदी मन्दिर में प्रवेश करता है और वह कार्य करता है जिसे यीशु ने *"उजाड़ने वाली घिनौनी वस्तु"* कहा (मत्ती 24:15)। पौलुस ने इसे इस प्रकार समझाया, *"वह परमेश्‍वर के मन्दिर में बैठकर अपने आप को ईश्‍वर ठहराता है।"* (2 थिस्सलुनीकियों 2:4)। वह अपनी ही एक मूर्ति

स्थापित करता है और सार्वजनिक रूप से स्वयं को ईश्वर घोषित करता है। शैतान खुले रूप से उसे सामर्थ देता है (प्रकाशितवाक्य 13:2)। यह घटना, उसे एक राजनीतिक शान्तिदूत से बदलकर एक खुला तानाशाह और परम-निन्दक बना देती है। मसीह-विरोधी की सहायता एक झूठा भविष्यवक्ता करता है, जो झूठे चिन्हों और अद्त कामों के द्वारा संसार भर में उसके छल को फैलाता है (2 थिस्सलुनीकियों 2:9)।

अन्तिम 3½ वर्ष: अन्तिम 3½ वर्ष, जिन्हें *"महान क्लेश"* कहा गया है (मत्ती 24:21), उसके नियंत्रण, छल और आतंक की पराकाष्ठा को दर्शाते हैं। वह संसार भर में अपना प्रभाव निम्न माध्यमों से स्थापित करता है...

- झूठे भविष्यवक्ता की सहायता से धार्मिक नियंत्रण
- पशु की छाप के द्वारा आर्थिक नियंत्रण
- इस्राएल और यीशु पर विश्वास करने वालों के विरुद्ध युद्ध के द्वारा सैन्य नियंत्रण

धार्मिक नियंत्रण: मसीह-विरोधी आराधना की माँग करता है—*"पृथ्वी के वे सब रहनेवाले, उस पशु की पूजा करेंगे..."* (प्रकाशितवाक्य 13:8)। उसका सहयोगी, झूठा भविष्यवक्ता, नकली चमत्कारों के द्वारा धार्मिक अधीनता को लागू करता है, और मसीह-विरोधी की मूर्ति की पूजा की माँग करता है; जो ऐसा न करे, उसे मृत्यु का सामना करना पड़ता है।

आर्थिक नियंत्रण: मसीह-विरोधी पशु की छाप (666) के माध्यम से पूर्ण आर्थिक प्रभुत्व स्थापित करता है (प्रकाशितवाक्य 13:16-18)। पशु की छाप के बिना कोई भी खरीद-बिक्री नहीं कर सकता, रोजगार नहीं पा सकता, और किसी भी प्रकार के व्यापार या वाणिज्य में भाग नहीं ले सकता। यह इतिहास की सबसे पूर्ण और कठोर आर्थिक

तानाशाही होगी।

सैन्य नियंत्रण: वह विश्वासियों के विरुद्ध हिंसक युद्ध करता है, *"पवित्र लोगों से लड़े"* (प्रकाशितवाक्य 13:7), इस्राएल के विरुद्ध (दानिय्येल 11:41), और विरोध करने वाले राजाओं और नेताओं के विरुद्ध (दानिय्येल 11:44)। उसकी क्रूरता तब चरम पर पहुँच जाती है, जब वह *"परमप्रधान के पवित्र लोगों को पीस डालेगा"* (दानिय्येल 7:25)। इस समय अनेक विश्वासी शहीद किए जाते हैं (प्रकाशितवाक्य 12:17; प्रकाशितवाक्य 14:9-13)।

उसका चरित्र: पवित्रशास्त्र उसके अनेक गुणों का वर्णन करता है, जिनमें से कुछ इस प्रकार हैं, वह एक राजनीतिक प्रतिभा है (दानिय्येल 8:23), एक छलपूर्ण शान्तिदूत (दानिय्येल 8:25), एक परम-निन्दक (दानिय्येल 7:25; प्रकाशितवाक्य 13:6), एक सैन्य उत्पीड़क (दानिय्येल 11:40-45), झूठे चमत्कार दिखाने वाला (प्रकाशितवाक्य 13:13-15), स्वयं को ईश्वर घोषित करने वाला (2 थिस्सलुनीकियों 2:4), और इस्राएल तथा विश्वासियों का सताने वाला (दानिय्येल 7:25; प्रकाशितवाक्य 13:7)।

अन्तिम अभियान–हरमगिदोन: मसीह-विरोधी अन्तिम युद्ध के लिए यरूशलेम के विरुद्ध सेनाएँ इकट्ठी करता है—*"वह दोनों समुद्रों के बीच पवित्र शिरोमणि पर्वत के पास अपना राजकीय तम्बू खड़ा कराएगा"* (दानिय्येल 11:45)। *"और उन्होंने उनको उस जगह इकट्ठा किया जो इब्रानी में हर–मगिदोन कहलाता है"* (प्रकाशितवाक्य 16:16)।

उसका विनाश: जब मसीह प्रत्यक्ष रूप से लौटेगा, तब *"प्रभु यीशु उसे अपने मुँह की फूँक से नाश करेगा और अपने आगमन के प्रताप से उसका अन्त कर देगा"* (2 थिस्सलुनीकियों 2:8 बाइबल के अंग्रेजी अनुवाद के ए.एम.पी वर्ज़न के अनुसार)। युद्ध के मैदान में, *"वह पशु, और उसके साथ वह झूठा भविष्यद्वक्ता पकड़ा गया, ये दोनों*

जीते जी उस आग की झील में, जो गन्धक से जलती है, डाले गए ..." (प्रकाशितवाक्य 19:19,20)। मसीह-विरोधी और झूठा भविष्यवक्ता मसीह के लौटते ही तुरन्त और सदा के लिए न्याय किए जाते हैं।

सात वर्षों की झूठी शांति की संधि

मसीह-विरोधी राष्ट्रों के सामने एक "शांति योजना" प्रस्तुत करके प्रमुखता और सामर्थ प्राप्त करेगा। *"वह प्रधान एक सप्ताह के लिये बहुतों के संग दृढ़ वाचा बाँधेगा, परन्तु आधे ही सप्ताह के बीतने पर वह मेलबलि और अन्नबलि को बन्द करेगा..."* (दानिय्येल 9:27)। यद्यपि इस "वाचा" का विस्तृत वर्णन पवित्रशास्त्र में नहीं दिया गया है, फिर भी हम अनुमान लगा सकते हैं कि इसमें क्या-क्या सम्मिलित हो सकता है।

इस्राएल के लिए सुरक्षा की गारंटी: यह सन्धि लगभग निश्चित रूप से इस्राएल को सैन्य आक्रमण से बचाने की अन्तरराष्ट्रीय सुरक्षा गारंटी प्रदान करेगी—विशेषकर आसपास के शत्रु राष्ट्रों से। इस्राएल भविष्य में होने वाले एक आक्रमण से पहले "निश्चिन्त" होकर निवास कर रहा होगा (यहेजकेल 38:8,11), जो क्लेश काल के दूसरे भाग के दौरान घटित होगा।

मन्दिर पर्वत पर मन्दिर के पुनर्निर्माण की कानूनी अनुमति: इस शांति योजना में, यहूदियों को मन्दिर के पुनर्निर्माण, आराधना और बलिदानों की अनुमति दी जाएगी। यह दानिय्येल 9:27 का सबसे स्पष्ट संकेत है। इसका अर्थ है, कि मध्य बिंदु से पहले बलिदान चल रहे होंगे, जिसके लिए एक पुनर्निर्मित मन्दिर, कार्यरत लेवीय याजकत्व और मूसा की व्यवस्था के अनुसार आराधना आवश्यक होगी। किसी प्रकार, मसीह-विरोधी यहूदियों और अरबों, दोनों को इस पर सहमत कर लेता है। यह अभूतपूर्व होगा। सम्भव है, कि मन्दिर पर्वत के एक भाग में मन्दिर और दूसरे भाग में डोम ऑफ द रॉक बना रहे।

बहुराष्ट्रीय राजनीतिक गठबंधन: दानिय्येल 7:24 और प्रकाशितवाक्य 17:12 10 राजाओं के एक गठबंधन की ओर संकेत करते हैं, जो मसीह-विरोधी के उदय का समर्थन करता है। इसलिए यह सन्धि सम्भवतः एक नया अन्तरराष्ट्रीय राजनीतिक ढाँचा या शांति-व्यवस्था स्थापित करेगी, मसीह-विरोधी के नेतृत्व में सहयोगी शासन संरचनाओं को सुदृढ़ करेगी, और आर्थिक गठबंधनों को मज़बूत करेगी। इस्राएल, अकेला नहीं, बल्की "बहुतों" में से एक हस्ताक्षरकर्ता होगा (दानिय्येल 9:27) ।

इस्राएल की भूमि में समझौता: योएल भविष्यद्वक्ता ने कहा कि राष्ट्रों ने इस्राएल की भूमि को बाँट दिया है। सम्भव है कि यह भी शांति-सन्धि का भाग हो— मन्दिर के पुनर्निर्माण के बदले इस्राएल को भूमि का त्याग करना पड़े। *"क्योंकि देखो, उन दिनों में और उस समय, जब मैं यहूदा और यरूशलेम के बन्दियों को लौटा लाऊँगा, तब मैं सब जातियों को इकट्ठा करूँगा, और उन्हें यहोशापात की तराई में ले आऊँगा, और वहाँ अपने लोगों और अपनी निज भूमि इस्राएल के कारण उनका न्याय करूँगा, क्योंकि उन्होंने मेरे लोगों को जातियों में तितर-बितर किया, और मेरी भूमि को बाँट लिया है"* (योएल 3:1,2)।

तीसरा मन्दिर पुनर्निर्मित; याजकत्व और बलिदानों की पुनः स्थापना

पवित्र शास्त्र में दिए गए विवरण हमें इस निष्कर्ष पर पहुँचाते हैं, कि यरूशलेम में एक तीसरा मन्दिर अवश्य बनाया जाएगा, जिसमें पुराने नियम के अनुसार मन्दिर-उपासना यहूदी सेवकों के द्वारा पुनः स्थापित होगी। इन वचनों के आधार पर हम जानते हैं, कि भविष्यवाणी की पूर्ति के लिए यह तीसरा या क्लेश काल का मन्दिर बनना आवश्यक है (दानिय्येल 8:11,12; दानिय्येल 9:27; मत्ती 24:15; 2 थिस्सलुनीकियों 2:3-8; प्रकाशितवाक्य 11:1,2; प्रकाशितवाक्य 13:5,6)। मसीह-विरोधी परमेश्वर के मन्दिर में परमेश्वर के समान बैठेगा। इसलिए,

इसे पूरा होने के लिए, यह आवश्यक है, कि मन्दिर अस्तित्व में हो। यह सम्भव है कि यरूशलेम में इस मन्दिर के निर्माण की अनुमति मसीह-विरोधी, इस्राएल और अन्य राष्ट्रों के बीच हुई इस "वाचा" का भाग हो। (पहला मन्दिर, सुलैमान का—नबूकदनेस्सर द्वारा नष्ट किया गया; दूसरा, एज्रा के समय पुनर्निर्मित ईसा पश्चात 70 में रोमी सेनापति तीतुस द्वारा नष्ट किया गया)।

हम तीसरे मन्दिर को "क्लेश काल का मन्दिर" कहते हैं। यह उल्लेखनीय है, कि पिछले कई वर्षों से मन्दिर पर्वत पर एक मन्दिर के पुनर्निर्माण और तीसरे मन्दिर के स्थापित होते ही विधिपूर्वक आराधना को पुनः आरंभ करने की दिशा में महत्वपूर्ण तैयारियाँ की जा रही हैं।

सन 1987 से, रब्बी यिस्राएल एरिएल के निर्देशन में, रब्बी शोधकर्ताओं, डिज़ाइनरों और कारीगरों का एक समूह यरूशलेम के यहूदी क्वार्टर में उस संरचना पर कार्य कर रहा है, जिसे वे, "प्रतीक्षारत मन्दिर" (टेम्पल इन वेटिंग) कहते हैं। उनके प्रयासों के परिणामस्वरूप तीसरे मन्दिर के लिए, कम्प्यूटरीकृत दृश्यांकन और विस्तृत नक्शे तैयार किए गए हैं, साथ ही विधिपूर्वक शुद्ध पात्रों, वस्त्रों और मन्दिर सेवाओं की पुनर्स्थापना के लिए आवश्यक अन्य सामग्रियों का निर्माण भी किया गया है। इस कार्य के लिए प्रसिद्ध संस्था (टेम्पल इंस्टीट्यूट) (**www.templeinstitute.org**) तीसरे मन्दिर से संबंधित अनुसंधान और प्रकाशन में अग्रणी रही है।

टेम्पल इंस्टीट्यूट के अनुसार, तीसरे मन्दिर के विस्तृत नक्शे पिछले कई वर्षों से अस्तित्व में हैं। ये योजनाएँ इस विषय के प्राथमिक स्रोतों—बाइबल, योसेफुस और मिद्दोत के अनुसार तैयार की गई हैं। इन प्राचीन विनिर्देशों में हलाखा (व्यवस्था) के अनुरूप बिजली और अन्य आधुनिक सुविधाओं को भी जोड़ा गया है। मन्दिर के कार्य से संबंधित अन्य संरचनाओं की भी योजना बनाई जा चुकी है, या वे वास्तव

में बन चुकी हैं। कई हज़ार याजक आने वाले मन्दिर में विधिपूर्वक सेवा करने के लिए तैयार और प्रशिक्षित हैं।

प्रकाशितवाक्य 7: 1,44,000 यहूदी सुसमाचार प्रचारक

प्रकाशितवाक्य 7 एक अल्पकालिक शान्ति से आरम्भ होता है, जब चार स्वर्गदूत पृथ्वी की चारों हवाओं को थामे रहते हैं। बाइबिलीय प्रतीकवाद में, इस संदर्भ में "हवाएँ" परमेश्वर के न्याय की उन शक्तियों का प्रतिनिधित्व करती हैं, जो विनाश और तबाही लाती हैं (यिर्मयाह 49:36; दानिय्येल 7:2; जकर्याह 6:1-5; यहेजकेल 13:13 भी देखें)। पृथ्वी की चारों हवाओं को थामे रखने का अर्थ है कि परमेश्वर अस्थायी रूप से संसारव्यापी न्याय को रोकता है, ताकि वह अपने सेवकों (1,44,000 यहूदियों) पर मुहर लगा सके और अगले चरण के क्लेश से पहले, उनकी सुरक्षा और सेवकाई को तैयार कर सके।

हम 1,44,000 यहूदियों को देखते हैं, एक विशिष्ट समूह, जिसे क्लेश काल के दौरान परमेश्वर द्वारा संप्रभु रूप से चुना गया और मुहर लगाया गया, ताकि वे मसीह के लिए सुरक्षित गवाह बनें। वे इस्राएल के 12 गोत्रों में से चुने गए हैं, प्रत्येक गोत्र से 12,000, जो उनकी वास्तविक यहूदी पहचान की पुष्टि करता है। उन्हें परमेश्वर की मुहर से चिन्हित किया गया है, ताकि पृथ्वी पर आने वाले भयानक न्यायों से उनकी रक्षा हो सके।

1,44,000 यहूदियों के माथों पर पिता का नाम मुहर के रूप में लगाया गया (प्रकाशितवाक्य 14:1; यहेजकेल 9 भी देखें)। ये वे यहूदी होंगे, जो उठाए जाने (रैप्चर) के बाद मसीह में विश्वास के द्वारा उद्धार पाएँगे, संभवतः आत्मा के एक महान उंडेले जाने के द्वारा, जैसा प्रेरितों के काम 2:16-21 और योएल 2:28-32 में देखा गया है। योएल की भविष्यवाणी कलीसिया में प्रेरितों के काम 2 में पूरी हुई, और इसका इस्राएल के साथ भी वास्तविक रूप से पूरा होना आवश्यक है।

दान और एप्रैम, दोनों गोत्र यहाँ अनुपस्थित हैं और क्लेश काल में सुसमाचार प्रचार का भाग नहीं बनते, संभवतः इसलिए, क्योंकि वे मूर्तिपूजा और आत्मिक विद्रोह में लिप्त थे (न्यायियों 18; 1 राजा 11:26; होशे 4)। इनके स्थान पर लेवी और मनश्शे गोत्र सम्मिलित किए गए हैं। फिर भी, दोनों गोत्रों का उल्लेख यहेजकेल के सहस्राब्दी मन्दिर में किया गया है, और इसलिए उनका बहिष्कार या छोड़ा जाना स्थायी नहीं है (यहेजकेल 48)।

1,44,000 यहूदियों (जिन्हें कुछ लोग 'यहूदी सुसमाचार प्रचारक' कहते हैं) पर, संभवतः पवित्र आत्मा द्वारा, मुहर लगाई जाती है । नए नियम के विश्वासियों के रूप में, हम जानते हैं कि हम पवित्र आत्मा से मुहर लगाए गए हैं (2 कुरिन्थियों 1:22; इफिसियों 1:13; इफिसियों 4:30)। पवित्र आत्मा पिता का आत्मा है (मत्ती 10:20), पिता से निकलता है (यूहन्ना 15:26), और ***संभव है,*** कि वही इन 1,44,000 यहूदियों के माथों पर पिता के नाम की मुहर हो। प्रकाशितवाक्य 7:9-17 के आगे के विवरण से हम निष्कर्ष निकाल सकते हैं, कि ये 1,44,000 यहूदी सम्पूर्ण संसार में यीशु मसीह का संदेश सुनाएँगे (प्रकाशितवाक्य 14:1-5 भी देखें)। इसके परिणामस्वरूप एक वैश्विक जागृति होगी और बहुत से लोग उद्धार पाएँगे, परन्तु साथ ही बहुत बड़ी संख्या में लोग यीशु के लिए शहीद भी होंगे।

क्लेश काल के अनेक शहीद

हम देखते हैं—*"...हर एक जाति और कुल और लोग और भाषा में से एक ऐसी बड़ी भीड़, जिसे कोई गिन नहीं सकता था, श्वेत वस्त्र□ पहिने और अपने हाथों में खजूर की डालियाँ लिये हुए सिंहासन के सामने और मेम्ने के सामने खड़ी है..."* (प्रकाशितवाक्य 7:9), जो यह दर्शाता है, कि वैश्विक स्तर पर लोग बचाए जा रहे हैं। ये वे लोग हैं, जो महान क्लेश के दौरान अपने विश्वास के कारण शहीद हुए (प्रकाशितवाक्य 7:14), और उन्हें स्वर्ग में परमेश्वर के सिंहासन के सामने आराधना

करते हुए देखा जाता है। यद्यपि इस अंश में मृत्यु का सीधा उल्लेख नहीं है, फिर भी यह समूह प्रकाशितवाक्य 6:9-11 में वर्णित शहीदों के समान है, इसलिए हम यह ***निष्कर्ष*** निकालते हैं कि वे भी शहीद किए गए थे।

प्रकाशितवाक्य 8: स्वर्ग में मौन, पृथ्वी पर बढ़ती प्रार्थना

सातवीं मुहर: स्वर्ग में मौन छा जाता है, जो परमेश्वर के धर्मी कार्यों और होने वाली घटनाओं की प्रत्याशा में विस्मय और श्रद्धा को दर्शाता है (हबक्कूक 2:20; सपन्याह 1:7)। सात तुरहियाँ सात स्वर्गदूतों को दी जाती हैं, और इस प्रकार अगले सात तुरही न्यायों की श्रृंखला आरम्भ होती है।

यह सम्भव है, कि क्लेश काल के आरम्भ से ही, पृथ्वी पर एक महान प्रार्थना आन्दोलन चल रहा हो (प्रकाशितवाक्य 5:8), और यहाँ फिर से (प्रकाशितवाक्य 8:3-6) हम देखते हैं, कि क्लेश काल के पवित्र लोगों की प्रार्थनाएँ परमेश्वर के सामने ऊपर उठती हैं।

"उस धूप का धुआँ पवित्र लोगों की प्रार्थनाओं सहित स्वर्गदूत के हाथ से परमेश्वर के सामने पहुँच गया। तब स्वर्गदूत ने धूपदान लेकर उसमें वेदी की आग भरी और पृथ्वी पर डाल दी; और गर्जन और शब्द और बिजलियाँ और भूकम्प होने लगे।" (प्रकाशितवाक्य 8:4,5)। जैसे ही क्लेश काल के पवित्र लोगों की प्रार्थनाएँ परमेश्वर के सामने ऊपर उठती हैं, उनके उत्तर में वेदी की आग पृथ्वी पर डाली जाती है, संभवतः और अधिक प्रार्थना को प्रेरित करने के लिए, और आने वाले और भी बड़े न्याय का संकेत देने के लिए।

पहली चार तुरहियाँ

पहली तुरही: ओले, आग और लहू मिले हुए। वनस्पति का एक-तिहाई (1/3) नाश हो गया।

दूसरी तुरही: आग से जलता हुआ एक बड़ा पहाड़ समुद्र में फेंका गया; समुद्र का एक-तिहाई (1/3) लहू बन गया, और समुद्र के जीवों तथा जहाज़ों का एक-तिहाई (1/3) नाश हो गया।

तीसरी तुरही: नागदौन (वर्मवुड) जल के सोतों पर गिरा, जिससे सब जल के सोतों का एक-तिहाई (1/3) कड़वा हो गया और बहुत से लोगों की मृत्यु हो गई।

चौथी तुरही: सूर्य, चंद्रमा और तारों के प्रकाश का एक-तिहाई (1/3) अंधकारमय हो गया, जिससे दिन और रात का एक-तिहाई (1/3) अंधकार में डूब गया, अर्थात् प्रत्येक दिन में कुल 8 अतिरिक्त घंटे अंधकार हो गया।

चारों तुरहियों के बाद, एक स्वर्गदूत यह घोषणा करता है कि और भी बड़े न्याय आने वाले हैं– *"जब मैं ने फिर देखा, तो आकाश के बीच में एक उकाब को उड़ते और ऊँचे शब्द से यह कहते सुना, "उन तीन स्वर्गदूतों की तुरही के शब्दों के कारण, जिनका फूँकना अभी बाकी है, पृथ्वी के रहनेवालों पर हाय, हाय, हाय!"* (प्रकाशितवाक्य 8:13)

प्रकाशितवाक्य 9: पाँचवीं और छठी तुरहियाँ

पाँचवीं तुरही: दुष्टात्मिक प्राणियों (गिरे हुए स्वर्गदूतों) का एक दल, जो टिड्डियों के समान है, अतल कुंड से छोड़ा जाता है (उत्पत्ति 6; 2 पतरस 2:4), जहाँ वे बन्द थे। ये मनुष्यों को (144,000 यहूदियों को छोड़कर) पाँच महीने तक यातना देते हैं। इन दुष्टात्माओं का अगुवा अबद्दोन या अपुल्लयोन कहलाता है, जिन दोनों का अर्थ नाश और विनाश (परडिशन) है। ये लोगों को इतनी पीड़ा देते हैं कि लोग मरना चाहते हैं, परन्तु अपने आप को नष्ट करने में असमर्थ रहते हैं। *"उन दिनों में मनुष्य मृत्यु को ढूँढ़ेंगे और न पाएँगे; और मरने की लालसा करेंगे, और मृत्यु उन से भागेगी"* (प्रकाशितवाक्य 9:6)।

छठी तुरही: वे *"चार स्वर्गदूत जो बड़ी नदी फुरात के पास बन्धे हुए हैं"* (प्रकाशितवाक्य 9:14) पवित्र स्वर्गदूत नहीं, बल्कि गिरे हुए स्वर्गदूत हैं, जिन्हें परमेश्वर की अनुमति मिलने के समय तक रोके रखा गया है । हम यह इसलिए कहते हैं कि ये दुष्टात्मिक, गिरे हुए स्वर्गदूत हैं, क्योंकि पवित्र स्वर्गदूतों को पवित्रशास्त्र में कभी *"बँधा हुआ"* नहीं कहा गया। बाँधना, उस भाषा का प्रयोग है, जो न्याय की प्रतीक्षा कर रही दुष्टात्माओं के लिए प्रयुक्त होती है (लूका 8:31; 2 पतरस 2:4; यहूदा 1:6)। परमेश्वर द्वारा ठहराए गए ठीक समय पर, फरात से चार बँधे हुए गिरे स्वर्गदूत छोड़े जाते हैं, ताकि ऐसा न्याय आरंभ हो, जिसके परिणामस्वरूप मानवजाति का एक-तिहाई नाश हो जाए, जो उस समय तक के इतिहास में जीवन की सबसे भयानक हानि होगी। उनके कार्य के साथ, 20 करोड़ की सेना आग, धुआँ और गंधक के द्वारा मनुष्यों के एक-तिहाई (1/3) को मार डालती है।

इन गिरे हुए स्वर्गदूतों के फरात नदी के पास बँधे होने का क्या महत्व है? हम जानते हैं, कि दुष्टात्मिक प्राणी क्षेत्रीय होते हैं। हम फारस के प्रधान, सूर के प्रधान आदि के विषय में पढ़ते हैं। सम्भव है, कि ये स्वर्गदूत इसी क्षेत्र या नदी तक सीमित किए गए हों। ऐतिहासिक रूप से फरात नदी इस्राएल की पूर्वी सीमा थी। यही शत्रुतापूर्ण आक्रमणों (अश्शूर, बाबुल) का मार्ग भी रही है और प्रतीकात्मक रूप से यह पूर्व से आने वाले न्याय का द्वार है।

[**पार्श्व टिप्पणी:** इससे हमें यह निष्कर्ष नहीं निकालना चाहिए, कि सभी नदियों, जलमार्गों आदि में दुष्टात्मिक प्राणी बँधे हुए हैं।]

उनके कार्य में, हम 20 करोड़ की एक सेना देखते हैं (प्रकाशितवाक्य 9:16-19), जो आग, धुएँ और गंधक से नाश करती है। यह बात स्पष्ट है, कि ये 20 करोड़ संभवतः फरात से छोड़े गए चार गिरे हुए स्वर्गदूतों के द्वारा अगुवाई या प्रत्यक्ष रूप से उकसाए

गए हैं। यह बात पूरी तरह स्पष्ट नहीं है, कि क्या ये 20 करोड़ पृथ्वी पर छोड़े गए दुष्टात्मिक प्राणी हैं (जैसा कि प्रकाशितवाक्य 9:1-12 में है) या आधुनिक हथियारों से सुसज्जित कोई मानव सेना। तार्किक रूप से इन्हें पहले के न्याय का ही विस्तार मानना उचित प्रतीत होता है–अर्थात् प्रकाशितवाक्य 9:1-12 के समान दुष्टात्मिक प्राणी। फिर भी, हम इस संभावना को भी पूरी तरह नकार नहीं सकते, कि ऐसा विनाश आधुनिक हथियारों के द्वारा भी हो सकता है।

इन भयानक न्यायों के बावजूद, कुछ लोग ऐसे हैं, जो बिना पश्चाताप किए अपने पाप और विद्रोह में बने रहते हैं, और दुष्टात्माओं तथा मूर्तियों की उपासना करते रहते हैं, और अपनी दुष्टता नहीं छोड़ते (प्रकाशितवाक्य 9:20,21)।

प्रकाशितवाक्य 10: सामर्थी स्वर्गदूत और छोटी पुस्तक

सामर्थी स्वर्गदूत का वर्णन एक महान और तेजस्वी प्राणी के रूप में किया गया है *"...बादल ओढ़े हुए... उसके सिर पर मेघधनुष, ...उसका मुँह सूर्य के समान, ...पाँव आग के खंभे के समान थे... उसका दाहिना पाँव समुद्र पर...और बायाँ पृथ्वी पर, ...ऐसे बड़े शब्द से चिल्लाया, जैसा सिंह गरजता है; और जब वह चिल्लाया तो गर्जन के सात शब्द सुनाई दिए।"* (प्रकाशितवाक्य 10:1-3)। सामर्थी स्वर्गदूत और सात गरजों ने क्या घोषणा की, यह छिपा हुआ ही रहता है।

प्रकाशितवाक्य 10:7 यह घोषणा करता है, कि *"वरन् सातवें स्वर्गदूत के तुरही फूँकने पर होने वाले शब्द के दिनों में परमेश्वर का गुप्त मनोरथ उस सुसमाचार के अनुसार जो उसने अपने दास भविष्यद्वक्ताओं को दिया, पूरा होगा।"* अर्थात् इतिहास के लिए परमेश्वर की दीर्घकाल से प्रकट की गई उद्धार की योजना अपनी अंतिम पूर्ति तक पहुँच जाएगी। यह पद एक संक्रमण वाक्य है, जो यह सारांश देता है कि तुरहियों और कटोरों के न्याय अंततः किस लक्ष्य की ओर बढ़

रहे हैं–अर्थात् परमेश्वर के राज्य की पूर्ण स्थापना और उसके उद्देश्यों का सार्वजनिक प्रतिपादन। *"सातवें स्वर्गदूत के शब्द के दिनों में"* यह संकेत करता है, कि यह एक समयावधि है, कोई क्षणिक घटना नहीं। सातवीं तुरही सब कुछ तुरंत समाप्त नहीं करती, बल्कि उस अंतिम चरण की शुरुआत करती है जो पूर्णता की ओर ले जाती है। आगे हम देखते हैं, कि जब सातवीं तुरही फूँकी जाती है, तो यह महान घोषणा होती है, *"जगत का राज्य हमारे प्रभु का और उसके मसीह का हो गया, और वह युगानुयुग राज्य करेगा।"* (प्रकाशितवाक्य 11:15)। यह लोगों के लिए परमेश्वर की उद्धारक योजना की पराकाष्ठा और उसकी पूर्णता है।

छोटी पुस्तक (पत्र) जिसे यूहन्ना को खाने की आज्ञा दी गई थी, वे भविष्यद्वाणी के वचन थे जिन्हें यूहन्ना को प्रकट करना था, कुछ मीठे (प्रतिफल, दयाएँ) और कुछ कड़वे (न्याय) , *"बहुत से लोगों, और जातियों, और भाषाओं और राजाओं के विषय में"* (प्रकाशितवाक्य 10:11)।

10
दूसरे साढ़े तीन वर्ष
(प्रकाशितवाक्य 11–19)

प्रकाशितवाक्य 11: मध्य क्लेश काल, टूटी हुई शान्ति-संधि, दो गवाह

प्रकाशितवाक्य 11:1,2

[1] फिर मुझे नापने के लिये एक सरकंडा दिया गया, और किसी ने कहा, "उठ, परमेश्वर के मन्दिर और वेदी, और उसमें उपासना करनेवालों को नाप ले।
[2] पर मन्दिर के बाहर का आँगन छोड़ दे; उसे मत नाप क्योंकि वह अन्यजातियों को दिया गया है, और वे पवित्र नगर को बयालीस महीने तक रौंदेंगी।

प्रकाशितवाक्य 11:1,2 हमें स्पष्ट रूप से यह दिखाता है कि यह सात वर्ष के क्लेश काल का मध्य बिन्द है। यह हमें यह भी बताता है, कि वाचा या शान्ति-संधि टूट चुकी है, मन्दिर अपवित्र किया गया है और नगर अन्यजातियों के अधिकार में आ गया है।

परमेश्वर के मन्दिर और वेदी, और उसमें उपासना करनेवालों को नाप ले–यह तीसरे मन्दिर या क्लेश काल के मन्दिर के अस्तित्व के विषय में एक स्पष्ट कथन है। भीतरी पवित्रस्थान (पवित्र स्थान + वेदी) को मापा जाता है और आत्मिक रूप से सुरक्षित रखा जाता है।

मन्दिर के बाहर का आँगन छोड़ दे; उसे मत नाप क्योंकि वह अन्यजातियों को दिया गया है– बाहरी आँगन अन्यजातियों के अधीन छोड़ दिया गया है। ऐतिहासिक रूप से, हेरोदेस के मन्दिर में बाहरी आँगन, वे स्थान थे जहाँ अन्यजातियों को प्रवेश की अनुमति थी, जिससे यह बात समान प्रतीत होती है और एक बार फिर यह पुष्टि होती है, कि

एक भौतिक तीसरा मन्दिर होगा।

वे पवित्र नगर को रौंदेंगी–जैसा कि दानिय्येल ने भविष्यवाणी की थी, *"वह परमप्रधान के विरुद्ध बातें कहेगा, और परमप्रधान के पवित्र लोगों को पीस डालेगा, और समयों और व्यवस्था के बदल देने की आशा करेगा, वरन् साढ़े तीन काल तक वे सब उसके वश में कर दिए जाएँगे"* (दानिय्येल 7:25; साथ ही दानिय्येल 12:7)। यीशु ने कहा, *"वे तलवार के कौर हो जाएँगे, और सब देशों के लोगों में बन्दी होकर पहुँचाए जाएँगे; और जब तक अन्य जातियों का समय पूरा न हो, तब तक यरूशलेम अन्य जातियों से रौंदा जाएगा"* (लूका 21:24)।

बयालीस महीने तक–यह क्लेश काल का दूसरा भाग है, दानिय्येल के 70वें सप्ताह का दूसरा आधा। 42 महीने (प्रकाशितवाक्य 11:2; प्रकाशितवाक्य 13:5)=1,260 दिन (प्रकाशितवाक्य 11:3; प्रकाशितवाक्य 12:6)=3.5 वर्ष = *"एक समय, और समयों, और आधा समय"* (दानिय्येल 7:25; दानिय्येल 12:7; प्रकाशितवाक्य 12:14)।

दो गवाह

प्रकाशितवाक्य 11:3–14 अंतिम 1,260 दिनों (3½ वर्ष) के दौरान यरूशलेम में परमेश्वर द्वारा भेजे गए दो भविष्यद्वक्ता साक्षियों का वर्णन करता है। वे टाट ओढ़े हुए होते हैं, जो पश्चाताप का चिन्ह है, और उन्हें मूसा और एलिय्याह के समान अद्‌त सामर्थ दी जाती है—वे विरोधियों पर आग बरसाते हैं, आकाश को वर्षा से रोक देते हैं, जल को लहू में बदल देते हैं, और पृथ्वी को विपत्तियों से मारते हैं। उन्हें दो जैतून के वृक्षों और दो दीवटों के रूप में दर्शाया गया है (जकर्याह 4 से), जो आत्मा से सामर्थ पाए हुए साक्ष्य का प्रतीक हैं। वे अलौकिक रूप से सुरक्षित रहते हैं जब तक उनका कार्य पूरा न हो जाए; इसके बाद पशु (मसीह-विरोधी) उन्हें मार डालता है, और उनके शव यरूशलेम ("महान नगर") में बिना गाड़े पड़े रहते हैं, जबकि अविश्वासी संसार

आनन्द मनाता है। 3½ दिन के बाद, परमेश्वर उन्हें सार्वजनिक रूप से जीवित करता है और सबके देखते हुए स्वर्ग में उठा लेता है—जिससे दूसरा हाय समाप्त होता है और परमेश्वर के अंतिम न्यायों का आगमन निकट हो जाता है।

मलाकी 4:5,6
5 "देखो, यहोवा के उस बड़े और भयानक दिन के आने से पहले, मैं तुम्हारे पास एलिय्याह नबी को भेजूँगा।
6 वह माता–पिता के मन को उनके पुत्रों की ओर, और पुत्रों के मन को उनके माता–पिता की ओर फेरेगा; ऐसा न हो कि मैं आकर पृथ्वी का सत्यानाश करूँ।"

इन दो साक्षियों में से एक एलिय्याह है, जैसा कि मलाकी 4:5,6 में कहा गया है, और दूसरा सम्भवतः हनोक या मूसा है। मलाकी 4:5,6 भविष्यवाणी करता है, कि एलिय्याह उन साक्षियों में से एक के रूप में आएगा, और यह इस तथ्य से पुष्ट होता है कि एलिय्याह ने शारीरिक मृत्यु नहीं देखी, बल्कि बवण्डर और आग के रथ के द्वारा स्वर्ग में उठा लिया गया (2 राजा 2:9–11)। मूसा, एलिय्याह के साथ रूपान्तरण पर्वत पर प्रकट हुआ (मत्ती 17:3), जो भविष्य की घटनाओं का एक चित्र था। याकूब के संकट के समय (यिर्मयाह 30:7) की बहुत सी विपत्तियाँ वैसी ही हैं, जैसी मिस्र से इस्राएल की छुटकारा दिलाने के समय मूसा के द्वारा आई थीं। बाइबल यह भी बताती है कि मूसा का शरीर परमेश्वर द्वारा सुरक्षित रखा गया (व्यवस्थाविवरण 34:5,6; यहूदा 9)। दूसरी ओर, एलिय्याह की तरह हनोक भी नहीं मरा (इब्रानियों 11:5), और कुछ लोग मानते हैं कि उसकी मृत्यु से छूट उसके महान क्लेश काल में होने वाले शहादत के कारण थी। उसके सन्देश पर भी ध्यान देना चाहिए। स्पष्ट है, कि हनोक को मसीह के दूसरे आगमन का प्रकाशन दिया गया था और उसने अपनी पीढ़ी को इसके विषय में बताया था (यहूदा 1:14,15)।

इन 3½ वर्षों के दौरान, ये दोनों साक्षी राज्य के सन्देश की सच्चाई का प्रचार करेंगे, और 144,000 यहूदी प्रचारकों की सेवकाई की पुष्टि करेंगे। मसीह के लौटने का सन्देश सारे संसार में प्रचारित किया जाएगा। सबको अन्त के समय-सारिणी, मसीह-विरोधी के अन्ततः पतन, और मसीह के आने वाले राज्य के विषय में अवगत कराया जाएगा।

ये दोनों साक्षी 3½ वर्ष तक अद्‌त रूप से सुरक्षित रखे जाएंगे। विपत्तियाँ लाने की उनकी सामर्थ संसार का ध्यान उनकी ओर आकर्षित करेगी (प्रकाशितवाक्य 11:6)। जब वे अपना कार्य पूरा कर लेंगे, तब अथाह कुंड से निकलने वाला पशु (मसीह-विरोधी) उन्हें मार डालेगा, और सारा संसार यरूशलेम की सड़कों पर पड़े हुए उनके मृत शरीरों को देखेगा। उस समय, यरूशलेम में आत्मिक रूप से लैंगिक विकृति (सदोम) और धार्मिक विकृति (मिस्र) विद्यमान होगी, इसलिए यह तुलना की गई है। पृथ्वी के 3½ दिन तक आनन्द मनाने के बाद (प्रकाशितवाक्य 11:10), वे पुनर्जीवित किए जाएंगे, और बादल पर चढ़कर स्वर्ग में चले जाएंगे, और उनके शत्रु भय से जकड़े हुए यह सब देखते रह जाएंगे।

जैतून के वृक्ष और दीवट परमेश्वर के सेवकों / भविष्यद्वक्ताओं के भविष्यवाणीात्मक प्रतीक के रूप में प्रयुक्त होते हैं (देखें जकर्याह 4:11–14)। ये दोनों साक्षी 3½ वर्ष तक अद्‌त रूप से सुरक्षित रखे जाएंगे। यह रोचक है, कि हम ऐसे समय में जी रहे हैं, जब तकनीक प्रकाशितवाक्य 11:8–10 को पूरा कर सकती है, जहाँ सारा संसार वास्तविक समय में, सीधे प्रसारण के द्वारा, यरूशलेम नगर की सड़कों पर होने वाली घटनाओं को देख सकता है।

सातवीं तुरही: विजयपूर्ण घोषणा–*"जगत का राज्य हमारे प्रभु का और उसके मसीह का हो गया, और वह युगानुयुग राज्य करेगा।"*

(प्रकाशितवाक्य 11:15)–जिसकी पूर्ति क्लेश काल के अन्त में होगी, जब मसीह पृथ्वी पर अपना राज्य और शासन स्थापित करने के लिए आएँगे। यही बात प्रकाशितवाक्य 19:11–16 में फिर से दोहराई गई है।

प्रकाशितवाक्य 12: स्त्री, नर बालक और अजगर

प्रकाशितवाक्य 12 भी प्रकाशितवाक्य 11 के समान एक ऐसा अध्याय है, जो स्पष्ट रूप से क्लेश काल के दूसरे भाग से जुड़ा हुआ है। यह सात वर्ष के क्लेश काल के मध्य से आरम्भ होता है और अन्त तक चलता है।

प्रकाशितवाक्य 12 में स्त्री इस्राएल को, नर बालक मसीह को, और बड़ा लाल अजगर शैतान को दर्शाता है।

स्त्री, इस्राएल राष्ट्र का चित्रण करती है, जैसा कि याकूब के स्वप्न में सूर्य, चंद्रमा और ग्यारह तारों के द्वारा दिखाया गया था (उत्पत्ति 37:9–11)। याकूब (इस्राएल) के उस स्वप्न में सूर्य उसके पिता का, चंद्रमा उसकी माता का, और ग्यारह तारे उसके भाइयों का प्रतिनिधित्व करते थे।

नर बालक, प्रभु यीशु का प्रतिनिधित्व करता है, जो यहूदी था, इस्राएल राष्ट्र से उत्पन्न हुआ, और जो लोहे के राजदण्ड से सब जातियों पर राज्य करेगा (प्रकाशितवाक्य 12:5; प्रकाशितवाक्य 19:15; रोमियों 9:4,5; भजन संहिता 2:8,9)।

बड़ा लाल अजगर, शैतान, अर्थात् इब्लीस का प्रतिनिधित्व करता है, जैसा कि प्रकाशितवाक्य 12:9 में समझाया गया है। अजगर ने "स्वर्ग के तारों" का एक-तिहाई (1/3) अपने साथ खींच लिया था, ये वे स्वर्गदूत थे, जिन्होंने शैतान के साथ विद्रोह किया (यहूदा 1:13 में पापी मनुष्यों को भी *"भटकते तारे"* कहा गया है)। उसके सात सिर

(“सिर” राज्य या साम्राज्य का प्रतिनिधित्व करते हैं) जिन पर सात मुकुट हैं (“मुकुट” शासन, अधिकार और प्रभाव को दर्शाते हैं) और 10 सींग (“सींग” शासकों या अगुवों का प्रतिनिधित्व करते हैं), उन सात राज्यों और 10 अगुवों को दर्शाते हैं, जिनके द्वारा शैतान अपना प्रभाव फैलाता है (देखें प्रकाशितवाक्य 13:1; प्रकाशितवाक्य 17:9–13–पशु, अर्थात् मसीह-विरोधी)।

यह अध्याय निम्न बातों को दर्शाता है...

- शैतान का एक-तिहाई स्वर्गदूतों के साथ गिरना (प्रकाशितवाक्य 12:4)
- मसीह को मार डालने का शैतान का असफल प्रयास (प्रकाशितवाक्य 12:4,5)
- मसीह का स्वर्ग में ऊँचा उठाया जाना (प्रकाशितवाक्य 12:5)
- क्लेश काल के दूसरे भाग, अर्थात् 1,260 दिन, *“एक समय, और समयों, और आधा समय”* के लिए इस्राएल की परमेश्वर द्वारा सुरक्षा (प्रकाशितवाक्य 12:6,14)

क्लेश काल के मध्य में, शैतान स्वर्ग पर चढ़ाई करने का एक अन्तिम प्रयास करता है, परन्तु उसे रोका जाता है और पृथ्वी पर वापस भेज दिया जाता है। स्वर्गीय क्षेत्रों में एक बड़ा संघर्ष होता है (कुछ विद्वानों का मानना है कि यह तीसरे स्वर्ग में नहीं, जहाँ परमेश्वर निवास करता है, बल्कि वायवीय स्वर्ग या “स्वर्गीय स्थानों” में होता है, जहाँ शैतान और उसके दुष्टात्मिक दल कार्य करते हैं), जैसा कि हम दानिय्येल 10 में देखते हैं। शैतान पृथ्वी पर गिरा दिया जाता है और यह जानकर कि उसका समय थोड़ा ही है, बड़े क्रोध के साथ पृथ्वी पर आता है (प्रकाशितवाक्य 12:7–12)।

इस क्रोध के साथ, शैतान इस्राएल और उन सब के विरुद्ध हो

जाता है, जो यीशु की गवाही को थामे रहते हैं (प्रकाशितवाक्य 12:13–17) (देखें यिर्मयाह 30:7; दानिय्येल 12:1; मत्ती 24:22)। शैतान यहूदी लोगों (इस्राएल) को सताता है, परन्तु परमेश्वर उन्हें 3½ वर्ष तक अलौकिक रूप से सुरक्षित रखता है (प्रकाशितवाक्य 12:14)। *"बड़े उकाब के दो पंख"* (प्रकाशितवाक्य 12:14) से क्या तात्पर्य है, यह पूरी तरह स्पष्ट नहीं है, परन्तु यह स्पष्ट रूप से छुटकारे के एक सामर्थी साधन को दर्शाता है। साँप के मुँह से निकली "बाढ़", जो इस्राएल के विरुद्ध छोड़ी जाती है, सम्भवतः यहूदी-विरोधी प्रचार, या बहुत से लोगों और राष्ट्रों के विरोध की लहर हो सकती है। फिर भी, किसी प्रकार, यह उत्पीड़न की लहर भी दैवीय रीति से निष्फल कर दी जाती है (पृथ्वी उसे निगल लेती है, प्रकाशितवाक्य 12:16)। यीशु मसीह की गवाही (प्रकाशितवाक्य 12:17) पवित्र आत्मा के कार्य के लिए भी प्रयुक्त की जाती है (प्रकाशितवाक्य 19:10)। विश्वासी मेम्ने के लहू के द्वारा और अपनी गवाही के वचन के द्वारा शत्रु पर जय पाते हैं, और वे अपने प्राणों को प्रिय नहीं रखते, चाहे उन्हें यीशु मसीह में अपने विश्वास के कारण मृत्यु ही क्यों न सहनी पड़े (प्रकाशितवाक्य 12:11)।

याकूब के संकट का समय–अन्यजातियों का समय

मत्ती 24:21,22

21 क्योंकि उस समय ऐसा भारी क्लेश होगा, जैसा जगत के आरम्भ से न अब तक हुआ और न कभी होगा।
22 यदि वे दिन घटाए न जाते तो कोई प्राणी न बचता, परन्तु चुने हुओं के कारण वे दिन घटाए जाएँगे।

जकर्याह 13:8,9

8 यहोवा की यह भी वाणी है, कि इस देश के सारे निवासियों की दो तिहाई मार डाली जाएगी, और बची हुई तिहाई उस में बनी रहेगी।
9 उस तिहाई को मैं आग में डालकर ऐसा निर्मल करूँगा, जैसा रूपा निर्मल किया जाता है, और ऐसा जाँचूँगा जैसा सोना जाँचा जाता है। वे मुझ से प्रार्थना किया करेंगे, और मैं उनकी सुनूँगा। मैं उनके विषय में कहूँगा, 'ये मेरी प्रजा हैं,'

और वे मेरे विषय में कहेंगे, 'यहोवा हमारा परमेश्वर है।'"

क्लेश काल का दूसरा भाग भारी क्लेश कहलाता है (मत्ती 24:21) और यिर्मयाह की भविष्यवाणी के कारण, इसे "याकूब के संकट का समय" भी कहा जाता है–*"हाय, हाय, वह दिन क्या ही भारी होगा! उसके समान और कोई दिन नहीं; वह याकूब के संकट का समय होगा; परन्तु वह उस से भी छुड़ाया जाएगा"* (यिर्मयाह 30:7)। वह इस सात वर्ष की अवधि के दूसरे भाग के विषय में बोल रहा था, जिसे भारी क्लेश कहा जाता है। पृथ्वी अपने इतिहास की सबसे भयानक घड़ी में प्रवेश करती है। स्वर्गदूत गब्रिएल ने दानिय्येल से कहा, *"...तब ऐसे संकट का समय होगा, जैसा किसी जाति के उत्पन्न होने के समय से लेकर अब तक कभी न हुआ, न होगा..."* (दानिय्येल 12:1)। यिर्मयाह 30–31 क्लेश काल की उस घड़ी में इस्राएल की सहनशीलता का सार प्रस्तुत करते हैं। यहेजकेल 38 और 39 में, 17 विभिन्न पद इस्राएल को गोग और मागोग के सबसे घातक युद्ध का शिकार बताते हैं। इसका विवरण प्रकाशितवाक्य 16 में और अधिक दिया गया है।

प्रकाशितवाक्य 13: मसीह-विरोधी का शासन–पशु, झूठा भविष्यद्वक्ता, अजगर

प्रकाशितवाक्य 13 क्लेश काल के दौरान शैतान के अन्तिम नकली राज्य के उदय का वर्णन करता है, जो दो सामर्थ्य-प्राप्त प्रतिनिधियों पर केन्द्रित है–समुद्र से निकलने वाला पशु (मसीह-विरोधी) और पृथ्वी से निकलने वाला पशु (झूठा भविष्यद्वक्ता)। पहला पशु–मसीह-विरोधी–शैतानी अधिकार प्राप्त करता है, एक नाटकीय झूठे पुनरुत्थान का अनुभव करता है, जिससे सारा संसार चकित हो जाता है, परमेश्वर की निन्दा करता है, विश्वासियों को सताता है, और 42 महीनों तक वैश्विक राजनीतिक शासन करता है। दूसरा पशु–झूठा भविष्यद्वक्ता–अद्‌त चिन्हों के द्वारा मानवजाति को धोखा देता है, मसीह-विरोधी की उपासना को बढ़ावा देता है (वैश्विक धार्मिक व्यवस्था), उसकी मूरत में

प्राण डालता है, और पशु की छाप (666) को आर्थिक निष्ठा की परीक्षा के रूप में लागू करता है, जिससे खरीदने और बेचने पर नियंत्रण होता है (वैश्विक मुद्रा व्यवस्था)। ये दोनों मिलकर राजनीतिक शक्ति, झूठे धर्म, आर्थिक नियंत्रण, धोखे और उत्पीड़न की एक संयुक्त व्यवस्था स्थापित करते हैं, जो मसीह के लौटने तक संसार पर छाई रहती है, जब वह आकर उन्हें नाश करेगा।

सात सिर और सात राजा–सात क्रमिक विश्व साम्राज्य

प्रकाशितवाक्य 13:1,2

1 तब मैं ने एक पशु को समुद्र में से निकलते हुए देखा, जिसके दस सींग और सात सिर थे। उसके सींगों पर दस राजमुकुट, और उसके सिरों पर परमेश्वर की निन्दा के नाम लिखे हुए थे।
2 जो पशु मैं ने देखा वह चीते के समान था; और उसके पाँव भालू के से, और मुँह सिंह का सा था। उस अजगर ने अपनी सामर्थ्य और अपना सिंहासन और बड़ा अधिकार उसे दे दिया।

प्रकाशितवाक्य 17:9-13

9 उस बुद्धि के लिये जिसमें ज्ञान है, यही अवसर है : वे सातों सिर सात पहाड़ हैं जिन पर वह स्त्री बैठी है।
10 वे सात राजा भी हैं, पाँच तो हो चुके हैं, और एक अभी है, और एक अब तक आया नहीं, और जब आएगा तो कुछ समय तक उसका रहना भी अवश्य है।
11 जो पशु पहले था, और अब नहीं है, वह आप आठवाँ है और उन सातों में से उत्पन्न हुआ, और विनाश में पड़ेगा।
12 जो दस सींग तू ने देखे वे दस राजा हैं जिन्होंने अब तक राज्य नहीं पाया, पर उस पशु के साथ घड़ी भर के लिये राजाओं का सा अधिकार पाएँगे।
13 ये सब एक मन होंगे, और वे अपनी अपनी सामर्थ्य और अधिकार उस पशु को देंगे।

प्रकाशितवाक्य 13:1,2 मसीह-विरोधी के उदय को अन्तिम अन्यजाति विश्व साम्राज्य के प्रत्यक्ष राजनीतिक शासक के रूप में प्रस्तुत करता है। यूहन्ना समुद्र से एक पशु को निकलते हुए देखता है (समुद्र बहुत से लोगों का प्रतीक है, जो मानवजाति की अशान्त

और ईश्वरविहीन जातियों को दर्शाता है–यशायाह 17:12; दानिय्येल 7:2,3)। उसके 10 सींग हैं (10 राजा / राज्य जो एक संघ बनाते हैं), जिनके अपने मुकुट हैं, और सात सिर हैं (जो क्रमिक विश्व साम्राज्यों का प्रतिनिधित्व करते हैं और अन्ततः अन्तिम पुनर्जीवित साम्राज्य पर समाप्त होते हैं), जिन पर निन्दा के नाम लिखे हैं, जो परमेश्वर के विरुद्ध उसके खुले विद्रोह को दिखाते हैं। पशु की मुख्य पहचान और कार्य ("निन्दा का नाम", नाम=पहचान) परमप्रधान परमेश्वर की निन्दा करना है।

पशु का संयुक्त रूप–चीता (यूनानी), रीछ (मादी-फारसी), और सिंह (बाबुली)–सीधे दानिय्येल 2 और 7 को प्रतिबिंबित करता है। यह संकेत करता है, कि यह अन्तिम साम्राज्य यूनान की फुर्ती, मादी-फारस की शक्ति, और बाबुल की क्रूरता को एक साथ समेटे होगा। अजगर (शैतान) पशु को अपनी सामर्थ, सिंहासन और अधिकार देता है, जिससे यह प्रकट होता है कि मसीह-विरोधी का शासन केवल राजनीतिक नहीं, बल्कि खुलकर शैतानी है, जो दुष्टात्मिक शक्ति से संचालित और निर्देशित है, ताकि वह मसीह का विरोध करे और क्लेशकाल के दौरान संसार पर प्रभुत्व जमाए।

सात सिर सात क्रमिक विश्व साम्राज्यों (राजाओं / राज्यों) का प्रतिनिधित्व करते हैं। ये वे प्रमुख अन्यजाति शक्तियाँ हैं जिन्होंने इतिहास में इस्राएल को दबाया, और जो अन्त में मसीह-विरोधी की अन्तिम व्यवस्था (एक राजनीतिक प्रणाली) में समाप्त होती हैं। यह व्याख्या दानिय्येल की पुस्तक पर आधारित है, जहाँ साम्राज्यों को पशुओं के रूप में दर्शाया गया है (दानिय्येल 2; दानिय्येल 7)।

सात क्रमिक विश्व साम्राज्य इस प्रकार हैं:

1) **मिस्र:** इस्राएल को दास बनाया (निर्गमन)।

2) **अश्शूर:** इस्राएल के उत्तरी राज्य को नाश किया (722 ई.पू.)।

3) **बाबुल:** यरूशलेम और पहले मन्दिर को नाश किया (586 ई.पू.)।

4) **मादी-फारस:** पुनर्स्थापन काल में शासन किया (फारस में दानिय्येल)।

5) **यूनान:** सिकन्दर और सेल्यूकसी अत्याचार (दानिय्येल 8)।

6) **रोम:** मसीह के प्रथम आगमन के समय और जब यूहन्ना प्रकाशितवाक्य लिख रहा था, उस समय का विश्व साम्राज्य।

7) **भविष्य का पुनर्जीवित रोमी साम्राज्य:** अन्तिम विश्व साम्राज्य (राजनीतिक व्यवस्था), जो अन्त-समय के मसीह-विरोधी के राज्य का रूप लेगा। यह देशों का एक ढीला संघ होगा, जो उस क्षेत्र में स्थित होंगे, जो प्राचीन रोमी साम्राज्य का भाग था, और जो आज के यूरोप और भूमध्यसागर क्षेत्र में फैला हुआ है।

यूहन्ना के समय में रोम छठा राज्य था, इसी कारण प्रकाशितवाक्य 17:10 कहता है,*"पाँच तो हो चुके हैं, और एक अभी है, और एक अब तक आया नहीं।"*

यूहन्ना ने रोमी शासन के समय (लगभग 95 ईस्वी) में लिखा। इसलिए यूहन्ना के दृष्टिकोण से...

पाँच गिर चुके हैं: मिस्र, अश्शूर, बाबुल, मादी-फारस, यूनान

एक वर्तमान में है: रोम (तत्कालीन साम्राज्य)

दूसरा अभी आया नहीं: मसीह-विरोधी का पुनर्जीवित साम्राज्य

यह इस बात की पुष्टि करता है, कि दोनों अंश (प्रकाशितवाक्य 13:1,2 और प्रकाशितवाक्य 17:9–13) एक ही भविष्यद्वाणी का रूपरेखा की ओर संकेत करते हैं।

मसीह-विरोधी को 8वें राजा के रूप में पहचाना गया है (प्रकाशितवाक्य 17:11)। इसका अर्थ यह है, कि मसीह-विरोधी का राज्य सातवें साम्राज्य (पुनर्जीवित रोम) में निहित है, फिर भी वह स्वयं एक अलग और विशिष्ट शैतानी शासक / अगुवा के रूप में आठवाँ राजा बन जाता है। वह "उन सातों में से है," अर्थात् उसी साम्राज्यिक परम्परा से निकलकर आता है। सात सिर और सात राजा अन्यजाति विश्व साम्राज्यों की उसी श्रृंखला का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिन्होंने क्रमशः इतिहास में इस्राएल को दबाया, और जो अन्त में मसीह-विरोधी के अधीन पुनर्जीवित रोमी साम्राज्य पर समाप्त होती है। वही मसीह-विरोधी उस सातवें राज्य से निकलकर अद्वितीय "आठवाँ राजा" बनता है।

10 सींग–10 राष्ट्रों के गठबंधन से 10 नेता

प्रकाशितवाक्य 17:12,13,10 सींगों की पहचान भविष्य के ऐसे शासकों (अगुवों) के एक गठबंधन के रूप में करता है, जो मसीह-विरोधी के साथ एक ही समय में उठ खड़े होंगे और स्वेच्छा से अपना अधिकार उसे सौंप देंगे। ये वास्तविक अंत-समय के राजनीतिक शासक हैं। यूहन्ना उन्हें स्पष्ट रूप से "दस राजा" कहता है। वे पशु के साथ ही शासन करते हैं (उनका अधिकार "एक घड़ी" तक रहता है, जो अल्प अवधि को दर्शाता है)। वे अपनी इच्छा से मसीह-विरोधी के अधीन हो जाते हैं। यह दानिय्येल 7:24 की भविष्यवाणी से मेल खाता है, *"उन दस सींगों का अर्थ यह है, कि उस राज्य में से दस राजा उठेंगे, और उनके बाद उन पहिलों से भिन्न एक और राजा उठेगा, जो तीन राजाओं को गिरा देगा"*

ये 10 सींग 10 राष्ट्रों के एक राजनीतिक नेताओं ("राजाओं") के गठबंधन (संघ या गुट) का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो पुनर्जीवित रोमी विश्व साम्राज्य के अन्तिम रूप से निकलकर सामने आएगा। ये संसार भर में बिखरे हुए 10 अव्यवस्थित अगुवे नहीं हैं; बल्कि यह एक क्षेत्रीय

शक्ति-संघ है, जो मसीह-विरोधी के साम्राज्य की शासन-व्यवस्था के रूप में कार्य करेगा। दानिय्येल द्वारा पहचाना गया क्षेत्र रोम का ऐतिहासिक भौगोलिक विस्तार है, जो यूरोप और भूमध्यसागर क्षेत्र में फैला हुआ था, आज के कई आधुनिक देशों का एक ढीला-सा समूह, जो पूर्व रोमी साम्राज्य का भाग थे। ये 10 सींग भविष्य के 10 राजनीतिक अगुवों का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो इसी क्षेत्र से निकलकर एक अल्पकालिक अन्त-समय का संघ बनाएंगे। वे मसीह-विरोधी के अधीन एकजुट होंगे, अपना अधिकार उसे सौंप देंगे, और मसीह के आगमन पर अपने विनाश तक उसके वैश्विक शासन की प्रवर्तन शाखा के रूप में सेवा करेंगे।

मसीह-विरोधी का वैश्विक प्रभाव बढ़ना

प्रकाशितवाक्य 13, क्लेश काल के दूसरे भाग में पशु (मसीह-विरोधी) और झूठे भविष्यद्वक्ता के कार्यों का विस्तृत वर्णन करता है। यहाँ यीशु मसीह की नकल करने का एक प्रयास दिखाई देता है—मृत्यु और पुनरुत्थान जैसी घटना के द्वारा। पशु (मसीह-विरोधी) को प्राणघातक घाव लगता है, सम्भवतः किसी हत्या के प्रयास में, परन्तु वह चंगा हो जाता है। संसार चकित हो जाता है और उसके पीछे चल पड़ता है (प्रकाशितवाक्य 13:3)। पशु की उपासना और उसका अनुसरण करते हुए, पृथ्वी के लोग वास्तव में अजगर अर्थात् शैतान की उपासना करते हैं, जो मसीह-विरोधी को सामर्थ देता है।

उसका नाम निन्दा है, और इसलिए उसके कार्य भी परमेश्वर की निन्दा से भरे होते हैं। यही बात दानिय्येल ने कही थी (दानिय्येल 7:8,11,20,25; दानिय्येल 8:11,25; दानिय्येल 9:27)। मसीह-विरोधी यह कार्य 42 महीनों तक करता है, अर्थात् 3½ वर्ष। यह दानिय्येल के *"एक समय, और समयों, और आधा समय"* (दानिय्येल 7:25; प्रकाशितवाक्य 12:14) के साथ मेल खाता है।

दानिय्येल ने यह भी भविष्यवाणी की, कि मसीह-विरोधी पवित्र लोगों से युद्ध करेगा (दानिय्येल 7:25), इसमें यहूदी लोग भी सम्मिलित हैं और वे सब भी, जो क्लेश काल के दौरान यीशु मसीह पर विश्वास करेंगे और यीशु की गवाही रखेंगे (प्रकाशितवाक्य 12:13,17)।

मसीह-विरोधी का प्रभाव पूरे संसार में फैल जाएगा। संसार भर के लोग, पशु, अर्थात् मसीह-विरोधी को अपनाएँगे और उसकी उपासना करेंगे।

क्योंकि यह (क्लेश काल का दूसरा भाग) भारी क्लेश होगा, इसलिए पवित्र लोगों को एक ऐसा आश्वासन दिया गया है, जो उन्हें धीरज और विश्वास प्रदान करता है। जो उन्हें बन्दी बनाकर ले जाते हैं, वे स्वयं भी एक दिन बन्दी बनाए जाएंगे। जो उन्हें (पवित्र लोगों को) तलवार से मारते हैं, वे स्वयं प्रभु और उसके मुँह की तलवार से मारे जाएंगे। इस सच्चाई को जानना क्लेश काल के दौरान पवित्र लोगों (अर्थात् उस समय विश्वास में आने वालों) को धीरज और विश्वास देता है।

दूसरा पशु–झूठा भविष्यद्वक्ता

यह एक दूसरा व्यक्ति है, जिसे "दूसरा पशु" कहा गया है। प्रकाशितवाक्य 16:13; प्रकाशितवाक्य 19:20; और प्रकाशितवाक्य 20:10 में इस दूसरे पशु को झूठा भविष्यद्वक्ता कहा गया है–यह वह पशु है, जिसके दो मेम्ने के समान सींग हैं (सच्चे परमेश्वर के मेम्ने की नकल या विपरीत रूप)। यह झूठा भविष्यद्वक्ता धर्म और विश्वास के विषयों पर केन्द्रित है। वह अजगर के समान बोलता है—धोखे भरे, चालाक और उत्तेजित करने वाले शब्दों के द्वारा लोगों को बुराई की ओर ले जाता है। यह झूठा भविष्यद्वक्ता एक धार्मिक अगुवे के रूप में आता है (मेम्ने के समान), परन्तु बोलता अजगर के समान है—लोगों को धोखा देता हुआ। उसका उद्देश्य चिन्हों और अद्‌त कामों के द्वारा

लोगों को धोखा देना और उन्हें मसीह-विरोधी या उसकी मूरत की उपासना करने के लिए प्रेरित करना है।

"समुद्र में से" और "पृथ्वी में से"–क्या अन्तर है?

पहला पशु, मसीह-विरोधी, *"समुद्र में से"* आता है (प्रकाशितवाक्य 13:1)। दूसरा पशु, झूठा भविष्यद्वक्ता, *"पृथ्वी पर उदय"* होता है। क्या इसका कोई विशेष महत्व है?

दानिय्येल 7 में, जब दानिय्येल आने वाले साम्राज्यों का दर्शन देखता है, तो वह देखता है, *"... समुद्र में से चार बड़े बड़े जन्तु निकल आए..."* (दानिय्येल 7:3), और उन्हीं के विषय में यह भी कहा गया है, *"...चार राज्य हैं, जो पृथ्वी पर उदय होंगे"* (दानिय्येल 7:17)। दानिय्येल 7 में समुद्र में से निकलना और पृथ्वी पर उदय होंगे समानार्थी रूप में प्रयुक्त हुए हैं। इसलिए, हमें समुद्र या पृथ्वी से निकलने के बीच अत्यधिक भेद नहीं करना चाहिए। समुद्र, जातियों और लोगों पर ज़ोर देता है। जो कुछ समुद्र से निकलता है, उसका जातियों और लोगों पर प्रभाव होता है। पृथ्वी, प्राकृतिक, मानवीय और सांसारिक बातों को दर्शाता है। जो पृथ्वी से निकलता है, उसमें कुछ भी दैवीय नहीं होता। उसमें परमेश्वर से कुछ भी नहीं होता।

प्रकाशितवाक्य 17 पर विचार करें, जहाँ महान वेश्या, रहस्यमय बाबुल का वर्णन है, जो मसीह-विरोधी और झूठे भविष्यद्वक्ता द्वारा स्थापित झूठी धार्मिक व्यवस्था को दर्शाता है। यहाँ जल और पहाड़ों की प्रतीकात्मक भाषा का प्रयोग किया गया है। *"...वह बड़ी वेश्या जो बहुत–से पानी पर बैठी है"* (प्रकाशितवाक्य 17:1)। *"...सात पहाड़ हैं जिन पर वह स्त्री बैठी है"* (प्रकाशितवाक्य 17:9)। *"जो पानी तू ने देखे, जिन पर वेश्या बैठी है, वे तो लोग और भीड़ और जातियाँ और भाषाएँ हैं"* (प्रकाशितवाक्य 17:15)। *"...वह स्त्री, जिसे तू ने देखा है, वह बड़ा नगर है जो पृथ्वी के राजाओं पर राज्य करता है"* (प्रकाशितवाक्य

17:18)। यह झूठा धर्म "बहुत से जलों" पर अपना प्रभाव डालता है, जो लोगों और जातियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। यह झूठा धर्म "सात पहाड़ों" पर भी अपना प्रभाव डालता है, जो राज्यों और उनके राजाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। वास्तव में, यह झूठा धर्म "पृथ्वी के राजाओं" पर भी अपना प्रभाव डालता है, अर्थात्, बहुत से अगुवे इसे अपना लेते हैं। यहाँ फिर से "जल" और "पहाड़" रहस्यमय बाबुल के प्रभाव को दर्शाने के लिए प्रयुक्त किए गए हैं।

एक वैश्विक धार्मिक व्यवस्था

झूठा भविष्यद्वक्ता (दूसरा पशु) मसीह-विरोधी (पहला पशु) के साथ मिलकर कार्य करता है और लोगों को मसीह-विरोधी की उपासना करने के लिए प्रेरित करता है। झूठा भविष्यद्वक्ता एक वैश्विक धार्मिक व्यवस्था की स्थापना करता है, जिसके द्वारा लोगों को मसीह-विरोधी की उपासना करने के लिए उकसाया जाता है। झूठा भविष्यद्वक्ता शैतान की सामर्थ से चिन्ह और अद्‌त काम करता है (2 थिस्सलुनीकियों 2:9)। वह लोगों को धोखा देता है। वह पशु की एक मूरत स्थापित करके और उसकी उपासना करवाकर लोगों को मूर्तिपूजा में लगा देता है। पशु की मूरत जीवित-सी प्रतीत होती है—वह बोलने में सक्षम होती है और मार डालने की सामर्थ भी रखती है। यह आधुनिक तकनीक (उदाहरण के लिए, जीवंत प्रतीत होने वाले रोबोट) के द्वारा संभव हो सकता है, या फिर दुष्टात्मिक सामर्थ से अलौकिक रूप से संचालित हो सकता है। पशु की यह मूरत झूठे भविष्यद्वक्ता द्वारा प्रचारित इस वैश्विक धार्मिक व्यवस्था का ही एक भाग है।

एक वैश्विक आर्थिक व्यवस्था और पशु की छाप

झूठा भविष्यद्वक्ता, मसीह-विरोधी के साथ मिलकर, एक वैश्विक आर्थिक व्यवस्था (या वैश्विक मुद्रा अथवा वैश्विक वित्तीय प्रणाली) भी आरम्भ करता है। लोगों को अपने दाहिने हाथ या माथे पर एक छाप लेनी होती है। केवल इसी पहचान (आईडी) के साथ वे लेन-देन कर

सकते हैं। यह व्यवस्था सब लोगों को प्रभावित करती है। हर व्यक्ति को आर्थिक लेन-देन के लिए इस प्रणाली का उपयोग करने के लिए बाध्य किया जाता है। हाथ या माथे पर छाप लगाना आज की आधुनिक तकनीक के द्वारा संभव है, ऐसा कुछ जो 2000 के दशक से पहले सम्भव नहीं था। लोगों को वैश्विक स्तर पर प्रभावित करने के लिए, इस प्रकार की वित्तीय संरचना आज वैश्विक वित्तीय नेटवर्कों के माध्यम से भी प्राप्त की जा सकती है। फिर से, यह ऐसी बात है, जो 2000 के दशक से पहले संभव नहीं थी। हम ऐसे समय में जी रहे हैं, जब ये सभी बातें पूरी हो सकती हैं। इन सबके घटित होने के लिए आवश्यक तकनीक और साधन अब उपलब्ध हैं।

पहचान (आईडी) के तीन रूप होंगे–पशु की छाप, पशु का नाम या उसके नाम की संख्या होगी।

पशु की संख्या, जो मसीह-विरोधी के नाम की संख्या के रूप में गिनी जाती है (जो 666 बनती है), वैश्विक वित्तीय प्रणाली की पहचान में से एक बन जाती है। लोगों को लेन-देन करने के लिए पशु की छाप, उसका नाम या उसके नाम की संख्या में से एक रखना आवश्यक होगा। पशु की छाप ऐसी बात है जिसकी गणना की जा सकती है। यह गणना उसके नाम की संख्या है। यूनानी भाषा में अक्षरों के साथ संख्याएँ जुड़ी होती थीं। इसलिए, मसीह-विरोधी का एक नाम होगा, और उसके नाम का संख्यात्मक मान 666 होगा। परन्तु हमें इसकी चिंता करने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि जैसा कि हमने सीखा है, कलीसिया के हटा लिए जाने के बाद ही मसीह-विरोधी प्रकट होगा। इसलिए प्रकाशितवाक्य 13:16–18 उन लोगों के लाभ के लिए लिखा गया है, जो क्लेश काल के समय वहाँ होंगे, ताकि वे मसीह-विरोधी की पहचान कर सकें और पशु की छाप लेने से इन्कार कर सकें।

हम यह भी देखते हैं, कि मसीह-विरोधी एक मनुष्य है, जैसा कि

प्रकाशितवाक्य 13:18 में कहा गया है, वह मनुष्य का अंक है।

प्रकाशितवाक्य 13 से हम यह देखते हैं, कि मसीह-विरोधी और झूठा भविष्यद्वक्ता, शैतान की सामर्थ से, एक साथ कार्य करते हुए वैश्विक नेतृत्व प्रभाव स्थापित करते हैं, एक वैश्विक धार्मिक व्यवस्था और एक वैश्विक वित्तीय व्यवस्था को लागू करते हैं।

मसीह-विरोधी कहाँ से आएगा?

अब हम संक्षेप में यह प्रस्तुत करते हैं, कि परमेश्वर ने दानिय्येल को यह कैसे प्रकट किया कि मसीह-विरोधी कहाँ से आएगा।

दानिय्येल, जिसके नाम का अर्थ है "परमेश्वर न्यायी है," ने 605 ईसा पूर्व से 535 ईसा पूर्व तक सेवा की, जब यहूदी बाबुल को बन्दी बनाकर ले जाए गए थे, तक से लेकर जरुब्बाबेल के मन्दिर के निर्माण के लिए यरूशलेम लौटने तक। दानिय्येल ने तीन साम्राज्यों के दरबारों में सेवा की–बाबुली साम्राज्य, मादी साम्राज्य, और फारसी साम्राज्य के प्रारम्भिक काल में।

आश्चर्यजनक बात यह है, कि दानिय्येल ने भविष्य के विश्व साम्राज्यों के विषय में भविष्यवाणी की। उसने समय से पहले बाबुली, मादी-फारसी, यूनानी, रोमी साम्राज्य, मसीह, वर्तमान समय के उन क्षेत्रों, जो पूर्व रोमी साम्राज्य का भाग थे , और अन्तिम दिनों में, मसीह-विरोधी के समय तथा उसके बाद, घटने वाली घटनाओं के विषय में भविष्यवाणी की।

हम दानिय्येल की कुछ भविष्यवाणियों को रेखांकित करते हैं और इस बात पर ध्यान केन्द्रित करते हैं, कि दानिय्येल ने मसीह-विरोधी के उद्गम के विषय में क्या कहा।

दानिय्येल 2 में, दानिय्येल ने नबूकदनेस्सर के स्वप्न का वर्णन और

उसका अर्थ बताया। यह बाबुली साम्राज्य पर राजा नबूकदनेस्सर के शासन के दूसरे वर्ष में हुआ, जो लगभग 603–602 ईसा पूर्व का समय था। यद्यपि अध्याय 2 में दानिय्येल साम्राज्यों के नाम नहीं बताता, फिर भी वह आने वाले साम्राज्यों की भविष्यवाणी करता है। अध्याय 2 एक रूपरेखा प्रस्तुत करता है, जिस पर दानिय्येल 7, 8, 9, 11 और 12 में और अधिक विवरण जोड़ा गया है।

दानिय्येल 2 की प्रतिमा से आरम्भ करके, उसके बाद के अध्यायों में प्रकट की गई बातों को देखते हुए, हम निम्नलिखित बातों की पहचान कर सकते हैं:

पहला राज्य (सोने का सिर) बाबुली राज्य के रूप में पहचाना गया है—*"यह सोने का सिर तू ही है"* (दानिय्येल 2:38)। दानिय्येल 7:17,23–25 प्रकट करता है, कि चार राज्य होंगे। दानिय्येल 2:38 में हम जानते हैं कि पहला राज्य (सोने का सिर, सिंह) बाबुल का है। दानिय्येल 8 में, दूसरा राज्य (चाँदी की छाती, रीछ, मेढ़ा) मादी और फारस के राजाओं या राज्य के रूप में पहचाना गया है (दानिय्येल 8:20), और तीसरा राज्य (पीतल की कमर, चीता, बकरा) यूनान का राज्य है (दानिय्येल 8:21)। चौथा राज्य (लोहे की टाँगें, भयानक पशु), जिसे हम इतिहास से जानते हैं और प्रकाशितवाक्य 17:10 *"एक अभी है"* के आधार पर पहचानते हैं, जो यूहन्ना प्रिय के समय विद्यमान था, एक रोमी साम्राज्य है। पाँव, जो लोहे और मिट्टी के मिले-जुले हैं (रोमी साम्राज्य के लोग—लोहा—जो संसार भर की जातियों के साथ मिले हुए हैं)। यही स्थिति हमें यूरोप और भूमध्यसागर क्षेत्र में दिखाई देती है—वे देश जो पूर्व रोमी साम्राज्य का भाग थे और जिनमें संसार भर की जातियाँ मिश्रित हैं।

इसी क्षेत्र से–अर्थात् पूर्व रोमी साम्राज्य का वह ढीला-सा क्षेत्र, आधुनिक यूरोप और भूमध्यसागर, दानिय्येल ने कहा कि 10 अगुवे

(दस पाँव की उँगलियाँ, 10 सींग) उठ खड़े होंगे (दानिय्येल 7:24)। फिर एक और अगुवा उठेगा, जो उन 10 में से तीन को परास्त करेगा। यही मनुष्य मसीह-विरोधी होगा, जो 3½ वर्ष तक, *"एक समय, और समयों, और आधा समय"* , परमेश्वर के विरुद्ध निन्दा की बातें बोलेगा (दानिय्येल 7:24,25)।

चार में से एक से, एक छोटा सींग निकला

दानिय्येल 8:8–11

8 तब बकरा अत्यन्त बड़ाई मारने लगा, और जब बलवन्त हुआ, तब उसका बड़ा सींग टूट गया, और उसके बदले देखने योग्य चार सींग निकलकर चारों दिशाओं की ओर बढ़ने लगे।
9 फिर इन में से एक छोटा सा सींग और निकला, जो दक्षिण, पूरब और शिरोमणि देश की ओर बहुत ही बढ़ गया।
10 वह स्वर्ग की सेना तक बढ़ गया; और उस में से और तारों में से भी कितनों को भूमि पर गिराकर रौंद डाला।
11 वरन् वह उस सेना के प्रधान तक भी बढ़ गया, और उसका नित्य होमबलि बन्द कर दिया गया; और उसका पवित्र वासस्थान गिरा दिया गया।

दानिय्येल 8:5,8,9,11,19–25 में दानिय्येल ने यह और स्पष्ट विवरण दिया कि मसीह-विरोधी कहाँ से आएगा। यह भविष्यवाणी दानिय्येल को 551 ईसा पूर्व में दी गई थी। दानिय्येल ने देखा कि यूनान का राज्य (नर बकरा) मादी-फारसी राज्य (मेढ़ा) को पराजित करता है। नर बकरे पर स्थित बड़ा सींग पहला राजा, सिकन्दर महान (अलेक्ज़ेंडर द ग्रेट) को दर्शाता है (दानिय्येल 8:21)। सिकन्दर महान ने 20 वर्ष की आयु में शासन आरम्भ किया (356–323 ईसा पूर्व) और यूनानी साम्राज्य को उसके सबसे बड़े विस्तार तक पहुँचाया। उसने फारसी साम्राज्य को जीत लिया और यूनानी प्रभाव को भारत तक फैला दिया। उसने यह सब लगभग 10 वर्षों में पूरा किया। उसकी मृत्यु 323 ईसा पूर्व में 32 वर्ष की आयु में हो गई। सिकन्दर महान के अधीन अपने शिखर पर यूनानी साम्राज्य प्राचीन संसार के सबसे बड़े

साम्राज्यों में से एक था, जो तीन महाद्वीपों तक फैला हुआ था।

जैसा कि दानिय्येल 8:22 में भविष्यवाणी की गई, सिकन्दर महान की मृत्यु के बाद उसके चार सेनापतियों ने उसके राज्य के बड़े-बड़े भाग अपने-अपने अधिकार में लेकर शासन किया।

1) टॉलमी राज्य (टॉलेमिक किंगडम)–साम्राज्य का दक्षिणी भाग, जिसमें आज के देश शामिल हैं: मिस्र, लीबिया, सूडान, इस्राएल, लेबनान, साइप्रस, यरदन और सीरिया।
2) सेल्यूकस साम्राज्य (सेल्यूसिड एम्पायर)–साम्राज्य का पूर्वी भाग, जिसमें आज के विशाल क्षेत्र और देश शामिल हैं: तुर्की, सीरिया, इराक, ईरान, लेबनान, इस्राएल, यरदन, अफगानिस्तान, पाकिस्तान, तुर्कमेनिस्तान, उज़्बेकिस्तान, ताजिकिस्तान, कुवैत, आर्मेनिया, अज़रबैजान, जॉर्जिया, बहरीन और क़तर।
3) लिसीमेकस का राज्य (किंगडम ऑफ लाइसीमेकस)–साम्राज्य का उत्तरी भाग, जिसमें आज के देश शामिल हैं: तुर्की, थ्रेस, अनातोलिया, बुल्गारिया, यूनान, रोमानिया, मैसिडोनिया और मोल्दोवा।
4) एंटीगोनिड राज्य (ऐंटीगॉनिड किंगडम)–साम्राज्य का पश्चिमी भाग, जिसमें आज के देश शामिल हैं: यूनान, उत्तर मैसिडोनिया, अल्बानिया, बुल्गारिया, कोसोवो, मोंटेनेग्रो और सर्बिया।

ये राज्य सिकन्दर के साम्राज्य के विभाजन के बाद सबसे शक्तिशाली बने और रोमी गणराज्य द्वारा धीरे-धीरे अपने में मिला लिए जाने तक हेलेनिस्टिक संसार में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते रहे।

इन क्षेत्रों में हमारी रुचि का कारण यह है, कि दानिय्येल ने भविष्यवाणी की थी, कि सिकन्दर महान का प्रतिनिधित्व करने वाले बड़े सींग के बाद, *"...और उसके बदले देखने योग्य चार*

सींग निकलकर चारों दिशाओं की ओर बढ़ने लगे। फिर इन में से एक छोटा सा सींग और निकला,...” (दानिय्येल 8:8,9)। इसका अर्थ यह है, कि मसीह-विरोधी उन देशों में से किसी एक से निकलेगा, जो इन चार राज्यों के क्षेत्रों में स्थित हैं। इसलिए ये देश हमारे लिए महत्वपूर्ण हैं, कि हम देखें कि संसार के इस भाग में क्या हो रहा है। “छोटा सींग” सम्भवतः इन्हीं देशों में से किसी एक से निकलेगा।

“वह छोटा सींग जो दक्षिण, पूरब और शिरोमणि देश की ओर बहुत ही बढ़ गया ” (दानिय्येल 8:9)। मसीह-विरोधी अपना प्रभाव दक्षिण (उसके देश के दक्षिण में स्थित राष्ट्रों), पूर्व (उसके देश के पूर्व में स्थित राष्ट्रों) और शोभायमान देश, अर्थात् इस्राएल की भूमि की ओर बढ़ाएगा।

प्रकाशितवाक्य 14: स्वर्गदूतों की घोषणाएँ

अध्याय 14 में हम 1,44,000 यहूदियों को स्वर्ग में परमेश्वर के मेम्ने के साथ सिय्योन पर्वत पर देखते हैं। यद्यपि पवित्र शास्त्र स्पष्ट रूप से यह नहीं कहता, फिर भी यह मानना सुरक्षित है, कि ये 1,44,000 यहूदी शहीद नहीं किए गए, बल्कि उन्हें सीधे महिमायुक्त देह के साथ उठा लिया गया (रैप्चर), क्योंकि उन पर परमेश्वर की ओर से छाप लगाई गई थी और उन्हें दिव्य सुरक्षा दी गई थी। सम्भवतः ये 1,44,000 सात-वर्षीय क्लेश काल के मध्य बिन्द के बाद किसी समय स्वर्ग में उठा लिए गए। उन्हें *“परमेश्वर और मेम्ने के निमित्त पहले फल”* कहा गया है (प्रकाशितवाक्य 14:4), अर्थात् कलीसिया के उठाए जाने के बाद इस्राएल में से उद्धार पाए लोगों के पहले फल। “पहिले फल” शब्द का प्रयोग पुनरुत्थान और महिमायुक्त देह प्राप्त करने के सन्दर्भ में भी किया गया है (1 कुरिन्थियों 15:23)।

प्रकाशितवाक्य 14 में, ये 1,44,000 मेम्ने के साथ सिय्योन पर्वत पर खड़े हुए दिखाई देते हैं, जो क्लेश काल में उनके जीवित बचने और

आत्मिक विजय को दर्शाता है। उनके माथों पर पिता और मेम्ने का नाम लिखा हुआ है। उन्हें नैतिक रूप से शुद्ध (*"स्त्रियों के साथ अशुद्ध न हुए"*), आत्मिक रूप से निष्ठावान (*"जहाँ कहीं मेम्ना जाता है, वे उसके पीछे हो लेते हैं"*), सत्यवादी (*"उनके मुँह से कभी झूठ न निकला था"*), और परमेश्वर के सामने निर्दोष बताया गया है। उन्हें *"परमेश्वर और मेम्ने के निमित्त पहले फल"* कहा गया है (प्रकाशितवाक्य 14:4), जिसका अर्थ है, कि वे यहूदी उद्धार की उस महान फसल की शुरुआत का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो मसीह के लौटने पर इस्राएल की राष्ट्रीय पुनर्स्थापना के रूप में पूरी होगी।

तीन स्वर्गदूतों की संसार के लिए घोषणाएँ

जब कलीसिया और 1,44,000 यहूदी पृथ्वी पर नहीं रहते, तब परमेश्वर पृथ्वी पर रहने वालों के लिए तीन स्वर्गदूतों को घोषणाएँ करने के लिए नियुक्त करते हैं।

पहला स्वर्गदूत सनातन सुसमाचार लिये हुए *"जिसके पास पृथ्वी पर के रहनेवालों की हर एक जाति, और कुल, और भाषा, और लोगों को सुनाने के लिये सनातन सुसमाचार था"* (प्रकाशितवाक्य 14:6)। यह फिर से एक स्पष्ट संकेत है, कि उस समय कलीसिया पृथ्वी पर नहीं है, क्योंकि कलीसिया के युग में सभी जातियों को सुसमाचार सुनाने की जिम्मेदारी कलीसिया को दी गई थी।

दूसरा स्वर्गदूत बाबुल के पतन की घोषणा करता है, अर्थात् पृथ्वी पर विद्यमान अधार्मिक धार्मिक और आर्थिक विश्व-प्रणालियों का पतन, जिसका विस्तृत वर्णन प्रकाशितवाक्य 17 और 18 में किया गया है (यशायाह 13 और 14 भी देखें)। यह एक पूर्वानुमानित घोषणा है—अर्थात् भविष्य की निश्चित घटना को ऐसे घोषित करना, मानो वह पहले ही घट चुकी हो। पवित्र शास्त्र में परमेश्वर अक्सर आने वाले न्याय को पूरा हुआ घोषित करते हैं, क्योंकि उनका वचन उसके पूरा होने

की गारंटी देता है (यशायाह 46:10; यशायाह 55:11)।

तीसरे स्वर्गदूत को यह चेतावनी देने का कार्य सौंपा गया है, कि लोग पशु की छाप न लें।

हंसिया और कटनी

तब यूहन्ना एक हँसिया देखता है, जो फसल काटता है। यह आत्माओं की एक महान कटनी को दर्शाता है (प्रकाशितवाक्य 14:14–16)—अर्थात् क्लेश काल के दौरान बहुत से लोग परमेश्वर की ओर फिरेंगे और विश्वास करेंगे। यह सम्भवतः उन तीन स्वर्गदूतों की विश्वव्यापी घोषणाओं का प्रत्यक्ष परिणाम है।

हंसिया और दाखरस का कुंड (वाइनप्रेस)

इसके बाद एक और स्वर्गदूत एक भिन्न हँसिया के साथ आता है, ताकि परमेश्वर के क्रोध के दाखरस के कुंड के लिए दाखलता की फसल को इकट्ठा करे (प्रकाशितवाक्य 14:17–20)। दाखरस का कुंड, जहाँ अंगूरों को आमतौर पर पैरों से रौंदकर कुचला जाता था, न्याय के स्थान का प्रतीक है (यशायाह 63:1–6; योएल 3:12,13; विलापगीत 1:15)। यह परमेश्वर के अंतिम और भयानक क्रोध की घटनाओं की शुरुआत को दर्शाता है, जो आगे चलकर हर-मगिदोन के युद्ध में परिणत होती हैं।

प्रकाशितवाक्य 14:20 यह भी संकेत देता है, कि यह अंतिम न्याय (जिसे हम बाद में प्रकाशितवाक्य 19 में हर-मगिदोन के युद्ध के रूप में देखते हैं) यरूशलेम नगर के बाहर इतना अधिक रक्त बहाएगा कि वह घोड़े की लगाम की ऊँचाई तक पहुँचेगा, और लगभग 180–200 मील तक फैलेगा (प्रकाशितवाक्य 14:20; जकर्याह 14:2–5)। यह स्पष्ट नहीं है, कि यह विवरण पूर्णतः वास्तविक है या प्रतीकात्मक (अपोकैलिप्टिक अतिशयोक्ति), जो व्यापक नरसंहार और भारी दैवीय

न्याय को व्यक्त करता है। घाटियों में असंख्य शवों के कारण रक्त निर्बाध रूप से बहेगा। यह क्षेत्र इस्राएल की उत्तर–दक्षिण दिशा में लगभग 180–200 मील तक फैला होगा, जो यिज्रएल की तराई (हर-मगिदोन का क्षेत्र) से लेकर एदोम/बोज्रा तक (यशायाह 63) होगा। इसका अर्थ है कि यह संहार केवल मगिद्दो तक सीमित नहीं होगा, बल्कि पूरे राष्ट्र में फैलेगा।

प्रकाशितवाक्य 15: कटोरों के न्याय से पहले की भूमिका (प्रील्यूड)

प्रकाशितवाक्य 15 और 16 की घटनाएँ, प्रकाशितवाक्य 19:11 में मसीह के दूसरे आगमन से पहले पृथ्वी पर घटने वाली अंतिम घटनाएँ हैं। प्रकाशितवाक्य 17 और 18 सात-वर्षीय क्लेश काल के अंत के निकट होने वाले बाबुल के पतन का विस्तृत विवरण मात्र हैं।

जो लोग *"उस पशु पर और उसकी मूर्ति पर और उसके नाम के अंक पर जयवन्त हुए"* (प्रकाशितवाक्य 15:2), वे मूसा का गीत और मेम्ने का गीत गाते हैं (प्रकाशितवाक्य 15:1–4)। प्रकाशितवाक्य 15:2 में वर्णित *"काँच का सा एक समुद्र"* परमेश्वर के सिंहासन के सामने उसकी उपस्थिति और महिमा का स्फटिक-सा विस्तार है। शहीद संत स्वयं परमेश्वर की महिमामय उपस्थिति में संभाले गए हैं, और पशु के हाथों उनका दुःख स्वर्गीय विजय में बदल गया है, जब वे परमेश्वर के सिंहासन के सामने महिमामय आराधना में संलग्न होते हैं। सात स्वर्गदूत सात कटोरों को उँडेलने की तैयारी करते हैं, जो सात विपत्तियाँ हैं।

प्रकाशितवाक्य 16: क्रोध के सात कटोरे लिए सात स्वर्गदूत

प्रकाशितवाक्य 16 में सात कटोरों के न्यायों का वर्णन है, जो महान क्लेश के दौरान परमेश्वर के क्रोध का अंतिम और सबसे भयानक उँडेला जाना है। पशु की उपासना करने वालों पर घिनौने फोड़े पड़ते

हैं; समुद्र और मीठे जल रक्त बन जाते हैं; सूर्य मनुष्यों को तीव्र ताप से झुलसाता है; अन्धकार मसीह-विरोधी के सिंहासन को ढँक लेता है; दुष्टात्मिक आत्माएँ संसार के राजाओं को हर-मगिदोन के युद्ध के लिए इकट्ठा करती हैं; और अंत में एक विनाशकारी वैश्विक भूकम्प आता है, जिसके साथ अभूतपूर्व ओलों की वर्षा होती है, नगर ढह जाते हैं, द्वीप और पहाड़ फट जाते हैं। तब परमेश्वर की यह घोषणा होती है, *"हो चुका!"* (प्रकाशितवाक्य 16:17), जो यह संकेत देती है कि परमेश्वर का न्याय पूरा हो चुका है और मसीह के प्रकट होने तथा मसीह-विरोधी की सेनाओं के विनाश के लिए मंच तैयार है।

पहला कटोरा: घिनौने फोड़े *"उन मनुष्यों के, जिन पर पशु की छाप थी और जो उसकी मूर्ति की पूजा करते थे"* (प्रकाशितवाक्य 16:2)।

दूसरा कटोरा: समुद्र रक्त बन गया।

तीसरा कटोरा: नदियाँ और जल-स्रोत रक्त बन गए।

प्रकाशितवाक्य 16:5–7—स्वर्ग यह घोषित करता है, कि परमेश्वर अपने संतों और भविष्यद्वक्ताओं के रक्त का प्रतिशोध ले रहा है, और यह कि उसके न्याय सत्य और धर्मी हैं।

चौथा कटोरा: मनुष्य तीव्र ताप से झुलस गए, फिर भी *"परमेश्वर के नाम की जिसे इन विपत्तियों पर अधिकार है, निन्दा की पर उसकी महिमा करने के लिये मन न फिराया"* (प्रकाशितवाक्य 16:9)।

पाँचवा कटोरा: मसीह-विरोधी के राज्य पर अन्धकार और पीड़ा छा गई, फिर भी *"अपनी पीड़ाओं और फोड़ों के कारण स्वर्ग के परमेश्वर की निन्दा की; पर अपने अपने कामों से मन न फिराया"* (प्रकाशितवाक्य 16:11)।

छठा कटोरा: हर-मगिदोन के युद्ध की तैयारी के लिए फरात नदी सूख गई।

हर-मगिदोन: पूर्व के राजाओं और पृथ्वी के राजाओं का एकत्र होना

प्रकाशितवाक्य 16:12–16

12 छठवें स्वर्गदूत ने अपना कटोरा महानदी फरात पर उंडेल दिया, और उसका पानी सूख गया कि पूर्व दिशा के राजाओं के लिये मार्ग तैयार हो जाए।
13 फिर मैं ने उस अजगर के मुँह से, और उस पशु के मुँह से, और उस झूठे भविष्यद्वक्ता के मुँह से तीन अशुद्ध आत्माओं को मेंढकों के रूप में निकलते देखा।
14 ये चिह्न दिखानेवाली दुष्टात्माएँ हैं, जो सारे संसार के राजाओं के पास निकलकर इसलिये जाती हैं कि उन्हें सर्वशक्तिमान परमेश्वर के उस बड़े दिन की लड़ाई के लिये इकट्ठा करें–
15 "देख, मैं चोर के समान आता हूँ; धन्य वह है जो जागता रहता है, और अपने वस्त्र की चौकसी करता है कि नंगा न फिरे, और लोग उसका नंगापन न देखें।"–
16 और उन्होंने उनको उस जगह इकट्ठा किया जो इब्रानी में हर–मगिदोन कहलाता है।

शैतान, मसीह-विरोधी और झूठे भविष्यद्वक्ता के द्वारा राष्ट्रों को हर-मगिदोन के युद्ध के लिए एकत्र होने का आह्वान करता है। यह आह्वान दुष्टात्मिक सामर्थ्य से भरा होता है और राष्ट्र उसका प्रत्युत्तर देते हैं। यह संसार की सेनाओं की अंतिम अलौकिक लामबंदी है, जो हर-मगिदोन में मसीह के साथ होने वाले उनके विनाशकारी संघर्ष की ओर ले जाती है। छठे कटोरे के न्याय में फरात नदी सूख जाती है, जिससे पूर्व के राजाओं के पश्चिम की ओर बढ़ने का भौगोलिक अवरोध हट जाता है। उसी समय, शैतान (अजगर), मसीह-विरोधी (पशु) और झूठे भविष्यद्वक्ता से निकलने वाली तीन दुष्टात्मिक आत्माएँ छलपूर्ण चिन्ह दिखाकर संसार के शासकों को प्रभावित करती हैं और उन्हें परमेश्वर के विरुद्ध युद्ध के लिए एकजुट करती हैं। इस एकत्रीकरण के बीच मसीह अपने अचानक आगमन की चेतावनी देते हैं। सेनाएँ "हर-मगिदोन" (मगिद्दो पर्वत) नामक स्थान पर इकट्ठी होती हैं, जिससे अंतिम युद्ध का मंच तैयार होता है।

सातवा कटोरा: बड़े भूकम्प और ओलों की वर्षा; नगर टूट-फूट जाते हैं।

गोग और मागोग का युद्ध–रूस और उसके सहयोगियों का इस्राएल पर आक्रमण

यद्यपि हम इसके सटीक समय के विषय में पूर्ण रूप से निश्चित नहीं हैं, फिर भी यह तर्कसंगत प्रतीत होता है कि गोग और मागोग का युद्ध सात-वर्षीय क्लेश काल के दूसरे आधे भाग के उत्तरार्द्ध में किसी समय घटित होगा।

यह उस समय होगा जब इस्राएल विश्राम या शान्ति की अवस्था में होगा—पहले की शान्ति-संधि के कारण।

यहेजकेल 38 & 39; दानिय्येल 11:35–45; योएल 2:20

यहेजकेल 38 और 39 में वर्णित गोग और मागोग का युद्ध, जिसे दानिय्येल 11:35–45 और योएल 2:20 से समर्थन मिलता है, अंत समय में इस्राएल पर होने वाले एक विशाल आक्रमण को दर्शाता है। इस आक्रमण का नेतृत्व उत्तर दिशा से आने वाला एक शासक करता है ("गोग"—उस सैन्य तानाशाह की उपाधि जो इस गठबन्धन का नेतृत्व करता है)। यह गठबन्धन उन राष्ट्रों का है जो पुनर्स्थापित राष्ट्रीय सुरक्षा और झूठी शान्ति के समय इस्राएल पर चढ़ाई करते हैं। इस्राएल, जो जातियों में से इकट्ठा किया गया है और "निश्चिन्त" तथा "बिना दीवारों के" बसता है, अचानक एक विशाल गठबन्धन के आक्रमण का शिकार होता है, जो मुख्य रूप से दूर उत्तर से आता है (अर्थात् इस्राएल के उत्तर में स्थित क्षेत्रों तथा मध्य-पूर्वी, अफ्रीकी और यूरेशियाई शक्तियों से गठित)।

यहेजकेल 38 और 39 में गोग और मागोग का युद्ध आधुनिक राष्ट्रों के एक उत्तर-नेतृत्व वाले गठबन्धन का वर्णन करता है, जिसका केन्द्र रूस के आसपास है (*मागोग, गोग, रोश*), जिसमें तुर्की *(मेशेक,*

तूबाल, गोमेर, तोगर्मा के क्षेत्र) और ईरान (*फारस*) सम्मिलित हैं, तथा जिन्हें उत्तर अफ्रीका के देश, लीबिया (*पूत*), सूडान (*कूश*), इथियोपिया (*कूश*)—और काकेशस क्षेत्र के देश (आर्मेनिया, अज़रबैजान, जॉर्जिया, कज़ाख़स्तान—*गोमेर, बेथ-तोगर्मा*) समर्थन देते हैं। यह सब इस्राएल के पहाड़ों पर होने वाले एक अलौकिक न्याय में परिणत होता है, जो इस्राएल पर परमेश्वर की रक्षा को प्रकट करता है और क्लेश काल की अंतिम घटनाओं के लिए मंच तैयार करता है।

यहेजकेल 38:1,2 में उल्लिखित नामों के अनुरूप आधुनिक देशों का सारांश (ऐतिहासिक और भाषायी विश्लेषण के आधार पर)...

यहेजकेल 38:1,2

गोग: एक उपाधि, सम्भवतः रूस से जुड़े किसी नेता के लिए।

मागोग: आधुनिक रूस और मध्य एशिया के कुछ भाग।

रोश: सम्भवतः रूस।

मेशेक और तूबाल: सम्भवतः तुर्की या रूस।

फारस (पर्शिया): ईरान। फारस, फारसी साम्राज्य का हृदय था, और "फारस" नाम ऐतिहासिक रूप से आज के ईरान के लिए प्रयुक्त होता था। 1935 में इसका नाम आधिकारिक रूप से फारस से बदलकर ईरान रखा गया।

इथियोपिया (कूश): सम्भवतः आधुनिक इथियोपिया और सूडान।

लीबिया (पूत): लीबिया (उत्तर अफ्रीका)।

गोमेर: तुर्की या पूर्वी यूरोप के कुछ भाग।

तोगर्मा: तुर्की या काकेशस क्षेत्र (आर्मेनिया, अज़रबैजान, जॉर्जिया)।

यहेजकेल की भविष्यवाणी के अनुसार अन्त समय में **रूस और उसके सहयोगी—ईरान, तुर्की, लीबिया, इथियोपिया, सूडान**

(और सम्भवतः अन्य राष्ट्र)—मिलकर इस्राएल पर आक्रमण करेंगे।

यहेजकेल 38:13

शेबा: यमन।

देदान: सऊदी अरब।

तर्शीश: सम्भवतः पश्चिमी भूमध्यसागर क्षेत्र (स्पेन, फ्रांस, इटली और अन्य राष्ट्र)।

ये राष्ट्र इस आक्रमण पर प्रश्न उठाते हैं।

परमेश्वर स्वयं हस्तक्षेप करेगा, और इस्राएल पर चढ़ाई करने वाले पराजित होंगे। यह इतिहास में एक संक्षिप्त किन्तु अत्यन्त विनाशकारी युद्ध होगा। युद्ध के बाद केवल छठा भाग सेना का शेष रहेगा (लगभग 85% मारे जाएंगे)। यह आक्रमण इस्राएल की सेना द्वारा नहीं, बल्कि परमेश्वर के प्रत्यक्ष और प्रबल हस्तक्षेप से रोका जाएगा—अलौकिक भूकम्प, मूसलाधार वर्षा, ओलों की वर्षा, आग, आक्रमणकारी सेनाओं में भ्रम, और परस्पर हत्या के कारण इस्राएल के पहाड़ों पर पूरे गठबन्धन का सम्पूर्ण विनाश होगा। इसके बाद महीनों तक शवों को हटाने और दफ़नाने का कार्य चलेगा, जो संसार के लिए परमेश्वर की सामर्थ और इस्राएल के साथ उसकी वाचा-रक्षा की एक वैश्विक गवाही बनेगा। दानिय्येल 11:35–45 इस घटना की पूरक व्याख्या करता है और बताता है कि मसीह-विरोधी के उत्तर और दक्षिण के अभियान इसी टकराव में समाप्त होते हैं, जहाँ वह समुद्रों के बीच अपना डेरा डालता है और *"बिना किसी सहायक के"* अचानक नाश को प्राप्त होता है।

"हामोन-गोग" (यहेजकेल 39:11,15) का अर्थ है, "गोग की भीड़" या "गोग के दल"। इस घाटी का नाम इसलिए रखा गया है कि वहाँ गोग की पराजित सेना का सामूहिक दफ़न होगा। यह इस युद्ध में

मारे गए सैनिकों की विशाल संख्या को दर्शाता है और आक्रमण के अन्त को चिह्नित करता है। हामोन-गोग की घाटी का सटीक आधुनिक स्थान स्पष्ट रूप से निर्दिष्ट नहीं है, परन्तु इसे *"समुद्र के पूर्व"* (यहेजकेल 39:11) बताया गया है, जो सम्भवतः भूमध्यसागर की ओर संकेत करता है। युद्ध के बाद इस्राएल के लोग सात महीने तक मरे हुओं को दफ़नाएंगे (यहेजकेल 39:12), और यह घाटी इस्राएल को उसके शत्रुओं से छुड़ाने के लिए, परमेश्वर की कार्यवाही का स्मारक बनेगी। यह अंश संकेत देता है, कि मरे हुओं के बड़े पैमाने पर दफ़नाए जाने के कारण, वह तराई एक महत्वपूर्ण और प्रसिद्ध स्थान होगी, जो यात्रियों के मार्ग में बाधा बनेगी। वे सात वर्ष तक हथियारों को जलावन के रूप में उपयोग करेंगे (यहेजकेल 39:9,10)।

रूस को उजाड़ देश में खदेड़ा जाना

योएल 2:20

"मैं उत्तर की ओर से आई हुई सेना को तुम्हारे पास से दूर करूँगा, और उसे एक निर्जल और उजाड़ देश में निकाल दूँगा; उसका अगला भाग तो पूरब के ताल की ओर और उसका पिछला भाग पश्चिम के समुद्र की ओर होगा; उस से दुर्गन्ध उठेगी, और उसकी सड़ी गन्ध फैलेगी, क्योंकि उसने बहुत बुरे काम किए हैं।

एक संभावित व्याख्या यह है, कि "पश्चिमी समुद्र" कैस्पियन सागर को दर्शाता है, "पूर्वी समुद्र" ओखोट्स्क सागर या बेरिंग सागर (जो प्रशांत महासागर का भाग है) को संदर्भित करता है, और बंजर तथा उजाड़ भूमि साइबेरिया को दर्शाती है, जो विरल आबादी वाली और रहने के लिए प्रतिकूल है। यह देखते हुए, कि उत्तरी सेना रूस, तुर्की और उनके सहयोगियों से मिलकर बनी है, यह व्याख्या संभावित प्रतीत होती है।

मिलकर ये अंश गोग के आक्रमण को केवल एक भू-राजनीतिक युद्ध के रूप में नहीं, बल्कि एक दैवीय रूप से ठहराए गए निर्णायक

संघर्ष के रूप में प्रस्तुत करते हैं, जो परमेश्वर की सर्वोच्चता को प्रकट करता है, इस्राएल को न्यायोचित ठहराता है, राष्ट्रों को दीन करता है, और हर-मगिद्दोन के युद्ध तथा मसीह की अंतिम विजय के लिए, मंच तैयार करता है।

प्रकाशितवाक्य 17: बड़ी वेश्या "रहस्यमय बाबुल"

बाबुल शब्द "बाबेल" से निकला है, जिसका अर्थ है "देवता का फाटक" या "देवता का द्वार", "बाब" अर्थात् फाटक और *"एल"* अर्थात् देवता। उत्पत्ति 11 में बाबेल शब्द क्रिया बिलबेल से निकला है, जिसका अर्थ "भ्रम" या 'गड़बड़ी' है। इस प्रकार बाबुल मनुष्य का यह प्रयास प्रतीत होता है, कि वह "देवता के लिए द्वार" बनाए, जिससे देवता मनुष्यों के कार्यों में प्रवेश करे और मनुष्य देवता से जुड़ सके। बाइबल में बाबुल का प्रयोग कम से कम तीन भिन्न रूपों में किया गया है—वास्तविक बाबुल नगर (उत्पत्ति 11), एक विश्वव्यापी धार्मिक व्यवस्था (प्रकाशितवाक्य 17), और एक विश्व आर्थिक व्यवस्था (प्रकाशितवाक्य 18)।

प्रकाशितवाक्य 17:1–6 बड़ी वेश्या, अर्थात् *"रहस्यमय बाबुल"* का वर्णन करता है। यह एक विश्वव्यापी धार्मिक व्यवस्था है, जिसका प्रभाव अत्यन्त व्यापक है। वह *"बहुत से जलों पर बैठी है"* (अर्थात् लोगों की भीड़, प्रकाशितवाक्य 17:15), निन्दात्मक है, संसार के नेताओं द्वारा अपनाई जाती है,7 राज्यों और 10 शासकों के माध्यम से फैलती है, और यीशु पर विश्वास करने वालों पर अत्याचार करती है, यहाँ तक कि अनेक पवित्र जनों की हत्या करती है। वह बैंगनी और लाल वस्त्र पहने हुए है (राजसी वैभव और ऐश्वर्य के रंग) और सोने तथा रत्नों से सजी हुई है (धन और वैभव का प्रतीक)। वह पशु पर सवार है (मसीह-विरोधी का राजनीतिक साम्राज्य) और उसका वैश्विक प्रभाव बहुत बड़ा है। अन्ततः यही वेश्या उन 10 शासकों द्वारा धोखा दी जाती है और नष्ट कर दी जाती है, जिन्होंने पशु का समर्थन किया था।

यूहन्ना इस बड़ी वेश्या और उसके प्रभाव को देखकर चकित होता है, और स्वर्गदूत उसे इसका अर्थ समझाने में सहायता करता है (प्रकाशितवाक्य 17:6)।

"रहस्यमय बाबुल" को वैश्विक धार्मिक व्यवस्था मानने के कारण

हम "रहस्यमय बाबुल" को एक वैश्विक धार्मिक व्यवस्था क्यों मानते हैं?

पहला, *"बड़ी वेश्या"* (प्रकाशितवाक्य 17:1), जिसने *"व्यभिचार किया"* (प्रकाशितवाक्य 17:2), जो *"घृणित वस्तुओं से और उसके व्यभिचार की अशुद्ध वस्तुओं से भरी हुई"* (प्रकाशितवाक्य 17:4), और जिसे *"भेद–बड़ा बेबीलोन पृथ्वी की वेश्याओं और घृणित वस्तुओं की माता"* कहा गया है (प्रकाशितवाक्य 17:5), ये सभी शब्द प्रतीकात्मक भाषा में प्रयुक्त हैं। बाइबल में इनका प्रयोग उन लोगों या प्रणालियों के लिए किया जाता है जो सच्चे और जीवते परमेश्वर तथा उसके सत्य से आत्मिक रूप से दूर हो जाते हैं। यह प्रयोग पुराने नियम में बार-बार मिलता है (यशायाह 23:17; यशायाह 53:3-7; यिर्मयाह 3:2–9; यहेजकेल 16:1-63; होशे 4:12–19) और नये नियम में भी (याकूब 4:4), जब लोग सत्य से भटक जाते हैं। यह स्त्री—महान वेश्या—*"निन्दा के नामों से भरी हुई"* थी (प्रकाशितवाक्य 17:3)। निन्दा वह है जो सच्चे परमेश्वर और उसके सत्य के विरुद्ध बोली जाती है। इसलिए यह विषय आत्मिक / धार्मिक है और अनिवार्य रूप से एक धार्मिक व्यवस्था की ओर संकेत करता है।

दूसरे, वह *"पवित्र लोगों"* को सताती और मार डालती है और *"यीशु के शहीदों का लहू"* बहाती है (प्रकाशितवाक्य 17:6), जो फिर से एक धार्मिक / आत्मिक रुचि को दर्शाता है और इसलिए, एक धार्मिक प्रणाली को इंगित करता है।

तीसरा, उसका नाम ***"भेद"*** (प्रकाशितवाक्य 17:5) दो बातों को दर्शाता है—पहला, वह बाबुल का *"वास्तविक"* नगर नहीं है और दूसरा, यह किसी ऐसी बात की ओर संकेत करता है जो "भेद" या रहस्य के रूप में आत्मिक स्वभाव की है।

उसका प्रभाव *"बहुत से जलों पर"* है (प्रकाशितवाक्य 17:1), जिसकी व्याख्या इस प्रकार की गई है: *"जो पानी तू ने देखे, जिन पर वेश्या बैठी है, वे तो लोग और भीड़ और जातियाँ और भाषाएँ हैं"* (प्रकाशितवाक्य 17:15)। यहाँ तक कि बहुत से अगुए, अर्थात् *"पृथ्वी के राजा"* भी (प्रकाशितवाक्य 17:2) इस धार्मिक व्यवस्था को अपनाते हैं।

चौथा, पवित्र शास्त्र में "स्त्रियों" का उपयोग धार्मिक प्रणालियों के प्रतीक के रूप में किया गया है। यीशु की सच्ची कलीसिया को "दुल्हन" कहा गया है। इस झूठे धर्म को "वेश्या" कहा गया है (यहेजकेल 16 और 23; होशे)।

10 राजा अचानक वेश्या के विरुद्ध हो जाते हैं (प्रकाशितवाक्य 17:15–18) और इस धार्मिक व्यवस्था को नष्ट कर देते हैं। वे उससे घृणा करते हैं, उसे उजाड़ देते हैं, उसका धन छीन लेते हैं और आग से जला देते हैं। वे ऐसा इसलिए करते हैं क्योंकि *"परमेश्वर उनके मन में यह डालेगा कि वे उसकी मनसा पूरी करें, और जब तक परमेश्वर के वचन पूरे न हो लें"* (प्रकाशितवाक्य 17:17)।

प्रकाशितवाक्य 17:9,10 संकेत करता है, कि इस वेश्या का प्रभाव अतीत से सात राज्यों पर रहा है। इसका अर्थ यह है, कि "रहस्यमय बाबुल" कोई नई विश्व-धर्म व्यवस्था नहीं है, बल्कि वह सदा से विद्यमान रही है। यह स्त्री, "रहस्यमय बाबुल" राजनीतिक सत्ता को प्रभावित करती है, वैध ठहराती है, उसके साथ साझेदारी करती है और उससे लाभ उठाती है। "रहस्यमय बाबुल" किसी एक धर्म

का प्रतिनिधित्व नहीं करती, बल्कि विभिन्न धार्मिक प्रणालियों और राजनीतिक शक्तियों में फैले हुए एक आत्मिक छल को दर्शाती है। उदाहरण के लिए, मिस्र में गुप्त-पूजा, बाबुल में मूर्तिपूजा, फारस में सम्राट-पूजा, यूनान में मूर्तिपरक दर्शन, और रोम में सम्राट-पूजा थी। "रहस्यमय बाबुल" इन सभी पर बैठी हुई थी और इन सब राज्यों के माध्यम से अपना प्रभाव चलाती रही। अन्ततः "रहस्यमय बाबुल" स्वयं पशु (मसीह-विरोधी) पर भी सवार थी, जो यह दर्शाता है, कि मसीह-विरोधी ने भी, इस धार्मिक व्यवस्था को बढ़ावा दिया।

पवित्र शास्त्र से यह स्पष्ट नहीं है, कि "रहस्यमय बाबुल", "महान वेश्या", वही धार्मिक व्यवस्था है, जिसे पशु और झूठा भविष्यवक्ता आरम्भ करते हैं, जो पशु की उपासना की माँग करती है (प्रकाशितवाक्य 13:12–15), या यह कोई समानांतर धार्मिक व्यवस्था है ? शास्त्र के अनुसार, पशु की उपासना सम्भवतः "रहस्यमय बाबुल" की पराकाष्ठा हो सकती है, जहाँ आराधना को परमेश्वर से हटाकर स्वयं शैतान की ओर मोड़ दिया जाता है। और परमेश्वर घटनाओं को इस प्रकार संचालित करता है कि यह झूठी वैश्विक धार्मिक व्यवस्था, स्वयं ही नष्ट हो जाती है। मसीह-विरोधी का समर्थन करने वाले 10 नेता उसकी वैश्विक धार्मिक व्यवस्था को त्याग देते हैं (प्रकाशितवाक्य 17:16,17)। जैसा कि प्रकाशितवाक्य 19:1–6 में देखा जाता है, महान वेश्या के पतन पर स्वर्ग में महान आनन्द मनाया जाता है।

7 राज्य, 10 शासक

प्रकाशितवाक्य 17:9–14 की व्याख्या पहले प्रकाशितवाक्य 13 के संदर्भ में की जा चुकी है। यहाँ हम उसे संक्षेप में दोहराते हैं। सात सिर सात क्रमिक विश्व साम्राज्यों (राजाओं / राज्यों) का प्रतिनिधित्व करते हैं —मिस्र, अश्शूर, बाबुल, मादी-फारस, यूनान, रोम, और भविष्य का पुनर्जीवित रोमी साम्राज्य—जो अंत समय का अन्तिम विश्व साम्राज्य (राजनीतिक व्यवस्था) होगा और मसीह-विरोधी के राज्य का रूप

लेगा। ये देशों का एक ढीले रूप से जुड़ा हुआ समूह हैं, जो उस क्षेत्र में स्थित हैं, जो प्राचीन रोमी साम्राज्य का भाग था और जो आज के यूरोप तथा भूमध्यसागर क्षेत्र में फैला हुआ है। ये उन प्रमुख अन्यजाति शक्तियों का प्रतिनिधित्व करते हैं जिन्होंने इतिहास के माध्यम से इस्राएल पर अत्याचार किया, और जिनका चरम अंततः अंतिम विरोधी मसीह की प्रणाली (एक राजनीतिक व्यवस्था) में होता है।

मसीह-विरोधी को 8वें राजा के रूप में पहचाना गया है (प्रकाशितवाक्य 17:11)।

10 सींग भविष्य के उन शासकों (नेताओं) का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो मसीह-विरोधी के साथ ही एक साथ उभरेंगे और स्वेच्छा से अपनी सत्ता उसे सौंप देंगे। ये वास्तविक अंत-समय के राजनीतिक नेता होंगे। ये 10 नेता पुनर्जीवित रोमी विश्व साम्राज्य के अन्तिम रूप से निकलेंगे, यूरोप और भूमध्यसागर क्षेत्र में स्थित आधुनिक देशों का एक ढीला-ढाला गठबन्धन, जो कभी रोमी साम्राज्य का भाग थे।

प्रकाशितवाक्य 18: महान बाबुल का पतन

प्रकाशितवाक्य 18 में "महान बाबुल" का वर्णन किया गया है, जिसे एक आर्थिक व्यवस्था (या राजनीतिक–आर्थिक प्रणाली) के रूप में देखा जा सकता है, जिसके माध्यम से राष्ट्रों ने अत्यधिक धन-संपत्ति अर्जित की। यह पूरी व्यवस्था अचानक ढह जाती है और लोगों को गहरे शोक और निराशा में छोड़ देती है।

यह एक दुष्टात्मिक शक्तियों से प्रेरित, वैश्विक आर्थिक प्रणाली है। हम यह क्यों कहते हैं, कि "महान बाबुल" एक विश्वव्यापी आर्थिक व्यवस्था का प्रतिनिधित्व करता है? इसका कारण यह है, कि प्रकाशितवाक्य 17 की तुलना में, प्रकाशितवाक्य 18 में व्यापार और वाणिज्य से जुड़े शब्दों का व्यापक प्रयोग किया गया है—*"पृथ्वी के व्यापारी"* (प्रकाशितवाक्य 18:3,11), *"व्यापार का*

माल" (प्रकाशितवाक्य 18:11,12), *"हर एक माझी और यात्री और मल्लाह, और जितने समुद्र से कमाते हैं"* (प्रकाशितवाक्य 18:17), *"वीणा बजानेवालों, और गायकों, और बंसी बजानेवालों, और तुरही फूँकनेवालों का शब्द"* (प्रकाशितवाक्य 18:22), *"किसी उद्यम का कोई कारीगर"* (प्रकाशितवाक्य 18:22), और *"चक्की के चलने का शब्द"* (प्रकाशितवाक्य 18:22)।

यह व्यवस्था आरम्भ में बहुत फलती-फूलती है, क्योंकि इसमें लगे लोगों ने *"सुख–विलास किया"* (प्रकाशितवाक्य 18:7,9), *"इन वस्तुओं के व्यापारी जो उसके द्वारा धनवान हो गए"* (प्रकाशितवाक्य 18:15), और *"स्वादिष्ट और भड़कीली वस्तुएँ"* (प्रकाशितवाक्य 18:14)। यह प्रणाली लोगों को झूठी शांति, आत्मनिर्भरता और सुरक्षा का एहसास कराती है—*"क्योंकि वह अपने मन में कहती है, 'मैं रानी हो बैठी हूँ, विधवा नहीं; और शोक में कभी न पड़ूँगी"* (प्रकाशितवाक्य 18:7)। संभव है कि इस व्यवस्था में अवैध और बँधे हुए श्रम का भी प्रयोग हुआ हो, क्योंकि इसमें *"मनुष्यों के शरीर और प्राण"* तक बेचे जाने का उल्लेख है (प्रकाशितवाक्य 18:13)। यह पूरी आर्थिक व्यवस्था अचानक ढह जाती है। *"घड़ी भर में ही उसका ऐसा भारी धन नष्ट हो गया"* (प्रकाशितवाक्य 18:17)।

यह आर्थिक व्यवस्था धार्मिक व्यवस्था से भी गहराई से जुड़ी हुई प्रतीत होती है—*"क्योंकि तेरे व्यापारी पृथ्वी के प्रधान थे, और तेरे टोने से सब जातियाँ भरमाई गईं थीं"* (प्रकाशितवाक्य 18:23)।

यह प्रणाली, यीशु में विश्वास रखने वालों की हत्या का भी कारण बनती है—*"भविष्यद्वक्ताओं और पवित्र लोगों, और पृथ्वी पर सब घात किए हुओं का लहू उसी में पाया गया"* (प्रकाशितवाक्य 18:24)। इसलिए, यद्यपि वचनों में स्पष्ट रूप से नहीं कहा गया है, फिर भी यह सम्भव है, कि यह आर्थिक व्यवस्था, मसीह-विरोधी द्वारा आरम्भ की

गई उस वैश्विक आर्थिक प्रणाली से जुड़ी हो, जिसमें पशु की छाप के बिना व्यापार की अनुमति नहीं है (प्रकाशितवाक्य 13:16–18)। जो लोग पशु की छाप लेने से इनकार करते हैं, उन्हें मार दिया जाता है।

"रहस्यमय बाबुल" और "महान बाबुल" की समान विशेषताएँ

"रहस्यमय बाबुल" (प्रकाशितवाक्य 17) और *"महान बाबुल"* (प्रकाशितवाक्य 18) में कई समानताएँ हैं।

दोनों प्रणालियाँ आपस में गहराई से जुड़ी हुई हैं, क्योंकि इनमें परमेश्वर से आत्मिक विचलन भी है और धन-संपत्ति की लालसा भी। *"क्योंकि उसके व्यभिचार की भयानक मदिरा के कारण सब जातियाँ गिर गई हैं, और पृथ्वी के राजाओं ने उसके साथ व्यभिचार किया है, और पृथ्वी के व्यापारी उसके सुख–विलास की बहुतायत के कारण धनवान हुए हैं"* (प्रकाशितवाक्य 18:3)।

दोनों प्रणालियाँ अनेक भविष्यद्वक्ताओं और पवित्र जनों की शहादत के लिए उत्तरदायी हैं (प्रकाशितवाक्य 17:6; प्रकाशितवाक्य 18:24)।

दोनों को नगर कहा गया है (प्रकाशितवाक्य 17:18; प्रकाशितवाक्य 18:21), जो ऐसे स्थान का संकेत है, जहाँ लोग यह सोचकर बसना या अपना आधार बनाना चाहते हैं कि वे सुरक्षित हैं।

प्रकाशितवाक्य 19: मेम्ने का विवाह और अन्तिम संघर्ष—हर-मगिदोन

बड़ी वेश्या के विनाश पर स्वर्ग का आनन्द

बड़ी वेश्या, वह विश्वव्यापी धार्मिक व्यवस्था जिसने राष्ट्रों को भारी छल में बाँध रखा था, के पतन पर स्वर्ग में बड़ा आनन्द मनाया जाता है।

मेम्ने का विवाह-भोज

विवाह-भोज परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं की पूर्ति और आनन्द का भव्य उत्सव है। मेम्ने का विवाह-भोज, मसीह और उसकी प्रजा के मिलन का उत्सव है। इसे प्राचीन यहूदी विवाह रीति-रिवाजों के संदर्भ में समझा जा सकता है, जहाँ विवाह भोज, विवाह प्रक्रिया की पराकाष्ठा होता था। दूल्हा अपनी दुल्हन को ग्रहण करता था, और मित्रों व परिवार के साथ हर्षोल्लास से भोज मनाया जाता था। इसी प्रकार, मसीह अपनी कलीसिया के लिए आएँगे, और स्वर्ग में इस घटना का बड़े आनन्द से उत्सव होगा।

विवाह की यह उपमा मसीह और उसके लोगों के बीच के घनिष्ठ, प्रेमपूर्ण और अनन्त सम्बन्ध को दर्शाती है। जैसे विवाह आजीवन वाचा का प्रतीक है, वैसे ही मसीह और कलीसिया का सम्बन्ध अनुग्रह और उद्धार की अनन्त वाचा का प्रतीक है।

"उसकी दुल्हिन ने अपने आप को तैयार कर लिया है" (प्रकाशितवाक्य 19:7), और वह *"उसको शुद्ध और चमकदार महीन मलमल पहिनने का अधिकार दिया गया"* (प्रकाशितवाक्य 19:8) क्योंकि उस महीन मलमल का अर्थ पवित्र लोगों के धर्म के काम है । हम देखते हैं, कि उठाई गई कलीसिया ने मसीह में विश्वास के द्वारा प्राप्त अनुग्रह और उद्धार, पवित्रीकरण तथा धार्मिकता के वरदान के प्रत्युत्तर में, धर्मी जीवन के द्वारा अपने आप को तैयार किया था।

"धन्य वे हैं, जो मेम्ने के विवाह के भोज में बुलाए गए हैं" (प्रकाशितवाक्य 19:9)। मेम्ने के विवाह-भोज में सम्मिलित होना उसके राज्य में मिलने वाले महान आशीषों में से एक है।

जब मेम्ने का विवाह-भोज पूरा हो जाता है, तब मसीह स्वर्ग के बादलों से उतरता है और उसके साथ हम सब, उसकी प्रजा, तथा स्वर्ग की सेनाएँ होती हैं।

राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु

(प्रकाशितवाक्य 19:11–16; प्रकाशितवाक्य 1:7; यहूदा 1:14,15; दानिय्येल 7:13,14; मत्ती 24:30)

क्लेश काल के अन्त में प्रभु यीशु मसीह, दृश्य और विजयपूर्ण रूप से विजयी मसीह के रूप में लौटता है। वह श्वेत घोड़े पर सवार होकर स्वर्ग से उतरता है, विद्रोही राष्ट्रों का न्याय करने और धर्मयुक्त युद्ध करने के लिए। उसे *"विश्वासयोग्य और सत्य"* कहा गया है, उसके सिर पर बहुत से मुकुट हैं, वह लहू में डूबा हुआ वस्त्र पहने है, और स्वर्ग की सेनाएँ उसके साथ हैं। उसके मुख से निकलने वाली तीक्ष्ण तलवार, उसका वचन, जातियों को मारती है। प्रकाशितवाक्य 1:7 पुष्टि करता है, कि उसका यह आगमन सम्पूर्ण मानवजाति द्वारा देखा जाएगा, जिसमें इस्राएल भी शामिल है *"जिसने उसे बेधा था"*, यहूदा बताता है, कि हनोक ने लगभग 5000 वर्ष पहले भविष्यवाणी की थी, कि प्रभु अपने असंख्य पवित्र जनों के साथ आएगा, सब अधर्मियों पर न्याय करने के लिए। उसके वस्त्र और जाँघ पर लिखा हुआ नाम—**राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु**—उसकी प्रभुता की घोषणा करता है। वह मनुष्य का पुत्र है, जिसे सब राज्यों पर अनन्त अधिकार दिया गया है (दानिय्येल 7:13,14), और वही पृथ्वी पर अपना धर्ममय राज्य स्थापित करेगा।

हर-मगिदोन का युद्ध–राष्ट्र इस्राएल के विरुद्ध

(योएल 3:1,2,9–12; प्रकाशितवाक्य 16:12–16; यिर्मयाह 25:30–38; जकर्याह 12:2,3; मत्ती 24:21,22)

हर-मगिदोन का युद्ध संसार के राष्ट्रों द्वारा यरूशलेम और परमेश्वर की वाचा की प्रजा इस्राएल के विरुद्ध की गई अंतिम सैन्य लामबंदी का प्रतिनिधित्व करता है। यह सात-वर्षीय क्लेश काल के अंत में, अर्थात् प्रभु के दिन के चरम बिंदु पर घटित होता है। योएल बताता है, कि राष्ट्रों को *"यहोशापात की तराई"* में इकट्ठा किया जाएगा (योएल

3:12), जहाँ इस्राएल के प्रति उनके वैरभाव और परमेश्वर की प्रजा को तितर-बितर करने के कारण उन पर दैवीय न्याय किया जाएगा। प्रकाशितवाक्य प्रकट करता है कि दुष्टात्मिक आत्माएँ पृथ्वी के राजाओं को इस संघर्ष में खींच लाती हैं, और उन्हें हर-मगिदोन में एकत्र करती हैं (प्रकाशितवाक्य 16:16), जब फरात नदी सूख जाती है, ताकि आक्रमणकारी सेनाओं के लिए मार्ग खुल जाए। यिर्मयाह इस एकत्रीकरण को परमेश्वर द्वारा ठहराया गया विश्वव्यापी संहार बताता है, जिसमें एक राष्ट्र से दूसरे राष्ट्र तक न्याय फैलता है। शैतानी छल और इस्राएल तथा मसीह के प्रति घृणा से प्रेरित होकर, राष्ट्र यह समझते हैं कि वे इस्राएल को जीतने जा रहे हैं, परन्तु अनजाने में लौटते हुए मसीह के हाथों अपने ही विनाश की ओर बढ़ते हैं।

यहोशापात की तराई

यहोशापात की तराई को परंपरागत रूप से किद्रोन घाटी के साथ जोड़ा जाता है, जो यरूशलेम के पुराने नगर की पूर्वी दीवारों और जैतून पहाड़ के बीच स्थित है। योएल 3:12 में यह तराई उस स्थान के रूप में वर्णित है जहाँ "प्रभु के दिन" परमेश्वर सब राष्ट्रों को न्याय के लिए एकत्र करेगा। "यहोशापात" नाम का अर्थ है "यहोवा न्याय करता है," जो दैवीय न्याय का प्रतीक है। यद्यपि आज "यहोशापात" नाम की कोई विशिष्ट घाटी नहीं है, फिर भी किद्रोन घाटी को व्यापक रूप से इस बाइबिल संदर्भ से जोड़ा जाता है। इस घाटी का ऐतिहासिक महत्व है और यह प्राचीन काल से दफन-स्थल रही है, जिससे इसका न्याय से संबंध और भी दृढ़ होता है।

हर-मगिदोन

हर-मगिदोन इब्रानी शब्द "हार मेगिद्दो" से निकला है, जिसका अर्थ है "मेगिद्दो का पहाड़।" यह उत्तरी इस्राएल में स्थित प्राचीन नगर मेगिद्दो की ओर संकेत करता है। यह स्थान यिज्रेल घाटी को देखते हुए एक रणनीतिक पहाड़ी पर स्थित है, आधुनिक मेगिद्दो नगर के

पास। प्रकाशितवाक्य 16:16 में हर-मगिदोन को भलाई और बुराई की शक्तियों के बीच अंतिम युद्ध के भविष्यवाणी किए गए स्थान के रूप में दिखाया गया है। यह अंत समय में सेनाओं के एकत्र होने का स्थान है। टेल मेगिद्दो का पुरातात्त्विक स्थल यूनेस्को (UNESCO-यूनेस्को) की विश्व धरोहर सूची में है और यहाँ व्यापक खुदाई हुई है। इसके चारों ओर फैली यिज्रेल घाटी एक विशाल मैदान है, जो अपने रणनीतिक स्थान के कारण ऐतिहासिक रूप से युद्धभूमि रही है।

प्रभु यरूशलेम की रक्षा करेगा

(जकर्याह 12:1–11; भजन संहिता 46:1–7; जकर्याह 14:2,3)

परमेश्वर स्वयं प्रतिज्ञा करते हैं, कि अंतिम दिनों में जब राष्ट्र यरूशलेम को घेर लेंगे, तब वह अलौकिक रीति से उसकी रक्षा करेंगे, और इस्राएल को संसार के सबसे निर्बल शिकार से बदलकर अपनी विजय का चुना हुआ साधन बना देंगे। जकर्याह भविष्यवाणी करता है, कि यरूशलेम सब राष्ट्रों के लिए "काँपने का कटोरा" और "भारी पत्थर" बन जाएगा, जिससे उनकी विशाल संख्या के बावजूद राष्ट्र पराजित होंगे। प्रभु यहूदा में साहस भरेगा, हर रक्षक को सामर्थ देगा, और आक्रमणकारी सेनाओं को भ्रम और अंधेपन से मारेगा। सबसे महत्वपूर्ण यह है, कि इस्राएल राष्ट्रीय पश्चाताप का अनुभव करेगा, जब वह यीशु को मसीहा के रूप में पहचानेगा—*"तब वे मुझे ताकेंगे अर्थात् जिसे उन्होंने बेधा है, और रोएँगे"* (जकर्याह 12:10)। यह दैवीय हस्तक्षेप न केवल यरूशलेम को शारीरिक रूप से सुरक्षित करता है, बल्कि इस्राएल को आत्मिक रूप से भी उद्धार देता है, परमेश्वर की प्राचीन वाचा की प्रतिज्ञाओं को पूरा करता है और राष्ट्र को मसीहा के राज्य के लिए तैयार करता है।

मसीह और उसकी सेना के विरुद्ध युद्ध

(प्रकाशितवाक्य 19:17–21; 2 थिस्सलुनीकियों 1:6–10; 2 थिस्सलुनीकियों 2:8; यशायाह 66:15,16; भजन संहिता 2:1–9)

हर-मगिदोन में विद्रोही संसार सीधे लौटते हुए मसीह को चुनौती देता है, जहाँ पशु (मसीह-विरोधी) और झूठा भविष्यद्वक्ता अपनी सेनाओं का नेतृत्व करते हुए उसके और उसकी स्वर्गीय सेनाओं के विरुद्ध खड़े होते हैं। प्रभु अपने शत्रुओं को *"अपने मुख की फूँक"* से (2 थिस्सलुनीकियों 2:8) और अपने प्रकट होने की महिमा से नष्ट कर देता है। पक्षियों को पहले ही बुला लिया जाता है, कि वे गिरे हुए सैनिकों का मांस खाएँ, जो इस संहार की पूर्णता को दर्शाता है। यशायाह की भविष्यवाणी इस अग्निमय न्याय का वर्णन करती है, जहाँ प्रभु आग और तलवार से सब प्राणियों पर अपना क्रोध उतारते हैं। पशु और झूठा भविष्यद्वक्ता जीवित ही आग की झील में डाल दिए जाते हैं, और शेष सेनाएँ मसीह के वचन से मारी जाती हैं। इस प्रकार भजन सहिंता 2 की पूर्ति होती है, जहाँ मसीहा लोहे के राजदंड से राष्ट्रों पर शासन करता है और मानवीय विद्रोह को पूरी तरह चूर-चूर कर देता है।

उसके पाँव जैतून पर्वत पर खड़े होंगे

(जकर्याह 14:1–5; प्रेरितों के काम 1:9–12; यहेजकेल 43:2–5)

जब मसीह शारीरिक रूप से पृथ्वी पर लौटेंगे, तो वह उसी स्थान पर उतरेंगे जहाँ से वह स्वर्गारोहण के समय ऊपर गए थे—यरूशलेम के पूर्व में स्थित जैतून पहाड़। जकर्याह वर्णन करता है, कि उसके पाँव उस पहाड़ पर खड़े होंगे, जिससे एक महान भूकंप आएगा और पहाड़ दो भागों में फट जाएगा, जिससे एक विशाल घाटी बन जाएगी। जैतून पर्वत के फटने से बनी हुई तराई इतनी विशाल है, कि यरूशलेम में होने वाली अंतिम लड़ाइयों के अराजक हालात से भाग रहे लोगों के लिए, वह एक पलायन का मार्ग प्रदान कर सके। यह नाटकीय भौगोलिक परिवर्तन उस क्षेत्र की बनावट में बड़े बदलाव का संकेत देगा। जकर्याह 14:10 में बताया गया है, कि यरूशलेम के चारों ओर का देश समतल किया जाएगा और यरूशलेम ऊँचा उठाया जाएगा। इससे संकेत मिलता है, कि अंत समय में भू-दृश्य का गहन रूपांतरण

होगा। नगर के चारों ओर का क्षेत्र समतल होगा, पर यरूशलेम ऊँचा और प्रतिष्ठित रहेगा, जो मसीही राज्य में परमेश्वर के शासन के केंद्र के रूप में उसके महत्व को दर्शाता है। यह क्षण मसीहा के दृश्य, देहधारी आगमन को चिह्नित करता है, जब वह यरूशलेम को छुड़ाने और अपने राज्य की स्थापना करने आता है। प्रेरितों के काम में स्वर्गदूतों का वचन दर्ज है, कि यीशु “उसी प्रकार” लौटेगा जैसे वह गया था, जिससे जकर्याह की भविष्यवाणी की शाब्दिक पूर्ति की पुष्टि होती है।

घोड़े की लगाम तक ऊँचा रक्त

(प्रकाशितवाक्य 14:19,20; यशायाह 34:1–8; योएल 3:13)

लगभग 180–200 मील दूर तक, घोड़े की लगाम की ऊँचाई तक उठते हुए रक्त की यह चौंका देने वाली कल्पना अंतिम न्याय के समय सेनाओं के अत्यंत व्यापक और अभूतपूर्व विनाश का प्रतीक है। घोड़े की लगाम सामान्यतः लगभग 4 से 5 फीट (1.2 से 1.5 मीटर) ऊँची होती है। यह रक्त की एक भयावह और विनाशकारी मात्रा को दर्शाता है, जो संहार के पैमाने को प्रकट करता है। प्रकाशितवाक्य में पृथ्वी की जनसंख्या को ऐसे दिखाया गया है मानो वे पके हुए अंगूर हों, जिन्हें परमेश्वर के क्रोध के दाखरस-कुंड में कुचला जाता है, जिससे इस्राएल की भूमि पर रक्तपात की बाढ़-सी बह निकलती है। यशायाह और योएल भी इसी दाखरस-कुंड की छवि का उपयोग करते हैं, यह बताने के लिए कि जब प्रभु न्याय करता है तब परमेश्वर का विरोध करने वाले राष्ट्रों का हिंसक अंत होता है।

महान परमेश्वर का भोज

(यहेजकेल 39:17–22; प्रकाशितवाक्य 19:17–21; मत्ती 24:28; लूका 17:37)

आक्रमणकारी सेनाओं के विनाश के बाद, पवित्र शास्त्र एक गंभीर “महान परमेश्वर के भोज” का वर्णन करता है, जिसमें शिकारी पक्षियों

को बुलाया जाता है, कि वे युद्धभूमि में बिखरे हुए राजाओं, सेनापतियों, वीरों और घोड़ों के शवों को खाएँ। गोग की हार के विषय में यहेजकेल की भविष्यवाणी प्रकाशितवाक्य से पूरी तरह मेल खाती है, जो इतनी व्यापक मृत्यु और दैवीय विजय को दर्शाती है, कि भूमि को साफ करने में महीनों लगेंगे। यीशु ने भी इसी चित्रण की ओर संकेत करते हुए कहा, *"जहाँ लोथ हो, वहीं गिद्ध इकट्ठे होंगे"* (मत्ती 24:28), और इसे सीधे अपने दूसरे आगमन के न्याय से जोड़ा। यह "महान परमेश्वर का भोज" परमेश्वर के शत्रुओं की पूर्ण पराजय और अपमान का प्रतीक है, तथा मसीह द्वारा अपने धर्मी सहस्राब्दी राज्य की स्थापना से पहले दुष्ट विश्व-शक्ति प्रणालियों के अंतिम हटाए जाने को दर्शाता है। *"वह पशु, और उसके साथ वह झूठा भविष्यद्वक्ता पकड़ा गया जिसने उसके सामने ऐसे चिह्न दिखाए थे जिनके द्वारा उसने उनको भरमाया जिन पर उस पशु की छाप थी और जो उसकी मूर्ति की पूजा करते थे। ये दोनों जीते जी उस आग की झील में, जो गन्धक से जलती है, डाले गए"* (प्रकाशितवाक्य 19:20)।

11
मसीह का सहस्राब्दी (हजार वर्षीय) राज्य और अंतिम न्याय (प्रकाशितवाक्य 20)

अब हम प्रकाशितवाक्य 20 का अध्ययन करते हैं, साथ ही मसीह के सहस्राब्दी (हजार वर्षीय) राज्य और अंतिम न्याय से संबंधित अन्य पवित्रशास्त्र के वचनों को भी देखते हैं।

शैतान का 1000 वर्षों के लिए बाँधा जाना

(प्रकाशितवाक्य 20:1–3)

मसीह के सहस्राब्दी राज्य के आरंभ में, शैतान को एक स्वर्गदूत द्वारा पकड़ लिया जाता है, बाँध दिया जाता है, और उसे अथाह कुंड में 1,000 वर्षों के लिए बंद कर दिया जाता है, ताकि वह राष्ट्रों को आगे और धोखा न दे सके। महान धोखेबाज़ को हटाए जाने से, व्यापक आत्मिक अंधकार और वैश्विक छल समाप्त हो जाता है। अब संसार दुष्टात्मिक झूठ और विद्रोह के अधीन नहीं रहता। शांति, धार्मिकता और सच्ची आराधना फलती-फूलती है।

क्लेश काल के संतों का पुनरुत्थान

(प्रकाशितवाक्य 20:4–6)

जो लोग क्लेश काल के समय पशु की पूजा करने और मसीह-विरोधी की छाप लेने से इनकार करने के कारण शहीद किए गए थे, वे मसीह के लौटने पर शारीरिक रूप से पुनर्जीवित किए जाते हैं। यह *"पहला पुनरुत्थान"* कहलाता है। पुराने नियम के संतों और कलीसिया युग के विश्वासियों के साथ, जिन्हें पहले ही जिलाया गया था (1 कुरिन्थियों 15:22,23; 1 थिस्सलुनीकियों 4:16), ये सब महिमा में बदले जाते हैं

और पूरे सहस्राब्दी काल तक परमेश्वर और मसीह के याजक बनकर उसके साथ राज्य करते हैं। इन पुनरुत्थित संतों पर दूसरी मृत्यु (आग की झील) का कोई अधिकार नहीं होता।

राष्ट्रों का न्याय–भेड़ें और बकरियाँ

(मत्ती 25:31–46)

अपने लौटने के तुरंत बाद, यीशु उन लोगों का न्याय करता है जो जीवित बचे हैं, यह निर्धारित करने के लिए, कि कौन अपने प्राकृतिक शरीर में सहस्राब्दी राज्य में प्रवेश करेगा। जिन्होंने क्लेश काल के दौरान मसीह में विश्वास को उसके *"भाइयों"* (विश्वासी यहूदियों) के प्रति करुणा और सेवा के द्वारा प्रकट किया, उन्हें *"भेड़ें"* कहा जाता है और राज्य में प्रवेश दिया जाता है। जिन्होंने मसीह को अस्वीकार किया और उसके लोगों को सताया, वे *"बकरियाँ"* कहलाते हैं और अनन्त दण्ड में डाले जाते हैं। यह न्याय, कर्मों के द्वारा अनन्त उद्धार का निर्णय नहीं करता, बल्कि यीशु मसीह में सच्चे विश्वास को प्रकट करता है, जो बाहरी कार्यों के साथ जुड़ा हुआ होता है। केवल वे ही विश्वासी, जिन्होंने मसीह-विरोधी की पूजा नहीं की और उसकी छाप नहीं ली, जीवित अवस्था में सहस्राब्दी राज्य में प्रवेश करते हैं। इससे राज्य की जनसंख्या उद्धार पाए हुए लोगों से आरंभ होती है, जो फिर भी संतान उत्पन्न करने में सक्षम होते हैं।

[पार्श्व टिप्पणी: राष्ट्रों का यह न्याय उस विश्वासियों के न्याय से अलग है, जो पहले ही स्वर्ग में हो चुका है। मसीह के न्यायासन पर विश्वासियों का न्याय और पुरस्कार स्पष्ट रूप से बताया गया है (रोमियों 14:10; 1 कुरिन्थियों 3:12–15; 2 कुरिन्थियों 5:9,10)। हम सहस्राब्दी के अंत में होने वाले महान श्वेत सिंहासन के न्याय के विषय में भी पूरी तरह स्पष्ट हैं, जहाँ प्रत्येक मनुष्य परमेश्वर के सामने खड़ा होता है, और पुस्तकें खोली जाती हैं, तथा जीवन की पुस्तक भी खोली जाती है, और व्यक्तियों का न्याय इस आधार पर किया जाता है, कि उनके नाम

जीवन की पुस्तक में लिखे हैं या नहीं (प्रकाशितवाक्य 20:11–15)। मत्ती 25:31–16 में वर्णित राष्ट्रों का न्याय, प्रयुक्त शब्दावली के अनुसार, क्लेश काल के अंत और सहस्राब्दी के आरंभ में घटित होता है।]

देश के लिए शुद्धिकरण का सोता

(जकर्याह 13:1,2; मलाकी 3:1–5,16–18)

बाइबल एक ऐसे समय की बात करती है, जब देश हर प्रकार की बुराई से शुद्ध किया जाएगा। जब इस्राएल यीशु को मसीहा के रूप में पहचान कर स्वीकार करता है, तब परमेश्वर एक आत्मिक "सोता" खोलता है, जो राष्ट्र को पाप और मूर्तिपूजा से शुद्ध करता है, और गहरी राष्ट्रीय पश्चाताप तथा पुनर्स्थापना लाता है। मंदिर को शुद्ध किया जाएगा (मलाकी 3:1–5)। सहस्राब्दी काल में एक शुद्ध और पवित्र मंदिर होगा, जो प्रभु की आराधना के लिए समर्पित होगा। हर प्रकार की मूर्तिपूजा और झूठ समाप्त हो जाएगा, और मसीह स्वयं यरूशलेम से लेकर राष्ट्रों तक आराधना, याजकाई और न्याय को शुद्ध करेंगे। यह शुद्धिकरण परमेश्वर और यहूदी लोगों के बीच नए सिरे से वाचा-संबंध को स्थापित करता है।

राजा मसीह का हजार वर्षीय राज्य

(उत्पत्ति 49:10; यशायाह 2:2–4; यशायाह 9:6,7; यशायाह 11:10–12; यशायाह 60:8,9; यशायाह 66:19–21; यिर्मयाह 3:17; यहेजकेल 37:1–28; दानिय्येल 2:44,45; दानिय्येल 7:13,14,27; मीका 4:2; जकर्याह 14:1–21; मत्ती 24:31; लूका 1:32,33; लूका 19:12–27; 1 कुरिन्थियों 6:2,3; प्रकाशितवाक्य 11:15; प्रकाशितवाक्य 20:4–6; प्रकाशितवाक्य 22:5)

मसीह यरूशलेम से शारीरिक रूप में समस्त राष्ट्रों पर पूर्ण अधिकार के साथ राजा बनकर शासन करते हैं, और दाऊद व इस्राएल से किए गए परमेश्वर के वाचा-प्रतिज्ञाओं को पूरा करते हैं। उनका शासन

पूर्ण न्याय, शांति, पुनर्स्थापित आराधना, अंतरराष्ट्रीय सहयोग, दीर्घायु और अभूतपूर्व समृद्धि से परिपूर्ण होता है। महिमायुक्त संत उसके साथ राजा और याजक बनकर राष्ट्रों पर न्याय और प्रशासन करते हैं। इस्राएल को संसार भर से इकट्ठा किया जाता है और आत्मिक व राष्ट्रीय रूप से पुनर्स्थापित किया जाता है। राष्ट्र यरूशलेम में परमेश्वर के वचन की खोज में आएँगे। युद्ध समाप्त हो जाएगा, सृष्टि पर लगे शाप का आंशिक हटना होगा, और मसीह का राज्य सहस्राब्दी भर संसार के इतिहास का सबसे धार्मिक युग बनेगा।

यीशु के अधीन राजा दाऊद इस्राएल पर शासन करेगा

(यहेजकेल 37:24,25; यिर्मयाह 30:9)

पवित्र शास्त्र प्रतिज्ञा करता है, कि पुनरुत्थित राजा दाऊद स्वयं सहस्राब्दी के दौरान यीशु मसीह के अधिकार में इस्राएल राष्ट्र पर शासन करेंगे। यह पुनर्स्थापना दाऊद के साथ की गई परमेश्वर की बिना शर्त वाचा (2 शमूएल 7) को पूरा करती है, और यह सुनिश्चित करती है, कि दाऊद की वंशावली से एक वास्तविक शासक सदैव इस्राएल पर शासन करे। दाऊद का नेतृत्व इस्राएल की आत्मिक पुनर्स्थापना, एकता और मसीहा के प्रति आज्ञाकारिता का प्रतीक होगा। मसीह पूरे संसार पर राज्य करते हैं, जबकि दाऊद विशेष रूप से इस्राएल के लिए राष्ट्रीय शासन का प्रबंध करता है।

यरूशलेम संसार की राजधानी होगा

(यशायाह 2:2–4; यिर्मयाह 3:17; जकर्याह 14:16)

मसीह के राज्य में यरूशलेम संसार की राजनीतिक और आत्मिक राजधानी बन जाएगा। यह दैवीय शासन का केंद्र होगा, जहाँ राष्ट्र प्रतिवर्ष यीशु की आराधना करने आएँगे। परमेश्वर की व्यवस्था और शिक्षा सिय्योन से निकलकर पूरी पृथ्वी में फैलेगी, और मसीह के धर्मी न्याय से वैश्विक शांति स्थापित होगी। अंतरराष्ट्रीय युद्ध समाप्त हो

जाएँगे, हथियार नष्ट किए जाएँगे, और अव्यवस्था व विद्रोह के स्थान पर सार्वभौमिक आज्ञाकारिता होगी। यरूशलेम "यहोवा का सिंहासन" कहलाएगा, क्योंकि वह यीशु के राज्य-प्रशासन का केंद्र होगा।

इस्राएल को प्रतिज्ञात पूरी भूमि दी जाएगी

(उत्पत्ति 17:8; 15:18–21; यहेजकेल 47:13–23)

सहस्राब्दी के दौरान इस्राएल को अंततः वह पूरी भौगोलिक भूमि प्राप्त होगी, जिसकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने अब्राहम से की थी—यूफ्रातेस नदी से लेकर मिस्र की सीमा तक। इतिहास में ये प्रतिज्ञाएँ कभी पूरी तरह साकार नहीं हुईं, जो मसीह के शासन में उनके भविष्य की पूर्ति को दर्शाता है। भूमि को बारह गोत्रों में परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार फिर से बाँटा जाएगा, जिससे इस्राएल को उसकी पूरी वाचा-सम्पदा वापस मिलेगी। यह परमेश्वर की पूर्ण विश्वासयोग्यता और यहूदी लोगों के प्रति उसकी वाचा-प्रतिबद्धताओं की स्थायित्व को प्रकट करता है।

यरूशलेम–आराधना का केंद्र

(मीका 4:1–5; जकर्याह 14:16–21; यशायाह 2:2–4; यिर्मयाह 3:17; भजन संहिता 48:1,2; जकर्याह 8:3,20–23)

सहस्राब्दी के दौरान यरूशलेम संसार की आत्मिक राजधानी बन जाएगा, जहाँ सभी राष्ट्र राज्य करने वाले राजा, प्रभु यीशु मसीह की आराधना करने आएँगे। मीका और यशायाह अन्यजाति राष्ट्रों को सिय्योन की ओर बहते हुए देखते हैं, ताकि वे परमेश्वर के मार्ग सीखें और आज्ञाकारिता व शांति में चलें। जकर्याह प्रतिवर्ष झोपड़ियों के पर्व के लिए यरूशलेम की तीर्थयात्राओं का वर्णन करता है, और जो राष्ट्र राजा की आराधना से इनकार करेंगे, वे दैवीय अनुशासन का सामना करेंगे। यह नगर "यहोवा का सिंहासन" कहलाएगा, और यरूशलेम में रोज़मर्रा की वस्तुओं पर भी **"यहोवा के लिए पवित्र"** लिखा होगा, जो दर्शाता है, कि मसीह के राज्य में जीवन के हर पहलू में आराधना व्याप्त होगी।

यरूशलेम में आनन्द और उल्लास

(यशायाह 2:1–5; यशायाह 35:10; यशायाह 51:11; यशायाह 61:10,11; सपन्याह 3:14–17)

जब मसीहा सिय्योन से राज्य करेंगे और संसार भर में संघर्ष के स्थान पर शांति होगी, तब यरूशलेम अभूतपूर्व आनन्द का अनुभव करेगा। यशायाह परमेश्वर की प्रजा को प्रभु की ज्योति में चलते हुए, उसके धर्मी शासन में आनन्द मनाते और भय व युद्ध से मुक्ति का उत्सव मनाते हुए दिखाता है। विलाप के स्थान पर उद्धार के गीत होंगे, और शाश्वत आनन्द उद्धार पाए हुओं का मुकुट बनेगा, क्योंकि शोक और आह पूरी तरह मिट जाएँगे। स्वयं प्रभु अपने पुनर्स्थापित लोगों पर गीत गाकर आनन्द करेंगे, जिससे यरूशलेम नई सृष्टि और पुनर्स्थापित आराधना का भावनात्मक और आत्मिक केंद्र बन जाएगा।

हजार वर्षीय राज्य का मंदिर

(यहेजकेल 37:26-28; यहेजकेल 40-48; यशायाह 56:6-8; यिर्मयाह 33:15-18; जकर्याह 14:16,20,21; यशायाह 2:3)

यहेजकेल 40-48 में वर्णित सहस्राब्दी मंदिर एक विशाल, वास्तविक संरचना होगी, जो मसीह के शासन के दौरान यरूशलेम में राष्ट्रों की आराधना का केंद्रीय स्थान बनेगी। इसमें स्मारक बलिदान होंगे, जो मसीह के अतीत के प्रायश्चित की स्मृति दिलाते हैं, न कि उसे दोहराते या प्रतिस्थापित करते हैं (इब्रानियों 10:10-14)। यह मंदिर इस्राएल के बीच अपना पवित्रस्थान सदा के लिए स्थापित करने की परमेश्वर की वाचा-प्रतिज्ञा को पूरा करता है और यरूशलेम को सभी राष्ट्रों के लिए प्रार्थना का घर बनाता है। मसीह स्वयं राजा के रूप में शासन करेंगे, जबकि याजकीय आराधना यहेजकेल की भविष्यवाणी के अनुरूप शुद्ध रूप में पुनः आरंभ होगी।

हजार वर्षीय राज्य के मंदिर की आवश्यकता क्यों है?

(यहेजकेल 47:13-21; यशायाह 11:11–16; जकर्याह 10:10,11;

जकर्याह 14:16-19; यहेजकेल 43:1–7; यिर्मयाह 33:17,18)

सहस्राब्दी मंदिर मसीह की आराधना और आज्ञाकारिता के लिए वैश्विक केंद्र के रूप में कार्य करता है, यह विश्वव्यापी तीर्थयात्रा और वाचा-शिक्षा का केंद्र होगा। जब इस्राएल राष्ट्रों से पूरी तरह इकट्ठा किया जाएगा और प्रतिज्ञात भूमि का उत्तराधिकार पाएगा, तब यह मंदिर परमेश्वर के अपने उद्धार पाए लोगों के बीच निवास का ठोस प्रतीक बनेगा। यह उन प्राकृतिक शरीर में जन्मे लोगों के लिए आराधना की संरचना और प्रशासन भी प्रदान करता है, जो सहस्राब्दी में प्रवेश करेंगे और जिन्हें शिक्षा की आवश्यकता होगी। मंदिर आराधना को सुव्यवस्थित रखता है, उद्धार की स्मृति को सुदृढ़ करता है, और मसीह के शासन की पवित्रता को प्रतिबिंबित करता है।

हजार वर्षीय राज्य में जीवन

(यशायाह 65:18-25; यशायाह 11:6-9; जकर्याह 8:4,5; यहेजकेल 34:25–29; आमोस 9:13–15)

सहस्राब्दी का जीवन आनन्द, शांति, समृद्धि, दीर्घायु और सृष्टि भर में सामंजस्य से परिपूर्ण होगा। बीमारी और अकाल मृत्यु समाप्त हो जाएँगी, और मानव जीवनकाल अत्यधिक बढ़ जाएगा। बच्चे सुरक्षित खेलेंगे, कृषि-समृद्धि फलेगी, और सिंह व मेम्ना शांति से साथ रहेंगे, क्योंकि प्रकृति पर लगा श्राप आंशिक रूप से हट जाएगा। परमेश्वर की प्रजा अपने हाथों के काम का फल भोगेगी, परिवार भय से मुक्त होकर फलेंगे-फूलेंगे, और हर पीढ़ी पृथ्वी पर मसीह के पुनर्स्थापित शासन के प्रत्यक्ष प्रमाण देखेगी।

नीचे सहस्राब्दी जीवन की कुछ और विशिष्ट विशेषताएँ दी गई हैं।

पृथ्वी प्रभु के ज्ञान से भर जाएगी

(गिनती 14:21; भजन संहिता 72:19; हबक्कूक 2:14; यशायाह 11:9; यशायाह 40:5; जकर्याह 14:9)

सहस्राब्दी का केंद्रीय उद्देश्य सम्पूर्ण पृथ्वी पर परमेश्वर की महिमा का प्रकट होना है। भविष्यद्वक्ताओं ने घोषणा की, कि जब मसीह धर्मी शासन स्थापित करेंगे, तब यहोवा का ज्ञान पृथ्वी को वैसे ही ढक लेगा जैसे समुद्रों को जल ढकता है। उसकी महिमा और सत्य सारी पृथ्वी पर छा जाएँगे। अब राष्ट्रों पर छल और आत्मिक अंधकार का प्रभुत्व नहीं रहेगा; इसके बजाय, यरूशलेम से शिक्षा निकलेगी और हृदय समझ और आज्ञाकारिता में प्रत्युत्तर देंगे। पूरी पृथ्वी प्रभु की विश्वासयोग्यता, महिमा और उद्धारक सामर्थ्य की साक्षी बनेगी, और यह प्राचीन वाचा-प्रतिज्ञा पूरी होगी कि सभी राष्ट्र उसे जानेंगे।

सम्पूर्ण उद्धार सबके लिए होगा

(यशायाह 35:5,6; जकर्याह 8:4,5; यहेजकेल 47:9–12; मलाकी 4:2)

हजार वर्ष के राज्यकाल के दौरान, जब मसीह राज्य करेंगे, तब उद्धार की आशीषें संसार भर में खुले रूप से प्रवाहित होंगी, और उसके प्रायश्चित की छुड़ाने वाली सामर्थ्य शरीर और आत्मा की चंगाई, पुनर्स्थापन, और पूर्णता में शारीरिक रूप से प्रकट होती है। रोग, दुर्बलता और आत्मिक अंधापन अत्यंत घट जाएगा, क्योंकि मसीहा राष्ट्रों में धार्मिकता और स्वास्थ्य का सेवकाई करेगा। इस प्रकार यशायाह की प्रतिज्ञा पूरी होगी कि लँगड़े कूदेंगे, अंधे देखेंगे और शोक मिट जाएगा। चंगाई, पतन से आए शाप पर मसीह के राज्य-अधिकार का स्वाभाविक विस्तार बन जाएगी, जिससे आत्मिक पुनर्जन्म और शारीरिक नवीनीकरण, दोनों में उद्धार की पूर्णता प्रकट होगी। उसके जीवन-उपस्थिति की नदी मंदिर से निकलकर चंगाई और पुनर्स्थापना लाएगी।

सृष्टि का स्वभाव बदल जाएगा

(यशायाह 11:1–16; यशायाह 65:18–25; यशायाह 35:1,2,6,7; रोमियों 8:19-22; आमोस 9:13)

मसीहा के शासन में, सृष्टि पर लगा शाप आंशिक रूप से हट जाएगा,

जिससे पारिस्थितिकी तंत्र परिवर्तित होंगे, भूमि की उर्वरता नवीनीकृत होगी, और मनुष्यों व पशुओं के बीच सुरक्षा स्थापित होगी। यशायाह पशुओं के शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व का वर्णन करता है और सृष्टि को दैवीय व्यवस्था की पुनर्स्थापना के प्रति प्रत्युत्तर देते हुए दिखाता है। दीर्घायु नाटकीय रूप से बढ़ेगी, परिश्रम दमनकारी नहीं बल्कि फलदायी होगा, और पर्यावरण वैसा ही फलेगा जैसा मानव पतन से पहले था। *"तब भेड़िया भेड़ के बच्चे के संग रहा करेगा, और चीता बकरी के बच्चे के साथ बैठा करेगा, और बछड़ा और जवान सिंह और पाला–पोसा हुआ बैल तीनों इकट्ठे रहेंगे, और एक छोटा लड़का उनकी अगुवाई करेगा। गाय और रीछनी मिलकर चरेंगी, और उनके बच्चे इकट्ठे बैठेंगे; और सिंह बैल के समान भूसा खाया करेगा। दूध–पीता बच्चा करैत के बिल पर खेलेगा, और दूध छुड़ाया हुआ लड़का नाग के बिल में हाथ डालेगा। मेरे सारे पवित्र पर्वत पर न तो कोई दु:ख देगा और न हानि करेगा; क्योंकि पृथ्वी यहोवा के ज्ञान से ऐसी भर जाएगी जैसा जल समुद्र में भरा रहता है। "* (यशायाह 11:6–9)।

पृथ्वी पर शांति और स्थिरता–सृष्टि में सामंजस्य

(यशायाह 2:2-4; मीका 4:2-4; यशायाह 11:6-9; भजन संहिता 46:9; होशे 2:18)

"वह जाति जाति का न्याय करेगा, और देश देश के लोगों के झगड़ों को मिटाएगा; और वे अपनी तलवारें पीटकर हल के फाल और अपने भालों को हँसिया बनाएँगे; तब एक जाति दूसरी जाति के विरुद्ध फिर तलवार न चलाएगी, न लोग भविष्य में युद्ध की विद्या सीखेंगे" (यशायाह 2:4)। मसीह के द्वारा राष्ट्रों के बीच धर्मी न्याय लागू किए जाने से वैश्विक युद्ध समाप्त हो जाएगा, शत्रुता का अंत होगा और सच्ची शांति का आगमन होगा। हथियार नष्ट कर दिए जाएंगे और उन्हें कृषि के औज़ारों में बदल दिया जाएगा, जो विनाश से उत्पादन की ओर मानवता के परिवर्तन को दर्शाता है। सामंजस्य केवल राष्ट्रों के बीच

ही नहीं, बल्कि स्वयं प्राकृतिक संसार में भी लौट आएगा, और सृष्टि में शांति के लिए परमेश्वर की मूल योजना पूरी होगी।

निर्माण, रोपण और समृद्धि

(यशायाह 65:21-23; आमोस 9:13-15; यहेजकेल 36:33-36; जकर्याह 8:12; योएल 3:18)

हजार वर्षीय राज्य की पहचान समृद्धि से होगी, क्योंकि लोग अपने परिश्रम के फल का आनंद बिना किसी हानि या अत्याचार के भय के उठाएंगे। परिवार स्थायी घर बनाएंगे, खेत जोतेंगे और अपनी ही उपज से भोजन करेंगे, और आक्रमण या विनाश का कोई डर नहीं होगा। परमेश्वर पृथ्वी को भरपूर आशीष देंगे, जिससे परिश्रम का फल स्थायी लाभ देगा, और सदियों की कमी और अन्याय का उलटफेर होगा।

अविनाशी देह वाले लोग और नाशवान देह वाले लोग

(प्रकाशितवाक्य 20:4-6; 1 कुरिन्थियों 15:50-54; लूका 19:17-19; मत्ती 25:34; जकर्याह 14:16)

हजार वर्षीय राज्य के दौरान दो प्रकार के लोग एक साथ रहेंगे—विश्वासी जो अविनाशी और महिमामय देह धारण करते हैं और मसीह के साथ राज्य करते हैं, और नाशवान लोग जो क्लेश काल से होकर आए हैं या हजार वर्षीय राज्य के दौरान स्वाभाविक रूप से जन्म लेते हैं और वंश बढ़ाते रहते हैं। पवित्र शास्त्र सिखाता है, कि संत मसीह के राज्य का शासन और प्रबंधन करेंगे। स्वाभाविक मनुष्य पूर्ण राज्य के न्याय के अधीन सामान्य मानवीय जीवन जिएंगे।

[**पार्श्व टिप्पणी:** हम जानते हैं, कि संत राज्य के प्रशासन में सहायता करेंगे, परन्तु यह स्पष्ट नहीं है, कि उन संतों की भूमिका क्या होगी जो क्लेश काल से होकर आए हैं, और उन लोगों की भूमिका क्या होगी जो हजार वर्षीय राज्य के दौरान जन्म लेते हैं और प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं। लूका 19:17,19 के अनुसार, कलीसिया युग में

विश्वासयोग्यता का प्रतिफल नगरों पर अधिकार के रूप में दिया जाता है। इसलिए, यदि कोई व्यक्ति क्लेश काल के दौरान विश्वासी बनता है, पशु की छाप को ग्रहण किए बिना अंत तक स्थिर रहता है, और जीवित ही क्लेश काल से निकलकर अपनी स्वाभाविक देह के साथ हजार वर्षीय राज्य में प्रवेश करता है, तो क्या उसे भी नगरों पर अधिकार दिया जाएगा ताकि वह राज्य के प्रशासन में सहायता कर सके? हम इसका कोई निश्चित उत्तर देने में असमर्थ हैं। जो हम जानते हैं वह यह है, कि जो लोग उसके प्रति विश्वासयोग्य रहे, और क्लेश काल से जीवित निकल आए, वे पृथ्वी पर वंश बढ़ाने के लिए स्वाभाविक मनुष्यों के रूप में हजार वर्षीय राज्य में प्रवेश करेंगे।]

हजार वर्षीय राज्य में स्वाभाविक मनुष्य

(जकर्याह 14:16-21; मत्ती 25:31-34; यशायाह 65:20; यशायाह 66:20-23)

क्लेश काल के वे विश्वासी जो बच जाते हैं, स्वाभाविक देह में हजार वर्षीय राज्य में प्रवेश करते हैं और पुनरुत्थित संतों के साथ मसीह के शासन के अधीन रहते हैं। ये नाशवान लोग विवाह करते हैं, संतान उत्पन्न करते हैं, और पृथ्वी को भरते हैं, और प्रतिवर्ष यरूशलेम जाकर राजा की आराधना करते हैं तथा तम्बूओं के पर्व को मानते हैं। उनकी आज्ञाकारिता मसीह के प्रत्यक्ष शासन द्वारा लागू की जाएगी, और आज्ञा के उल्लंघन का परिणाम तुरंत अनुशासन के रूप में होगा, जैसे सूखा पड़ना या आशीष का रोका जाना।

पृथ्वी का पुनर्निर्माण और पुनर्वास

(यशायाह 61:4; यहेजकेल 36:8-11,33-38; आमोस 9:14; जकर्याह 2:4,5)

क्लेश काल और हर-मगिदोन के विनाश के बाद पृथ्वी का नवीनीकरण होगा, और मसीह के शासन के दौरान जन्म लेने वाले मानव परिवारों के द्वारा, वह फिर से आबाद होगी। नगरों का पुनर्निर्माण होगा, उजाड़

भूमि बहाल की जाएगी, और मसीह की सरकार के अधीन धर्मी नेतृत्व के चारों ओर राष्ट्र फिर से स्थापित होंगे। तीव्र जनसंख्या वृद्धि उन क्षेत्रों में मानव बसावट को पुनर्स्थापित करेगी, जो न्याय के कारण उजड़ गए थे।

पापियों को प्रभु की आराधना करना सिखाया जाएगा

(यशायाह 2:2,3; जकर्याह 14:16-19; भजन संहिता 2:8-12; यशायाह 66:23,24; प्रकाशितवाक्य 20:7-9)

यद्यपि शैतान बाँधा गया होगा, फिर भी नाशवान जनसंख्या में पापी मानवीय स्वभाव बना रहेगा, जिससे शिक्षा और अनुशासन आवश्यक होगा। मसीह सब राष्ट्रों को धर्म में शिक्षित करेंगे, क्योंकि वे प्रतिवर्ष यरूशलेम में आराधना करेंगे; फिर भी विद्रोह की संभावना बनी रहेगी, जैसा कि कभी-कभी दंड और हजार वर्षीय राज्य के अंत में शैतान के छोड़े जाने पर होने वाले अंतिम विद्रोह से प्रकट होता है। आराधना सांस्कृतिक जीवन पर प्रधान होगी, क्योंकि प्रभु की व्यवस्था दैनिक जीवन का संचालन करेगी।

दीर्घायु और लंबा जीवन

(यशायाह 65:20-22; यशायाह 33:24; जकर्याह 8:4)

मानव जीवन की अवधि अत्यधिक बढ़ जाएगी, यहाँ तक कि सौ वर्ष की आयु में मरना भी यूवक की मृत्यु के समान समझा जाएगा। रोग, हिंसा और अकाल मृत्यु लगभग समाप्त हो जाएंगे, जिससे परिवार शांति और आशीष में लंबे और फलदायी जीवन का आनंद लेंगे। दीर्घायु मसीह के शासन से होने वाले शारीरिक चंगाई और सृष्टि की जीवन-शक्ति की बहाली दोनों को दर्शाती है।

क्या लोग पूरे 1000 वर्ष तक जीवित रहेंगे?

(यशायाह 65:20-22; प्रकाशितवाक्य 20:4-6)

यद्यपि आयु बहुत बढ़ जाएगी और व्यक्तियों के लिए सदियों तक

जीवित रहना संभव होगा, फिर भी पवित्र शास्त्र यह स्पष्ट रूप से नहीं कहता, कि सभी नाशवान लोग अपने आप पूरे 1,000 वर्ष तक जीवित रहेंगे। यद्यपि बहुत कम हो जाएगा, फिर भी 100 वर्ष की आयु में मरने वाले पापी के शापित होने का उल्लेख यह दर्शाता है, कि हजार वर्षीय राज्य के दौरान पाप और मृत्यु पूरी तरह समाप्त नहीं होंगे, बल्कि बहुत सीमित कर दिए जाएंगे। यशायाह संकेत देता है, कि पापियों के लिए मृत्यु अब भी संभव होगी, यद्यपि बहुत विलंब से, जिससे यह पता चलता है, कि आज्ञाकारिता का दीर्घायु से संबंध है। यद्यपि यह पवित्र शास्त्र से निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता, कि व्यक्ति पूरे 1,000 वर्ष तक जीवित रहेंगे या नहीं, मुख्य बल इस बात पर है कि हजार वर्षीय राज्य के दौरान परमेश्वर के लोगों के लिए भरपूर जीवन, शांति और आशीष होगी, और यह संभव है, कि बहुत से लोग सदियों तक या लगभग 1,000 वर्ष तक जीवित रहें। परन्तु अविनाशी संत बिना मृत्यु के, पूरे हजार वर्षीय राज्य तक राज्य करेंगे।

इस्राएल, मिस्र और अश्शूर–भविष्य की भविष्यवाणी

(यशायाह 19:18-22,23-25; जकर्याह 8:20-23; मीका 4:1-3)

हजार वर्षीय राज्य की सबसे उल्लेखनीय भविष्यवाणियों में से एक में, मिस्र और अश्शूर (जिन्हें अक्सर आधुनिक अरबी और मध्य-पूर्वी क्षेत्रों से जोड़ा जाता है) को इस्राएल के साथ मसीह के शासन के अधीन समान वाचा-साझेदारों के रूप में आराधना करते हुए वर्णित किया गया है। शांति का एक विशेष “राजमार्ग” इन प्राचीन प्रतिद्वंद्वी राष्ट्रों को प्रभु की आराधना और सेवा में एकजुट करता है। यह भविष्यवाणी ऐतिहासिक शत्रुओं पर मसीह के सार्वभौमिक राज्य को प्रकट करती है और परमेश्वर के राज्य के द्वारा लाई गई अंतरराष्ट्रीय मेल-मिलाप को दर्शाती है।

हजार वर्षीय राज्य के अंत में

(प्रकाशितवाक्य 20:7-9; यशायाह 11:4-9; यिर्मयाह 17:9; प्रकाशितवाक्य 20:4-6; मत्ती 24:14)

मसीह के 1,000 वर्षों के शासन की समाप्ति पर, हम यह देखते हैं कि यीशु के अधीन सदियों तक पूर्ण शांति, न्याय और धर्मी शासन के बावजूद (यशायाह 11:4-9; प्रकाशितवाक्य 20:4-6), हजार वर्षीय राज्य के दौरान जन्म लेने वाले बहुत से लोग अब भी शैतान के धोखे के प्रति संवेदनशील रहते हैं। यह दुष्टात्मिक छल की सामर्थ्य को भी प्रकट करता है।

शैतान की अस्थायी रिहाई और अंतिम विनाश

(प्रकाशितवाक्य 20:7-10; मत्ती 13:41-43; इब्रानियों 2:14; प्रकाशितवाक्य 19:20)

हजार वर्षीय राज्य के बाद, शैतान को उसकी कैद से थोड़े समय के लिए छोड़ा जाता है, ताकि वह राष्ट्रों को अंतिम बार धोखा दे सके। पवित्र शास्त्र यह नहीं बताता, कि यह *"थोड़ा समय"* (प्रकाशितवाक्य 20:3) कितना लंबा होगा। वह पृथ्वी से विद्रोहियों को—प्रतीकात्मक रूप से "गोग और मागोग" कहलाने वालों को—इकट्ठा करता है, ताकि वे यरूशलेम और प्रिय नगर पर चढ़ाई करें। यह विद्रोह शीघ्र ही समाप्त कर दिया जाता है, जब स्वर्ग से आग गिरती है, और शैतान को सदा के लिए आग की झील में डाल दिया जाता है, जहाँ वह पशु और झूठे भविष्यद्वक्ता के साथ अनन्त दंड भोगता है। यह घटना सदा के लिए सभी शैतानी प्रभावों का अंत करती है और धर्म के अनन्त राज्य का आरम्भ करती है।

अविश्वासियों का पुनरुत्थान

(प्रकाशितवाक्य 20:11-13; दानिय्येल 12:2; यूहन्ना 5:28,29; प्रेरितों के काम 24:15)

शैतान की हार के बाद, हर युग के सभी अविश्वासी मरे हुओं का

पुनरुत्थान होता है, ताकि वे महान श्वेत सिंहासन के न्याय के सामने परमेश्वर के सम्मुख खड़े हों। यह दूसरा पुनरुत्थान है, जो धर्मियों के पहले पुनरुत्थान से भिन्न है (प्रकाशितवाक्य 20:4-6)। वे अनन्त जीवन के लिए नहीं, बल्कि परमेश्वर के सामने न्याय का सामना करने के लिए जिलाए जाते हैं।

महान श्वेत सिंहासन का न्याय

(प्रकाशितवाक्य 20:11-15; दानिय्येल 7:9,10; मत्ती 25:41,46; रोमियों 14:10-12; इब्रानियों 9:27)

इस अंतिम न्याय में, परमेश्वर की भयानक उपस्थिति के कारण आकाश और पृथ्वी भाग जाते हैं, और हर अविश्वासी व्यक्ति उसके सामने खड़ा होता है। कर्मों की पुस्तकें खोली जाती हैं (मानवीय कार्यों का पूर्ण अभिलेख), और जीवन की पुस्तक अनन्त गन्तव्य का निर्णय करती है। क्योंकि उनके नाम उसमें लिखे नहीं पाए जाते, इसलिए प्रत्येक व्यक्ति का न्याय उसके कामों के अनुसार किया जाता है। हमारे काम अपर्याप्त ठहरते हैं, और कोई भी मनुष्य अपने कामों के द्वारा उद्धार नहीं पा सकता; इसलिए प्रत्येक अविश्वासी को आग की झील में डाल दिया जाता है—यही "दूसरी मृत्यु" है। इस न्याय में मृत्यु और अधोलोक का सदा के लिए अंत कर दिया जाता है। *"फिर मैं ने एक बड़ा श्वेत सिंहासन और उसको, जो उस पर बैठा हुआ है, देखा; उसके सामने से पृथ्वी और आकाश भाग गए, और उनके लिये जगह न मिली। फिर मैं ने छोटे बड़े सब मरे हुओं को सिंहासन के सामने खड़े हुए देखा, और पुस्तकें खोली गईं; और फिर एक और पुस्तक खोली गई, अर्थात् जीवन की पुस्तक; और जैसा उन पुस्तकों में लिखा हुआ था, वैसे ही उनके कामों के अनुसार मरे हुओं का न्याय किया गया। समुद्र ने उन मरे हुओं को जो उसमें थे दे दिया, और मृत्यु और अधोलोक ने उन मरे हुओं को जो उनमें थे दे दिया; और उन में से हर एक के कामों के अनुसार उनका न्याय किया गया। मृत्यु और अधोलोक आग की झील*

में डाले गए। यह आग की झील दूसरी मृत्यु है; और जिस किसी का नाम जीवन की पुस्तक में लिखा हुआ न मिला, वह आग की झील में डाला गया।" (प्रकाशितवाक्य 20:11-15)

आग के द्वारा नवीनीकरण–नया आकाश और नई पृथ्वी

(2 पतरस 3:8-14; यशायाह 65:17; यशायाह 66:22; प्रकाशितवाक्य 21:1-5; प्रकाशितवाक्य 22:3-5; रोमियों 8:18-23; इब्रानियों 12:26,27)

अंतिम न्याय के बाद, यह सम्भावना है कि सभी विश्वासी परमेश्वर के साथ स्वर्ग में, स्वर्गीय यरूशलेम नगर में हों। उस समय परमेश्वर सम्पूर्ण सृष्टि को आग के द्वारा नया करते हैं। वर्तमान आकाश और पृथ्वी नष्ट हो जाते हैं और उनके स्थान पर नया आकाश और नई पृथ्वी स्थापित होती है, जो पाप, मृत्यु, भ्रष्टता और शोक से मुक्त होती है। नई पृथ्वी धर्म का अनन्त निवास स्थान बनती है, जहाँ परमेश्वर अपने छुड़ाए हुए लोगों के साथ सदा-सर्वदा वास करते हैं।

12
नया आकाश और नई पृथ्वी
(प्रकाशितवाक्य 21 और 22)

प्रकाशितवाक्य 21: नया यरूशलेम

परमेश्वर एक नया आकाश और एक नई पृथ्वी स्थापित करते हैं। पवित्र नगर, पवित्र नया यरूशलेम, सभी छुड़ाए गए लोगों सहित, नई पृथ्वी पर स्थापित किया जाता है। यह वह स्थान है जहाँ अब परमेश्वर स्वयं मनुष्यों के साथ वास करते हैं। एक ऊँची घोषणा यह घोषित करती है, कि परमेश्वर का निवास अब स्थायी रूप से मनुष्यजाति के साथ है, और इस प्रकार ईश्वरीय संगति के हर वाचा-वचन की पूर्ति होती है।

सब आँसू और पीड़ा सदा के लिए मिटा दिए जाते हैं। परमेश्वर सब कुछ नया कर देते हैं। हम जीवन के जल को सेंत-सेंत पीते हैं और इन सब बातों के वारिस बनते हैं।

यूहन्ना को नए यरूशलेम की एक झलक दिखाई जाती है, जो परमेश्वर की महिमा से भरा और प्रकाश से परिपूर्ण नगर है।

संख्या 12, जो 12 नींवों में दिखाई देती है, जिनके नाम 12 प्रेरितों पर हैं, और 12 फाटकों में जिनके नाम इस्राएल के गोत्रों पर हैं, 12 स्वर्गदूत, 12 रत्न, ये सब दैवीय शासन, व्यवस्था और पूर्णता का प्रतीक हैं, यह पुष्टि करते हुए कि परमेश्वर का अनन्त राज्य पुराने और नए वाचा के छुटकारे को पूरी तरह एक महिमामय संरचना में एक कर देता है।

नगरपनाह की नींव के पत्थर बहुमूल्य रत्नों से सुसज्जित हैं, जो दैवीय सौंदर्य, पवित्रता, स्थायित्व और महिमा को प्रतिबिंबित करते हैं। ये पत्थर महायाजक की छातीपट्टी पर लगे 12 बहुमूल्य पत्थरों में भी देखे जाते हैं (निर्गमन 28:17–20; निर्गमन 39:10–14), जो इस्राएल के 12 गोत्रों का प्रतिनिधित्व करते थे, यह दर्शाते हुए कि सभी युगों के छुड़ाए गए लोग परमेश्वर के सामने सदा स्मरण में हैं। उनके रंग भी परमेश्वर की बहुरूपी महिमा का प्रतीक हैं जो उसके पवित्र लोगों के द्वारा प्रकट होती है (यशायाह 60:1–11; मलाकी 3:17)।

नगर की सड़कें शुद्ध सोने की हैं। जो वस्तु पृथ्वी पर बहुत मूल्यवान मानी जाती है, वह स्वर्ग में साधारण है, क्योंकि वहाँ उससे कहीं अधिक मूल्य की बातें हैं।

इस अनन्त नगर में कोई मंदिर नहीं है, क्योंकि प्रभु परमेश्वर सर्वशक्तिमान और मेम्ना ही उसका मंदिर और उसका प्रकाश हैं। जातियाँ इसी दिव्य प्रकाश में चलती हैं और पृथ्वी के राजा अपना वैभव नगर में लाते हैं, जो यह दर्शाता है, कि परमेश्वर के अनन्त राज्य के अधीन मानव संस्कृति की पुनर्स्थापना और पवित्रीकरण हुए हैं। वहाँ न पाप है, न अशुद्धता।

प्रकाशितवाक्य 22: जीवन की नदी और यीशु का शीघ्र आगमन

प्रकाशितवाक्य 22 पवित्र नगर नए यरूशलेम के वर्णन को आगे बढ़ाता है। परमेश्वर और मेम्ने के सिंहासन से निकलने वाली जीवन के जल की नदी, जीवन के वृक्ष को सींचती है; वह निरन्तर फल लाता है और उसके पत्ते जातियों के चंगे होने के लिए हैं। श्राप / पतन सदा के लिए हटा दिया गया है और सृष्टि का पुनर्स्थापन हो चुका है। हम परमेश्वर का मुख देखेंगे, उनके नाम को अपने माथों पर धारण करेंगे और उनके साथ सदा राज्य करेंगे।

प्रकाशितवाक्य 22 मसीह के आगमन के लिए तैयार रहने की पुकार के साथ समाप्त होता है।

स्वर्गदूत इस बात की पुष्टि करता है, कि ये प्रकाशन विश्वास करने योग्य है और शीघ्र होने वाले हैं, और यीशु बार-बार यह घोषणा करता है, *"देख, मैं शीघ्र आने वाला हूँ"*।

प्रकाशितवाक्य 22:7,20
7 "देख, मैं शीघ्र आनेवाला हूँ! धन्य है वह, जो इस पुस्तक की भविष्यद्वाणी की बातें मानता है।"
20 जो इन बातों की गवाही देता है वह यह कहता है, "हाँ, मैं शीघ्र आनेवाला हूँ।" आमीन। हे प्रभु यीशु आ!

इस पुस्तक के अध्याय 6 से 12 तक, हम प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के माध्यम से यात्रा कर चुके हैं, और इसे एक रूपरेखा के रूप में उपयोग करते हुए कलीसिया के उठा लिए जाने से लेकर, नए आकाश और नई पृथ्वी तक की प्रमुख घटनाओं के क्रमिक प्रकट होने को उजागर किया है।

हम कलीसिया के उठा लिए जाने के कितने निकट हैं? हम केवल उन चिन्हों की ओर संकेत कर सकते हैं, जिन्हें बाइबल हमारे सामने प्रस्तुत करती है। हम इसे अगले और अंतिम अध्याय में देखेंगे।

13
बाइबल की भविष्यद्वाणियाँ और अंत समय के चिन्ह

मत्ती 24:3
जब वह जैतून पहाड़ पर बैठा था, तो चेलों ने एकान्त में उसके पास आकर कहा, "हमें बता कि ये बातें कब होंगी? तेरे आने का और जगत के अन्त का क्या चिह्न होगा?"

इस पुस्तक 'अंतिम समय' के अंतिम अध्याय में, हम उन महत्वपूर्ण चिन्हों को उजागर करते हैं, जो हमें यह समझने में सहायता करते हैं, कि हम परमेश्वर की समय-सारिणी में कहाँ खड़े हैं। यद्यपि हम दिन और घड़ी को नहीं जानते, फिर भी हम समय के चिन्हों के विषय में जागरूक हो सकते हैं और यह पहचान सकते हैं, कि हम कलीसिया के उठा लिए जाने के बहुत निकट हैं। वे भविष्यद्वाणी संबंधी घटनाएँ जो पहले पूरी नहीं हो सकती थीं, अब पूरी हो सकती हैं।

1) इस्राएल का एक राष्ट्र के रूप में स्थापित होना

परमेश्वर ने अब्राहम से प्रतिज्ञा की, कि वह उसे एक महान जाति बनाएँगे (उत्पत्ति 12:2,3) और कनान देश उसे सदा के अधिकार के रूप में देंगे। (उत्पत्ति 17:8)। प्रतिज्ञा किए हुए देश की सीमाएँ उत्पत्ति 15:18–21 में पाई जाती हैं।

परमेश्वर ने यह भी प्रतिज्ञा की थी, कि वे फिर से एक राष्ट्र के रूप में इकट्ठे किए जाएँगे।

यिर्मयाह 31:10
"हे जाति जाति के लोगो, यहोवा का वचन सुनो, और दूर दूर के द्वीपों में भी

इसका प्रचार करो; कहो, 'जिसने इस्राएलियों को तितर–बितर किया था, वही उन्हें इकट्ठे भी करेगा, और उनकी ऐसी रक्षा करेगा जैसी चरवाहा अपने झुण्ड की करता है।'

यहेजकेल 37:12,21,22
12 इस कारण भविष्यद्वाणी करके उन से कह, परमेश्वर यहोवा यों कहता है: हे मेरी प्रजा के लोगो, देखो, मैं तुम्हारी कबरें खोलकर तुम को उन से निकालूँगा, और इस्राएल के देश में पहुँचा दूँगा।
21 तब तू उन लोगों से कह, परमेश्वर यहोवा यों कहता है: देखो, मैं इस्राएलियों को उन जातियों में से लेकर जिन में वे चले गए हैं, चारों ओर से इकट्ठा करूँगा; और उनके निज देश में पहुँचाऊँगा।
22 मैं उनको उस देश अर्थात् इस्राएल के पहाड़ों पर एक ही जाति कर दूँगा; ...

586 ईसा-पूर्व में, जब नबूकदनेस्सर ने यरूशलेम को नष्ट किया, तब से लेकर 1948 तक, इस्राएल को अपना देश पुनः प्राप्त करने में 2,534 वर्ष लगे। 14 मई 1948 को, इस्राएल अंततः एक राष्ट्र बना। इस्राएल का एक राष्ट्र के रूप में स्थापित होना, अन्त समय की ओर बढ़ते हुए एक महत्वपूर्ण भविष्यद्वाणी संबंधी घटना है। यह पहले ही घट चुका है और एक तरह से हम अंतिम घड़ी में प्रवेश कर चुके हैं।

2) यरूशलेम का इस्राएल द्वारा लिया जाना और युद्ध का केन्द्र बनना

5–8 जून 1967 को, छह-दिवसीय युद्ध के दौरान, यहूदियों ने यरूशलेम को पुनः अपने अधिकार में ले लिया। यहूदियों को यरूशलेम वापस लेने में 2,553 वर्ष लगे।

राजा दाऊद के समय से लेकर आज तक, इस्राएल की भूमि, और विशेष रूप से यरूशलेम नगर, पूरे संसार में सबसे अधिक अस्थिर राजनीतिक, धार्मिक और सैन्य समस्याओं का केन्द्र रहा है। यरूशलेम ने 46 घेराबंदियाँ झेली हैं, 32 बार आंशिक विनाश देखा है, 5 बार पूरी तरह जलाया गया है, और अनेक युद्धों का साक्षी रहा है। यह स्थिति

और भी तीव्र होती जाएगी। जैसे-जैसे हम अंतिम चरणों की ओर बढ़ते हैं, इस्राएल और यरूशलेम मध्य पूर्व में संघर्ष का केन्द्र बनेंगे। अन्तिम दिनों में सब जातियाँ इस्राएल के विरुद्ध हो जाएँगी और पूरा संसार यरूशलेम पर केन्द्रित होगा। यह संभव है, कि पलिस्तीन का मुद्दा और मंदिर पर्वत के चारों ओर का संघर्ष, इस्राएल पर डाले जाने वाले वैश्विक दबाव को और अधिक बढ़ा दे।

जकर्याह 12:1–3
1 इस्राएल के विषय में यहोवा का कहा हुआ भारी वचन: यहोवा जो आकाश का ताननेवाला, पृथ्वी की नींव डालनेवाला और मनुष्य की आत्मा का रचनेवाला है, उसकी यह वाणी है:
2 "देखो, मैं यरूशलेम को चारों ओर की सब जातियों के लिये लडखड़ा देने के मद का कटोरा ठहरा दूँगा; और जब यरूशलेम घेर लिया जाएगा तब यहूदा की दशा भी ऐसी ही होगी।
3 उस समय पृथ्वी की सारी जातियाँ यरूशलेम के विरुद्ध इकट्ठी होंगी, तब मैं उसको इतना भारी पत्थर बनाऊँगा, कि जो उसको उठाएँगे वे बहुत ही घायल होंगे।

3) तीसरा मंदिर–पुनर्निर्माण के लिए तैयार

पुराना और नया नियम इस बात की पुष्टि करते हैं कि मंदिर पर्वत पर एक नया मंदिर फिर से बनाया जाएगा। हम इसे **तीसरा मंदिर** कहते हैं। यह तीसरा मंदिर क्लेश काल के समय मसीह-विरोधी द्वारा अपवित्र किया जाएगा। क्लेश काल के बाद और सहस्राब्दी के आरम्भ में, इस मंदिर को शुद्ध किया जाएगा, पवित्र ठहराया जाएगा और पुनर्स्थापित किया जाएगा। इसे हम **सहस्राब्दी मंदिर** कहते हैं।

हमने इस पुस्तक के अध्याय 9 में चर्चा की है, कि यहूदी, मंदिर पर्वत पर तीसरे मंदिर के पुनर्निर्माण के लिए पूरी तरह तैयार हैं। यह तथ्य कि तीसरे मंदिर के निर्माण और मंदिर की आराधना को पुनः आरम्भ करने के लिए सारी तैयारियाँ पूरी हैं, इस बात का एक और महत्वपूर्ण चिन्ह है, कि हम कलीसिया के उठा लिए जाने के बहुत निकट हैं।

4) 10 शासकों के गठबंधन की संभावना

हमने इसे पहले के अध्यायों में विस्तार से समझाया है और यहाँ इसका संक्षिप्त उल्लेख कर रहे हैं।

दानिय्येल 7:7,8

7 फिर इसके बाद मैं ने स्वप्न में दृष्टि की और देखा, कि एक चौथा जन्तु है जो भयंकर और डरावना और बहुत सामर्थी है; और उसके बड़े बड़े लोहे के दाँत हैं; वह सब कुछ खा डालता है और चूर चूर करता है, और जो बच जाता है, उसे पैरों से रौंदता है। वह सब पहले जन्तुओं से भिन्न है; और उसके दस सींग हैं।
8 मैं उन सींगों को ध्यान से देख रहा था तो क्या देखा कि उनके बीच एक और छोटा सा सींग निकला, और उसके बल से उन पहले सींगों में से तीन उखाड़े गए; फिर मैं ने देखा कि इस सींग में मनुष्य की सी आँखें, और बड़ा बोल बोलनेवाला मुँह भी है।

दानिय्येल 7:7,8 अंतिम विश्व साम्राज्य के उदय और उसी के भीतर से मसीह-विरोधी के प्रकट होने का वर्णन करता है—यह अन्त समय की राजनीतिक शक्ति के विषय में पुराने नियम की सबसे स्पष्ट भविष्यद्वाणियों में से एक है। 10 सींग उन 10 शासकों (नेताओं) का प्रतीक हैं, जो संशोधित रोमी साम्राज्य के अंतिम रूप से उत्पन्न होते हैं; ये वे देश हैं जो पूर्व रोमी साम्राज्य के क्षेत्र में स्थित हैं, अर्थात् आज का यूरोप और भूमध्यसागरीय क्षेत्र। ये 10 नेता (राष्ट्र) राजनीतिक शक्तियों का एक गठबंधन बनाते हैं और अस्थायी रूप से उस केंद्रीय नेता के साथ अधिकार साझा करते हैं, जो बाद में प्रकट होता है (प्रकाशितवाक्य 17:12,13)।

"छोटा सींग" मसीह-विरोधी का एक स्पष्ट भविष्यद्वाणी चित्र है, जो 10-राजाओं के गठबंधन की राजनीतिक संरचना के भीतर से उठता है। वह सत्ता को एकत्र करने के लिए 10 में से तीन राजाओं को बलपूर्वक अधीन कर लेता है। जब हम यूरोप और भूमध्यसागरीय क्षेत्र में राष्ट्रों के आपसी संबंधों, इस्राएल के साथ उनके संबंधों और मध्य-पूर्व की समस्याओं को देखते हैं, तो हमें दानिय्येल की 10-नेता (राष्ट्र)

गठबंधन संबंधी भविष्यद्वाणियों के वास्तविकता बनने की संभावना के प्रति गहरी जागरूकता होती है।

5) वैश्विक आर्थिक प्रणाली की संभावना

प्रकाशितवाक्य 13:1–6,13–16 में, हमें इस बात का स्पष्ट वर्णन मिलता है, कि मसीह-विरोधी कैसे एक वैश्विक आर्थिक प्रणाली के माध्यम से, पशु की छाप को वैश्विक पहचान के रूप में उपयोग करते हुए, अपना प्रभाव स्थापित करेंगे। राष्ट्रों के बीच हो रहे राजनीतिक उथल-पुथल के बीच, यह संभव है, कि बहुत से देश एक ऐसे शक्तिशाली नेता के साथ स्वयं को जोड़ लें, जो हम सबके सामने खड़ी अनेक चुनौतियों का समाधान देने का वादा करता है। यह नेता राष्ट्रों पर प्रभाव डालने के लिए एक-विश्व आर्थिक प्रणाली और पहचान प्रणाली का उपयोग करेगा। हमारे पास जो तकनीक उपलब्ध है, उसे देखते हुए वित्तीय लेन-देन और व्यापार के लिए एक सार्वभौमिक पहचान प्रणाली स्थापित करना बहुत आसान है, ठीक उसी प्रकार जैसा मसीह-विरोधी "पशु की छाप" के साथ करेगा।

6) रूस, ईरान, तुर्की, लीबिया, इथियोपिया, सूडान

रूस के वर्तमान राजनीतिक संबंधों को ईरान, तुर्की, लीबिया, इथियोपिया और सूडान के साथ देखना रोचक है। रूस-सैन्य, ऊर्जा और कूटनीतिक सहभागिताओं के मिश्रण के माध्यम से मध्य-पूर्व और अफ्रीका के प्रमुख देशों, ईरान, तुर्की, लीबिया, इथियोपिया और सूडान के साथ अपने संबंधों को रणनीतिक रूप से गहरा कर रहा है। रूस का लक्ष्य अपने प्रभाव का विस्तार करना, ऊर्जा संसाधनों तक पहुँच सुरक्षित करना, और इन क्षेत्रों में पश्चिमी प्रभुत्व को चुनौती देना है। ये सब बातें यहेजकेल 38 और 39 में वर्णित "गोग और मगोग के युद्ध" की पूर्ति की ओर ले जा रही हैं। (इसका वर्णन पहले अध्याय 10 में किया जा चुका है और यहाँ दोहराया नहीं जाएगा)।

7) शांति वार्ताएँ और भूमि के विभाजन की योजना

मध्य-पूर्व संकट में शांति लाने के लिए कई प्रयास किए गए हैं। ऐसा प्रतीत होता है, कि यह दबाव और अधिक बढ़ रहा है, और शांति स्थापित करने के लिए इस्राएल पर अपने क्षेत्र को छोड़ने का दबाव डाला जा रहा है। योएल ने भविष्यद्वाणी की थी, कि जातियाँ देश को बाँट देंगी (योएल 3:1,2)। और यही कारणों में से एक हो सकता है, जो अन्तिम युद्ध, अर्थात् हरमगिदोन के युद्ध, की ओर ले जाएगा।

8) कलीसिया का परिपक्वता की ओर आना

प्रभु यीशु एक ऐसी कलीसिया के लिए वापस आ रहे हैं, जो परिपक्व है, जिसने परमेश्वर के पुत्र की पहचान को प्राप्त कर लिया है (इफिसियों 4:11–15), जो बिना दाग या झुर्री के है (इफिसियों 5:25–27)। वह स्वर्ग में तब तक ठहरा रहेगा जब तक सब बातों का पुनःस्थापन न हो जाए (प्रेरितों के काम 3:19–21)—और उनमें से एक है, कलीसिया का अपनी मूल महिमा में पुनःस्थापित होना। कलीसिया के इतिहास को देखते हुए और यह देखते हुए कि कलीसिया आज कहाँ है, हम जानते हैं, कि हम महिमा से महिमा की ओर बढ़ रहे हैं और प्रभु के आगमन के बहुत निकट हैं।

9) सुसमाचार का राष्ट्रों तक पहुँचना

मत्ती 24:14
और राज्य का यह सुसमाचार सारे जगत *(एथनोस = जाति, गोत्र, लोग)* **में प्रचार किया जाएगा, कि सब जातियों पर गवाही हो, तब अन्त आ जाएगा।**

हम पहले से कहीं अधिक इस बात के निकट हैं, कि सुसमाचार हर जाति, हर गोत्र और हर लोगों तक पहुँचे, और इस कार्य को पूरा होते देखें।

10) कलीसिया पर उत्पीड़न में वृद्धि

लूका 21:12,13

12 परन्तु इन सब बातों से पहले वे मेरे नाम के कारण तुम्हें पकड़ेंगे, और सताएँगे, और पंचायतों में सौंपेंगे, और बन्दीगृह में डलवाएँगे, और राजाओं और हाकिमों के सामने ले जाएँगे।
13 पर यह तुम्हारे लिये गवाही देने का अवसर हो जाएगा।

यह वैश्विक स्तर पर हो रहा है और फिर से इस बात का संकेत है कि कलीसिया का उठा लिया जाना निकट है।

11) धोखा, वैश्विक आत्मिकता और झूठी आत्मिकता

मत्ती 24:4,5

4 यीशु ने उनको उत्तर दिया, "सावधान रहो! कोई तुम्हें न भरमाने पाए,
5 क्योंकि बहुत से ऐसे होंगे जो मेरे नाम से आकर कहेंगे, 'मैं मसीह हूँ', और बहुतों को भरमाएँगे।

1 तीमुथियुस 4:1,2

1 परन्तु आत्मा स्पष्टता से कहता है कि आनेवाले समयों में कितने लोग भरमानेवाली आत्माओं, और दुष्टात्माओं की शिक्षाओं पर मन लगाकर विश्वास से बहक जाएँगे।
2 यह उन झूठे मनुष्यों के कपट के कारण होगा, जिनका विवेक मानो जलते हुए लोहे से दागा गया है,

यह पहला चिन्ह था, जिसका उल्लेख यीशु ने किया—झूठे मसीहों और झूठे भविष्यद्वक्ताओं का उदय, जो बहुतों को भटका देंगे। इसके साथ-साथ, हम पंथों, झूठे धर्मों और हर प्रकार की विचारधाराओं में भी वृद्धि देख रहे हैं, जो लोगों को विश्वास से दूर खींच ले जा रही हैं।

12) ज्ञान और यात्रा में विस्फोटक वृद्धि

दानिय्येल 12:4

परन्तु हे दानिय्येल, तू इस पुस्तक पर मुहर करके इन वचनों को अन्त समय तक के लिये बन्द रख। बहुत से लोग पूछ–पाछ और ढूँढ़–ढाँढ़ करेंगे, और इस

से ज्ञान बढ़ भी जाएगा।"

ज्ञान का विस्फोट और यात्रा में अत्यधिक वृद्धि, वह चिन्ह है, जिसका उल्लेख स्वर्गदूत गब्रिएल ने दानिय्येल से किया था। यह महत्वपूर्ण है, क्योंकि यही राष्ट्रों पर प्रभाव और नियंत्रण स्थापित करने की कुंजी है, जो एक विश्व-शासक और एक-विश्व सरकार के लिए मार्ग प्रशस्त करती है। यह हमारे समय में पहले से कहीं अधिक हो रहा है। जानकारी अत्यधिक तेजी से बढ़ रही है और जानकारी तक पहुँच अत्यन्त सहज होती जा रही है।

जबकि शेष चिन्ह 13–17 "सदैव" होते रहे हैं, जैसे-जैसे हम प्रभु के लौटने के और निकट आते हैं, हम इस प्रकार की घटनाओं की संख्या और उनकी तीव्रता, दोनों में वृद्धि की अपेक्षा कर सकते हैं।

13) वैश्विक राजनीतिक परिस्थितियाँ

लूका 21:9,10

9 जब तुम लड़ाइयों और बलवों की चर्चा सुनो तो घबरा न जाना, क्योंकि इनका पहले होना अवश्य है; परन्तु उस समय तुरन्त अन्त न होगा।"
10 तब उसने उनसे कहा, "जाति पर जाति और राज्य पर राज्य चढ़ाई करेगा,

युद्धों में और युद्धों की खबरों में वृद्धि (मत्ती 24:6, मरकुस 13:7, लूका 21:9,10)।

14) लोगों के हृदय में–भय, घृणा, आतंक, निराशा

लूका 21:25,26

25 ...और पृथ्वी पर देश–देश के लोगों को संकट होगा, और वे घबराएँगे
26 ...भय के कारण लोगों के जी में जी न रहेगा...।"

जातियों में संकट और लोगों के हृदयों का भय से व्याकुल होना। मानसिक स्वास्थ्य और भलाई एक प्रमुख मुद्दा बन गए हैं, और यह भय, निराशा और अन्य भावनात्मक रूप से प्रभावित करने वाले तत्वों

में वृद्धि का संकेत है।

15) मौसम और भू-भौतिक परिस्थितियाँ

लूका 21:11
और बड़े–बड़े भूकम्प होंगे, और जगह–जगह अकाल और महामारियाँ पड़ेंगी, और आकाश से भयंकर बातें और बड़े–बड़े चिह्न प्रगट होंगे।

विश्व स्तर पर भूकम्पों में वृद्धि और कठिन मौसम परिस्थितियाँ, साथ ही आकाश में घटने वाली घटनाएँ।

16) महामारियाँ, रोग और विपत्तियाँ

लूका 21:11
और बड़े–बड़े भूकम्प होंगे, और जगह–जगह अकाल और महामारियाँ पड़ेंगी, और आकाश से भयंकर बातें और बड़े–बड़े चिह्न प्रगट होंगे।

अकालों, महामारियों, महामारी फैलने वाली विपत्तियों और रोगों में वृद्धि, अर्थात् कीटों के कारण उत्पन्न होने वाली घातक बीमारियाँ।

17) लोगों की नैतिक स्थिति

मत्ती 24:12,37
12 अधर्म के बढ़ने से बहुतों का प्रेम ठण्डा पड़ जाएगा,
37 जैसे नूह के दिन थे, वैसा ही मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा।

पाप और अधार्मिकता में वृद्धि। जैसे नूह के दिनों में था—अति भोजन, मद्यपान, अनैतिकता, भ्रष्टाचार, हिंसा (मत्ती 24:37; लूका 17:28,30; उत्पत्ति 6:11; 2 तीमुथियुस 3:1–5)।

एक पीढ़ी इन सब बातों को देखेगी

मत्ती 24:32–34
32 “अंजीर के पेड़ से यह दृष्टान्त सीखो: जब उसकी डाली कोमल हो जाती और पत्ते निकलने लगते हैं, तो तुम जान लेते हो कि ग्रीष्म काल निकट है।

33 इसी रीति से जब तुम इन सब बातों को देखो, तो जान लो कि वह निकट है, वरन् द्वार ही पर है।
34 मैं तुम से सच कहता हूँ कि जब तक ये सब बातें पूरी न हो लें, तब तक इस पीढ़ी का अन्त नहीं होगा।

प्रभु यीशु ने कहा कि जब अन्त समय के चिन्ह अपनी पूर्णता में वास्तव में प्रकट होने लगते हैं, तब वह अन्तिम पीढ़ी मसीह के लौटने से पहले समाप्त नहीं होगी।

तैयार रहो, क्योंकि हम नहीं जानते कि कब!

1 यूहन्ना 3:2,3
2 हे प्रियो, अब हम परमेश्वर की सन्तान हैं, और अभी तक यह प्रगट नहीं हुआ कि हम क्या कुछ होंगे! इतना जानते हैं कि जब वह प्रगट होगा तो हम उसके समान होंगे, क्योंकि उसको वैसा ही देखेंगे जैसा वह है।
3 और जो कोई उस पर यह आशा रखता है, वह अपने आप को वैसा ही पवित्र करता है जैसा वह पवित्र है।

आप परमेश्वर के राज्य के लिए क्या कर रहे हैं? जिन समयों में हम जी रहे हैं, उन्हें जानते हुए आप अपना जीवन कैसे जी रहे हैं? क्या आप “उठा लिए जाने के लिए तैयार” जीवन जी रहे हैं?

संदर्भ सूची

जैक वैन इम्पे. 1982. *रिवेलेशन रिवील्ड*

जैक वैन इम्पे. 1995. *डैनियल: फाइनल एंड टाइम मिस्ट्रीज़ अनसील्ड*

पेन्टेकोस्ट, जे. ड्वाइट. 1958. *थिंग्स टू कम*

ऑनलाइन स्रोत

रीज़न्स टू बिलीव, "रीज़न्स टू बिलीव–होम," अगस्त 8, 2025, https://reasons.org/.

"ऑर्गनाइज़ेशन ऑफ़ इस्लामिक कोऑपरेशन," n.d., https://oic-oci.org/.

"इज़राइली–पैलेस्टिनियन कॉन्फ्लिक्ट | ग्लोबल कॉन्फ्लिक्ट ट्रैकर," ग्लोबल कॉन्फ्लिक्ट ट्रैकर, n.d., https://www.cfr.org/global-conflict-tracker/conflict/israeli-palestinian-conflict

ऑनलाइन हमसे जुड़ें
(JOIN US ONLINE)

अंग्रेजी
(ENGLISH)
https://youtube.com/allpeopleschurchbangalore
https://instagram.com/allpeopleschurchbangalore
https://facebook.com/apcwo

https://youtube.com/apcbiblecollege
https://instagram.com/apcbiblecollege

https://youtube.com/APCMusicindia

https://www.youtube.com/@apc-free-christian-books

https://youtube.com/@ChrysalisLifeCounseling
https://instagram.com/ChrysalisLifeCounseling

हिंदी
(HINDI)
https://youtube.com/APCHindi
https://www.instagram.com/apc_bangalore_hindi

क्या आप उस परमेश्वर को जानते हैं जो आपसे प्रेम करता है?

2000 साल पहले, परमेश्वर इस संसार में मनुष्य बनकर आया। उसका नाम यीशु है। उसने पूर्ण रूप से निष्पाप जीवन बिताया। यीशु देहधारी परमेश्वर था, इसलिए जो कुछ उसने कहा और किया, उसके द्वारा उसने परमेश्वर को हम पर प्रगट किया। जिन वचनों को उसने कहा, वे परमेश्वर के वचन थे। जिन कामों को उसने किया, परमेश्वर के कार्य थे। यीशु ने इस पृथ्वी पर कई सामर्थ के काम किए। उसने बीमारों को और पीड़ितों को चंगा किया। उसने अन्धों की आंखें खोलीं, बहरे कानों को खोल दिया, लंगड़े चलने लगे। उसने हर प्रकार के रोगों और बीमारियों को चंगा किया। उसने आश्चर्यजनक रूप से कुछ ही रोटियां बहुगुणित कर भूखों को खिलायी, आंधी को थामा और कई आश्चर्यकर्म किए।

ये सारे कार्य हमें दिखाते हैं कि यीशु अच्छा परमेश्वर है, जो चाहता है कि उसके लोग भले, चंगे स्वस्थ और खुश रहें। परमेश्वर लोगों की ज़रूरतों को पूरा करना चाहता है।

फिर परमेश्वर ने क्यों मनुष्य बनने का और हमारे संसार में आने का निर्णय लिया? यीशु क्यों आया?

हम सब ने पाप किया है और ऐसे कामों को किया है जो हमें उत्पन्न करने वाले परमेश्वर के सम्मुख अस्वीकारणीय हैं। पाप के परिणाम हैं। पाप परमेश्वर और हमारे बीच एक ऊंची दीवार है जिसे हम लांघ नहीं सकते। पाप हमें परमेश्वर से अलग करता है। वह हमें उस परमेश्वर को जानने और उसके साथ, जिसने हमें बनाया है, अर्थपूर्ण रिश्ता बनाए रखने से रोकता है। इसलिए, हम में से कई लोग अन्य बातों का सहारा लेकर इस खालीपन को भरने की कोशिश करते हैं।

हमारे पापों का अन्य परिणाम है। परमेश्वर से अनंतकाल तक अलगाव। परमेश्वर की अदालत में, पाप का दण्ड मृत्यु है। मृत्यु परमेश्वर से दूर नर्क में अनंतकाल का अलगाव है।

परंतु सुसमाचार यह है कि हम पाप से मुक्ति पाकर परमेश्वर से फिर मेल कर सकते हैं। बाइबल कहती है, ***"क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु***

***परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है"* (रोमियों 6:23)**। यीशु ने सम्पूर्ण जगत के पापों का दण्ड सहा, वह क्रूस पर मरा। फिर तीसरे दिन वह जी उठा, और उसने कइयों को खुद को जीवित दिखाया और वह स्वर्ग में चढ़ गया।

परमेश्वर प्रेमी और दयालु है। वह नहीं चाहता कि हममें से कोई व्यक्ति नर्क में नाश हो। और इसलिए वह सम्पूर्ण मानवजाति को पापों और उसके परिणामों से मुक्ति का मार्ग दिखाने के लिए आया। वह पापियों को बचाने के लिए आया—आपके और मेरे जैसे लोगों को पाप और अनंतकाल की मृत्यु से बचाने के लिए।

पापों की यह विनामूल्य क्षमा पाने के लिए बाइबल हमें बताती है कि हमें केवल एक काम करना है—जो कुछ प्रभु यीशु मसीह ने क्रूस पर किया उसे ग्रहण करना और उस पर सम्पूर्ण हृदय से विश्वास करना।

***"जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उसको उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी"* (प्रेरितों के काम 10:43)।**

***"कि यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा "* (रोमियों 10:9)|**

यदि आप प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करेंगे, तो आप भी पापों की क्षमा और शुद्धता पा सकते हैं।

प्रभु यीशु मसीह में और जो कुछ उसने आपके लिए क्रूस पर किया उस पर विश्वास करने हेतु निर्णय लेने में आपकी सहायता करने के लिए यहां एक सरल प्रार्थना दी गई है। इस प्रार्थना की सहायता से आप जो कुछ यीशु ने आपके लिए किया, उसे ग्रहण कर सकते हैं और क्षमा और पापों से शुद्धी पा सकते हैं। यह प्रार्थना मात्र मार्गदर्शन के लिए है। आप अपने शब्दों में भी प्रार्थना कर सकते हैं।

प्रिय प्रभु यीशु, जो कुछ आपने क्रूस पर किया उसे मैंने आज समझा है। आप मेरे लिए मरे, आपने मेरे लिए बहुमूल्य लहू बहाया और मेरे पापों का दण्ड

चुकाया, ताकि मुझे क्षमा मिल सके। बाइबल बताती है कि जो कोई आप पर विश्वास करेगा वह अपने पापों से क्षमा पाएगा।

आज, मैं आप में विश्वास करने का और क्रूस पर मेरे लिए मर कर और फिर मरे हुओं में से जी उठ कर जो कुछ आपने मेरे लिए किया उसे ग्रहण करने का निर्णय लेता हूं। मैं जानता हूं कि मैं अपने भले कामों से खुद को बचा नहीं सकता, न ही और कोई मनुष्य मुझे बचा सकता है। मैं अपने पापों की क्षमा मोल नहीं ले सकता।

आज, मैं अपने हृदय में विश्वास करता हूं और अपने मुंह से कहता हूं कि आप मेरे लिए मरे, आपने मेरे पापों का दण्ड चुकाया। आप फिर मरे हुओं में से जी उठे, और आपमें विश्वास करने के द्वारा, मैं अपने पापों की क्षमा और अपने पापों से शुद्धता पा सकता हूं।

धन्यवाद यीशु। आपसे प्रेम करने, आपको अधिकाई से जानने और आपके प्रति विश्वासयोग्य रहने में मेरी सहायता कीजिए।

आमीन।

ऑल पीपल्स चर्च के बारे में

ऑल पीपल्स चर्च का दर्शन बैंगलोर शहर में नमक और ज्योति, और भारत देश और संसार के राष्ट्रों के लिए एक आवाज़ बनना है।

ऑल पीपल्स चर्च यीशु से **प्रेम रखने वाली, वचन पर केंद्रित, पवित्र आत्मा से परिपूर्ण** पारिवारिक कलीसिया, एक प्रशिक्षण संस्थान, मिशन आधारित संसार में सुसमाचार फैलाने वाली कलीसिया है।

- एक **पारिवारिक कलीसिया** के रूप में, हम मसीह केंद्रित संगति में एक समुदाय के रूप में एक साथ बढ़ते हैं, परमेश्वर की मण्डली के रूप में प्रेम में एक दूसरे की देखभाल और सेवा करते हैं।
- एक **सुसज्जित करने वाले केंद्र** के रूप में, हम प्रत्येक विश्वासी को विजयी रूप से जीने, मसीह की समानता में परिपक्व होने और उनके जीवनों के लिए परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए सामर्थी बनाते हैं और सुसज्जित करते हैं।
- एक **मिशन के आधार** के रूप में, हम अपने शहर, राष्ट्र और राष्ट्रों को परमेश्वर के वचन और पवित्र आत्मा की सामर्थ के अलौकिक प्रदर्शनों के माध्यम से यीशु मसीह के पूर्ण सुसमाचार के साथ आशीष देने के लिए सार्थक सेवकाई में संलग्न हैं।
- एक **विश्व सुसमाचार प्रचारक** के रूप में, हम ईश्वरीय अगुवों और पवित्र आत्मा से भरी कलीसियाओं का पोषण करके स्थानीय और विश्व स्तर पर सेवा करते हैं जो परमेश्वर के राज्य के लिए उनके क्षेत्रों को प्रभावित कर सकते हैं।

एपीसी में हम परमेश्वर का सम्पूर्ण वचन बिना किसी समझौते के साथ पवित्र आत्मा के अभिषेक और प्रकाशन के साथ प्रस्तुत करने के प्रति समर्पित हैं। हमारा विश्वास है कि अच्छा संगीत, रचनात्मक प्रस्तुति, बुद्धिमानीपूर्ण पक्ष समर्थन, समकालीन सेवकाई की तकनीकें, आधुनिक तंत्रविज्ञान आदि पवित्र आत्मा के चिन्हों, चमत्कारों, आश्चर्यकर्मों और पवित्र आत्मा के वरदानों के साथ वचन की घोषणा करने की परमेश्वर द्वारा नियुक्त पद्धति का स्थान नहीं ले सकते (1 कुरिन्थियों 2:4,5; इब्रानियों 2:3,4)। हमारा विषय यीशु है, हमारी विषयवस्तु वचन है, हमारी पद्धति पवित्र आत्मा की सामर्थ है, हमारा आवेश लोग हैं, और हमारा लक्ष्य मसीह सदृश्य परिपक्वता है।

हमारा मुख्यालय बैंगलोर में है, परंतु ऑल पीपल्स चर्च की भारत की अन्य कई स्थानों में शाखाएं हैं। ऑल पीपल्स चर्च की वर्तमान सूची और सम्पर्क सूचना के लिए कृपया हमारे वेबसाईट को भेंट दें: **apcwo.org/locations** या इस पते पर ई-मेल भेजें: **contact@apcwo.org**

निःशुल्क प्रकाशन

A Church in Revival
A Real Place Called Heaven
A Time for Every Purpose
Ancient Landmarks
Baptism in the Holy Spirit
Being Spiritually Minded and Earthly Wise
Biblical Attitude Towards Work
Breaking Personal and Generational Bondages
Change
Code of Honor
Divine Favor
Divine Order in the Citywide Church
Don’t Compromise Your Calling
Don’t Lose Hope
Equipping the Saints
Foundations (Track 1)
Fulfilling God’s Purpose for Your Life
Gifts of the Holy Spirit
Giving Birth to the Purposes of God
God Is a Good God
God’s Word–The Miracle Seed
How to Help Your Pastor
Integrity
Interpreting Scripture
Kingdom Builders
Laying the Axe to the Root
Living Life Without Strife
Marriage and Family
Ministering Healing and Deliverance
Offenses–Don’t Take Them
Open Heavens
Our Redemption
Receiving God’s Guidance
Revivals, Visitations and Moves of God
Shhh! No Gossip!
Speak Your Faith
The Conquest of the Mind
The End Times
The Father’s Love
The House of God
The Kingdom of God
The Mighty Name of Jesus
The Night Seasons of Life
The Power of Commitment
The Presence of God
The Redemptive Heart of God
The Refiner’s Fire
The Spirit of Wisdom, Revelation and Power
The Wonderful Benefits of Praying in Tongues
Timeless Principles for the Workplace
Understanding the Prophetic
Water Baptism
We Are Different
Who We Are in Christ
Women in the Workplace
Work–Its Original Design

नई पुस्तकें नियमित रूप से प्रकाशित की जाती हैं। PDF, आडियो तथा अन्य फॉर्मेट में विनामूल्य ए. पी. सी. पुस्तकों को डाऊन लोड करने हेतु कृपया **apcwo.org/books** को भेंट दें। इनमें से कई पुस्तकें अन्य भाषाओं में भी उपलब्ध हैं। वैसे ही, विनामूल्य ऑडियो और वीडियो संदेशों, संदेश की टिप्पणियों, और अन्य कई संसाधनों के लिए हमारे वेबसाईट **apcwo.org/sermons** को भेंट दें।

क्रिसलिस काउंसलिंग

क्रिसलिस काउंसलिंग लोगों को जीवन की चुनौतियों का सामना करने और उन्हें दूर करने में मदद करने हेतु व्यक्तिगत परामर्श प्रदान करता है। क्रिसलिस काउंसलिंग व्यावसायिक और प्रशिक्षित और अनुभवी मसीही सलाहकारों की एक टीम है।

हमारी सेवाएं सभी आयु वर्ग के लोगों लिए हैं, और जीवन में होने वाली चुनौतियों की विस्तृत श्रृंखला का समाधान करती है।

- **किशोरों**
- **व्यक्तिगत समायोजन**
- **सम्बंधपरक चुनौतियां**
- **शिक्षा में कम सफलता पाने वाले**
- **कार्य सम्बंधित मुद्दे**
- **परिवार / दम्पत्तिः विवाह पूर्व, वैवाहिक आत्मिक समस्याएं**
- **माता-पिता / बच्चे / भाई-बहन / सहकर्मी**
- **व्यवहार सम्बंधी विकार**
- **व्यक्तित्व विकार**
- **मनोवैज्ञानिक / भावनात्मक समस्याएं**
- **तनाव / आघात**
- **शराब / नशीली दवाओं का गलत इस्तेमाल**
- **आध्यात्मिक मुद्दे**
- **जिंदगी की सीख**

हमारे प्रशिक्षित सलाहकारों में से किसी एक के साथ मुलाकात तय करने के लिए

वेबसाइट: **chrysalislife.org**
फ़ोन: +91-80-25452617 टोल फ्री (भारत के अंतर्गत) 1-800-300-00998
ईमेल: **counselor@chrysalislife.org**

क्रिसलिस काउंसलिंग ऑल पीपल्स चर्च एँड वर्ल्ड आउटरीच की सेवकाई है।

ऑल पीपल्स चर्च के साथ साझेदारी करें

ऑल पीपल्स चर्च स्थानीय कलीसिया के रूप में सम्पूर्ण भारत में सुसमाचार प्रचार करते हुए, विशेषकर उत्तर भारत में, उसकी सीमाओं से परे सेवा करता है। उसका विशेष लक्ष्य (अ) अगुवों को दृढ़ करना, (आ) जवानों को सेवकाई के लिए सुसज्जित करना और (इ) मसीह की देह की उन्नति करना है। जवानों के लिए कई प्रशिक्षण सम्मेलन, 'मसीही अगुवों के लिए सभाओं' का सम्पूर्ण वर्ष भर आयोजन किया जाता है। इसके अतिरिक्त, पुस्तकों की कई हजारों प्रतियां अंग्रेजी में और अन्य कई भारतीय भाषाओं में बिना मूल्य के वितरीत की जाती हैं, उसके पीछे उद्देश्य यह है कि विश्वासियों को वचन और पवित्र आत्मा में उन्नति प्रदान करें।

हम आपको निमंत्रण देते हैं कि एक समय का दान भेजकर या मासिक आर्थिक दान भेजकर आर्थिक रूप से हमारे साथ साझेदारी करें। सम्पूर्ण राष्ट्र में इस कार्य के लिए जो भी रकम आप भेज सकते हैं, उसके लिए हम आपके प्रति कृतज्ञ रहेंगे।

आप अपने दान चेक / बैंक ड्राफ्ट के माध्यम से "ऑल पीपल्स चर्च," बैंगलोर के नाम पर हमारे कार्यालय के पते पर भेज सकते हैं। अन्यथा हमारे बैंक खाते के विवरण का उपयोग करके आप अपना योगदान सीधे बैंक में डाल सकते हैं।

खाता नाम: All Peoples Church
खाता संख्या: 50200068829058
IFSC कोड: HDFC0004367
बैंक: HDFC Bank, 7M/308 80 Ft Road, HRBR Layout, Kalyan Nagar, Bengaluru-560043, Karnataka

कृपया ध्यान दें: *ऑल पीपल्स चर्च केवल भारतीय नागरिकों के बैंक योगदान ही स्वीकार कर सकता है। यदि आप चाहते हैं तो, अपना दान भेजते समय, स्पष्ट रूप से लिखें कि आप एपीसी सेवकाई के किस क्षेत्र के लिए दान भेजना चाहते हैं। अतिरिक्त जानकारी के लिए कृपया इस स्थान को भेंट दें* **apcwo.org/give**

उसी तरह, हमारे लिए और हमारी सेवकाई के लिए जब भी हो सके, प्रार्थना करना न भूलें।

धन्यवाद और परमेश्वर आपको आशीष दे!

DOWNLOAD THE FREE APP!

Search for

"All Peoples Church Bangalore"
in the App or Google play stores.

Available on the App Store

ANDROID APP ON Google play

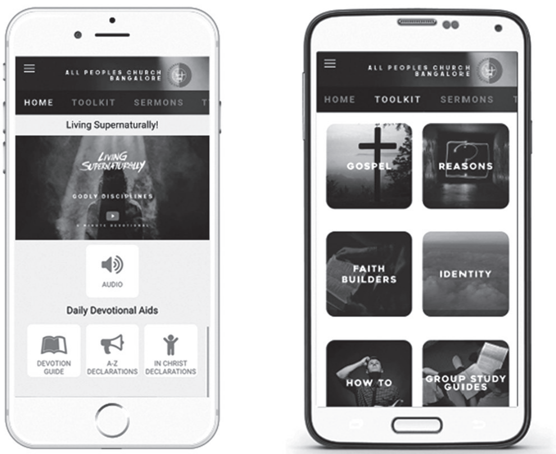

A daily 5-minute video devotional.
A daily Bible reading and prayer guide.
5-minute Sermon summary.
Toolkit with Scriptures on various topics to build faith and information to share the Gospel.
Resources with sermons, sermon notes, TV programs, books, music and more.

IF YOU LOVE IT, TELL OTHERS ABOUT IT!

निःशुल्क ऐप डाउनलोड करें:

ऐप स्टोर या प्ले स्टोर में खोजें
“ऑल पीपुल्स चर्च (APCWO)”/
All Peoples Church Hindi

Available on the App Store

ANDROID APP ON Google Play

विश्वास को मजबूत करने और सुसमाचार साझा करने के लिए विभिन्न विषयों पर आधारित वचनों के टूलकिट।
उपदेशों, टीवी कार्यक्रमों, पुस्तकों, संगीत और बहुत कुछ से भरे संसाधन।
अगर आपको यह पसंद आए, तो
दूसरों को भी इसके बारे में बताएं!

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज

apcbiblecollege.org

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज एंड वर्ल्ड आउटरीच भारत के बैंगलोर में आत्मा से परिपूर्ण, अभिषिक्त, सक्रिय सेवकाई में सहभागी प्रशिक्षण और सिद्धांत की दृष्टि से सही एवं परमेश्वर के वचन के बौद्धिक दृष्टि से प्रेरणादायक अध्ययन के साथ पवित्र आत्मा की अलौकिक सामर्थ में सेवकाई के लिए तैयारी प्रदान करता है। हम सेवकाई के लिए सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास में विश्वास करते हैं और ईश्वरीय चरित्र, परमेश्वर के वचन में गहरी बुनियाद, और चिन्ह, चमत्कारों और आश्चर्यकर्मों पर ज़ोर देते हैं—सब कुछ प्रभु के साथ निकट रिश्ते से प्रवाहित होता हुआ।

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज (एपीसी-बीसी) में सही शिक्षा के अतिरिक्त, हम प्रत्यक्ष रूप से परमेश्वर के प्रेम, पवित्र आत्मा का अभिषेक और उपस्थिति और परमेश्वर के अलौकिक कार्य पर बल देते हैं। कई युवा स्त्री और पुरुषों ने प्रशिक्षण पाया है और उनके जीवनों में परमेश्वर की बुलाहट को पूरा करने हेतु उन्हें बाहर भेजा गया है।

निम्नलिखित तीन पदवियां दी जाती हैं :

- ईश्वर-विज्ञान और मसीही सेवकाई में एक वर्षीय प्रमाणपत्र (C.Th.)
- ईश्वर-विज्ञान और मसीही सेवकाई में दो वर्षीय प्रमाणपत्र (Dip.Th.)
- ईश्वर-विज्ञान और मसीही सेवकाई में तीन वर्षीय प्रमाणपत्र (B.Th.)

हर सप्ताह के दिन, **सोमवार से शुक्रवार तक भारतीय समय के अनुसार सुबह 9 से दोपहर 12 बजे तक (UTC+5:30)** कक्षाएं ली जाती हैं।

- **ऑन-कैम्पस**: कैम्पस में व्यक्तिगत कक्षाओं में भाग लीजिए
- **ऑनलाइन**: ऑनलाइन लाइव व्याखान में भाग लीजिए
- **ई-लर्निंग**: ऑनलाइन पोर्टल के माध्यम से स्वयं की सुविधानुसार सीखनें के लिए **apcbiblecollege.org/elearn**

ऑनलाइन आवेदन हेतु, और कॉलेज, पाठ्यक्रम, पात्रता मानदंड, शिक्षण शुल्क और आवेदन पत्र डाउनलोड करने के विषय में अधिक जानकारी हेतु, कृपया इस वेबसाईट का अनुसरण करें: **apcbiblecollege.org**

इस पुस्तक "अंतिम समय" में, हमने अंत समय के विषय में, बाइबल की भविष्यवाणियों को समझने, और उनकी व्याख्या करने के लिए एक रूपरेखा प्रस्तुत कर रहे हैं। हम बाइबल में से एक आवश्यक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि भी प्रदान कर रहे हैं। हम उन प्रमुख घटनाओं का क्रम, और वचनों के अनुसार उनकी आपेक्षिक समय-रेखा भी प्रस्तुत कर रहे हैं, जो पूरी होने की प्रतीक्षा में हैं। हमने समयों के प्रमुख संकेतों की ओर भी इशारा किया है, ताकि हम प्रभु की वापसी की निकटता की अनुभूति होने में सहायता मिल सके। अधिकांश अध्यायों में, हमने इन विषयों पर उठने वाले सामान्य प्रश्नों के उत्तर, वचनों के द्वारा दिए हैं।

ऐसा होने पाए, कि अंतिम समय से संबंधित बाइबल के भविष्यवाणियों की हमारी समझ, हमें हमारे दैनिक जीवन में, हमारे जीवन जीने के तरीके में, और उन सेवकाइयों में जिन्हें पूरा करने के लिए परमेश्वर ने हमें बुलाया है, परमेश्वर के सामने हमें सही ढंग से तैयार रहने में सहायता करे। ऐसा होने पाए, कि समयों के संकेतों को अपनी आँखों से प्रकट होता हुआ देखकर, हम प्रभु के प्रति जुनून, अपने कार्यों के प्रति तत्परता की भावना, और आशा से भरे रहें।

All Peoples Church & World Outreach
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617
Email: contact@apcwo.org
Website: apcwo.org